NAGRI PRCHARNI PTRIKA

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

LIB. G K V

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
पुस्तकालय

विषय संख्या
पुस्तक संख्या
आगत पंजिका संख्या
पुस्तक पर किसी प्रकार का निशान लगाना वर्जित है। कृपया १५ दिन से अधिक समय तक पुस्तक अपने पास न रखें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

320

यह पुस्तक वितरित न की जाय
NOT TO BE ISSUED

सन्दर्भ ग्रन्थ
REFRENCE BOOK

स्टाक प्रमाणीकरण १९८४-१९८५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R

८०

वर्ष २५ वाँ

भाग १६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

110770
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी
२२०

सम्पादक।
रामचन्द्र शुक्ल।

Registered No A 414

नागरीप्रचारिणी पत्रिका।

ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः
पुस्तक सं०
आगत सं०
तिथि ....
गुरुकुल पुस्तकालय काँगड़ी.

[मासिक पत्रिका]

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल। बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ॥
करहु विलंब न भ्रात अब, उठहु मिटावहु सूल। निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जु सब को मूल ॥
विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार। सब देशन सों लै करहु, भाषा मांहि प्रचार ॥
प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि यत्न। राज काज दर्बार में, फैलावहु यह रत्न ॥ हरिश्चन्द्र।

CHECKED 1973

भाग १४ | १५ सितम्बर १९०९। | संख्या १

हमारा नया रूप।

आज यह नया रूप क्यों धारण करना पड़ा सबसे पहिले यही बतलाना ज़रूरी है। पहिले पहिल सन् १८९६ में यह पत्रिका त्रैमासिक रूप में इस अभिप्राय से निकाली गई कि इसके द्वारा ऐसे लेखों की संख्या बढ़ती रहे जिनका लक्ष्य न कि केवल पाठकों का मनोरंजन करना और उनके रंग में रंग मिलाना हो वरन हिन्दी बोलने वालों के विचारों को कुछ आगे बढ़ाना और उनकी दृष्टि को कुछ और दूर तक फैलाना हो। १२ वर्ष तक यह पत्रिका उक्त निश्चय के अनुसार पुरातत्व, ज्योतिष, दर्शन तथा और और साधारण विषयों पर लेख लेकर उपस्थित होती रही और यदि उन बातों की जिनका हमारी भाषा में अभाव है, पूर्ति नहीं तो उन पर ध्यान अवश्य आकर्षित करती रही। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि इस पत्रिका को अब तक नागरीप्रचारिणी सभा के सभासदों ही का आश्रय रहा। कुछ दिनों से यह देखा गया कि सभा के काम धीरे धीरे बढ़ रहे हैं जिनका वृत्तान्त विस्तार रूप से जानने के लिये सर्वसाधारण विशेष कर सभा के सभासदों का उत्सुक होना स्वाभाविक है। इसी बीच में कुछ महाशयों ने पत्रिका को मासिक करने का प्रस्ताव सभा में उपस्थित किया। बहुत वाद विवाद के अनन्तर यह निश्चय हुआ कि पत्रिका मासिक रूप में निकले और उसमें महीने महीने के सब अधिवेशनों के पूरे विवरण सर्वसाधारण और सभासदों के सूचनार्थ प्रकाशित हुआ करें। पत्रिका को त्रैमासिक से मासिक कर देने से क्या लाभ वा हानि हुई सो तो नहीं कह सकते पर इतना तो प्रत्यक्ष देख पड़ा कि जितना स्थान नए नए लेखों के लिये पहिले रहता था उतना न रहा। इससे जो कहीं कोई बहुत लम्बा लेख आया तो वह अकेले ही कई महीनों तक चलता रहा जिससे रोचकता न रह गई। इन सब बातों का विचार कर ता० २६ जूलाई १९०९ की प्रबंधकारिणी सभा में बाबू श्यामसुन्दरदास ने पत्र द्वारा यह प्रस्ताव उपस्थित किया कि नागरीप्रचारिणी पत्रिका अधिक रोचक बनाई जाय और प्रति मास उसके १२ पृष्ठ डिमाई चौपेजी आकार में निकाले जांय। इसमें हिन्दी के संबंध के सब समाचारों पर टिप्पणियां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहें और साथ ही साहित्य संबंधी छोटे छोटे लेख रहें। बाबू श्यामसुन्दर दास का यह उचित प्रस्ताव स्वीकृत हुआ और पत्रिका ने यह नया रंग पकड़ा। अबसे जो बड़े बड़े लेख प्रकाशित होने के लिये सभा में आवेंगे वे "लेखमाला" में प्रकाशित होंगे।

हिन्दी साहित्य की सामयिक स्थिति का निदर्शन करना, उसकी उन्नति के उपायों पर विचार करना और उसके संबंध में जहां कहीं जो बात हो उसकी सूचना देना अब से यह पत्रिका अपना प्रधान धर्म्म समझेगी। जो उत्तम ग्रन्थ हिन्दी में प्रकाशित होंगे उनका भी उल्लेख किया जायगा। इसके अतिरिक्त और भी साहित्य वा शिक्षा सम्बन्धी कार्य्यों पर यह पत्रिका दृष्टि रखेगी और और उनके विषय में अपनी सम्मति प्रगट करेगी। अन्त में सभा के गत मास के सब अधिवेशनों का पूरा पूरा विवरण रहेगा।

पर ध्यान रहे कि ये सब प्रतिज्ञाएं यह पत्रिका हिन्दी के प्रेमियों, लेखकों और सहायकों ही के भरोसे पर करती है। जब तक इन महानुभावों की कृपा इस पर बनी रहेगी तब तक यह अपने इन कर्त्तव्यों के पालन में त्रुटि न करेगी। आशा है कि अपने इस नए ढंग से यह पत्रिका सर्वसाधारण हिन्दी हितैषियों को अधिक प्रसन्न कर सके।

अन्त में सब हिन्दी प्रेमियों से सविनय निवेदन है कि हिन्दी के सम्बन्ध में जो कुछ समाचार उन्हें विदित हुआ करें उनकी सूचना विवरण के साथ वे सम्पादक नागरीप्रचारिणी पत्रिका के नाम भेज दिया करें।

साहित्य—समाचार।

बनारस जिले के १९०९ के गज़ेटियर में काशी नागरीप्रचारिणी सभा के विषय में ये बातें लिखी हैं—

"मुख्य सभाओं में से एक नागरीप्रचारिणी सभा है, जो हिन्दी भाषा को उन्नत और सर्वप्रिय बनाने के अभिप्राय से सन् १८९३ में स्थापित हुई थी। इसके लगभग ६५० सभासद हैं, और इसे ६०००) की वार्षिक आमदनी है, जिसमें वह सरकारी रकम भी शामिल है, जिसे वह हिन्दी पुस्तकों के अन्वेषण और प्रकाशन के लिये देती है। सभा का एक बड़ा सुन्दर भवन मैदागिन के मैदान में बना है जिसमें शिक्षा सम्बन्धी सभा समाज हुआ करते हैं"।

आरा की नागरीप्रचारिणी सभा एक भवन बनवाने के उद्योग में है। वह इस कार्य्य के लिये चार चार आने की रसीद बही छपवा कर बांटने वाली है। आशा है कि वह अपने इस उद्योग में कृतकार्य्य होगी।

आरा नागरीप्रचारिणी सभा की प्रबन्धकारिणी कमेटी के ११ सभासदों ने बंगाल और युक्त प्रदेश के लेफ्टिनेंट गवर्नरों के पास एक मेमोरियल भेजा है कि बनिए और महाजनों के बही खाते मुंडे अक्षरों में न लिखे जाकर नागरी अक्षरों में लिखे जाया करें क्योंकि वे अदालतों में पेश किए जाते हैं- बात तो अच्छी है।

कलकत्ते के प्रेसिडेंसी कालेज और हिन्दू स्कूल में पहिले हिन्दी पढ़ाने का भी प्रबन्ध था, परन्तु वह अब कुछ दिनों से उठा दिया गया है। जो विहार के छात्र कलकत्ते में इन दोनों विद्यालयों में शिक्षा पाने के लिये जांयगे क्या उन्हें उनकी मातृभाषा की शिक्षा देना आवश्यक नहीं है?

गुजरात वर्नाक्यूलर सोसाइटी, अहमदाबाद की ओर से बुद्धिप्रकाश नामक एक मासिक पत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकलता है । इस पत्र में जो जो गुजराती की कविताएं छपती हैं वे नागरी अक्षरों में रहती हैं- यह अच्छे लक्षण हैं ।

कलकत्ते के प्रसिद्ध महामहोपाध्याय पण्डित सतीशचन्द्र विद्याभूषण एम० ए०, पी० एच० डी० जिनका पाली भाषा और बौद्ध साहित्य में बहुत प्रवेश है, आज कल सीलोन में पाली भाषा का अध्ययन कर रहे हैं । कांडी नामक नगर में जाकर उन्होंने उस प्रसिद्ध बुद्ध के दांत को देखा जो बड़ी रक्षा के साथ रत्नों के बीच में रक्खा हुआ है ।

कलकत्ता बड़ा बाजार लाइब्रेरी ने उन महाशयों को पदक देना निश्चित किया है जो निम्नलिखित विषयों पर सर्वोत्तम लेख लिख कर उक्त लाइब्रेरी के पास ३१ दिसम्बर १९०९ तक भेज देंगे ।

(१) देवनागरी अक्षरों के प्रचार की उपयोगिता- कलकत्ता हाईकोर्ट के भूतपूर्व जज श्रीयुक्त शारदाचरण मित्र एम० ए० बी० एल का स्वर्ण पदक ।

(२) भारत के वाणिज्य की उन्नति के उपाय- बाबू सानीराम हलुवासिया का स्वर्ण पदक ।

(३) भारत की खान विद्या-बाबू लक्ष्मीनारायण सराफ़ का एक स्वर्ण पदक ।

(४) भारतीय कृषि-बाबू घनश्यामदास चौधरी का स्वर्ण पदक और पंडित उमापति दत्त शर्म्मा का रजत पदक ।

जिनको इस विषय में विशेष जानना हो वे बाबू नारायणदास अरोड़ा, सेक्रेटरी से पत्रव्यवहार कर के विज्ञापन मँगा लें ।

———:o:———

जौनपुर की नागरीरक्षिणी सभा का छठां वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम के साथ श्रावण कृष्णा ७ को समाप्त हुआ । प्रायः ३०० मनुष्य आए थे । बाबू शरतकुमार बी० ए० बी० एस०सी० ने सभापति का आसन ग्रहण किया था । नागरी लिपि और हिन्दी भाषा की उपयोगिता पर व्याख्यान हुए थे ।

बड़ोदा में मराठी भाषियों की एक वृहद् सभा २३, २४, और २५ अक्तूबर को बैठने वाली है । उसमें दो दिन तो मराठी भाषा के विषय में विचार होगा और तीसरे दिन और और देशी भाषाओं के सम्बन्ध में चर्चा होगी जिसमें नागरी लिपि और हिन्दी भाषा के सम्बन्ध में भी पूरा पूरा विचार होगा ।

परिचर्य्या प्रणाली—डाक्टर महेन्दु लाल गर्ग लिखित । यह पुस्तक राजा साहब भिनगा की सहायता से काशी नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित हुई है । इसमें रोगी की सेवा शुश्रुषा के विषय में सरल उपदेश हैं । पुस्तक ६ अध्यायों में समाप्त की गई है । पहिले अध्याय में रोगी के घर, विस्तर तथा मल मूत्र त्याग कराने की विधि आदि का वर्णन है । दूसरे में सेवा करने वाले के लिये आवश्यक गुण, रोगी को पानी पिलाने, स्नान कराने, कुल्ली कराने, उठाने, बिठाने के सम्बन्ध में परामर्श हैं । तीसरे अध्याय का विषय रोगों के लक्षणों की पहिचान है । चौथे अध्याय में विविध प्रकार की ओषधियों के सेवन कराने के नियम हैं । पांचवें अध्याय में रोगी के पथ्य प्रस्तुत करने की युक्तियां लिखी गई हैं । छठें अध्याय में चीर फाड़ की सफ़ाई दिखलाई गई है । पुस्तक प्रत्येक गृहस्थ के रखने लायक है । मूल्य ।)

टिप्पणियां ।

जब से काशी की नागरीप्रचारिणी सभा ने कोश के बनाने में हाथ लगाया है तब से बहुत से लोगों के चित्त में खलबली सी पड़ी है । कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहता है कि अभी हिन्दी में कोश के बनाने की आवश्यकता ही नहीं है, कोई कहता है कि सभा का कोश बनने पर अच्छा न होगा। पर खड्गविलास प्रेस और आरा की नागरीप्रचारिणी सभा की बात इन सब से बीस रही। इन लोगों ने कह डाला कि हमारे पास एक सर्वाङ्गपूर्ण कोश पहिले ही से बना बनाया तैयार रक्खा है। २६ अगस्त की 'शिक्षा' का यह नोट ध्यान देने योग्य है—

"स्वर्गीय बाबू रामदीन सिंह ने कई हजार रुपए खर्च कर, कई हिन्दी पुस्तकों से शब्द चुनवाए थे, उनके अर्थ लिंग और व्युत्पत्ति लिखाई थी। दुःख की बात है कि वे अपने कोश के प्रकाशित करने के पहिले स्वर्गवासी हो गए। उनके परम कृपापात्र बाबू गोकर्ण सिंह जी ने कई बार आरा की नागरीप्रचारिणी सभा से अनुरोध किया कि सभा बाबू साहब के हिन्दी कोश को दुहरा दे। वह प्रकाशित किया जायगा। उन्हें सभा ने उत्तर दिया कि इस कार्रवाई से काशी की सभा को हानि पहुंचेगी। यदि उसका कोश अच्छा नहीं होगा तो आरा की सभा प्रेस के हिन्दी कोश को घटा बढ़ा कर ठीक कर देगी। यदि काशी की सभा का कोश अच्छा न बना तो खड्गविलास प्रेस का हिन्दी कोश आरा की नागरीप्रचारिणी सभा की निरीक्षणता में प्रकाशित होगा।"

यह नोट किस अभिप्राय से लिखा गया है यह जान लेना तो कुछ कठिन नहीं है। आरा की नागरीप्रचारिणी सभा के विषय में तो हम कुछ कहना नहीं चाहते। पर खड्गविलास प्रेस के लिये तो यह कोई नई बात नहीं है। उसका तो यह धर्म्म सब दिन से चला आता है। जहां किसी ने किसी हिन्दी का कार्य्य करने का विचार किया कि वह आसमान से पूरा होकर उसके पास उतरा। इसी प्रकार यह कई बार कई कई हज़ार रुपए कई ऐसे बड़े कामों में लगा चुका है जिनका पता आज तक नहीं है। सन् १८८२ में भारतमित्र कार्य्यालय ने बाबू राधाकृष्ण दास से लिखा कर टाडस् राजस्थान का हिन्दी अनुवाद निकालना चाहा और उस विषय का एक विज्ञापन भी भारत मित्र में प्रकाशित किया। बाबू राधाकृष्ण दास ने इस काम में हाथ लगाया ही था कि भारत मित्र के सम्पादक ने उन्हें यह पत्र लिखा—

भारत मित्र कार्य्यालय
९० नं० क्रास स्ट्रीट
कलकत्ता।

.........'राजस्थान' का विज्ञापन भारत मित्र में देखकर क्षत्रियपत्रिका के अध्यक्ष ने इस विषय का एक पत्र हमको लिखा कि उन्होंने टाड्स राजस्थान का अनुवाद अपने पत्र के लिये कराया है और इस काम में उनके १०००) ख़र्च हो चुके हैं। अब यदि हम लोग इसको पुस्तकाकार छापैंगे तो उनका सब परिश्रम और रुपया व्यर्थ जायगा। बल्कि जिसमें हम लोग इस ग्रन्थ को न छापैं इसके लिये उन्होंने बहुत अनुरोध भी किया। ....ग्राहक श्रेणी प्रायः २०० के अन्दाज हो गई थी परन्तु ऊपर लिखे हुए सबब से राजस्थान का छापने का प्रयत्न छोड़ दिया।

आपका
अनुग्रहाकांक्षी
छोटूलाल मिश्र

कलकत्ता
१० २ ८२

समझ में न आया कि जब एक बार हज़ारों रुपए ख़र्च कर के राजस्थान का अनुवाद कराया जा चुका था तब फिर क्यों पचीस छब्बीस वर्ष बाद उसे फिर से अनुवादित कराने का परिश्रम और व्यय उठाया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी प्रकार भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के मरे हुए एक महीना भी न होने पाया था कि इस प्रेस के उदार अध्यक्ष उनके सब ग्रन्थों के छापने के लिये आकुल हुए थे । उन्हें उस समय यही धुन थी कि दूसरा कोई भारतेन्दु कृत पुस्तकों को न छापने पावे । कई सज्जनों ने उन पुस्तकों को बड़ी प्रतिष्ठा से छापना चाहा था । स्वयं भारतेन्दु जी के छोटे भाई बाबू गोकुलचन्द और बाबू राधाकृष्ण दास ने भारतेन्दु के सब ग्रन्थों को धूमधाम से छापने का विचार किया था परन्तु बा० रामदीनसिंह का विशेष आग्रह देख कर वे लोग किनारे हो गए और ग्रन्थों के प्रकाशन में सहायता देना ही उन लोगों ने अपना कर्त्तव्य स्थिर किया । इन पुस्तकों को किस उत्तमता से खड्गविलास प्रेस ने छापा और किस उदारता से बेचा यह हिन्दी प्रेमी मात्र जानते हैं ।

बङ्किम बाबू के उत्कृष्ट उपन्यासों का हिन्दी अनुवाद भी इसी प्रेस की कृपा के कारण बहुत दिनों तक रुका रहा । न स्वयं छापें न किसी के छापने दें । कहां तक कहें, हिन्दी की जैसी निस्वार्थ सेवा इस प्रेस ने की वैसी शायद ही किसी से बन पड़े ।

अब ज़रा उक्त नोट पर भी विचार कीजिए । उसमें लिखा है कि बाबू गोकर्ण सिंह ने कई बार आरा की नागरीप्रचारिणी सभा से अनुरोध किया कि वह बाबू साहब के कोश को दुहरा दे पर सभा ने यही उत्तर दिया कि इस कार्रवाई से काशी की सभा को हानि पहुंचेगी । इस उत्तर से इतना तो ज़रूर मालूम हो गया कि जब काशी की सभा ने कोश बनाने का विचार किया तभी बाबू गोकर्ण सिंह वा खड्गविलास प्रेस को उस पुरानी गठरी में बँधे हुए कोश की याद आई । सभा ने जो काशी की सभा की हानि का इतना ध्यान रक्खा उसके लिये अनेक धन्यवाद । अब निवेदन यही है कि शीघ्र आप लोग उस बड़े कोश को प्रकाशित कीजिए । काशी की सभा की उसमें ज़रा भी हानि नहीं है । एक से दो हो जांयगे इससे अच्छी और क्या बात होगी । सम्भव है कि यदि खड्गविलास प्रेस विशेष उदारता दिखाना चाहे तो वह अपने स्वर्गीय अध्यक्ष के परम सहायक और हितैषी डाक्टर ग्रियर्सन का अनुकरण करे जिन्होंने रामचरित्रमानस से चुने हुए अपने सब शब्दों को सात समुद्र पार इङ्गलैण्ड से भेज दिया है ।

हमारी सभा के स्थायी कोश की अवस्था परम शोचनीय है । ६०००) रु० का ऋण जो कई वर्ष हुए लिया गया था ज्यों का त्यों बना हुआ है । सभासदों और हिंदी प्रेमियों को भली भांति विदित है कि सभा की नीव श्रीमान् द्विजराज काशीराज महाराज ने कृपापूर्वक सन् १९०२ में रक्खी थी । उस समय श्रीमान् ने जो कुछ कहा था उससे यह प्रगट हुआ था कि वे कृपा कर सभा की पूरी सहायता करेंगे । फिर एक वर्ष के अनन्तर जब सर जेम्स ला टूश साहब ने सभाभवन खोला था तो श्रीमान् काशीराज ने १०००) रु० भेजा था और यह लिखा था कि हमारे चन्दे की यह पहिली किस्त है । तब से आज इस बात को ६ वर्ष होगए पर अनेक उद्योग करने पर भी यह विदित न हो सका कि सभा को श्रीमान् की सहायता की कै किस्तें और प्राप्त होंगी और सब मिलाकर कितनी सहायता मिलेगी । अनेक बेर इस सम्बन्ध में पत्र लिखे गए पर किसी का भी सन्तोषजनक उत्तर न मिला । यह अवश्य है कि सभा को कोई अधिकार नहीं है कि यदि श्रीमान् की कुछ देने की इच्छा न हो तो उन्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बराबर तंग करती रहे। पर यह बात स्मरण रखनी चाहिए कि सभा जो बेर बेर इस सम्बन्ध में श्रीमान् को स्मरण दिलाने का उद्योग करती है उसका कारण श्रीमान् के भूतपूर्वक दीवान का फरवरी १९०४ का पत्र है। यदि श्रीमान् इस पत्र पर ध्यान न देकर कुछ न दिया चाहते हों तो इसी की सूचना मिल जाना हो सभा के लिये अभीष्ट होगा। सभा को सन्देह है कि जो पत्र सभा के जाते हैं वे श्रीमान् की सेवा में उपस्थित नहीं किए जाते, नहीं तो ऐसी आशा न थी कि एक का भी उचित उत्तर न मिलता। इसीलिये पत्रिका द्वारा इतना लिखने की आवश्यकता पड़ी कि जिसमें श्रीमान् का इस ओर ध्यान हो। प्राय: सभासद्गण यह पूछते हैं कि क्या कारण है कि श्रीमान् काशीराज से जो अपनी संस्कृत विद्वता के लिये प्रसिद्ध हैं सभा को उतनी सहायता नहीं मिलती जितनी अन्य नृपतिगणों से मिलती है। सभा इसका क्या कारण बता सकती है। कदाचित् चिराग के नीचे अँधेरे की कहावत यहीं चरितार्थ होती हो। जिस सभा को प्रान्तीय गवर्न्मेंएट, भारत गवर्न्मेंएट तथा अनेक राजों महाराजों से हिन्दी कोश के लिये बीस हजार से ऊपर की सहायता दो वर्ष के बीच में प्राप्त हो जाय उसकी दुहाई श्रीमान् काशीराज के कानों तक भी न पहुंचे यह निस्संदेह आश्चर्य की बात है। क्या कोई महाशय इसका ठीक ठीक कारण हमें बताने की कृपा करेंगे।

सभा के कोशविभाग का कार्य उत्तमता से चल रहा है। शब्द संग्रह का कार्य बहुत शीघ्रता से हो रहा है। आशा है कि सितम्बर मास के अन्त तक यह कार्य समाप्त हो जाय। तब सब शब्दों को अक्षरक्रम से लगा कर संकलन का कार्य आरम्भ किया जायगा।

३० जून १९०९ तक इस कार्य के लिये १४९५२) रु० का चन्दा हो चुका था जिसमें से ९९५२) रु० वसूल भी होगया था। इधर जुलाई और अगस्त में निम्न लिखित महानुभावों से और चन्दा मिला है।

(१) भारत गवर्न्मेंएट ३०००)। जब सभा को बीस हजार मिल जायगा तब यह रुपया मिलेगा।
(२) श्रीमान् माहाराज साहब अलवर १०००) प्राप्त।
(३) इन्दौर दर्बार ५००) प्राप्त।
(४) बाबू गोबिन्द दास, काशी ५००)।
(५) मुंशी माधवलाल सी०एस०आई० काशी २००)
(६) पं० श्यामबिहारीमिश्र और पंडित शुकदेव बिहारी मिश्र १५०)—प्राप्त १४)।
(७) बा० महादेवप्रसाद, मिर्जापुर १००) प्राप्त।
(८) कुंअर अवधेन्द्र प्रताप दियरा ३०) प्राप्त।
(९) लाला लाजपतराय, लाहोर २५)।
(१०) बा० श्यामसुन्दरदास, काशी २५)।

यह सब मिला कर १ सितम्बर १९०९ तक २०४८२) का चन्दा हुआ है जिसमें से ११५८६)। वसूल भी हो गया है।

हिन्दी में इस समय एक भी दैनिक पत्र नहीं है। यह अवश्य लज्जा और दु:ख की बात है। न जाने क्यों दैनिक हिन्दोस्थान को चलाना स्वर्गीय राजा रामपाल सिंह के उत्तराधिकारी ने उचित नहीं समझा। हिन्दी में पहिले पहिल दैनिक रूप में कानपुर से भारतोदय सन् १८८५ में निकला था। फिर उसके पीछे उसी वर्ष में हिन्दोस्थान निकला जो बराबर चलता रहा। भारतमित्र भी दो तीन बार दैनिक हुआ पर चल न सका। सन् १९०५ में राजस्थान को दैनिक रूप में देख कर प्रसन्नता हुई थी कि चलो एक से दो हुए। पर वह भी थोड़े दिनों पीछे बन्द हो गया। अब आज एक भी दैनिक हिन्दी में नहीं है। सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी हितैषियों को इस बात पर ध्यान देना चाहिए और ऐसा उद्योग करना चाहिए कि एक अच्छा दैनिक पत्र निकाला जाय। पंडित लज्जाराम शर्म्मा ने सम्मति दी है कि हिन्दी का दैनिक पत्र किसी ऐसे स्थान से निकलना चाहिए जहां दो चार अंग्रेज़ी वा देशी भाषाओं के दैनिक पत्र निकलते हों। पर साथ ही वे इस बात का विचार कर लेना भी आवश्यक बतलाते हैं कि जहां से हिन्दी पत्र निकले वहां हिन्दी पढ़ने वालों की कमी न हों, जैसे बम्बई की अपेक्षा कलकत्ता इस कार्य्य के लिये विशेष उपयुक्त स्थान है।

महाराष्ट्र साहित्य की सन् १९०७ में ग्रन्थनिष्पत्ति।

आज हम हिन्दी साहित्य प्रेमियों के लिये महाराष्ट्र साहित्य में से उन ग्रन्थों का परिचय दिया चाहते हैं जो साहित्य में गिने जाने के योग्य हैं। इससे हिन्दीभाषा के अभिमानी लोग पड़ताल कर सकेंगे कि अपने साहित्य ने इस वर्ष में किस प्रकार उन्नति की।

शास्त्र और तत्त्व विज्ञान।

१ माननीय तिलक महोदय का ओरायन नामक ग्रन्थ अंग्रेजी में है जिसमें उन्होंने ज्योतिष शास्त्र के आधार पर वेदों की प्राचीनता बतलाई है। उसका मराठी अनुवाद रा० ओगले ने बहुत सुन्दर और सरल भाषा में किया है। तिलक महोदय के पट्ट शिष्य श्रौतस्मार्त धर्ममार्तण्ड वे० शा० काशीनाथ वामन शास्त्री लेले ने, जो 'धर्म' नामक मराठी साप्ताहिक पत्र के सम्पादक हैं, अपने गुरु महाराज के एक दूसरे ग्रन्थ में प्रतिपादित उत्तर ध्रुवीय सिद्धान्तों का खण्डन बड़ी योग्यता के साथ करना आरम्भ किया है जो अभी सम्पूर्ण नहीं हुआ है। यह खण्डन धर्म में छपता है।

२ इंग्लैंड के विख्यात तत्त्व विद्या विशारद हरबर्ट स्पेन्सर के पोलिटिकल इन्स्टिट्यूशन नामक ग्रंथ का अनुवाद मराठी भाषा में रा० फड़के ने किया है और उसे पूना की दाभोलकर प्रकाशित ग्रन्थमाला में प्रकाशित किया है। स्पेन्सर साहिब का मूल ग्रन्थ तो अनुपम है ही परन्तु रा० फड़के कृत अनुवाद भी प्रशंसा के योग्य है।

३ प्रो० शान्ताराम अनंत देसाई लिखित गूढ़ विषयों पर अल्प विचार नामक ग्रन्थ बड़ी श्रेष्ठ श्रेणी का है। इसमें पश्चीमी तत्वविज्ञ लोगों के और श्रीमान् शंकराचार्य के तत्वविद्या सम्बन्धी मतों में साम्य दिखाया गया है।

इतिहास।

४ रा० सरदेसाई ने ग्रीस देश का इतिहास संक्षेप में लिखा है। यह केवल अनुवाद नहीं है किन्तु स्वतन्त्र रचना है। एक तो ग्रीस देश का इतिहास अद्वितीय है और तिसमें सर देसाई जैसे इतिहास के विख्यात लेखक की लेखनी से लिखा गया है इससे मानों सोने में सुगन्ध आगया है महाराष्ट्र भाषा में ऐसे ग्रंथ की कमी थी ही, सो सर देसाई ने पूरी करदी।

५ श्रीयुत वासुदेव शास्त्री खरे बहुत पुराने ऐतिहासिक लेखक और कवि हैं। इनका यशवंतराय महाकाव्य नामक १८ सर्गात्मक महाकाव्य आधुनिक मराठी काव्य का उत्तम आदर्श है। इन्होंने "नाना (फड़नीस=फर्दनवीस) का अधिकार योग" नामक पुस्तक लिखी है। यह महाराष्ट्र ऐतिहासिक खोज का सुन्दर परिपाक है।

६ रा० भागवत ने बड़ोदे के पहिले सयाजी महाराज के राजत्व काल का इतिहास लिखा है वे महाराज अंग्रेजी राज्य के आरम्भ काल में थे।

७ रा० हर्डीकर ने श्री शिवाजी महाराज के आदिल शाही से किए हुए राजकारण का इतिहास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखा है। वह ग्रंथ एक प्राचीन हस्तलिखित ऐतिहासिक लेख के आधार पर लिखा गया है।

चरित्र अथवा जीवनी।

८ 'जिवषा दादा बक्षी की जीवनी' यह एक ऐतिहासिक लेख है। इस में रा० राजध्यक्ष ने बहुत कुछ ऐतिहासिक बातों का संग्रह किया है।

९ 'मराठी कवि चरित्र' का पहिला भाग रा० आजगांवकर ने लिखा है और 'ग्रन्थ प्रकाशक मंडली' बम्बई-बड़ोदा ने प्रकाशित किया है। इसमें आधुनिक पद्धति के अनुसार हर एक कवि का वृत्तान्त बहुत परिश्रम से एकत्रित करके लिखा गया है और ग्रन्थपरीक्षण के अच्छे अच्छे नमूने इसमें देखने योग्य हैं।

१० पण्डित सांवरकर कृत 'माझिनी का चरित्र' अपनी जाति का एक ही अप्रतिम ग्रन्थ है। माझिनी की जीवनी का सच्चा और विश्वास योग्य ब्योरा इसमें दिया है और ग्रन्थ का जन्म मानो समय के अनुकूल ही हुआ है। थोड़े में इटली का माझिनी के समय का चित्र क्या है मानो भारतवर्ष की साम्प्रत दशा का मूर्तिमान् स्वरूप है।

११ एक रा० मण्डलीक की लिखी मुस्तफा कामेल पाशा की जीवनी भी गिनने योग्य है।

१२ नाटकों में 'कीचक बध' नामक महाभारत के उपाख्यान की भूमिका लेकर ऐसा नाटक लिखा गया है जिसमें भारतवर्ष की सद्यः स्थिति का प्रतिबिम्ब उतारा है। नाटक में स्वाधीनता के विचारों को भली तरह स्थान दिया गया है।

१३ स्त्रियों का बलबा-यह एक दूसरा सामाजिक नाटक है।

उपन्यास।

१४ "क्या यही रामकी अयोध्या है"? नामक एक उपन्यास किसी बङ्गाली उपन्यास का अनुवाद है। यह रा० मित्र ने किया है। *

१५ रा० वासुदेव राव आपटे की लिखी हुई मूर्तिमान स्वदेश भक्ति नामक उपन्यास की पुस्तक रायंझी नामक अंगरेजी ग्रन्थ का रूपान्तर है।

१६ राजाराम के राजत्व काल सम्बन्धी उपन्यास में उस समय का चित्र है।

काव्य।

१७ नव कुसुम माला नामक पुस्तक में रा० चिटनवीस कृत स्वदेशप्रेम से भरी कविता का संग्रह हैं।

१८ समालोचना रूप ग्रंथों में भारत नाट्य कला रूक् कुठार नामक पुस्तक में समालोचना करने की पद्धति बिलकुल नई और हृदयग्राहिणी है। ऐसी पद्धति अंगरेजी में भी नहीं है।

भाषा सम्बन्धी ग्रन्थ।

१९ प्रो० रानडे के अंग्रेजी मराठी कोश के समग्र अंक अभी नहीं छपे हैं।

२० प्रो० पाटनकर ने मराठी शब्दों के विभाग नामक भाषाशास्त्र की पुस्तक लिखी है।

२१ उसी प्रकार रा० विद्याधर वामन भिडे ने मराठी शब्दों की व्युत्पत्ति पर ग्रन्थ लिखा है।

२२ रा० चान्दोरकर ने 'आर्यलिपि' नामक पुस्तक लिखी है जिसमें मराठी की मुडिया की उत्पत्ति नागरी अक्षरों से बतलाई है।

ऊपर दी हुई नामावली से मालूम हो जायगा कि मराठी ग्रंथ निर्माणकर्ता लोग बहुधा सब अङ्गों में अपनी मातृभाषा के साहित्य को ग्रन्थरत्नों से विभूषित करने का यत्न कर रहे हैं। क्या कोई हिन्दी साहित्य प्रेमी हिन्दी साहित्य की उन्नति का ऐसा ब्योरा लिख कर हमें धन्य करेगा?

गणपत जानकीराम दुबे, बी० ए०

* इसका हिन्दी अनुवाद भी शीघ्र छप कर प्रकाशित हुआ चाहता है। सं० प०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराज कनिष्क का स्तूप ।

काश्मीराधिपति शकवंशीय महाराज कनिष्क ने महात्मा गौतम बुद्ध के कुछ चिन्हों को बड़ी धूमधाम के साथ बड़ा भारी स्तूप बनवा कर रक्खा था। चीनी यात्रियों ने उस स्तूप को भारतवर्ष भर में सब से वृहत और भव्य लिखा है और उसकी विशालता और सुन्दर रचना का बड़े विस्तार के साथ वर्णन किया है। उन्होंने लिखा हैं कि फाटक के दोनों ओर छोटे छोटे आकार के बहुत से स्तूप बने हुए हैं जिनकी कारीगरी बहुत ही उत्तम है। फाटक से थोड़ा पश्चिम हट कर राजा कनिष्क ही का बनवाया हुआ भारी मठ है जिसमें हजारों बौद्ध सन्यासी दूर दूर देशों से आकर पड़े रहते हैं। यह मठ उस काल में भारतबर्ष में अत्यन्त प्रसिद्ध था।

काल पाकर इस विशाल स्तूप और मठ के सब चिन्ह लुप्त होगए और लोग उसको बिलकुल भूल से गए, यहां तक कि यह भी पता न रह गया कि वह स्तूप किस स्थान पर बना था। इन यात्रियों के लेखों से इतना तो अवश्य मालूम हो सकता था कि वह कनिष्क की राजधानी पुष्पपुर वा पेशावर ही के पास कहीं पर था। पर उसका कोई चिन्ह तब तक न मिला जब तक कि फरासीसी पुरातत्त्ववेत्ता फ़ाउचर ने पेशावर के आस पास के स्थानों का निरीक्षण नहीं किया। कुछ वर्ष हुए कि इस विद्वान ने घूमते घामते पेशावर नगर से पूर्व की ओर खेतों में दो बड़े बड़े टीले देखे। विचार करने पर उन्होंने यही निश्चय किया कि हो न हो कनिष्क के प्रसिद्ध स्तूप येही हैं जो अब बिलकुल जमीन में बैठ गए हैं। दो वर्ष हुए कि सरकारी पुरातत्त्व विभाग ने डाक्टर स्पूनर के निरीक्षण में उस स्थान को खोद कर जांच करना आरंभ किया। प्रथम वर्ष तो इस खोज का कोई आशाजनक फल न दिखाई पड़ा (Archeological Survey, Frontier circle for 1907-08) पर काम बराबर जारी रहा और पार साल जाड़े में इस परिश्रम का पूरा फल आंखों के सामने अकस्मात् उमड़ पड़ा।

उन दोनों टीलों में जो छोटा था उसके भीतर आकर स्पूनर को वह पूरा दबा हुआ स्तूप मिल गया जिसे महाराज कनिष्क ने निर्माण कराया था। यह समचतुर्भुज आकार का है और लम्बाई चौड़ाई में २८५ फीट है। और पूरब की ओर फाटक पर उन बहुत से छोटे छोटे स्तूपों का समूह निकला है जिनका वर्णन चीनी यात्रियों ने किया है। स्तूप की दीवारें अधगढ़े पत्थरों की बनी हैं जिनके बीच बीच में ईटें भी दी गई हैं। यह बात भी नई ही है। क्योंकि इस प्रदेश में जो और इमारतें मिली हैं वे स्लेट पत्थर की दीवार की हैं। इन दीवारों के ऊपर की पच्चीकारी से स्पष्ट प्रगट होता है कि सारा स्तूप बुद्ध की छोटी छोटी प्रतिमाओं से मंडित था। पर सब से अधिक ध्यान देने योग्य स्तूप के चारों कोनों पर के बड़े बड़े बुर्ज हैं जो अब तक इस प्रकार की इमारतों में देखने में नहीं आए थे। हुएन्सांग ने लिखा है कि जब यह स्तूप बनकर तैयार हुआ तब वह इतना ऊंचा था कि उसके ऊपर छत्र वा कलश अच्छी तरह से नहीं बैठाया जा सकता था। इसी लिये चार बुर्ज बना दिए गए जिसपर से पाइट बांध कर छत्र बैठाया गया।

स्तूप के मध्य भाग में खोदते खोदते बहुत नीचे वह कोठरी मिली जिसमें बुद्ध के पवित्र चिन्ह रखे गए थे। उस कोठरी के भीतर एक धातु का डिब्बा मिला जिसके भीतर वह स्फटिक की डिबिया मिली जिसमें बुद्ध का पवित्र चिन्ह रक्खा हुआ था। डिब्बा बेलन के आकार का है जिसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊंचाई सात इंच और व्यास लगभग पांच इंच के है। डिब्बे का ढकना सिरे पर कुछ उठा हुआ है। इस पर एक खिला हुआ कमल बना है जिस पर तीन मूर्त्तियां बीच में भगवान बुद्ध और उनके दोनों पार्श्व में माला लिए हुए हंसों की पंक्ति बनी है। डिब्बे के मध्य भाग के चारों ओर बुद्ध की आसीन मूर्त्तियां खचित हैं और माला लिए हुए कामदेव बने हैं। बीच में महाराज कनिष्क का एक खड़ा चित्र भी है जो उन चित्रों से मेल खा जाता है जो उस राजा के सिक्कों पर पहिले मिल चुके हैं। डिब्बे पर कुछ लेख भी हैं जो उस चित्र को कनिष्क का प्रमाणित करते हैं। ये लेख चार हैं और खरोष्टी लिपि में लिखे हुए हैं। इन में से एक में इस डिब्बे के बनाने वाले कारीगर का हस्ताक्षर है। यह अजिसिलस नामक किसी व्यक्ति का हस्ताक्षर है जो अपने को "निरीक्षक शिल्पकार" लिखता है। यह व्यक्ति यूनानी समझा गया है। एक बात तो इन वस्तुओं से निर्विवाद सिद्ध होती है कि गान्धार की शिल्पविद्या कनिष्क से पहिले ही उन्नति को पहुंची हुई थी।

डिबिया जो डिब्बे में है वह यथार्थ में स्फटिक का एक बड़ा खंड है जिसका एक सिरा खोद कर गहिरा कर दिया गया है। इस में तीन हड्डी के छोटे छोटे टुकड़े परस्पर दृढ़ता से बंधे हुए मिले हैं। इन हड्डियों पर पहिले एक मिट्टी की मुहर चढ़ी हुई थी जिस पर राजचिन्ह स्वरूप एक हाथी अंकित है। यह मुहर अब काल पा कर हड्डियों के ऊपर से अलग हो गई है। कोठरी के पास ही कनिष्क का एक सिक्का भी मिला है। ये हड्डियां गौतम बुद्ध की हैं यह बात हुएंसांग ने स्पष्ट लिखी है।

सभा का कार्यविवरण।

साधारण अधिवेशन।

शनिवार ता० २८ अगस्त १९०९ सन्ध्या के ६ बजे।

स्थान-सभाभवन।

(१) बाबू श्यामसुन्दरदास के प्रस्ताव तथा पण्डित देवीप्रसाद उपाध्याय के अनुमोदन पर राय परमेश्वरी नारायण मेहता बहादुर सभापति चुने गए।

(२) गत अधिवेशन (ता० ३१ जुलाई १९०९) का कार्यविवरण उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ।

(३) निम्न लिखित महाशय नवीन सभासद चुने गए।

(१) पण्डित राधेलाल-हेड् क्लार्क-दफ़्र एक्जेक्यूटिव इञ्जीनियर प्राविंशल डिवीजन-सहारनपुर १॥) (२) बाबू जीवनदास-ठठेरी बाजार-काशी १॥)(३)बाबू रामनारायण लाल श्रीवास्तव क्लार्क-डाकखाना काशी ३)(४)बाबू श्यामसुन्दर गुप्त बोर्डिंग हाउस-गवर्नमेण्ट हाईस्कूल-बरेली ३) (५) बाबू शिवचरन सिंह-चुनार १॥) (६) बाबू बद्रीसिंह जी रईस जमींदार-बहुआ-जिला फतहपुर ३) (७) बाबू भृगुदयालसिंह-कालीमहल बनारस १॥) (८) पण्डित गिरधारीलाल मिश्र औरैया-जि० इटावा ३) (९)बाबू वंशीधर, ४ फेन्सीलेन, कलकत्ता ३) (१०) पण्डित वृजभूषण ओझा, तीहा महम्मदपुर-पो० बड़हलगंज-जि० गोरखपुर १॥) (११) पण्डित माधव प्रसाद वाजपेयी-मौजा पटना पो० रेरवा कटरा जि० इटावा १॥) (१२) बाबू महादेव प्रसाद साहेब, गोरखपुर बंक लिमिटेड-गोरखपुर ३) (१४)पण्डित शिवप्रसाद अग्निहोत्री-पो० मल्लापुर जि० सीतापुर ३) (१५) बाबू जगन्नाथ झुझनू वाले-आनररी मजिस्ट्रेट रानीगंज ई० आई० रेलवे ३) (१६) पं० दामोदरदास मिश्र सेक्रेटरी म्युनिसिपल बोर्ड-हरद्वार ३) (१७) बाबू अक्षयवर प्रसाद रईस-महुअवा-पो० काजीपुर-जि० गोरखपुर ३)(१८) पण्डित गुरुसेवक उपाध्याय डिपटी कलेक्टर-गोरखपुर ३) (१९) बाबू शिवबालकसिंह सोमवंशी-हेडमास्टर-तहसीली स्कूल कसपा-जि० गोरखपुर ३) (२०) पण्डित सरयूप्रसाद मिश्र मौजा गरुल पार-पो० देवरिया-जि० गोरखपुर १॥) (२१) पण्डित गौरीप्रसाद वकील-देवरिया जि० गोरखपुर १॥) (२२) पण्डित बालमुकुन्द पाण्डे-देवरिया-जि० गोरखपुर ३) (२३) पण्डित रघुनन्दन प्रसाद शर्मा-सब डिविजनल क्लार्क-देवरिया-जि० गोरखपुर ३) (२४) बाबू [illegible] चौखम्भा काशी ३)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(४) सभासद होने के लिये ६ सज्जनों के नवीन आवेदन पत्र सूचनार्थ उपस्थित किए गए।

(५) निम्न लिखित सभासदों के इस्तीफे उपस्थित किए गए और स्वीकृत हुए।

(१) पण्डित नारायण शास्त्री परवणीकर-हवामहल के सामने, जयपुर (२) कुंवर बलदेवसिंह-अहलकार-छत्रपुर (३) लाला मदनगोपाल राजवैद्य-छत्रपुर, (४) बाबू रामलाल पेंशनर-अलीगढ़।

(६) निम्न लिखित पुस्तके धन्यवाद पूर्वक स्वीकृत हुईं

(१) पण्डित दामोदर प्रसाद शर्म्मा सीतला-पाइसा मथुरा, तीर्थ दर्पण पण्डा अर्पण। (२) पुरोहित राम प्रसाद सत्याल-नं० ७० दूध विनायक काशी, किरण शशी (३) पण्डित रामनारायण डूंगर--उदयपुर, राजस्थान रत्नाकर भाग १ तरङ्ग १ (४) डाक्टर जी० ए० ग्रियर्सन पी०एच० डी०, सी० आई० ई० इंगलैण्ड, Gleanings from the Bhaktamala (५) पण्डित श्रीकन्त पाठक-शंकरगढ़, पार्वती ३ प्रति। (६) मिस्टर करीम महम्मद-एलफिन्स्टन हाईस्कूल बम्बई, गुजराती कविता। (७) गवर्नमेण्ट आफ़ इण्डिया Lingiustic Survey of India Vol III Part I

(८) खरीदी गईं-टाड राजस्थान संख्या १२, माधवी माधव, हरिसिंह नलवह, बहु विद्याप्रकाश, काला चन्दा वा सौतेली मां, रणवीर तीसरा हिस्सा, बनविहंगिनी, मुगल सम्राज्य-बाबर, पुनर्जन्म वा सौतिया दाह, त्रिवेणी वा सौभाग्य श्रेणी, प्रभातकुमारी, नूरजहां बेगम वा जहांगीर, कलावती, रमा वा पिशाचपुरी, बनारसी दुपट्टा वा गुलरु जरीना, पतित पती वा भयंकर भूल, गुप्तरहस्य, शूर शिरोमणि और बृहत चरित्र।

Discriptive Catalogue of Sanskrit Mss in the library of the Calcutta Sanskrit College.

The Cause and prevention of the spread of plague in India.

Indian Antiquary for April, May and June 1909

(७) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

---o---

आय व्यय का हिसाब।

(अगस्त १९०९)

आय	धन की संख्या		
गत मास की बचत	३८३५	१	४
सभासदों का चन्दा	१३७	८	०
पुस्तकालय का चन्दा	५०	८	०
पुस्तकों की बिक्री	४७	८	०
हिन्दी कोश	१५३	०	१०
नागरीप्रचार	६	८	०
पृथ्वीराजरासो	१५७	८	६
श्रीमान् राजा साहब भिनगा की विशेष सहायता	५०	०	०
स्थायी कोश	८	०	०
जोड़	४४४५	११	८

व्यय	धन की संख्या		
आफ़िस के कार्यकर्ताओं का वेतन	५८	१३	६
नागरी प्रचार	२२	५	०
डांक व्यय	३७	०	०
पुस्तकालय	२६	८	३
हिंदी पुस्तकों की खोज	५४	७	३
फुटकर व्यय	१७	८	१०½
हिन्दी कोश	४८२	१२	०
स्थायी कोश	६०	०	०
	७७०	७	१०½
बचत	३६७५	३	९½
जोड़	४४४५	११	८

रोकड़ सभा	१७४≡)११½
बनारस बंक (कोश विभाग)	४३६१॥-)७
	४५३५॥-)६½
बंक का देना	८६०॥-)॥।
	३६७५≡)९½

देना ६००)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभा के पारितोषिकों की सूची।

(१) इस वर्ष के सभा के नियमित दो मेडलों के लिये निम्न लिखित विषय नियत हैं। ये लेख ३१ दिसम्बर १९०९ तक सभा में आजाने चाहिएं।

वैज्ञानिक विषय।

प्राकृतिक अवस्था का उत्तर भारत के सामाजिक जीवन पर प्रभाव।

सधारण (विद्या) विषय।

अकबर के पूर्व हिन्दी की अवस्था।

(२) डाक्टर छन्नूलाल मेमोरियल मेडल-यह सोने का मेडल उस व्यक्ति को दिया जायगा जिसका लेख "स्त्रियों के रोग" पर सब से उत्तम होगा। लेख सरल हिन्दी में होना चाहिए और सभा के पास ३१ दिसम्बर १९०९ तक आजाना चाहिए।

(३) ५००) का पुरस्कार–सभा द्वारा निश्चित अनुक्रमणिका के आधार पर जो हिन्दी का सब से उत्तम व्याकरण लिखेगा उसे यह पुरस्कार दिया जायगा। व्याकरण ३१ दिसम्बर १९०९ तक सभा के पास आजाना चाहिए। यदि कई व्याकरणों के भिन्न भिन्न अंश उत्तम समझे जांयगे तो यह पुरस्कार उन सब लोगों में बाँट दिया जायगा और उन ग्रन्थों को घटाने बढ़ाने आदि का इस सभा को पूरा अधिकार होगा। सभा द्वारा निश्चित अनुक्रमणिका दो पैसे का टिकट डाकव्यय के लिये भेजने पर सभा के मंत्री से मिल सकती है।

ममीरे का सुरमा।

एसिस्टण्ट केमिकल एक्जामिनर साहब गवरमेण्ट पञ्जाब द्वारा परीक्षित व प्रमाणित हो चुका है। माननीय अंग्रेजी मेडिकल कालिज के अफ़सर डाक्टरों राजों महाराजों विलायत की युनिवरसिटी से सनद पाए डाक्टरों ने परीक्षा करके इस अञ्जन की सचाई प्रकट की है और बताया है कि नेत्र रोगों के लिये यह सुरमा अकसीर गुण रखता है। दृष्टि की कमजोरी, आखों का अन्धशून्य, जाला, पड़वाल, गुबार, फुंसी, आंखों से पानी का बहना, आंखों की लाली मोतियाबिन्द की प्रथम अवस्था, खाज, खुजली इत्यादि।

माननीय डाक्टर और हकीम आंख के रोगियों को जो उनके पास आते हैं यह सुरमा देते हैं। चार दिन के लगाने से आंखों की दृष्टि ठीक हो जाती है। बालक से लेकर बूढ़े तक के लिये यह अञ्जन एक समान लाभदायक है। मूल्य इस कारण कम रक्खा गया है कि धनाढ्य और दीन दोनों इससे लाभ उठा सकें। मूल्य एक तोला का जो एक वर्ष के लिये बहुत है २) दो रुपया है। ममीरे का सच्चा सुरमा जो बहुत उत्तम ३) तीन रुपये तोला। एक खालिस ममीरा एक माशा २०) है। डाक का खर्च ग्राहक के जिम्मे। पत्र भेजने के समय अखबार का नाम लिखो। पता-प्रोफेसर मायासिंह अहलवालिया-मुकाम-बटाला जिला गुरदासपुर-पञ्जाब।

संतबानी पुस्तकमाला

अर्थात् प्राचीन महात्माओं की दुर्लभ बानी का जो गुप्त होती जाती हैं जीर्णोद्धार मय उनके जीवन-चरित्र के

कबीर सा०, तुलसी सा०, पलटू सा०
जगजीवन सा०, रैदासजी, चरनदास जी
दरिया सा०, दयाबाई, सहजोबाई, इत्यादि।

बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद से इश्तिहार मँगा कर देखिये।

Printed by Madho Prasad at the Bharat Press, Benares, for B. Gauri Shankar Prasad Publisher.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक।
रामचन्द्र शुक्ल।

Registered No A 414

नागरीप्रचारिणी पत्रिका।

[मासिक पत्रिका]

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल। बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल॥
करहु बिलंब न भ्रात अब, उठहु मिटावहु सूल। निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जु सब को मूल॥
विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार। सब देशन सों लै करहु, भाषा माँहि प्रचार॥
प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि यत्न। राज काज दर्बार में, फैलावहु यह रत्न॥ हरिश्चन्द्र।

भाग १४ | १५ अक्तूबर १९०९। | संख्या २

सूचना और सम्मति।

लखनऊ के नए अरबी महाविद्यालय नदवतुल उलमा में संस्कृत और हिन्दी के भी दरजे खोले गए हैं। बहुत से मुसलमान लड़के हिन्दी सीख रहे हैं। सुनते हैं कि आर्य्यसमाजी ग्रन्थों को पढ़कर उनका खंडन करने की इच्छा से ही उन्होंने हिन्दी में मन लगाया है। खैर; किसी निमित्त हो ये हिन्दी पढ़ें तो।

——:o:——

बंगाल के लोगों ने २७ जून को हिन्दू और मुसलमानों के बीच मेल बढ़ाने के लिए एक सभा की थी। इस सभा ने एक कमेटी इस अभिप्राय से बनाई कि वह बँगला के उन नाटकों और पुस्तकों की जाँच करे जिनमें मुसलमानों का अपमान है, और जहाँ तक हो सके उनका प्रकाशित होना और खेला जाना रोके। ४ जूलाई को जो कमेटी बैठी थी उसमें यह मन्तव्य स्थिर हुआ—यह कमेटी प्रधान हिन्दू नेताओं से प्रार्थना करती है कि वे कमेटी को इन उद्देश्यों के पूरा करने में सहायता दें। मिस्टर··रसूल ने जो इस कमेटी के सभापति थे, एक खुली चिट्ठी में प्रधान नेताओं से प्रार्थना की है कि "आप लोग बंगाली लेखकों तथा नाटकमंडलियों पर इस विषय में अपना प्रभाव डालें"। हमारी समझ में तो जो पुस्तकें बन चुकी हैं उनका प्रकाशन वा अभिनय रोकना ठीक नहीं। हाँ अब से ऐसा प्रबंध किया जाय कि इस ढंग की पुस्तकें न बनें। इस भाव को परस्पर बनाए रखने के लिए दोनों पक्षों को बराबर उद्योग करना चाहिए। उर्दू में बहुत से उपन्यास हैं जो हिन्दुओं को अपमानित करने के अभिप्राय से लिखे गए हैं। उन पर भी मेल चाहने वाले मुसलमान सज्जनों का ध्यान जाना चाहिए।

——

भारतीय सरकार ने प्रचीन भाषाओं के अध्ययन के लिए छात्रवृत्तियाँ नियत की हैं। लाहौर गवर्न्मेंट कालेज के संस्कृताध्यपक पंडित प्रभुदत्त शास्त्री को २२५०) की वार्षिक वृत्ति मिली है। वे कुछ दिन आक्सफर्ड और कुछ दिन जरमनी में रह कर संस्कृत-भाषा-तत्त्व का अध्ययन करेंगे। इसी प्रकार एक मुसलमान अध्यापक को भी अरबी की लियाकत बढ़ाने के लिए यह वृत्ति मिली है। क्या देशी भाषाओं के लिए सरकार कुछ नहीं कर सकती?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनते हैं कि आनरेबल पंडित मदनमोहन मालवीय प्रयाग से एक अंग्रेजी दैनिक पत्र निकालने का उद्योग कर रहे हैं। गत संख्या में हम एक हिन्दी दैनिक पत्र की आवश्यकता के विषय में लिख चुके हैं। काशी नागरीप्रचारिणी सभा के गृहप्रवेशोत्सव के समय उक्त पंडित जी ने बड़े ज़ोर के साथ अपनी वक्तृता में कहा था कि एक लाख की पूंजी से हिन्दी में एक दैनिक पत्र का निकालना कोई बड़ी बात नहीं है। हम पंडितजी से प्रार्थना करते हैं कि वे अब इस बात को सम्भव कर दिखावें। हिन्दी में एक भी दैनिक पत्र का न होना मालवीय जी ऐसे हिन्दी हितैषी को खटकना चाहिए।

——:o:——

गोरखपुर में कुछ विचारशील सज्जनों के प्रयत्न से एक नागरीप्रचारिणी सभा स्थापित है। दुःख के साथ कहना पड़ता है कि गोरखपुरवासियों का इस सभा की ओर कुछ भी ध्यान नहीं है। यह कोई आश्चर्य्य की बात नहीं है। गोरखपुर, बस्ती आदि संयुक्त प्रदेश के उन ज़िलों में से हैं जो शिक्षा में बहुत पीछे हैं। जहां दरख़ास्त लिखना और सम्मन पढ़ना ही विद्या की परमावधि समझी जाती है वहां के लोगों के चित्त में कैसे कोई उपयोगी बात जल्दी धँस सकती है? अभी २२ अगस्त की बात है कि इस सभा का एक विशेष अधिवेशन वकीलों से चन्दा करने के लिये हुआ था। पर दो चार को छोड़ और कोई वकील नहीं आया। चन्दा भी बहुत थोड़ा हुआ। सभा का एक पुस्तकालय भी है, पर सहायकों के अभाव से उसमें पुस्तकों की संख्या बहुत कम है। सभा ने ग्रन्थ प्रणेताओं और प्रकाशकों से प्रार्थना की है कि वे अपनी रचित और प्रकाशित पुस्तकों की एक एक प्रति दान करें। हम भी इस दान के लिये ग्रन्थकारों और प्रकाशकों से बहुत ही विनय के साथ प्रार्थना करते हैं क्योंकि अभी तक हिन्दी के प्रचार का सब से सुगम उपाय जो हमलोगों के हाथ में है वह पुस्तकालयों का स्थापन है।

——:o:——

सभासदों को तो यह विदित ही होगा कि बनारस की दीवानी और कलक्टरी अदालतों में नागरी अक्षरों में दरख़ास्त लिखने के लिये सभा की ओर से मोहर्रिर नियत हैं। अगस्त मास में दीवानी अदालत के मोहर्रिर ने १११ दरखास्तें और कलक्टरी के मोहरिर ने १०९ दरखास्तें नागरी अक्षरों में लिखीं।

——o——

सभा के कोश के लिये सितम्बर मास में निम्न लिखित सहायता और प्राप्त हुई है।

राय कृष्णचन्द काशी ५००)
राय कृष्णदास गुप्त काशी २५०)
बा० बंशीधर वैश्य, बुलंदशहर १००) प्राप्त
एक मित्र १५) प्राप्त

पिछले लिखे चन्दों में से १०००) रु० संयुक्त प्रदेश की गवर्न्मेंट का प्राप्त हुआ है। अतएव अब तक २१३४७) रु० का चन्दा लिखा गया है जिसमें से १२७०१)। प्राप्त हो चुका है।

शब्द संग्रह का काम समाप्तप्राय है। अक्तूबर के मध्य से शब्दों का अक्षर क्रम ठीक किया जायगा।

——:o:——

महाराष्ट्र साहित्य सम्मेलन।

इस बात की सूचना पहिले हो चुकी है कि महाराष्ट्र साहित्य सम्मेलन दसहरे के दिनों में (अर्थात् २३, २४ और २५ अक्तूबर को) बड़ौदे में बैठेगा। महाराज साहब गायकवाड़ से ग्रन्थकारों को जो उत्तेजना और सहायता मिलती है उसके कारण बड़ौदा आज कल विद्यासम्बन्धी चर्चा का केन्द्र बन रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

और और निश्चित विषयों के सिवाय तीसरा दिन समग्र देश से सम्बन्ध रखने वाली बातों की चर्चा के लिये रक्खा गया है, जैसे हिन्दी के राष्ट्र भाषा बनाना, नागरी अक्षरों का देशव्यापक व्यवहार, शिक्षा सम्बन्धी आवश्यकताएं। (महाराष्ट्र ग्रन्थकारों के अतिरिक्त) बंगाल, संयुक्त प्रदेश, पंजाब, गुजरात तथा और और प्रान्तों से भी प्रतिनिधि आमंत्रित किए जांयगे।

कार्य्य का समय इस प्रकार होगा—

२३ अक्तूबर, शनिवार—सबेरे ८ बजे से ११ बजे तक। फिर ३ बजे से ६ बजे तक।

२४ अक्तूबर, रविवार—सबेरे ८ बजे से ११ बजे तक। दूसरे वक्त दसहरे की सवारी निकलने के कारण बैठक न होगी।

२५ अक्तूबर, सोमवार—सबेरे ८ बजे से ११ बजे तक। फिर ३ बजे से ६ बजे तक।

विषय।

(१) सभापति का व्याख्यान।
(२) मराठी भाषा का यूनिवर्सिटी में समावेश।
(३) पुराने ऐतिहासिक तथा और और विषयों के हस्तलिखित ग्रंथों की रक्षा और उनका प्रकाशन।
(४) सामाजिक अवस्था पर मराठी का प्रभाव।
(५) एक अंग्रेजी-मराठी कोश की आवश्यकता।
(६) समयानुसार और और निबन्ध।
(७) देवनागरी अक्षरों का देशव्यापक व्यवहार।
(८) हिन्दी राष्ट्र भाषा।
(९) देशी भाषाओं के द्वारा शिक्षा।

सब लोग जिन्हें मराठी से रुचि है इस सम्मेलन में आसकते हैं। उनसे सविनय निवेदन है कि वे लेख और प्रबन्ध भी इस अवसर पर भेजें जो कि धन्यवादपूर्वक स्वीकार किए जांयगे।

और जो बात बीच में होगी उनकी सूचना मिलती रहेगी।

अनन्त नारायण दातार
बड़ौदा — विट्ठल दादाजी सतघड़े
१६ अगस्त १९०९ — गोविंद सखाराम सरदेसाई
सेक्रेटरी।

चिट्ठी पत्री जी० एस० सरदेसाई प्रिंसेज़ स्कूल, बड़ौदा-के नाम भेजनी चाहिए।

बुद्धदेव की हड्डियां।

पेशावर के पास जो बुद्धदेव की हड्डियां निकली हैं उनका संक्षिप्त विवरण हम पिछले अंक में दे चुके हैं। अब झगड़ा इस बात का है कि ये हड्डियां कहां रक्खी जांय। चीन,जापान आदि सभी बौद्ध देश इन्हें मांग रहे हैं। सरकार ने अभी तक कुछ भी निश्चित नहीं किया है। न जाने वह किस सोच विचार में पड़ी है। बुद्ध भगवान ने इसी भारतवर्ष में जन्म लिया था अतः उनकी निशानी को रखने का अधिकार जितना इस भूमि को है, उतना और किसी को नहीं। क्या हुआ जो हिन्दू लोग आज उनके मत को नहीं मानते, वे अपने दूसरे नौ अवतारों के साथ उनका भी नित्य उठ कर जयजयकार मनाते हैं। किसी दशा में हम भारतवासी उनको भूलना नहीं चाहते। यद्यपि हमारा जीवन जड़ और स्तब्ध हो रहा है तौ भी अपने पूज्य अवतार की निशानी को अपनी आंखों के सामने से हटते देख हमारे हृदय पर कहां तक चोट न पहुंचेगी?

पंजाब की हिन्दू सभा ने इन हड्डियों को भारतवर्ष ही में रखने के लिये गवर्न्मेंट से प्रार्थना की है। दिल्ली के डिस्ट्रिक्ट एसोसियेशन ने सभा करके ५००) पेशावर में मन्दिर बनाने के लिए जमा भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर दिए। पुर्निया, और भागलपुर के लोगों ने भी प्रार्थना पत्र भेजे हैं। कलकत्ते के ब्रिटिश इंडियन एसोसियेशन ने भी भारतीय सरकार से पत्र द्वारा प्रार्थना की है कि वह शीघ्र इन हड्डियों को भारतवर्ष के किसी मन्दिर में स्थापित करदे। २१ सितम्बर को सन्ध्या के समय पूना वालों ने भी एक बड़ी भारी सभा करके यह मन्तव्य प्रकाशित किया—

"बौद्ध धर्म्म के संस्थापक श्री गौतम बुद्ध की हड्डियां जो हाल में पेशावर में मिली हैं हिन्दुस्तान के बाहर न भेजी जाकर बुद्ध गया में रक्खी जांय"।

बौद्ध धर्म्म को मानने वाली मिस सोफ़िया एगारस नाम की एक रूसी स्त्री ने भी बड़े लाट को इस विषय में एक ज़ोरदार पत्र लिखा है। उसने लिखा है—" बुद्ध देव की अस्थि भारतवर्ष से बाहर न जानी चाहिए। बौद्ध धर्म्म से मुझे पूरी जानकारी है। इसी से कहती हूं कि बुद्धदेव की जन्मभूमि भारतवर्ष में अस्थि की प्रतिष्ठा होने से समस्त बौद्ध प्रसन्न होंगे।"

भिन्न भिन्न देश में रहने वाले बौद्धों को भी इन हड्डियों के भारतवर्ष में स्थापित होने से प्रसन्न ही होना चाहिए। भारतवर्ष उनके आराध्य देव की जन्मभूमि और लीलाभूमि होने के कारण उनका तीर्थ है। फिर क्यों न बुद्ध देव का एक चिन्ह स्थापित कर उस तीर्थ की महिमा और भी बढ़ाई जाय। इस सम्बन्ध में सीलोन (लंका) के बौद्धों ने जो उदारता और धर्म्मनिष्ठा दिखलाई है वह प्रशंसनीय है। हाल ही में कोलम्बो नगर में इन हड्डियों के विषय में विचार करने के लिए बौद्ध धर्म्मावलम्बियों की एक बड़ी सभा हुई थी। बौद्धों के महागुरु सुमंगलाचार्य सभापति थे। कलकत्ते के सुप्रसिद्ध प्रोफेसर सतीशचन्द्र विद्याभूषण भी संयोगवश उपस्थित थे। बहुत देर तक तो यही विचार होता रहा कि ये हड्डियां बुद्धदेव की हैं या नहीं।

सभापति ने पूछा--भ्राता ज्ञानेश्वर बताएं कि ये हड्डियां गांधार में कैसे पहुंचीं।

ज्ञानेश्वर -महामान्य! हमारे प्रभु बुद्धदेव ने २४५२ वर्ष हुए कि भारत के कुशीनार स्थान में एक साल वृक्ष के नीचे अपना मानुषी शरीर छोड़ा था। अन्त्येष्टि क्रिया के पीछे शव से चार दांत और चार हड्डियां निकाल ली गई थीं। उनमें से सात तो सात देशों को बांट दी गईं और आठवीं नागा लोग ले गए। २५० वर्ष बाद महाराज अशोक ने फिर इन सातों अस्थियों को एकत्रित करके उनकी अलग अलग प्रतिष्ठा की और मन्दिर बनवाए। पेशावर के पास जिस प्राचीन मन्दिर में ये हड्डियां मिली हैं वह अवश्य उन्हीं मन्दिरों में से एक है।

इस पर प्रोफेसर सतीशचन्द्र विद्याभूषण ने कहा कि हुएन्सांग के अनुसार यह पेशावर का मन्दिर महाराज कनिष्क का बनवाया हुआ है। अन्त में सभापति ने फैसला किया कि अस्थियां वास्तव में बुद्धदेव की हैं और उनका आदर करना चाहिए।

यह सब हो चुकने पर सभापति ने पूछा—अब और कोई प्रश्न बाकी है।

धर्म्मपाल—हां महाराज। अस्थि कहां प्रतिष्ठित हों।

सभापति—मांगनेवाले कितने हैं।

धर्म्मपाल—१६, और हड्डियां ४ ही हैं।

देवमित्र—मनुष्यों में सामर्थ्य नहीं कि वह हमारे प्रभु की अस्थि को काट छांट कर विभक्त कर सके।

स्वर्णज्योति—चारों हड्डियां भारतवर्ष ही में प्रतिष्ठित हों तो कैसा?

ज्ञानेश्वर—महामान्य इस संसार में काशी और बुद्ध-गया के अतिरिक्त सब स्थान परिवर्त्तनशील हैं। समस्त संसार के बौद्धों को अपने जीवन में एक बार काशी और गया की यात्रा करनी चाहिए। इससे इन्हीं स्थानों में से किसी में प्रतिष्ठा होनी अच्छी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्म्मपाल—गया में ज़मीन नहीं मिलती।

सभापति—तब काशी में स्थापना हो।

मुनीसिंह—यदि भारत की सरकार आपकी राय न माने वा अन्य बौद्ध देश आपत्ति करें तो?

सभापति—ऐसी दशा में अस्थि का वह भाग जो लंका को मिलेगा वही काशी में स्थापित किया जाय, यही मेरी आज्ञा है।

सब ने खड़े होकर महागुरु की यह आज्ञा स्वीकार की।

———:o:———

उत्तरी ध्रुव।

उत्तरी ध्रुव का पता लगाने के लिये समय समय पर कितने ही साहसी यूरोपियन जा चुके हैं। पर अब तक यह किसी ने नहीं कहा था कि ठीक ध्रुव तक पहुंचे हैं। अब डाक्टर कुक और कमांडर पीरी नामक दो अमेरिकन लौट कर आए हैं जो कहते हैं कि हम ठीक ध्रुव तक हो आए। इनमें से कमांडर पीरी का नाम तो इस सम्बन्ध में पहिले भी सुना गया है पर डाक्टर कुक से लोग उतने परिचित नहीं हैं। डाकृर कुक बहुत दिनों से ध्रुव यात्रा की चेष्टा में लगे थे। अन्त में डेनमार्क की सरकार ने उन्हें उत्तरी ध्रुव का पता लगाने के लिये भेजा। पहिली सितम्बर को डेनमार्क की राजधानी कोपनहेजिन से समाचार मिला कि डाकृर कुक उत्तरी ध्रुव का पता लगा कर आ गए। उन्होंने अपनी यात्रा का विवरण २ सितम्बर के न्यूयार्क हेराल्ड (पैरिस संस्करण) में प्रकाशित कराया। यह विवरण संक्षिप्त रूप से हिन्दी पत्रों में भी निकल चुका है। उसमें कोई अधिक विशेषता नहीं। वही बर्फ़ के मैदान और पहाड़, कुहिरे का अन्धकार, छः महीने की मनहूस रात, उसमें भी है। डाकृर कुक लिखते हैं कि २१ अप्रैल को मैं ठीक ध्रुव पर पहुंच गया। वहां जो देखा तो उत्तर, पूर्व, और पश्चिम दिशाओं का कुछ भी पता नहीं था। कम्पास की सूई हर एक ओर दक्षिण दिशा बता रही थी। किसी जीव जन्तु का चिन्ह भी नहीं था। गहिरा सन्नाटा छाया हुआ था।

इसके उपरान्त कमांडर पीरी, जो अमेरिकन सरकार की ओर से ध्रुव का पता लगाने के लिये भेजे गए थे, अपनी यात्रा से लौटकर आए और कहने लगे कि कुक ध्रुव तक कभी नहीं पहुंचे, ध्रुव तक पहुंचा हूं मैं। इन्होंने यहीं तक बस न किया वरन कहा कि डाकृर कुक ने हमारे कुछ एस्किमो लोगों को अधिक रुपया देकर, अपनी तरफ़ बहँका लिया। पीछे से मालूम हुआ कि पीरी इससे कहीं बढ़कर अपराधों का स्वयं दोषी है। उसने डाकृर कुक की रसद को उठवा लिया जो जाड़े के ख़र्च के लिये एक जगह जमा थी और इस प्रकार डाकृर साहब और उनके साथियों को उन बर्फ़ीले निर्जन मैदानों में भूखों मारने का सामान किया। एक उदारता और सुनिए। लौटती वार डाकृर कुक ने अपने यात्रा विषयक कागज पत्र अमेरिका के मिस्टर ह्विटने के हवाले कर दिए थे। मिस्टर ह्विटने पीरी के जहाज़ पर चढ़कर लैब्रे-डोर में खाली हाथ आए और कहने लगे कि हम वे सब काग़ज़ ग्रीनलैंड के एटा नामक स्थान में छोड़ आए हैं क्योंकि पीरी ने डाकृर कुक की वस्तु अपने जहाज़ पर लेना अस्वीकार किया। ये बातें पीरी की इर्षा प्रगट करने वाली और उसके कथन की सारता में सन्देह उत्पन्न कराने वाली हैं।

———:o:———

हेली का पुच्छल तारा।

१९१० अप्रैल और मई महीनों में जिस पुच्छल तारे के दिखाई देने की विलायती ज्योतिषियों ने भविष्यद्वाणी की है उसे हेली का पुच्छल तारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहते हैं। लोग जानते हैं कि पुच्छल तारों की सामयिक गति आदि का कुछ ठीक नहीं रहता। हेली नामक एक अंग्रेज़ ज्योतिषी ने पहिले पहिल उस तारे की गति और उसके दृश्यकाल आदि को निश्चित किया इसीसे इसका नाम "हेली का पुच्छल तारा" पड़ गया।

एडमंड हेली का जन्म लंडन नगर में हुआ था। उसका बाप एक धनी साबुन बनाने वाला था। हेली को गणित और ज्योतिष की ओर आरंभ ही से रुचि थी। उसने अपने पिता की आर्थिक सहायता से इन विद्याओं में अच्छा अभ्यास किया और ग्रहमार्गों के निर्णय का एक नया ढंग निकाला। उन्हीं दिनों में न्यूटन ने अपने प्रसिद्ध आकर्षण सिद्धान्त से यूरप के लोगों में खलबली डाल रक्खी थी। हेली ने यही देखने के लिये कि सब ग्रहपिंडों के विषय में न्यूटन का सिद्धान्त ठीक उतरता है कि नहीं २४ पुच्छल तारों की गति आदि की जांच कर डाली। इन्हीं २४ में से वे तीन तारे थे जो २४ अगस्त १५३१, १६ अक्तूबर १६०७ और २४ सितम्बर १६८२ को दिखाई पड़े थे। इन तारों में परस्पर कई बातों में समानता देख कर हेली ने निश्चित कर लिया कि हो न हो ये तीनों तारे एक ही हैं। इस प्रकार स्थूल रूप से इनके दृश्य काल का अन्तर निकल आया। हेली ने समझ लिया कि कालक्रम में जो थोड़ा सा फ़र्क़ पड़ जाता है वह मंगल और वृहस्पति आदि ग्रहों के गड़बड़ डालने से होता है। मंगल और वृहस्पति स्वयं एक दूसरे की गति में गड़बड़ डाल देते हैं जिस से उनका उदय काल ठीक नियमित नहीं रहने पाता, दो एक दिन का गड़बड़ पड़ ही जाता है। बहुत मन्द गति से गमन करने वाले पिंडों (जैसे पुच्छल तारे) पर तो इस गड़बड़ का और भी अधिक असर पड़ता है। इन सब बातों को बिचार कर हेली ने अपनी प्रसिद्ध भविष्यद्वाणी की कि वह पुच्छल तारा १७५८ में फिर दिखाई पड़ेगा। हेली तो अपनी इस भविष्यद्वाणी के पूरा होने के पहिले ही मर गया पर क्लिनाल्ट आदि फ़रासीसी ज्योतिषियों ने नक्षत्रों की बाधा आदि का पूरा हिसाब करके बताया कि वह पुच्छल तारा सन् १७५९ में १३ अप्रैल के इधर उधर रविनीच में अर्थात् सूर्य्य के निकट आवेगा। सचमुच उसी साल १२ मार्च को यह तारा दिखाई पड़ा। इसके उपरान्त फिर अपने ७५-७६ वर्ष के नियमित क्रम के अनुसार यह सन् १८३५ में २३ सितम्बर को खाली आंखों से देखा गया और २४ सितम्बर को उसकी पूंछ दिखाई पड़ी।

१८६४ में पाण्टीकोलेण्ट ने सूचित किया कि यह तारा २४ मई सन् १९१० में फिर सूर्य्य मंडल के निकट आवेगा। क्रामलिन और कावेल नामक विद्वानों ने इसका समर्थन किया और बड़े परिश्रम से इस विषय की छान बीन की जिसका विवरण अस्ट्रानामिकल सोसाइटी की नोटिसों में मिलेगा। इन महाशयों ने हाईड के मत को भी पुष्ट किया जिसने ऐतिहासिक आधारों पर ११ ई० पूर्व उसका उदय होना बतलाया था। ये लोग अपनी छानबीन को और भी प्राचीन काल तक ले गए और इन्होंने बतलाया कि यह तारा अपने नियमित क्रम के अनुसार ईसा से ८७ वर्ष पूर्व भी दिखाई पड़ा था जिसकी चर्चा चीनी इतिहासों में इस प्रकार है—"हाडयून के (राजत्वकाल के) दूसरे वर्ष, सातवें महीने में एक पुच्छल तारा पूर्व दिशा में दिखाई पड़ा"। इन दोनों ज्योतिषियों ने १९१० के विषय में कहा है कि यह तारा वर्ष के आरम्भ में सन्ध्या के समय साधारण तारे के समान दिखाई पड़ेगा। मार्च में वह फिर ग़ायब हो जायगा। १२ मई को वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे और सूर्य के बीच से होकर ७००५००० मील की दूरी पर से गमन करेगा और दो एक सप्ताह तक चमकता हुआ दिखाई देगा।

—:o:——

सभा का कार्य्यविवरण।

प्रबन्धकारिणी सभा।

सोमवार ता० १३ सितम्बर १९०९ सन्ध्या के ६ बजे।

स्थान-सभाभवन।

उपस्थित।

बाबू श्यामसुन्दरदास बी० ए० सभापति। बाबू गौरीशंकर प्रसाद बी० ए० एलएल० बी०। पण्डित माधवप्रसाद पाठक। पण्डित सुरेन्द्रनारायण शर्म्मा। पण्डित कृष्णाराम मेहता बी० ए० एलएल० बी०। पण्डित केशव देव शास्त्री। बाबू गोपालदास।

(१) तारीख २६ और २७ जुलाई १९०९ के कार्यविवरण पढ़े गए और स्वीकृत हुए।

(२) आज के अधिवेशन के कार्य्य के सम्बन्ध में पण्डित रामनारायण मिश्र का पत्र उपस्थित किया गया।

(३) संयुक्त प्रदेश की गवर्न्मेण्ट के आवपाशी विभाग का पत्र नं० $\frac{७०९३१}{८५ बी ५}$ उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि आधुनिक नियमानुसार गांव के पटवारी की खतौनी वहां की प्रचलित भाषा में लिखी जाती है। और यह खतौनी आवपाशी का महसूल देने वाला प्रत्येक मनुष्य देख सकता है। अतः नागरी अक्षरों में इस विभाग के सब कागज लिखे जाने के विषय में सभा की प्रार्थना एक अंश में पूरी हो जाती है।

निश्चय हुआ कि यह पत्र फाइल किया जाय।

(४) बनारस के कमिश्नर का १४ अगस्त का पत्र सूचनार्थ उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने भारत की गवर्नमेण्ट के होम डिपार्टमेण्ट के १४ जुलाई १९०९ के पत्र नं० १९८० की नकल भेजी थी जिसमें हिन्दी कोश के लिये सभा के बीस हजार रुपया एकत्र कर लेने पर उक्त गवर्नमेण्ट ने सभा को इसके लिये इम्पीरियल फण्ड से ३०००) रु० की सहायता देनी स्वीकार की थी।

(५) संयुक्त प्रदेश की हिन्दी हस्तलिपि परीक्षा के विषय में सब-कमेटी की रिपोर्ट उपस्थित की गई।

निश्चय हुआ कि सब-कमेटी की सम्मति के अनुसार निम्न लिखित बालकों को पारितोषिक और प्रशंसा पत्र दिए जांय।

मिडिल विभाग।

१ तुलसीराम-कक्षा ६ पाठशाला दातागंज जि० बदायूं ५)। २ शिवप्रसाद-कक्षा ६ तहसीली स्कूल कानपुर ४)। ३ खानचन्द-कक्षा ६ पाठशाला जहांगीराबाद जिला बुलंदशहर ३)।

४ शिवरामसिंह-कक्षा ६-टौन स्कूल भर्थना जि० इटावा। ५ दिवारीलाल कक्षा ५ तहसीली स्कूल भर्थना जि० इटावा। ६ रामसमझ-कक्षा ५ पाठशाला दोस्तपुर जि० सुलतांपुर। ७ बद्रीशरण सिंह कक्षा ६ पाठशाला सहँतवार-जिला बलिया। ८ चन्द्रिका बरण-कक्षा ५ पाठशाला कसबातीमोहान जि० उन्नाव। ९ गोपालदत्त-कक्षा ६ टाउन स्कूल अलमोड़ा। } प्रशंसा पत्र

अपर प्राइमरी विभाग।

१ श्यामविहारी-कक्षा ४ पाठशाला बेला त० विधूना जि० इटावा ५)। २ हरवंशलाल-कक्षा ३ पाठशाला भैंसा त० मवाना जि० मेरट ३)। ३ रामदास-कक्षा ४ पाठशाला भैंसा त० मवाना जि० मेरट २)।

४ कृष्णगोपाल-कक्षा ४ पाठशाला पाली खुर्द आगरा। ५ रामचन्द्र-कक्षा ४ पाठशाला खमरिया-कोंढ़-जि० मिरजापुर। ६ छविलाल-कक्षा ४ पाठशाला किरावली जि० आगरा। ७ बद्री मिश्र-कक्षा ४ टौन स्कूल आजमगढ़। ८ कालीप्रसाद-कक्षा ३ स्कूल रूरूगंज जि० इटावा। } प्रशंसा पत्र

लोअर प्राइमरी विभाग।

१ रामनारायण-कक्षा २ पाठशाला करिया भोगांव जि० मैनपुरी ४)। २ रामदुलारी-कक्षा २ पाठशाला निरवां बेला त० विधूना जि० इटावा ३)। ३ रामस्वरूप-कक्षा २ पाठशाला भैंसा त० मवाना जि० मेरट २)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४ छेदालाल-कक्षा २ ब्रांच स्कूल बिंदकी जि० फतहपुर । ५ अर्जुनसिंह-कक्षा २ ब्रांच स्कूल बिंदकी जि० फतहपुर । ६ कलियानसिंह-कक्षा २ पाठशाला रूरूगंज जि० इटावा । ७ हरीदत्त-कक्षा २ पाठशाला हल्दूचौड़ जि० नैनीताल । } प्रशंसा पत्र

(६) ललिता पारितोषिक के लिये मथुरा की कन्याओं की हस्तलिपि परीक्षा के विषय में सब-कमेटी की रिपोर्ट उपस्थित की गई और निश्चय हुआ कि सब-कमेटी की सम्मति के अनुसार यह पारितोषिक शकुन्तला कक्षा २ पाठशाला निस्वां सहपऊ को दिया जाय ।

(७) डाक्टर गणेशप्रसाद भार्गव का १३ अगस्त का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि वैज्ञानिक कोश के मूल्य मद्धे उनके यहां जो ६८७١) बाकी है उसे वे थोड़ा थोड़ा करके देदेंगे पर वे कब कब कितना कितना रुपया देंगे इसकी प्रतिज्ञा नहीं कर सकते । सभा चाहे तो उनसे उतने मूल्य की पुस्तकें फिरती लेले । अथवा यदि सभा किसी दूसरे के हाथ सब पुस्तकों की बिक्री का प्रबन्ध कर दे तो वे १०) रु० सैकड़े घाटा उठा कर सब पुस्तकें देदेंगे ।

निश्चय हुआ कि डाक्टर गणेशप्रसाद भार्गव को लिखा जाय कि वे २८७١) ता० ३० सितम्बर १९०८ तक सभा को देदें और शेष ४००) रु० अक्टूबर १९०८ से प्रति मास ५०) रु० देकर मई १९१० तक चुका दें । यदि वे स्वीकार न करें तो मंत्री को अधिकार दिया जाय कि वे ३० सितम्बर के उपरान्त सब रुपया नालिश करके वसूल करलें । और यदि डाक्टर साहब सभा के प्रस्ताव स्वीकार कर उसे पूरा न करें तो उस अवस्था में भी मंत्री को अधिकार होगा कि सभा को सूचना देकर न्यायालय द्वारा यह द्रव्य वसूल करलें ।

(८) पण्डित कृष्णाराम मेहता के ये प्रस्ताव उपस्थित किए गए कि (क) सभा के पुस्तकालय की पुस्तकों पर विषय विभाग के उपरान्त प्रत्येक विभाग की पुस्तकों पर जुदे जुदे नम्बर होने चाहिए (ख) पुस्तकों के विषय विभाग की जांच करने के लिये एक सब-कमेटी नियत की जाय (ग) नवीन पुस्तकों पर नम्बर डाल कर उन्हें तुरन्त रजिस्टर में लिख लेना चाहिए ।

निश्चय हुआ कि (क) विषयक्रम से पुस्तकों की सूची बन जाने पर पुस्तकों पर यथाक्रम नम्बर के साथ ही साथ विषयक्रम से जुदे नम्बर भी दिये जांय (ख) इसके लिये निम्नलिखित महाशयों की सब-कमेटी बना दी जाय अर्थात् पण्डित केशवदेव शास्त्री, पण्डित रामनारायण मिश्र बी० ए०, पंडित रामचन्द्र शुक्ल, लाला भगवानदीन और पुस्तकालय के निरीक्षक (ग) नवीन पुस्तकें जिस समय पुस्तकालय में जांय उसी समय वे रजिस्टर में चढ़ा ली जाया करें ।

(९) तुलसी स्मारक के विषय में बाबू शिवकुमारसिंह का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि गोस्वामी तुलसीदासजी का कच्चा मकान गिरा कर जो पक्का मकान बनवाया गया है उसमें उक्त गोस्वामी जी की मूर्ति रहेगी और उसके सामने श्रीराघवेन्द्रजी और श्रीशिवजी के मन्दिर बनवाए गए हैं । पुस्तकालय के बनने की भी आशा है ।

निश्चय हुआ कि पुस्तकालय खुलने पर उसके लिये ५०) रु० की पुस्तकें इस सभा से दी जांय ।

(१०) बाबू भगवतीशरणसिंह का १० अगस्त का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि सब सभासदों को सभा के वार्षिक अधिवेशन में उपस्थित होना चाहिए और जो सभासद ऐसा न करें उनसे आठआना दण्ड की भांति सभा को लेना चाहिए ।

निश्चय हुआ कि यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया जा सकता ।

(११) हिन्दी खोज के निरीक्षक का २६ अगस्त का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि पुस्तकों की खोज की त्रैवार्षिक रिपोर्ट के लिये गवर्नमेण्ट ने केवल २०० पृष्ठ नियत किया था । पर यह रिपोर्ट छपने पर लगभग ३०० पृष्ठ के होगी और इसमें अब न्यूनता नहीं हो सकती । अतः गवर्नमेण्ट से प्रार्थना की जाय कि यदि वह इसे पूरी पूरी छपवाना स्वीकार न करे तो इसके छपवाने में गवर्नमेण्ट का जितना व्यय होता है उतना वह सभा को देदे । सभा इसे स्वयं छपवा ले और गवर्नमेण्ट से इसकी जितनी प्रतियां छपती हैं उतनी प्रतियां गवर्नमेण्ट को देदी जांय ।

निश्चय हुआ कि यह प्रस्ताव स्वीकार किया जाय और गवर्नमेण्ट से इसके लिये प्रार्थना की जाय ।

(१२) वेतन वृद्धि के लिये पण्डित केदारनाथ पाठक का प्रार्थना पत्र उपस्थित किया गया ।

निश्चय हुआ कि तारीख १ सितम्बर १९०८ से उनके मासिक वेतन में दो रुपये की वृद्धि की जाय ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी
110770

(१३) निश्चय हुआ कि इस वर्ष के लिए नागरीप्रचारिणी लेखमाला और नागरीप्रचारिणी ग्रन्थमाला के सम्पादक पण्डित माधवप्रसाद पाठक नियत किए जांय ।

(१४) पण्डित रामनारायण मिश्र का प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि जिन लोगों ने हिन्दी कोश के लिये सुन्दर दान दिया हो उनके लिए ऐसा प्रबन्ध किया जाय कि सभा की पत्रिका आदि उनके पास जाया करे।

निश्चय हुआ जिन महाशयों ने हिन्दी कोश के लिए एक सौ रुपया वा इस से अधिक द्रव्य से सभा की सहायता की हो उन्हें इस वर्ष के लिए नागरीप्रचारिणी पत्रिका बिना मूल्य दी जाया और उनके पास सभा की वार्षिक रिपोर्ट तथा कोश विभाग की त्रैमासिक रिपोर्ट भी जाया करे ।

(१५) समय अधिक हो जाने के कारण निश्चय हुआ कि सभा विसर्जित की जाय और शेष कार्यों के लिये पुनः शनिवार ता: १८ सितम्बर १९०८ को सन्ध्या के ६ बजे अधिवेशन हो ।

प्रबन्धकारिणी सभा ।

शनिवार ता० १८ सितम्बर १९०९ सन्ध्या के ६ बजे

स्थान सभा-भवन ।

उपस्थित ।

बाबू श्यामसुन्दरदास बी० ए० सभापति । बाबू गौरीशंकर प्रसाद बी० ए० एल० एल० बी० । बाबू जुगलकिशोर । पण्डित माधव प्रसाद पाठक । गोसाईं रामपुरी । पण्डित सुरेन्द्र नारायण । पण्डित रामनारायण मिश्र बी० ए० । बाबू गोपालदास ।

(१) गत अधिवेशन (ता० १३ सितम्बर १९०८) का कार्य्य विवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ ।

(२) पण्डित सुरेन्द्रनारायण शर्म्मा का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि सभा के आफिस में पत्रों की नकल रखने के लिये एक कापीइङ्ग प्रेस रक्खा जाय।

निश्चय हुआ कि यह आफिस की रिपोर्ट के सहित आगामी अधिवेशन में विचारार्थ उपस्थित किया जाय।

(३) बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा के ये प्रस्ताव उपस्थित किए गए कि (१) नागरीप्रचारिणी पत्रिका, ग्रन्थमाला, लेखमाला, नियमावली और वार्षिक रिपोर्ट में सभा की पुस्तकों की सूची मूल्य सहित छपा करे (२) बड़े बड़े समाचार पत्रों में इनके विज्ञापन बिना मूल्य अथवा परिवर्तन में छपवाए जांय । (३) भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र का सम्वत् सभा की सब पुस्तकों पर छपा करे और (४) पत्रिका के कवर पर प्रेस और प्रकाशक का नाम हिन्दी में छपा करे ।

निश्चय हुआ कि (१) सभा की पुस्तकों का विज्ञापन नागरीप्रचारिणी पत्रिका में चौथे मास और वार्षिक रिपोर्ट में प्रति वर्ष छपा करे (२) समाचारपत्रों में इनका विज्ञापन छपवाने का प्रबन्ध किया जाय (३) सभा की सम्मति में इसकी आवश्यकता नहीं है (४) प्रेस का ध्यान इस ओर दिलाया जाय ।

(४) पण्डित रामनारायण मिश्र का ५ सितम्बर का कार्ड उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने सूचना दी थी कि शिमले से उनकी बदली बरेली में हो गई है । अतः प्रबन्धकारिणी सभा से पंजाब प्रान्त से उनके स्थान पर कोई दूसरा सभासद नियत किया जाय ।

निश्चय हुआ कि यह पत्र साधारण सभा में उपस्थित किया जाय ।

(५) पंडित शिवप्रसाद दलपतराम का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने यह प्रस्ताव किया था कि बड़ोदे में आगामी अक्तूबर में मराठी साहित्य का एक परिषद एकत्रित होगा और उसी समय राजकोट में गुजराती साहित्य परिषद का अधिवेशन होगा अतः सभा इन दोनों परिषदों में अपने प्रतिनिधि भेजे ।

निश्चय हुआ कि इन परिषदों से सभा के पास निमंत्रण पत्र आने पर इस विषय में विचार किया जा सकता है ।

(६) सभा के लेखक पण्डित विश्वनाथ तिवारी का प्रार्थना पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने बीमारी के कारण १ सितम्बर १९०८ से डेढ़ मास की छुट्टी बिना वेतन के मांगी थी ।

निश्चय हुआ कि उनकी प्रार्थना स्वीकार की जाय ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(७) राय कृष्णदास गुप्त का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने सभा के पुस्तकालय से "वीरविनोद" नामक पुस्तक के कुछ अंश की नकल करवाने के लिये आज्ञा मांगी थी ।

निश्चय हुआ कि वे वीरविनोद से केवल नोट्स ले सकते हैं ।

(८) बाबू मुरलीधर वर्म्मा का आयुर्वेद निदान समीक्षा शीर्षक लेख नागरीप्रचारिणी लेखमाला के सम्पादक की सम्मति के सहित उपस्थित किया गया ।

निश्चय हुआ कि यह आवश्यक संशोधन के उपरान्त लेखमाला में प्रकाशित किया जाय ।

(९) पण्डित गंगा प्रसाद अग्निहोत्री का कार्ड उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि हिन्दी कोश के शब्द संग्रह के कार्य्य में जिन लोगों ने सभा की सहायता की है उन्हे हिन्दी कोश किस भांति दिय जायगा इस विषय में सभा को निश्चय करना चाहिए ।

निश्चय हुआ कि कोश का कार्य्य समाप्त होने पर किन किन महाशयों ने इस कार्य्य में सभा की किस भांति सहायता की है इस विषय में कोश कमेटी की रिपोर्ट आने पर इस सम्बन्ध में विचार किया जायगा ।

(१०) संयुक्त प्रदेश के शिक्षा विभाग के डाइरेक्टर का १५ सितम्बर का पत्र सूचनार्थ उपस्थित किया गया जिसमें लिखा था कि छात्रों के भर्ती होने तथा नाम काटने के फार्म नागरी अक्षरों में भी छपने के सम्बन्ध में सभा का प्रस्ताव उन्होंने स्वीकार किया है और भविष्यत में इसी प्रकार फार्म छपा करेंगे ।

(११) पण्डित ब्रजरत्न भट्टाचार्य्य के निम्न लिखित प्रस्ताव उपस्थित किए गए । (१) सभा संस्कृत की परीक्षाओं के साथ हिन्दी को भी पाठ्य विषय नियत करावे अथवा संस्कृत की भांति हिन्दी की एक जुदी परीक्षा ही नियत कराने का उद्योग करे (२) अन्य भाषाओं के जिन शब्दों का हिन्दी में उचित अनुवाद नहीं है उनके हिन्दी पर्यायवाचक शब्द सभा द्वारा नियत होने चाहिए (३) क़ामा, फुलस्टाप कोलन आदि चिन्हों के लिये हिन्दी में उपयुक्त नामों की रचना होनी चाहिए । (४) प्रत्येक प्रान्त में नागरी के प्रचार के लिये सभा का एक एक वैदेशिक मंत्री नियत होना चाहिए । (५) लेखमाला छ माहिक निकलनी चाहिए और उसका वार्षिक मूल्य केवल १) रु होना चाहिए (६) सभा की वार्षिक रिपोर्ट के साथ सभा की नियमावली और पुस्तकों की सूची भी बांटी जाया करे (८) हिन्दी लेखकों की एक संशोधित सूची तयार होनी चाहिए ।

निश्चय हुआ कि इस विषय में शिक्षा विभाग को लिखा जाय (२-३) सभा की सम्मति में इन की आवश्यकता नहीं है (४) सभा की सम्मति में इस के लिये उपदेशक भेजना उचित होगा और आवश्यक धन होने पर सभा इस सम्बन्ध में विचार करेगी (५) इस सम्बन्ध में सभा अपना निश्चय स्थिर कर चुकी है (६) यह विषय सभा के विचाराधीन है (७) आज के निश्चय नं० ३ में इस विषय को सभा निश्चित कर चुकी है (८) पण्डित ब्रजरत्न भट्टाचार्य जी यदि ऐसी सूची तयार कर दें तो सभा उस के छपवाने के सम्बन्ध में विचार करेगी ।

(१२) बाबू शिव प्रसाद गुप्त के ये प्रस्ताव उपस्थित किये गए कि (१) सभा अपने पत्रों तथा अन्य कार्य्यों में हिन्दी अथवा बंगला मिति का व्यवहार किया करे (२) सभा देवनागरी अक्षरों के अतिरिक्त और कोई दूसरा अक्षर अपनी पत्रिका अथवा पुस्तकों पर न लिखा करे ।

निश्चय हुआ कि (१) इस प्रस्ताव के अनुसार कार्य्य करने में बहुत सी कठिनाइयां हैं (२) यथासंभव सभा हिन्दी अक्षरों का ही व्यवहार करती है ।

(१३) सुखनन्दन मिश्र का यह प्रार्थना पत्र उपस्थित किया गया कि सभाभवन में उसकी चोरी हो गई है जिस से उसको आर्थिक हानि पहुंची है अतः सभा उसकी कुछ सहायता करे ।

निश्चय हुआ कि सभा की दी हुई वस्तुओं में से जो चीजें चोरी गई हैं वे उसे पुनः मँगवा दी जांय और पाच रुपया उसे पेशगी दे दिया जाय जो आठ आना मासिक के हिसाब से दस मास में उसके वेतन से काट लिया जाय ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१४) डाक्टर गणेश प्रसाद भार्गव का १८ सितम्बर का पत्र उपस्थित किया गया जिस में उन्हों ने लिखा था कि वैज्ञानिक कोश के मूल्य मद्धे १००) वे सभा को देंगे और शेष रुपया अक्तूबर १९०८ से पचास रुपया मासिक कर के बराबर दिये जांयगे तथा जून तक हिसाब चुका देंगे।

निश्चय हुआ कि उनका यह प्रस्ताव इस शर्त पर स्वीकार किया जाय कि इस प्रतिज्ञा के अनुसार कभी कुछ रुपया बाकी न पड़े।

(१५) महामहोपध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी रचित "राम कहानी" नाम की पुस्तक उपस्थित की गई और यह सूचना दी गई कि इस बात का उद्योग किया जा रहा है कि यह पुस्तक युनिवर्सिटी की पाठ्य पुस्तकों में सम्मिलित की जाय।

निश्चय हुआ कि सभा की सम्मति में यह पुस्तक पाठ्य पुस्तक नियत होने के उपयुक्त नहीं है, इस में अनेक दोष हैं और इस की भाषा एकप्रान्तीय है अतएव सभापति से पूछा जाय कि इस सम्बन्ध में सभा को क्या करना उचित है।

(१६) निश्चय हुआ कि इलाहाबाद युनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार को पत्र लिख कर पूछा जाय कि गत वर्ष चेंसेलर ने अपनी वक्तृता में जो यह कहा था कि देशभाषाओं की पढ़ाई एफ० ए०, बी० ए० आदि परीक्षाओं के लिये होनी चाहिए इसके सम्बन्ध में युनिवर्सिटी ने क्या किया है और यदि कुछ नहीं किया है तो क्या शीघ्र इस पर विचार होने की कोई आशा है।

(१७) पञ्जाब, कलकत्ता, इलाहाबाद, मन्दराज और बंबई युनिवर्सिटियों के प्रास्पेक्टस मंगा कर पण्डित रामनारायण मिश्र को भेजे जांय और उनसे प्रार्थना की जाय कि वे कृपाकर इन को देख कर सभा को सम्मति दें कि युनिवर्सिटियों में देशभाषाओं के प्रचार के सम्बन्ध में सभा को क्या करना उचित है।

(१८) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

गौरीशंकर प्रसाद

मंत्री।

आय व्यय का हिसाब।

(सितम्बर १९०९)

आय	धन की संख्या		
गत मास की बचत	३६७५	३	८½
सभासदों का चन्दा	७४४	१४	०
पुस्तकालय का चन्दा	४८	२	०
पुस्तकों की बिक्री	११५	१३	०
हिन्दी कोश	१६१५	०	१०
नागरीप्रचार	२	०	०
पृथ्वीराजरासो	४६	३	०
पुस्तकों की खोज	२५०	०	०
जोड़	६४८७	३	८½

व्यय	धन की संख्या		
आफ़िस के कार्यकर्ताओं का वेतन	७६	१०	३
नागरी प्रचार	१४	१२	०
डांक व्यय	७४	१३	०
पुस्तकालय	३३	५	८
हिंदी पुस्तकों की खोज	१४१	११	०
फुटकर व्यय	८	१	८
हिन्दी कोश	५८६	११	६
पारितोषिक	३५	०	०
स्थायी कोश	६०	०	०
	१०३१	१	३
बचत	५४५६	२	६½
जोड़	६४८७	३	८½

रोकड़ सभा	२८०≈)८½
बनारस बंक (कोश विभाग)	५४११॥-)७
	५६८१॥।)३½
बंक का देना	२२५॥-)॥
	५४५६≈)६½

देना ६०००)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभा के पारितोषिकों की सूची ।

(१) इस वर्ष के सभा के नियमित दो मेडलों के लिये निम्न लिखित विषय नियत हैं। ये लेख ३१ दिसम्बर १९०९ तक सभा में आजाने चाहिएं ।

वैज्ञानिक विषय ।

प्राकृतिक अवस्था का उत्तर भारत के सामाजिक जीवन पर प्रभाव ।

सधारण (विद्या) विषय ।

अकबर के पूर्व हिन्दी की अवस्था ।

(२) डाक्टर छन्नूलाल मेमोरियल मेडल-यह सोने का मेडल उस व्यक्ति को दिया जायगा जिसका लेख "स्त्रियों के रोग" पर सब से उत्तम होगा। लेख सरल हिन्दी में होना चाहिए और सभा के पास ३१ दिसम्बर १९०९ तक आजाना चाहिए।

(३) ५००) का पुरस्कार—सभा द्वारा निश्चित अनुक्रमणिका के आधार पर जो हिन्दी का सब से उत्तम व्याकरण लिखेगा उसे यह पुरस्कार दिया जायगा। व्याकरण ३१ दिसम्बर १९०९ तक सभा के पास आजाना चाहिए। यदि कई व्याकरणों के भिन्न भिन्न अंश उत्तम समझे जांयगे तो यह पुरस्कार उन सब लोगों में बाँट दिया जायगा और उन ग्रन्थों को घटाने बढ़ाने आदि का इस सभा को पूरा अधिकार होगा। सभा द्वारा निश्चित अनुक्रमणिका दो पैसे का टिकट डाकव्यय के लिये भेजने पर सभा के मंत्री से मिल सकती है।

ममीरे का सुरमा ।

एसिस्टण्ट केमिकल एकजामिनर साहब गवरमेण्ट पञ्जाब द्वारा परीक्षित व प्रमाणित हो चुका है। माननीय अंग्रेजी मेडिकल कालिज के अफ़सर डाक्टरों राजों महाराजों विलायत की यूनिवरसिटी से सनद पाए डाक्टरों ने परीक्षा करके इस अञ्जन की सचाई प्रकट की है और बताया है कि नेत्र रोगों के लिये यह सुरमा अकसीर गुण रखता है। दृष्टि की कमजोरी, आंखों का अन्धशून्य, जाला, पड़वाल, गुबार, फुंसी, आंखों से पानी का बहना, आंखों की लाली मोतियाबिन्द की प्रथम अवस्था, खाज, खुजली इत्यादि ।

माननीय डाक्टर और हकीम आंख के रोगियों को जो उनके पास आते हैं यह सुरमा देते हैं। चार दिन के लगाने से आंखों की दृष्टि ठीक हो जाती है। बालक से लेकर बूढ़े तक के लिये यह अञ्जन एक समान लाभदायक है। मूल्य इस कारण कम रक्खा गया है कि धनाढ्य और दीन दोनों इससे लाभ उठा सकें। मूल्य एक तोला का जो एक वर्ष के लिये बहुत है २) दो रुपया है। ममीरे का सच्चा सुरमा जो बहुत उत्तम ३) तीन रुपये तोला। एक खालिस ममीरा एक माशा २०) है। डाक का खर्चा ग्राहक के जिम्मे। पत्र भेजने के समय अख़बार का नाम लिखो। पता-प्रोफेसर मायासिंह अहलवालिया-मुकाम-बटाला जिला गुरदासपुर पञ्जाब ।

संतबानी

अर्थात प्राचीन महात्माओं की दुर्लभ बानी का जो गुप्त होती जाती हैं जीर्णोद्धार मय उनके जीवन-चरित्र के

बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद से इश्तिहार मँगा कर देखिये ।

कबीर सा०, तुलसी सा०, पलटू सा०, जगजीवन सा०, रैदासजी, चरनदास जी, दरिया सा०, दयाबाई, सहजोबाई, इत्यादि ।

पुस्तकमाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Printed by Mahdc Prasad at the Bharat Press, Benares, for B. Gauri Shankar Prasad, Publisher.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक
रामचन्द्र शुक्ल ।

Registered No A 414

नागरीप्रचारिणी पत्रिका ।

[मासिक पत्रिका]

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल । बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ॥
करहु विलंब न भ्रात अब, उठहु मिटावहु सूल । निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जु सब को मूल ॥
विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार । सब देशन सों लै करहु, भाषा मांहि प्रचार ॥
प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि यत्न । राज काज दर्बार में, फैलावहु यह रत्न ॥ हरिश्चन्द्र ।

भाग १४ | १५ नवम्बर १९०९ । | संख्या ३

सूचना और सम्मति ।

कोश के हेतु चन्दा एकत्र करने के लिये सभा की ओर से बाबू जगन्मोहन वर्म्मा बाहर भेजे जा रहे हैं । आप अभी आज़मगढ़, गाज़ीपूर, बलिया होते हुये बिहार की ओर जांयगे । वहां पटना, गया, मुज़फ़्फ़रपुर, रांची, बेतिया, हथुआ आदि स्थानों में ठहर कर आप प्रतिष्ठित विद्यानुरागी सज्जनों से मिल कर कोश के निमित्त आर्थिक सहायता प्राप्त करने का यत्न करेंगे। आपका विचार साथ ही साथ सभा के लिये सभासद बढ़ाने का का भी है । सभा के सभासदों को चाहिए कि उनकी इस काम में पूरी सहायता करें ।

---:o:---

जबलपुर के राजा सेठ गोकुलदास के स्मारकमें कुछ महाशयों ने बम्बई में एक हिन्दी विद्यालय स्थापित करने की सम्मति दी थी । उनके पुत्र कुंअर सेठ जीवन दास जी हाल में श्रीवेंकटेश्वर कार्य्यालय देखने गए थे । वहां कुंवर साहब के पास यह हिन्दी विद्यालय का प्रस्ताव उपस्थित किया गया । कुंवर साहब ने इस प्रस्ताव को पसन्द किया—पर कहां तक यह नहीं कह सकते ।

स्थानान्तर में "एकलिपि विस्तार परिषद्" के विषय में एक अनुभवी और दूरदर्शी हिन्दी लेखक की सम्मति दी जाती है । उसके देखने से मालूम होगा कि "एकलिपिविस्तार परिषद्" का आन्तरिक अभिप्राय हिन्दी भाषा को प्रधानता देने का नहीं हैं । सच पूछिए तो कुछ बंगाली लेखक अब हिन्दी को बड़ी कुटिल दृष्टि से देखने लगे हैं। इसके प्रमाण बंगला पत्रों में समय समय पर मिलते रहते हैं जिन पर हिन्दी वाले कुछ कम ध्यान दिया करते हैं । साहित्यपरिषद् पत्रिका के १५ वें भाग की अतिरिक्त संख्या में हिन्दी भाषा के देशव्यापिनी होने की योग्यता में बहुत कुछ सन्देह किया गया है । बंगला भाषा की श्रेष्ठता और उपयोगिता का घोष करते हुए तथा उसे भारतभाषा होने के योग्य समझते हुए लेखक महाशय लिखते हैं कि 'हिन्दी भाषा में हैं क्या ? दो चार बंगला पुस्तकों के अनुवाद ही न" खूब कहा । हिन्दी भाषा में उस समय तक के ऐतिहासिक महाकाव्य वर्तमान हैं, जब कि बंगला भाषा लिखने योग्य भी नहीं समझी जाती थी । यदि लेखक महाशय का अभिप्राय नवीन विषयों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की कमीसे हो तो उन्हें जानना चाहिए कि आधुनिक कला कौशल, विज्ञान तथा नवीन २ भावों का समावेश बड़ी तेज़ी से हिन्दी में हो रहा है। आपकी पुस्तकों के अनुवादों के बल ही पर हिन्दी नहीं खड़ी है। पर हमें यह स्थिर करने के लिये कि भारत की भाषा कैान हो सकती है किसी भाषा के साहित्य की ओर ध्यान देने की उतनी ज़रूरत नहीं है, जितनी कि उसके विस्तार तथा उसकी शक्ति और सुगमता की जांच करने की। योरप वाले जिस "स्पिरैंटो" भाषा का प्रचार करना चाहते हैं, उसमें लाखों पुस्तकें नहीं लिखी रक्खी हैं। इसके बाद आप बँगला की व्याकरण और भाषा सम्बन्धी सरलता की बात उठाते हैं। इनमें से बहुत सी सुगमताएँ तो ऐसी हैं जो हिन्दी में भी हैं। पर दो एक विशेष हैं, जिन पर आप बहुत ज़ोर देते हैं। आप कहते हैं कि उड़िया, मराठी और हिन्दी में संस्कृत-प्राकृत शब्दों की अधिकता है पर बंगला में, विशेषत: लिखने की बंगला में, संस्कृत शब्दों ही की अधिकता है। अस्तु बंगला ही देश भर की भाषा हो सकती है। पर मैं कहता हूं कि बंगला के इन किताबी संस्कृत शब्दों की अपेक्षा उनके स्थान पर आने वाले हिन्दी शब्दों का प्रचार कहीं अधिक दूर तक है। यदि संस्कृत शब्दों ही पर बात खतम है, तो हिन्दी वालों में भी बहुतोंको अनावश्यक रूप से संस्कृत शब्द ठूंसने की आदत हैं। फिर आप कहते हैं कि बँगला में लिंगभेद का उतना बखेड़ा नहीं है पर हिन्दी में शब्दों में लिंगभेद और कर्त्ता के लिंग के अनुसार क्रिया तक में लिंग भेद करना पड़ता है। ठीक है, पर यह इतनी बड़ी अड़चन नहीं है जो हिन्दी की व्यापकता की ओर ध्यान देने की आवश्यकता को कम करे। बँगला भाषा को बंगाल के बाहर बंगालियों को छोड़ और समझता कैान है? पर बंगदेश ही में कहीं कहीं बंगालियों को टूटी फूटी हिन्दी बोल कर काम चलाना पड़ता है। कार्त्तिक मास के प्रवासी में संगीत चंद्रिका नामक पुस्तक की आलोचना के प्रसंग में हिन्दी गान और बंगला गान की बात आई है। उसमें बंगला स्वरों के उच्चारण की अप्रशस्तता तथा बंगला व्यंजनों के उच्चारण की निर्जीवता और अस्पष्टता को स्वीकार करते हुए भी कहा गया है कि "बंगला भाषा को परित्याग करने से नहीं बनेगा, उसके दोषों को सुधार कर ही काम चलाना होगा"। पर यह बात सुधारने की नहीं है। यदि सुधारने की बात होती तो राजा सौरीन्द्र मोहन ठाकुर को अपनी प्रकाशित संगीत की सात्विक पुस्तकों में नागरी अक्षरों से काम न लेना पड़ता। जिन बंगालियों को ह्रस्व और दीर्घ ही का भेद निबाहना कठिन होता है उनके लिये स्वरस्वर का ठीक २ निर्वाह करना कितना कठिन है, यह समझने की बात है।

महाराष्ट्र साहित्य सम्मेलन।

पिछली संख्या में जिस "महाराष्ट्र साहित्य सम्मेलन" की सूचना दी गई थी उसकी बैठक २३, २४ और २५ अक्तूबर को बड़ौदे में हुई।

तीसरे दिन सबेरे हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा बनाने के सम्बन्ध में सम्मेलन में चरचा उठी। श्रीयुत रमेशचन्द्र दत्त ने प्रस्ताविक भाषण के उपरान्त कहा "सर गुरुदास बनर्जी, राजा प्यारी मोहन मुकर्जी, पंजाब के डा० चटर्जी, श्रीमती सरला देवी, जे० मित्र, श्रीयुत सत्येन्द्रनाथ तथा रवीन्द्र नाथ टागैार, पं० मदनमोहन मालवीय इत्यादि महाशयों ने इस प्रस्ताव के सम्बन्ध में सहानुभूति सूचक तार व पत्र भेजे हैं"। दीवान साहब ने अपने १५ वर्ष पूर्व के स्थापित किए हुए बंगीय साहित्य परिषद की सब बातें कह सुनाईं। यह परिषद बिना किसी प्रकार की सरकारी सहायता वा सहानुभूति के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थापित किया गया था। इसके उपरान्त आपने सम्मेलन की इस बैठक के विवेच्य विषयों का वर्णन किया। फिर तलेगांव के समर्थ विद्यालय के श्री जनार्दन विनायक ओक ने 'पाठशालाओं में देशी भाषा में शिक्षा देने की आवश्यकता' नामक पहला प्रस्ताव पेश किया। इस पर कलकत्ते के महा० पं० हरप्रसाद शास्त्री तथा अन्य अच्छे अच्छे विद्वानों के व्याख्यान हुए और इस प्रकार उस दिन के प्रात:काल का कार्य्य समाप्त हुआ।

दोपहर को प्रायः दो बजे सम्मेलन का कार्य पुन: आरम्भ हुआ। उस समय डा० भाण्डारकर के न होने के कारण थोड़ी देर के लिए डा० कीर्त्तिकर सभापत्ति चुने गए। श्रीयुत माधवराव बोड्स ने देवनागरी को सारे भारत की लिपि बनाने का प्रस्ताव पेश किया और साथ ही भिन्न भिन्न प्रान्तों में इस के लिए जितने उद्योग हुए थे, उनका इतिहास कह सुनाया। सारे देश में एक लिपि होने की उपयोगिता का वर्णन करते हुए आपने उसके प्रचार के प्रारम्भिक उपायों पर भी अच्छी विवेचना की। फिर इस विषय पर श्रीयुत दादासाहब करंदीकर तथा कई वकीलों, प्रोफेसरों और विद्वानों के व्याख्यान हुए और अन्त में सर्वानुमति से यह प्रस्ताव पास किया गया। इसके उपरान्त तीसरा प्रस्ताव पेश किया गया जिसका आशय था 'भारत के भिन्न भिन्न प्रान्तों के निवासी आपस में बात चीत करते समय केवल हिन्दी भाषा ही का उपयोग किया करें'। इस विषय पर श्रीयुत चिन्तामणि राव ने हिन्दी भाषा में एक व्याख्यान दिया। व्याख्यान में आपने यह सिद्ध कर दिया कि अन्य भाषाओं की अपेक्षा हिन्दी ही भारत की राष्ट्रभाषा बनने के अधिक योग्य तथा अधिकारिणी है। इस पर दीवान तेगचन्द, पं० आत्माराम, तथा अन्य महाशयों के व्याख्यान हुए और यह भी प्रस्ताव पास होगया। इसके उपरान्त श्रीयुत दत्त का अन्तिम भाषण हुआ जिसमें उन्होंने कहा कि हिन्दी ही को भारत की सर्वमान्य भाषा बनाना चाहिए। इसके उपरान्त सभापति को तथा सम्मेलन के लिए स्थान देनेवाले महाशयों को धन्यवाद देकर सभा विसर्जित की गई। इस सम्मेलन के लिये बड़ौदे में २२००) का चन्दा हुआ था।

रामचन्द्र वर्म्मा।

——:o:——

प्रेरित पत्र।

श्रीयुक्त नागरी-प्रचारिणी-पत्रिका--सम्पादक
महाशय समीपेषु।

महाशय,

हर्ष का विषय है कि, नागरी-प्रचारिणी सभा ने "एक लिपि विस्तार-परिषद्" और उसके "देवनागर" पत्र को कुछ कुछ समझने की चेष्टा की है। यद्यपि सभा ने दबी जबान से ही उसके विषय में अपनी रिपोर्ट में कुछ लिखा है, तथापि "नहीं से थोड़ा ही अच्छा" समझ कर बुद्धिमानों को सन्तोष होगा। कितने ही हिन्दी भाषा के सुलेखक और मर्मज्ञ भी इस बात को नहीं समझते कि, "देवनागर" से हिन्दी को कहां तक हानि पहुंच सकती है। ऐसी अवस्था में यदि आप हिन्दीभाषियों को सचेत करने में कुछ भी सहायता देंगे, तो आप अशेष धन्यवाद के पात्र बनेंगे।

प्रायः तीन वर्षों से अधिक समय एक लिपि विस्तार परिषद् को स्थापित हुए बीत चुका है। उसे दो वर्ष से "देवनागर" जैसे बहुभाषी पत्र की सहायता भी मिल रही है। परन्तु यदि पूछा जायगा कि, उसने देवनागराक्षर का कहांतक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विस्तार किया, तो कोई सन्तोषजनक उत्तर न मिलेगा। जो बंगाली संस्कृत ग्रन्थों को वङ्गाक्षर में छपाते हैं, वे बंगला पुस्तकें देवनागराक्षर में छपाकर बंगाल में देवनागराक्षर का प्रचार व विस्तार करेंगे, यह बात मुझसे अल्पज्ञ की समझ में नहीं आती। परन्तु हिन्दी भाषी और सम्पादक ऐसे अज्ञानान्धकार में पड़े हैं कि उन्हें हिन्दी की दशा और उस पर बंगला के आक्रमण का कुछ भी ज्ञान नहीं है। इसे मैं मुक्त कण्ठ से कह सकता हूं कि "देवनागर" से हिन्दी को लाभ तो स्वप्न में भी नहीं है, उलटी हानि ही है। क्योंकि हिन्दी देवनागरी वर्णमाला में लिखी जाती है और उसके लिपिपरिवर्तन की कोई आवश्यकता नहीं है। फिर जहाँ तक मुझे समाचार मिला है सैकड़े पीछे देवनागर के ८५ ग्राहक हिन्दीभाषी हैं। अनुमान है कि देवनागर के इस समय ४०० ग्राहक होंगे। यह केवल अनुमान ही अनुमान है, सम्भवतः ग्राहक संख्या इससे भी कम ही होगी। परन्तु इसी अनुमान को ठीक समझ कर हिसाब लगाने से मालूम पड़ेगा कि हिन्दी वालों के सिवा देवनागर के अन्य भाषा भाषी ग्राहक ६० ही हैं। सम्भव है कि, इनमें दो चार मराठीभाषी भी हों। उनकी संख्या ५ माने लेता हूं। बाकी बचे ५५ ग्राहक, क्योंकि मराठी भी देवनागरी लिपि में लिखी जाती हैं। इनकी भाषा देवनागरी लिपि में नहीं लिखी जाती। क्या इन्हीं ५५ ग्राहकों के लिये यह आडम्बर रचा गया है? इस हिसाब से आप समझ सकते हैं कि ३४० ग्राहक हिन्दी भाषी हैं। प्रत्येक को वार्षिक मूल्य के ३) देने पड़ते हैं। इस प्रकार १०२०) रुपये साल में हिन्दी भाषियों के इस काम में खर्च होते हैं। यदि येही रुपये हिन्दी की उन्नति के लिये खर्च किए जांय, तो बहुत लाभ हो सकता है। परन्तु नहीं, हिन्दी वाले इन रुपयों से हिन्दी पत्र पत्रिकाओं वा सभाओं की सहायता नहीं करते। वे उनसे उन्हीं लोगों में देवनागराक्षर का प्रचार किया चाहते हैं, जिनकी भाषा उन्हीं अक्षरों में लिखी जाती है। भला इनसे कोई यह तो पूछे कि इस अर्थव्यय से हिन्दी का आप क्या उपकार करते हैं।

३० सितम्बर के "आनन्द" पत्र में "एक लिपि विस्तार और हिन्दी का संहार" शीर्षक लेख भी उपयुक्त समय पर निकला है। हिन्दी पत्रों में इस विषय की चर्चा जोर शोर से होनी चाहिए। सच पूछिये, तो हिन्दी भाषी ही हिन्दी की दुर्गति के कारण हैं। पाण्डेय उमापतिदत्त शर्म्मा और लाला यशोदानन्दन अखौरी ने किसी विशेष कारण वश देवनागर की सहायता की और करते हैं। ये लोग भली भांति जानते हैं कि "देवनागर के" सञ्चालक हिन्दी के पक्षपाती नहीं है। यदि बंगाली लोग खुल्लम खुल्ला हिन्दी की गद्दी बँगला को दिलाने की चेष्टा करते, तो किसी विचारवान को आपत्ति करने का अवसर न मिलता। परन्तु उन्होंने जो चाल खेली है, उसके समझने की बुद्धि हिन्दी वालों में नहीं सी हैं। कितने ही तो समझते हैं कि बंगाली लोगों ने हिन्दी को देश भाषा बनाने के अभिप्राय से यह काम किया है। कितने ही सम्पादकों के लेखों से यह बात अच्छी तरह साबित हो गयी है कि उन्हें इस विषय का कुछ ज्ञान ही नहीं है।

एकलिपि-विस्तार-परिषद के सेक्रेटरी बाबू सारदाचरण मित्र ने गतवर्ष प्रयाग में साफ़ कह दिया था कि हम हिन्दी को देश भाषा बनाना नहीं चाहते। "यादवेन्द्र" ने इसे मुनियों का भ्रम समझा था। परन्तु मुनियों के अनुयायियों को यह समझाना उसने उचित नहीं समझा कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनको गुरू न मानो। "देवनागर" और "एकलिपि विस्तार परिषद का" उद्देश्य क्या है, सो तो भगवान ही जानें। पर मेरी समझ में यह बात आती है कि, उनके सञ्चालक बंगला भाषा ही का प्रचार इनके द्वारा करना चाहते हैं। यदि हिन्दी वाले इसी प्रकार सोते रहेंगे, तो बंगाली लोग एक न एक दिन अपना स्वार्थ साधन करलेंगे। अब भी बहुत अवसर है। आशा है, हिन्दी वाले अब भी समझेंगे कि "मियां की जूती मियां के सिर" यह कहावत चरितार्थ हो रही है।

यदि आप कृपा पूर्वक इसे प्रकाशित कर देंगे, तो फिर और बातें भी लिखूंगा। इस समय मैं हिन्दी वालें से केवल यही पूछना चाहता हूं कि "क्या मातृभाषा की गर्दन पर छुरी चलाना तुम्हारा धर्म्म है?"

सि० आ० कृ० ५ सं० १९६६ — भवदीय, "हितवादी"।

---:o:---

हिन्दी पाठकों की कमी।

धीरे धीरे हिन्दी ने अपनी राह निकाल ली। अब इस बात को मान लेने में आगा पीछा न करने वालें की कमी न रही कि हमारी उन्नति इसी भाषा के सहारे होगी। महाराष्ट्र और बङ्ग देश के लोग अब अपनी भाषा से मेल खाने वाली बातें फिर इसमें पावेंगे। अब ईश्वर ने चाहा तो हमारे शीन क़ाफ़ को सुन कर उन्हें देर तक मुंह बाए ताकना न पड़ेगा। अब हिन्दी, बंगला, मराठी और गुजराती में परस्पर वही सम्बन्ध रहेगा जो अंग्रेजी और जर्मन आदि में है। इससे यह न समझना चाहिए कि हम लोगों ने कोई नई भाषा गढ़ी है। नहीं, कदापि नहीं। यह आधुनिक रूपमें वही सूर, तुलसी और रहीम की भाषा है, जिसमें हमारे कई शताब्दियों के भाव संचित हैं और जिसे हम लोग किसी विशेष दबाव के कारण विशेष स्थानें और अवसरें पर इधर कुछ दिनें से काम में लाने से हिचकते थे। यह वही भाषा है जिसकी शब्दावली से महाराष्ट्र वीर रणोत्तेजित और बंगाली वैष्णव भक्त प्रेम से गद्गद होते थे।

किन्तु अभी यह कह कर बैठ रहना कि इसके मार्ग की सब कठनाइयां दूर होगईं आलस्य है। यद्यपि इसका साहित्य दिन दिन बढ़ रहा है पर पढ़ने वालें की संख्या जितनी होनी चाहिए उतनी नहीं है। इसका अनुभव ग्रन्थकार, प्रकाशक तथा पुस्तक बेचने वाले लोग दुःख के साथ करते हैं। इस कमी और अभाव के आधार-स्थान भिन्न भिन्न हैं, इससे उनकी प्रथक प्रथक जांच करनी चाहिए। सामान्यतः हिन्दी न पढ़ने वाले साक्षर लोग तीन भागें में बँट सकते हैं।

(१) संस्कृतज्ञ पण्डित—इनकी लीला सब से विचित्र है। ये चाहे शहर के हों चाहे दिहात के हों इन्हें अपने "हम आवते हैं" और "वह ऐसा किया" के शुद्ध करने की कुछ भी फ़िक्र नहीं होती। हिमालय के पीछे क्या है, महाराज चन्द्रगुप्त कब हुये थे, रेल कैसे चलती है, न ये लोग जानते हैं और न जानने का यत्न करते हैं। इनकी समझ में अब तक विभीषण लंका में राज्य कर रहा है। 'हमारा यहां मान भया' "उस राजा ने हमारे को इतना दिया" यही बकते इनका सारा दिन जाता है। कारण यह है कि सामयिक विषयों तक इनकी पहुंच नहीं जिन में मनोरंजकता कुछ विशेष रूप से रहती है। ये संसार में अपनी स्थिति तक को नहीं जानते। जाने कहां से? आधुनिक साहित्य से इनका कुछ लगाव नहीं। हिन्दी, की कोई पुस्तक देखते ही "भाखा" कह कर नाक सिकोड़ते हैं। पर जब तक देशभाषा द्वारा इन्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामयिक शिक्षा न दी जायगी तब तक ये विद्वानों के सामने मुंह खोलने लायक नहीं होंगे। एक बार बनारस के गवर्न्मेंटकालिज के संस्कृत विद्यार्थियों को हिन्दी में इतिहास, भूगोल आदि की शिक्षा देने की बात उठी थी पर न जाने क्यों दब दबा गई। प्राचीन भाषा में कोई विचार नही करता, विचार लोग उसी भाषा में करते हैं जिसे बोलते और सुनते हैं। अत: जब तक इनके बोलने की भाषा क्रमवद्ध और व्यञ्जक न होगी तब तक ये किसी सूक्ष्म विचार वा विवेचना में प्रवृत्त नहीं हो सकते, इनमें आलोचना शक्ति नहीं आ सकती। इस प्रकार ध्यान न देने से इनकी जिज्ञासा और विवेचना शक्ति का ह्रास होता जाता है और सरकार को इंगलैंड और जरमनी से संस्कृत के अध्यापक बुलाने की ज़रूरत पड़ती है।

शिक्षा विभाग के अधिकारियों और संस्कृत पाठशालाओं के प्रबन्धकों पर इस बात का ज़ोर डालना चाहिए कि वे संस्कृत के साथ साथ विद्यार्थियों के लिये हिन्दी के द्वारा आधुनिक साहित्य, इतिहास, और भूगोल आदि का पढ़ना भी आवश्यक रक्खें।

(२) दूसरा दल उन उर्दूग्रस्त लोगों का है जो अपने बाप को वालिद और लड़के को फ़रज़न्द कह कर अपने को उन लोगों से प्रथक वा बड़ा बनाना चाहते हैं जो इन लफ्ज़ों को नहीं समझते। इस देश में सर्व साधारण से अपने को प्रथक दिखाने की चाह लोगों को बहुत होती है। इन उर्दूपाठकों का विकाश और गठन नैसर्गिक नियमानुसार नहीं। प्राय: इस प्रान्त की अदालतें इन्हें उत्पन्न करती हैं। इस देश की रीति नीति इतिहास और विचारपरम्परा आदि का कितना कम लगाव उर्दू साहित्य से है, इसे सब लोग जानते हैं। अत: उसके अनुयायी देश और समाज की स्थिति को न समझने के कारण उतने उपयोगी नहीं हो सकते। सब से बढ़ कर बात तो यह है कि हिन्दी साहित्य के द्वारा हम बङ्गला मराठी और गुजराती भाषाओं से भी अपना सम्बन्ध बनाए रख सकते हैं और इन भाषाओं के विद्वान और अनुभवी ग्रन्थकारों के लेखों से भी लाभ उठा सकते हैं। पर केवल उर्दू जानने वालों के लिये यह बात स्वप्न में भी सम्भव नहीं, क्योंकि उर्दू हिन्दुस्तान की और किसी साहित्य-भाषा से मेल नहीं खाती; वह सब से प्रथक है। अस्तु ऐसी क्या पड़ी है कि हम इतने बड़े जन समूह से अपने को प्रथक करें? हम अपनी लिखने पढ़ने की भाषा में जान बूझ कर क्यों इतना भेद डालें कि अपने और प्रान्त के भाइयों की दृष्टि में विदेशी के समान जँचे? आधुनिक हिन्दी साहित्य से पूरा परिचय रखने वाले बंगाल, महाराष्ट्र और गुजरात आदि के लेखकों से भी जानकारी रखते हैं। हर्ष की बात है कि हमारे और प्रान्त के भाई हिन्दी के गुणों की ओर ध्यान दे रहे हैं।

अन्त में उन उच्चशिक्षा-प्राप्त लोगों से जो आँख मूंद कर उर्दू द्वारा अपने विचारों को प्रगट कर रहे हैं, हमारी यही विनती है कि आप लोग ज़रा बंगला, मराठी, गुजराती आदि भाषाओं पर भी ध्यान दीजिए और देखिए कि भाषा सम्बन्ध में आप अपने को और प्रान्तों के भाइयों से कितनी दूर लेजा रहे हैं। सृष्टि में जीवों के बीच परस्पर प्रेम और सहानुभूति उत्पन्न करने वाली वस्तु समानता है। यह समानता जितनी ही अधिक होगी उतनी ही प्राणियों में परस्पर प्रीति होगी, चीटियां क्यों एक साथ चलती हैं? पक्षी क्यों एक साथ उड़ते हैं? इसलिये कि उनके अंगों में, उनके खान पान में, उनकी बोली में समानता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब बहुत से लोगों पर साथ ही कोई आपत्ति आती है, तब वे क्यों मिलकर एक समूह बन जाते हैं? इसलिए कि उनकी दशा समान है। अंतः भाषा की इस देशव्यापिनी समानता को यत्न पूर्वक नष्ट करना एकता के एक बन्धन को हटाना है।

उपर्युक्त उर्दू-पाठकों में हिन्दी के प्रचार के उपायों का अवलंबन बहुत शीघ्र करना चाहिये। मेरी समझ में तो हर ज़िले की कचहरियों के पास उत्तम उत्तम मनोरंजक हिन्दी पुस्तकों की दूकान खोली जाय तो बड़ा काम हो। हिन्दी में व्याख्यान देने वालों की संख्याका बढ़ना भी बहुत ज़रूरी है। सब से बुरा प्रभाव पारसी थिएटरों का पड़ता है। हिन्दी में अभिनय करने वाले नाट्य समाजों के स्थापित करने का उद्योग होना चहिए। ये नाट्य समाज व्यवसायी हों और नगर नगर घूम कर खेल दिखाया करें।

(शेष आगे)

(शेष आगे)

सभा का कार्यविवरण।

साधारण अधिवेशन।

शनिवार ता० २५ सितम्बर १९०९ सन्ध्या के ६ बजे

स्थान-सभाभवन।

(१) गत अधिवेशन (ता० २८ अगस्त १९०९ का कार्य-विवरण उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ।

(२) प्रबन्ध कारिणी सभा के ता० २६ और २७ जुलाई १९०९ तथा १३ सितम्बर १९०९ के कार्य विवरण सूचनार्थ उपस्थित किए गए।

(३) निम्न लिखित महाशय नवीन सभासद चुने गए:–

(१) श्रीमती नर्मदादेवी- C/o पं-रामविलास शर्म्मा शाहाबाद जि० हरदोई १॥) (२) श्रीयुत् मणिशंकर रत्न जी भट्ट-डाइरेकृर आफ पब्लिक इन्स्ट्रक्शन भावनगर ५) (३) पं० लक्ष्मी शंकर शर्मा-भैरवनाथ काशी १॥) (४) बाबू मुरारी दास अग्रवाल-ठठेरी बाजार-काशी १॥) (५) बाबू मधुसूदन दास-राजा का दरवाजा-काशी १॥) (६) बाबू झोखूलाल अग्रवाल-रानी की मंडी-राय-साहब का बाग-इलाहाबाद १॥)।

(४) सभासद होने के लिए १८ सज्जनों के नवीन आवेदन पत्र सूचनार्थ उपस्थित किए गए।

(५) निम्न लिखित सभासदों के इस्तीफे उपस्थित किए गए और स्वीकृत हुए:—

(१) ठाकुर रतन सिंह-राज कुमार कालेज-रायपुर (२) पं० शंकर-राव-काशी (३) बाबू बांके सिंह मुदर्रिस-बौरिया-जि० बलिया (४) पं० ठानसिंह शर्म्मा-जेवर-जि० बुलन्दशहर (५) बा० लक्ष्मी नारायण कक्कड़ काशी।

(६) मंत्री ने निम्न लिखित सभासदों की मृत्यु की सूचना दी जिस पर सभाने शोक प्रगट किया।

(१) रेवरेण्ड जे० ट्रेल-जयपुर (२) राय शिव सिंह भण्डारी-बटाला-पञ्जाब (३) मिस्टर ई० एच० रेडची।

(७) बाबू श्याम सुन्दर दास जी के प्रस्ताव पर सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि सभा मिस्टर ई० एच० रेडीची की असामयिक मृत्यु पर बहुत दुःख प्रगट करती है मुख्य कर इस कारण कि उनकी सभा पर असीम भक्ति थी और उन के द्वारा सभा को बहुत सहायता मिली तथा मिलने की पूर्ण आशा थी। साथही यह भी निश्चय हुआ कि मिसेज रेडची के पास सभा द्वारा दुःख प्रकाशक पत्र तथा उपरोक्त निश्चय का अङ्गरेजी अनुवाद भेजा जाय।

(८) निम्न लिखित पुस्तकें धन्यवाद पूर्वक स्वीकृत हुईं।

(१) स्वामी सत्गुरु प्रसाद शरण-श्री गुरु रामजी पुस्तकालय-गोंडा। निम्बार्क सम्प्रदाय प्रकाश और वेदान्त कामधेनु (२) यशो विजय जी-जैन पाठशाला-काशी जगत्कर्तृत्व मीमांसा, (३) बा० पंचम सिंह वर्म्मा-जमोर जि० गया। सन्त बचनामृत सार, (४) पं० बाबू राम शर्म्मा-ब्राह्मण पुरी-बुलन्द शहर। जाति का एक शत्रु, (५) बा० चम्पालाल जौहरी-खण्डवा। शिक्षकों के कर्तव्य। (६) कविराज हेमचन्द्र सेन-कलकत्ता। सम्वत् १९६६का पंचांग। (७) बा० माधव सिंह महता-भीलवाडा-मेवाड़। माप विद्या प्रदर्शनी। (८) बा० मकसूदन दास श्याम दास-राज दर्वाजा काशी। ज्ञानामृत कथा-(९) पं० माधव प्रसाद पाठक-कर्ण घण्टा-काशी। हिन्दी भाषा व्याकरण दीपिका (१०) बा० श्यामसुन्दर दास बी० ए० काशी। प्राचीन भारत वर्ष की सभ्यता का इतिहास चौथा भाग, (११) बा० गिरिधर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दास बुलानाला-काशी। संगीत सुदामा, राजशिक्षा प्रथम भाग, अंगरेजी हिन्दी तार-शिक्षक, वालेस का जीवन चरित और अद्भुत रामायण। (१२) बा० चतुर्भुज सहाय वर्म्मा काशी। राज कीर्ति, मन्त्रों की कुञ्जी, सरवरिया द्विजोत्पत्ति और सरवरिया ब्राह्मणोत्पत्ति (१३) खरीदी गई:-गृहस्थ-चरित, सर्दार तारा सिंह या हीरों की चोरी। पुतली महल या गुलाब कुवरि तीसरा भाग और Indian Antiquary for July and August 1909.

(९) नियम संशोधन के विषय में प्रबन्धकारिणी सभा के प्रस्ताव निम्न लिखित सभासदों की सम्मतियों सहित उपस्थित किए गए अर्थात बाबू भगवती शरण सिंह, बाबू रामजी दास वैश्य, बाबू गदाधर सिंह, पं० गणेश प्रसाद शर्म्मा, पं० महादेव शरण पांडे, पं० जानकी प्रसाद शुक्ल पं० ब्रजरत्न भट्टाचार्य, बाबू अखिल चन्द्र पालित, बा० जग मोहन वर्म्मा, लाला जगन्नाथ प्रसाद हकीम, बा दामोदर दास खंडेलवाल, पण्डित श्याम बिहारी मिश्र एम० ए०, बा० बाकेलाल टाली वाला, बाबू महावीर सिंह वर्म्मा पं० जगदेव उपाध्याय, बा० शिव प्रसाद गुप्त, ठाकुर सूर्य कुमार वर्म्मा, बा० छेदालाल, बा० राधाकृष्ण मास्टर, पं० गणपत जानकी राम दुबे, बाबू बहादुर सिंह, पं० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल,पं०द्वारका प्रसाद चतुर्वेदी, बा०जुगुल किशोर अखौरी और बा० शिवकुमार सिंह। प्रत्येक प्रस्ताव पर विचार के अनन्तर निश्चय हुआ कि सभा नियमावली में निम्न लिखित परिवर्तन किए जांय:—

(१) "प्रबन्धकारिणी सभा" के स्थान पर सर्वत्र "प्रबन्ध कारिणी समिति" बनाया जाय।

(२) नियम (११) के स्थान पर निम्न लिखित नियम बनाया जाय। (११) इस सभा के कार्यकर्ता एक सभापति, दो उपसभापति, एक मंत्री और एक उपमन्त्री होंगे, और उस का सम्पूर्ण प्रबन्ध एक प्रबन्ध कारिणी समिति के आधीन रहेगा जिसके सभासद २३ होंगे और जो इस प्रकार चुने जांयगे।

(१) मंत्री	१
(२) उपमंत्री	१
(३) काशीस्थ सभासद	१२
(४) संयुक्त प्रांत वासी बाहरी सभासद	२
(५) बंगाल	१
(६) बिहार	१
(७) मध्य प्रदेश और बेरार	१
(८) मध्य भारत	१
(९) राज पुताना	१
(१०) पंजाब	१
(११) बम्बई	१

"ऊपर लिखे प्रान्तों में से यदि किसी समय किसी प्रांत में सभा के सभासदों की संख्या १५ से कम हो जायगी तो उस प्रांत के किसी सभासद का प्रबन्ध कारिणी समिति में चुनाव न होगा और उसके स्थान पर ऐसे प्रांत का सभासद चुना जायगा जहां के सभासदों की संख्या सब से अधिक होगी"।

(३) नियम (१२) के स्थान पर निम्न लिखित नियम बनाया जाय (१२) (क) सभा के सभा पति और उपसभा पतियों में से कम से कम एक का तथा मंत्री और उपमंत्री का काशीस्थ होना आवश्यक हैं (ख) सभा के मंत्री और उपमंत्री प्रबन्ध कारिणी समिति के भी मंत्री और उपमंत्री होंगे। इनके अतिरिक्त प्रबन्ध कारिणी समिति को अधिकार होगा कि वह अपने सभासदों में से प्रति वर्ष अपनी समिति का एक प्रधान और एक उपप्रधान चुने जो काशीस्थ होंगे (ग) सभा के सभापति तथा उप सभापति जब कभी प्रबन्ध कारिणी समिति में उपस्थित होंगे तब उन्हे उस समिति में सम्मति और वोट देने का वैसाही अधिकार होगा जैसा कि उस समिति के अन्य सभासदों को होगा"।

(४) नियत (१३) के स्थान पर निम्न लिखित नियम बनाया जाय (१३) अवधि के बीच में यदि साधारण सभा के किसी पदाधिकारी का पद खाली होगा तो उस सभा को अधिकार होगा कि उस के स्थान पर दूसरा अधिकारी चुने। इसी प्रकार प्रबन्ध कारिणी समिति में यदि कोई स्थान खाली होगा तो वह समिति दूसरे किसी को उस स्थान पर चुनेगी। ऐसे अधिकारी या सभासद की अवधि उतने ही दिनों की होगी जितनी उस के पूर्वस्थ अधिकारी की बाकी रही हो। प्रबनध कारिणी समिति के जो नगरस्थ सभासद वर्ष भर में कमसे कम चार अधिवेशनों में उपस्थित न होंगे अथवा जो बाहरी सभासद कमसे कम चार अधिवेशनों के कार्य पर अपनी सम्मति न भेजेंगे अथवा उसके बदले में कमसे कम दो अधिवेशनों में उपस्थित न होंगे तोउनका स्थान खाली समझा जायगा"।

(५) नियम (२०) के स्थान पर निम्न लिखित नियम बनाया जाय। (२०) जो सभासद ५) रु० वा इस से अधिक वार्षिक चन्दा दें उन्हें उस मास से जिसमें वे सभासद हुए हैं नागरी प्रचारिणी पत्रिका, नागरी प्रचारिणी ग्रन्थ माला और नागरी प्रचारिणी लेखमाला बिना मूल्य दीजायगी। जो सभासद ३) रु० वार्षिक चन्दा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देंगे उन्हें पत्रिका और उनकी इच्छानुसार ग्रन्थमाला अथवा लेखमाला तथा जो १॥) रु० वार्षिक देंगे उन्हें केवल पत्रिका विना मूल्य दी जायगी ।(६) नियम (२१) में "पत्रिका और ग्रन्थमाला" के स्थान पर "पत्रिका, ग्रन्थमाला और लेखमाला" बनाया जाय । (७) नियम (२३) (३) में से "सब" शब्द निकाल दिया जाय । (८) नियम (२८) के स्थान पर निम्न लिखित नियम बनाया जाय:—(२८) (क) साधारण सभा के कार्यकर्ताओं का चुनाव प्रति वर्ष वार्षिक अधिवेशन में होगा जो अगस्त मास के पहले सोमवार को हुआ करेगा । (ख) प्रबन्ध कारिणी समिति के प्रत्येक सभासद की अवधि तीन वर्ष की होगी और प्रति वर्ष सात सभासदों का चुनाव वार्षिक अधिवेशन में होगा । जिन में से चार स्थानीय होंगे और तीन बाहरी । तथा प्रबन्ध कारिणी समिति के प्रधान और उप प्रधान का चुनाव नई प्रबन्ध कारिणी समिति के उस अधिवेशन में प्रति वर्ष होगा जो वार्षिक अधिवेशन के बाद होगी । (ग) प्रथम तीन वर्षों में स्थान त्याग करने वालों और उनके स्थान पर चुने जाने वाले नवीन सभासदों की सूची प्रथम चुनाव वाले वार्षिक अधिवेशन में गोटी डाल कर निश्चय कर ली जायगी ।

(९) नियम (२९) की चौथी पंक्ति में से "स्थानिक" शब्द निकाल दिया जाय ।

(१०) नियम (३१) की प्रथम पंक्ति में "समय" और "में" के बीच "एक ही सभा, समिति तथा कमेटी" जोड़ दिया जाय ।

(११) नियम (३८) के अन्त में निम्न लिखित नियम जोड़ा जाय ।

(७) प्रधान और उपप्रधान को प्रबन्धकारिणी समिति के सम्बन्ध में वे ही अधिकार और कर्तव्य होंगे जो सभा पति और उप सभा पति को साधारण सभा के सम्बन्ध में हैं । (१२) नियम (४१) के अन्त में "परन्तु कोई पदाधिकारी अथवा प्रबन्धकारिणी समिति का सभासद इस काम के लिए नहीं चुना जा सकता" ये शब्द बढ़ा दिये जांय । (१३) नियम (४३) (७) के अन्त में "परन्तु प्रबन्ध कारिणी समिति के अनुरोध पर ऐसा किया जा सकता है", ये शब्द जोड़ दिये जायं ।

(१४) नियम (४३) (९) में से सातवां उप नियम निकाल दिया जाय । (१५) नियम (४५) में "१६ जुलाई" के स्थान पर अगस्त मास के पहिले सोमवार बनादिया जाय । (१६) नियम (४६) को दूसरी और तीसरी पंक्तियों में सभा के स्थान पर "कमेटी" बनादिया जाय ।

(१०) समय अधिक होने के कारण निश्चय हुआ कि सभा विसर्जित की जाय और शेष कार्यों के लिये पुनः मंगल वार ता० २८ सितम्बर १९०९ का सन्ध्या के छ बजे सभा भवन में अधिवेशन हो ।

साधारण अधिवेशन ।

मंगलवार ता० २८ सितम्बर १९०९ सन्ध्या के ६ बजे

स्थान-सभाभवन ।

(१) बाबू जुगलकिशोर के प्रस्ताव तथा पण्डित देवी प्रसाद उपाध्याय के अनुमोदन पर पण्डित रामनारायण मिश्र सभापति चुने गए ।

(२) नियम संशोधन के विषय में प्रबन्धकारिणी सभा के प्रस्ताव निम्न लिखित सभासदों की सम्मतियों के सहित उपस्थित किए गए, अर्थात् बाबू भगवतीशरणसिंह, बाबू रामजी दास वैश्य, बाबू गदाधरसिंह, पण्डित गणेशप्रसाद शर्मा, पण्डित महादेवशरण पाण्डेय, पण्डित जानकी प्रसाद शुक्ल, पण्डित व्रजरत्न भट्टाचार्य, बाबू अखिलचन्द्र पालनीत, बाबू जगमोहन वर्म्मा, लाला जगन्नाथप्रसाद हकीम, बाबू दामोदर दास खण्डेलवाल, पण्डित श्याम-बिहारी मिश्र एम० ए०, बाबू बांकेलाल टालीवाल, बाबू महावीरसिंह वर्म्मा पं जगदेव उपाध्याय बा० शिवप्रसाद गुप्त, ठाकुर सूर्य्यकुमार वर्म्मा, बाबू छेदालाल, बाबू राधाकृष्ण मास्टर, पण्डित गणपत जानकीराम दुबे, बाबू न्यादरसिंह, पण्डित जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल, पण्डित द्वारिकाप्रसाद चतुर्वेदी, बाबू जुगलकिशोर अखौरी और बाबू शिवकुमारसिंह ।

(३) प्रत्येक प्रस्ताव पर विचार के अनन्तर निश्चय हुआ कि नियमों में निम्न लिखित परिवर्तन किए जांय ।

१--नियम (८६) (ग) में "१/२" के स्थान पर "१/८" बना दिया जाय और नियमावली के अन्तिम पृष्ट पर अक्षरों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का जो नमूना छपा है उसमें नियम ८६ का उल्लेख कर दिया जाय ।

२--नियम (८७) की तृतीय पंक्ति में "लिए" और "और" के बीच में "रेडीची पदक" और अन्त में "राधाकृष्णदास पदक" जोड़ दिया जाय ।

३--निम्न लिखित नियम और बढ़ाए जांय ।

"(११९) सभा का एक सहायक मंत्री वेतन भुक्त होगा जिसका कार्य्य सभा के कार्यालय की देख भाल रखना और सभा के सब कामों में मंत्री या उपमंत्री के आदेशानुसार काम करना होगा ।

(१२०) सभा के वेतन भुक्त तथा उससे आर्थिक सम्बन्ध रखने वाले सभासद प्रबन्धकारिणी समिति के सभासद न हो सकेंगे और न उन्हें अपनी सम्मिति देने का किसी अधिवेशन में अधिकार होगा ।

(१२१) सभा के आयव्यय का हिसाब प्रतिमास आडिटरों से जंचवा कर उनकी सम्मति के सहित नागरीप्रचारिणी पत्रिका में छपा करेगा ।

(४) नियम (८७) (क) (ख) और (ग) के अन्त में "प्रशंसापत्र" ले आगे "तथा एक रुपये की पुस्तक" ये शब्द जोड़ दिये जांय ।

(५) नियम (२७) के अन्त में परन्तु साधारण सभा में उपस्थित होने के एक मास पूर्व से उस प्रस्ताव की सूचना पत्रिका द्वारा सभासदों को दी जायगी ।

(६) ये संशोधन तारीख १ जुलाई १८९० ई० से प्रचलित है और तारीख २५ सितम्बर १८०८ के अधिवेशन में नियम (२०) का जो संशोधन स्वीकृत हुआ है, वह ता० १ जूलाई १८०८ से प्रचलित समझा जाय ।

(७) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई ।

——:o:——

सभा का कार्यविवरण ।

शनिवार ता० ३० अक्तूबर १९०९ सन्ध्या के ५॥ बजे

स्थान-सभाभवन ।

(१) पण्डित देवीप्रसाद उपाध्याय के प्रस्ताव तथा बाबू वेणीप्रसाद के अनुमोदन पर पण्डित भुवनेश्वर मिश्र सभापति चुने गए ।

(२) गत अधिवेशनों (तारीख २८ सितम्बर १८०८) के कार्यविवरण पढ़े गए और स्वीकृत हुए ।

(३) प्रबन्धकारिणी सभा का तारीख १८ सितम्बर १८०८ का कार्यविवरण सूचनार्थ उपस्थित किया गया ।

(४) निम्न लिखित महाशय नवीन सभापति चुने गए। (१) बाबू बंशीधर बी० ए०, एल० एल० बी० कालिका गली काशी १॥) (२) पण्डित उमाकान्त पाण्डेय-देवनाथपुरा-काशी १॥) (३) मुं० बैजनाथ प्रसाद-महल्ला नन्दनशाहु-काशी ३) (४) श्रीयुत बी०एस०सुमेधंकर भिक्खु इसीपतन-बनारस केन्टून्मेन्ट १॥) (५) पण्डित रामनारायन मिश्र सुदर्शित ब्रैंच स्कूल-बस्ती १॥) (६) बाबू भगेलूरामटीचर हाईस्कूल--बस्ती १॥) (७) पण्डित हरिदत्त तिवारी सकलाना टेल-बस्ती १) (८) पण्डित रामप्रसाद तिवारी डाकखाना-बस्ती १॥) (९) बाबू जगप्रसाद सिंह भानुपुर पो० छपिया जिला-बस्ती ३) (१०) बाबू रामशंकर लाल हेडमास्टर-भानपुर पो० जि०-बस्ती १॥) (११) ठाकुरप्रसाद सिंह-सिकत्तर श्रीमान् राजासाहब-कालाकांकर ५) (१२) बाबू सूर्य प्रसाद कुकस इस्टेट-बस्ती ३। (१३) बाबू कुंवर बहादुर सियाहानवीस तहसील गोंडा१॥) (१४) बाबू दक्षिणी प्रसाद वर्म्मा हेड मास्टर म्युनिसिपल स्कूल गोंडा १॥) (१५) पण्डित सीताराम करण, मोहल्ला राजा का शहर गोंडा १॥) (१६) पण्डित गोकुलप्रसाद तिवारी असिस्टेन्ट सर्जन मऊरानीपुर जिला झांसी ३। (१७) बाबू गंगाप्रसाद अरोड़ा कल्पतरु प्रेस-काशी १॥) (१८) बाबू नवनीतदास अग्रवाल C/o बाबू रामदास ठठेरीबाजार-काशी १॥) (१९) बाबू वृन्दावन कसरवानी कटरा बाजीराव मिरजापुर ३) !

(५) सभासद होने के लिये २६ नवीन आवेदन पत्र सूचनार्थ उपस्थित किए गए ।

(६) निम्न लिखित सभासदों के इस्तीफे उपस्थित किये गये और स्वीकृत हुए ।

(१) मुनिराज धर्म्मविजय जी, अंग्रेजी कोठी-काशी (२) बाबू शिवपूजन सिंह रसड़ा-बलिया (३) बाबू गौरीशंकर वैस मुजफ्फरनगर (४) पण्डित रामभरोसे अग्निहोत्री बी० ए० हाइस्कूल मथुरा (५) पण्डित गंगादीन द्विवेदी। रामनगर बनारस ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(८) पण्डित रामनारायण मिश्र का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने सूचना दी थी कि शिमले से उनकी बदली बरेली में हो गई है अतः पंजाब प्रान्त से प्रबन्धकारिणी सभा में उनके स्थान पर कोई दूसरा सभासद नियत किया जाय।

निश्चय हुआ कि यह पत्र आगामी अधिवेशन में विचारार्थ उपस्थित किया जाय!

(९) बाबू श्यामसुन्दर दास का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने प्रबन्धकारिणी सभा तथा उपसभापति के पद से इस्तीफा दिया था।

निश्चय हुआ कि यह पत्र भी आगामी अधिवेशन में विचारार्थ उपस्थित किया जाय।

(१०) निम्नलिखित पुस्तकें धन्यवाद पूर्वक स्वीकृत हुईं। (१) बाबू यशोदानन्द अखौरी बड़ाबाजार कलकत्ता, जोज़फ़ विलयम भाग १-४, भारत की वर्त्तमान दशा, कमलाकान्त का इजहार। बाबू माईदयाल पारि रामलीला नाटक। (३) बाबू चतुर्भुज सहाय वर्म्मा, काशी मांस भक्षण, नखशिख बतीसी, रामायणार्थ विचित्र मार्ज कौ नकशा, वैष्णवविलास, बाबू पन्नालाल जैन बम्बई पार्श्वाभ्युदयस। बाबू रामप्रसाद सत्याल काशी रात में सात। (६) रेवरेंड इ० ग्रीव्स, काशी ईश्वर का अवतार लेना और प्रायश्चित करना। (७) बाबू राधामोहन गोकुल जी कलकत्ता Gilcirist's English Hindustani Dictionary (८) बाबू बालकृष्णदास जगतगज काशी Original Sanskrit Taxts Part III (९) गौरचरण गोस्वामी वृन्दावन, जाली कुञ्जलाल, विचित्र जाल श्रीगौराग चरित्र, भूषण दूषण (१०) पण्डित छबीले लाल गोस्वामी काशी, श्रीराधाकृपा कटाक्ष स्तवराज श्रीचैतन्यदिग्विजय, समालोचना, केशवदिग्विजय सार समुच्चय।

(८) खरीदी गई। हिन्दी केमिस्ट्री, भीखासाहब की शब्दावली, तुलसी साहब का रत्नसागर। Indian antiquary for September 1909.

(११) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

सुरेन्द्रनारायण शर्म्मा

उपमंत्री।

आय व्यय का हिसाब।

(सितम्बर १९०९)

आय	धन की संख्या		
गत मास की बचत	१४६६	२	६ १/२
सभासदों का चन्दा	३८१	०	०
पुस्तकालय का चन्दा	४८	२	०
पुस्तकों की बिक्री	४४	८	०
हिन्दी कोश	१०	०	०
पृथ्वीराजरासो	३१	३	६
स्थायी कोश	२५०	०	०
जोड़	५८८७	०	१/२

व्यय	धन की संख्या		
आफ़िस के कार्यकर्ताओं का वेतन	७४	०	०
नागरी प्रचार	१५	४	०
डांक व्यय	११	६	९
पुस्तकालय	४७	१	९
हिंदी पुस्तकों की खोज	५८	१२	०
फुटकर व्यय	२९	१४	०
हिन्दी कोश	६०२	५	९
पृथ्वीराजरासो	४०३	११	३
अमानत चुकाया गया	५	०	०
छपाई	५५१	०	६
	१७९८	८	०
बचत	४१९८	८	१/२
जोड़	५८८७	०	१/२

रोकड़ सभा	८८॥।)८ १/२
बनारस बंक (कोश विभाग)	४८४१॥।)२०
	४९३०॥=)६ १/२
बंक का देना	७३२॥=)॥
	४१९८॥) १/२

देना ६०७०)

——:o:——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभा के पारितोषिकों की सूची ।

(१) इस वर्ष के सभा के नियमित दो मेडलों के लिये निम्न लिखित विषय नियत हैं । ये लेख ३१ दिसम्बर १९०९ तक सभा में आजाने चाहिएं ।

वैज्ञानिक विषय ।

प्राकृतिक अवस्था का उत्तर भारत के सामाजिक जीवन पर प्रभाव ।

सधारण (विद्या) विषय ।

अकबर के पूर्व हिन्दी की अवस्था ।

(२) डाक्टर छन्नूलाल मेमोरियल मेडल-यह सोने का मेडल उस व्यक्ति को दिया जायगा जिसका लेख "स्त्रियों के रोग" पर सब से उत्तम होगा । लेख सरल हिन्दी में होना चाहिए और सभा के पास ३१ दिसम्बर १९०९ तक आजाना चाहिए ।

(३) ५००) का पुरस्कार—सभा द्वारा निश्चित अनुक्रमणिका के आधार पर जो हिन्दी का सब से उत्तम व्याकरण लिखेगा उसे यह पुरस्कार दिया जायगा । व्याकरण ३१ दिसम्बर १९०९ तक सभा के पास आजाना चाहिए । यदि कई व्याकरणों के भिन्न भिन्न अंश उत्तम समझे जांयगे तो यह पुरस्कार उन सब लोगों में बाँट दिया जायगा और उन ग्रन्थों को घटाने बढ़ाने आदि का इस सभा को पूरा अधिकार होगा । सभा द्वारा निश्चित अनुक्रमणिका दो पैसे का टिकट डाकव्यय के लिये भेजने पर सभा के मंत्री से मिल सकती है ।

ममीरे का सुरमा ।

एसिष्टण्ट केमिकल एकजामिनर साहब गवरमेण्ट पञ्जाब द्वारा परीक्षित व प्रमाणित हो चुका है । माननीय अंग्रेजी मेडिकल कालिज के अफ़सर डाक्टरों राजों महाराजों विलायत की युनिवरसिटी से सनद पाए डाक्टरों ने परीक्षा करके इस अञ्जन की सचाई प्रकट की है और बताया है कि नेत्र रोगों के लिये यह सुरमा अकसीर गुण रखता है । दृष्टि की कमजोरी, आंखों का अन्धशून्य, जाला, पड़वाल, गुवार, फुंसी, आंखों से पानी का बहना, आंखों की लाली मोतियाबिन्द की प्रथम अवस्था, खाज, खुजली इत्यादि ।

माननीय डाक्टर और हकीम आंख के रोगियों को जो उनके पास आते हैं यह सुरमा देते हैं । चार दिन के लगाने से आंखों की दृष्टि ठीक हो जाती है । बालक से लेकर बूढ़े तक के लिये यह अञ्जन एक समान लाभदायक है । मूल्य इस कारण कम रक्खा गया है कि धनाढ्य और दीन दोनों इससे लाभ उठा सकें । मूल्य एक तोला का जो एक वर्ष के लिये बहुत है २) दो रुपया है । ममीरे का सच्चा सुरमा जो बहुत उत्तम ३) तीन रुपये तोला । एक खालिस ममीरा एक माशा २०) है । डाक का खर्चा ग्राहक के जिम्मे । पत्र भेजने के समय अखबार का नाम लिखो । पता-प्रोफेसर मायासिंह अहलवालिया मुकाम-बटाला जिला गुरदासपुर-पञ्जाब ।

संतबानी पुस्तकमाला

अर्थात प्राचीन महात्माओं की दुर्लभ बानी का जो गुप्त होती जाती है जीर्णोद्धार मय उनके जीवन-चरित्र के

कबीर सा०, तुलसी सा०, पलटू सा० प्राणजीवन सा०, रैदासजी, चरनदास जी दरिया सा०, दयाबाई, सहजोबाई, इत्यादि ।

बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद से इश्तिहार मँगा कर देखिये ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Printed by Mahdo Prasad at the Bharat Press, Benares, for B. Gauri Shankar Prasad, Publisher.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक
रामचन्द्र शुक्ल ।

Registered No A 414

नागरीप्रचारिणी पत्रिका ।

[मासिक पत्रिका]

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल । बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ॥
करहु बिलंब न भ्रात अब, उठहु मिटावहु सूल । निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जु सब को मूल ॥
विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार । सब देशन सों लै करहु, भाषा मांहि प्रचार ॥
प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि यत्न । राज काज दर्बार में, फैलावहु यह रत्न ॥ हरिश्चन्द्र

भाग १४ | १५ दिसम्बर १९०९ । | संख्या ४

सूचना और सम्मति ।

——:o:——

प्रयाग से निकलनेवाले अंग्रेजी दैनिकपत्र 'लीडर' ने अपनी ११ नवम्बर की संख्या में नागरी प्रचारिणीसभा के कामें की प्रशंसा करते हुए उस की उन्नति की कामना प्रगट की है । हम अपने सहयोगी को उसके उत्साहवर्द्धक वाक्यों के लिये धन्यवाद देते हैं ।

——:o:——

विहार के लोगें ने फिर बंगालशिक्षाविभाग के अधिकारियों से कलकत्ते के प्रेसिडेंसी कालेज में हिन्दी की पढ़ाई का प्रबंध करने के लिए प्रार्थना की थी । जवाब मिला अभी इसकी कोई जरूरत नहीं देख पड़ती । नहीं कह सकते यह देखनेवालों का दोष है कि ज़रूरत का ।

——:o:——

लखनऊ के रीड क्रिश्चियन कालेज में उर्दू की शीघ्रलेखप्रणाली सिखाई जाने लगी है । आज कल पुलिस के १६ सब इन्सपेक्टर वहां यह लिपि कौशल सीख रहे हैं । एक दिन पुलिसवालें ने वहां एक सभा की थी जिस में खड़े होकर उक्त कालेज के एक पादरी साहब ने इस लिपिविद्या का इतिहास कह सुनाया था । उन्हीं से मालूम हुआ कि गत वर्ष की सातवीं मार्च को गवर्नमेंट ने उक्त कालेज के कर्त्ताओं से उर्दू शीघ्र लिखने की शैली निकालने के लिए कहा था । सरकारी आज्ञा ठहरी; सात महीने के भीतर यह उर्दू की शीघ्रलिपि तैयार हो गई । उर्दू की यह शीघ्र लेखशैली प्रोफेसर यल० घोष ने अरबी और फारसी के अध्यापक हादी की सहायता से निकाली है । कहते हैं कि घोष महाशय को इसके निकालने में बड़ी भारी भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है । डिप्टी इन्सपेक्टर जनरल ने घोष साहब को इस काम के लिये बधाई दी है । सहयोगी 'भारतमित्र' कहता है कि "हिन्दी वालें को भी इस से काम लेने की चयेष्टा करनी चाहिए, क्योंकि उर्दू से हिन्दी शीघ्रलेखनप्रणाली बना लेने में विशेष परिश्रम न पड़ेगा ।" सहयोगी को विदित होना चाहिए कि बिना सरकारी फ़रमाइश ही के नागरीप्रचारिणी सभा हिन्दी की संक्षेपलेखप्रणाली तैयार करवा चुकी है जो शीघ्र निकलना चाहती है । वहां उर्दू की शीघ्रलिपिशैली निकानेलवाले यल०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घोष और मौलवी हादी हैं, यहाँ हिन्दी की शीघ्र लेखप्रणाली निकालने वाले यस० बोस और पंडित निक्का मिश्र हैं। आशा है कि मध्यप्रदेश और विहार (बंगाल) की गवर्न्मेंट इस हिन्दी शीघ्र लेखप्रणाली का अपने प्रान्तों के पुलिस आदि विभागों में प्रचार करेगी। अन्त में अपने संयुक्त प्रदेश की गवर्न्मेंट से भी प्रार्थना हैं कि वह इस हिन्दीलिपिप्रणाली की भी परीक्षा करे और हमारा उत्साह बढ़ावे।

——:o:——

महाकवि कालिदास के विषय में हम लोगों को बहुत कम बातें मालूम हैं। वे उज्जैन के राजा विक्रमादित्य की सभा में रह कर अपनी अलौकिक उक्तियों से उनका मनोरञ्जन किया करते थे इसके अतिरिक्त उनकी जीवनसम्बन्धी कोई इतिहाससम्मत घटना हम लोगों को मालूम नहीं। सिंहलद्वीप (सीलोन) में ऐसी जनश्रुति चली आती है और उसका समर्थन सिंहली ग्रन्थों से भी होता है कि कालिदास ने वहां के मतारा नामक स्थान में, जो उस द्वीप के दक्षिण ओर समुद्र तट पर है, शरीर त्याग किया था। पंडित सतीश चन्द्र विद्याभूषण से वहां के लोगों ने बतलाया है कि कालिदास की समाधि कालिन्दी नदी (आधुनिक किरिन्दी) के किनारे पर उस स्थानसे थोड़ी दूर पर थी जहां वह समुद्र से मिलती हैं। इस स्थान पर आजकल नारियल और सोपारी के पेड़ों का एक अच्छा उपवन है और पास ही तिष्याराम विहार नामक बौद्ध मठ है। ऐसा कहा जाता है कि राजा कुमारदास (वा कुमार धातुसेन) ने कालिदास को अपनी सभा में उज्जैन से बुलवाया था। संयोग से उस महाकवि की वहीं मृत्यु हो गई। जब कालिदास का शरीर छूटा तब राजा इतने दुःखित हुए कि वे कालिदास की चिता में कूद पड़े। यह शोचनीय घटना ५२४ ईसवी की बतलाई जाती है। यदि प्राचीन भारत से सम्बन्ध रखनेवाले देशों की पूरी छानबीन की जाय तो भी हमारे इतिहास की बहुत सी छिपी हुई बातें प्रगट हो सकती हैं।

कोश विभाग का काम शीघ्रता से हो रहा है। शब्द चुनने का काम समाप्त हो गया। अब वे स्लिपें जिन पर शब्द लिखे हुए हैं अक्षर क्रम से लगाई जा रही हैं। बाबू जगन्मोहन वर्म्मा आज कल सभा की ओर से कोश के लिए चन्दा एकत्र करनेके लिये घूम रहे हैं। आशा है कि हिन्दी हितैषी सज्जन लोग इस काम में उन की पूरी सहायता करेंगे।

विज्ञान और शिल्प की उन्नति के लिए एक हिन्दुस्तानी सभा इंगलैंड के लीड्स नगर में स्थापित हो रही है। इसका उद्देश्य हिन्दुस्तानी वैज्ञानिकों की संख्या बढ़ाना, उन्हें वैज्ञानिक खोज के लिए उत्साहित करना, विज्ञान और शिल्प की उच्चशिक्षाप्राप्ति का मार्ग सुगम करना, हिन्दुस्तान में सर्वसाधारण के बीच वैज्ञानिक बातों का ज्ञान फैलाना है। साथ ही भारतवर्ष की आवश्यकताओं के अनुकूल एक वैज्ञानिक पत्र निकालने का भी विचार है जिसे हिन्दुस्तान के प्रसिद्ध प्रसिद्ध विज्ञानवेत्ता लोग चलावेंगे। इस पत्र के द्वारा आगे चलकर विज्ञान और शिल्प की अच्छी अच्छी पुस्तकों का हिन्दुस्तान की देशभाषाओं में अनुवाद निकालना भी सोचा गया है। वैज्ञानिक विषयों पर सुबोध व्याख्यानों का प्रबंध भी मुख्य २ नगरों में किया जायगा। मिस्टर एम० ए० आर० पानीकर को, जो इस सभा के मंत्री हैं, जरमनी और आस्ट्रिया आदि देशों से पूरी सहायता मिलरही है। इंगलैंड और अमेरिका की विज्ञानसभाएं भी इस काम में हर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरह की सहायता पहुंचाने के लिए तैयार हैं। सभासदों की संख्या लगभग १०० के पहुंच गई है और प्रत्येक विज्ञान से रुचि रखनेवाले भारत वासी से उसमें सम्मिलित होने की प्रार्थना की गई है। लीड्स युनिवर्सिटी के प्रो-वाइसचैंसलर आर्थर स्मिथेल्स इस सभा के सभापति हुए हैं। आशा है कि हमारे देशवासी इस काम में कुछ अधिक फुरती दिखावेंगे।

डालटन गंज (पलामऊ) में कुछ हिन्दीप्रेमी सज्जनों के उद्योग से १९०५ में "हिन्दी गोष्ठी" नाम की एक सभा स्थापित हुई थी। पहिले वर्ष तो इसको अच्छी सहायता मिली और इसने अपना काम अच्छी तरह से किया। दूसरे वर्ष कई कारणों से इसके कार्य्य में कुछ शिथिलता आई जिसके पीछे फिर बहुत दिनों तक वह न संभल सकी। अब बाबू युगल किशोर अखौरी बी० ए० ने इसे बहुत उद्योग कर के पुनर्जीवित किया है। इसका एक अधिवेशन गत अगस्त मास में धूम से हुआ। सभापति का आसन स्थानीय डिपुटी कमिश्नर हिग्नल साहब ने ग्रहण किया। नगर के सब प्रतिष्ठित और शिक्षित सज्जन आए। उपमन्त्री बाबू युगलकिशोर अखौरी बी० ए० ने संक्षिप्त रिपोर्ट पढ़ी। हिन्दी में व्याख्यान हुए। मिस्टर हिग्नल संरक्षक, डाक्टर यू० सी० दास० सिविल सर्जन, पलामऊ, उपसंरक्षक, बाबू दीनेश्वरप्रसाद वकील मंत्री, और बाबू युगलकिशोर अखौरी उपमंत्री चुने गए। सब हिन्दी प्रेमियों को चाहिए कि इस सभा की द्रव्य और पुस्तक आदि से सहायता करें।

शोक ! शोक ! ! शोक ! ! !

३० नवम्बर की पिछली रात को भारत का वह प्रदीप बुझ गया जिसकी उज्वल ज्योति देश की आर्थिक दशा झलकाती थी, उसके पूर्वपुरुषों की आकृति प्रकृति प्रत्यक्ष करती थी, समाज के मनोहर चित्रों की झलक दिखाती थी और राजनीति का सुगम मार्ग सुझाती थी। अंग्रेज़ी और बँगला के सर्वमान्य ग्रन्थकार, प्राचीन इतिहास के धुरन्धर आचार्य्य, राजनीति और अर्थ नीति विशारद, उद्भट शासक और प्रबन्ध कर्त्ता, हिन्दी के पूरे हितैषी, भारतवासियों के सब से अधिक अभिमान और गौरव की वस्तु श्रीयुक्त रमेशचन्द्र दत्त अब इस संसारमें नहीं हैं। भारतवासियों विशेष कर देशभाषासेवियों की बहुत सी आशाएँ उन्हीं के साथ विलीन हो गईं। देशहितकर कार्य्योंकी एक बँधी हुई झड़ी टूट गई, देशभाषाओं के साहित्य का एक सहारा हट गया। बंग भाषा को हिन्दुस्तान के सब से बड़े आदमी की लेखनी का वियोग हुआ, हिन्दी को एक बड़ा भारी भरोसा देने वाला देखते देखते चल बसा। उनकी विशाल मूर्त्ति और गम्भीर आकृति अब देखने को न मिलेगी; उनका गम्भीर स्वर अब सुनने को न मिलेगा। शोक !

उर्दू राष्ट्रभाषा।

निज़ाम की राजधानी हैदराबाद में Young men's Improvement Society के बीच खड़े होकर डाक्टर निशिकान्त चटर्जी ने उर्दू का खूब गुणानुवाद किया और उसे ही भारतभाषा होने के योग्य बतलाया। आपने उठते ही कहा कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'क्या अच्छा होता यदि अंग्रेज़ी यहां की देश भाषा हो जाती । पर यह बात असंभव देख पड़ती है" मैं भी कहता हूं कि क्या अच्छा होता यदि भारतवासी आज कंदराओं में से आंख मलते निकलते, उनका कोई इतिहास न होता, उनका कोई धर्म्म न होता, उनकी कोई भाषा न होती उनका कोई साहित्य न होता । डाक्टर साहब ने फिर कहा—"मैं बहुत दिनों से ऐसी देशभाषा की खोज में था जो सारे हिन्दुस्तान की जातीय भाषा हो सके; अन्त में इतिहास-परम्परा और शब्दभाण्डार के विचार से उर्दू ही इस योग्य देख पड़ी । सौ वर्ष से अधिक हुए कि अंग्रेज शासकों के ध्यान में यह बात आई और वे फ़ोर्ट विलियम कालेज द्वारा उसका पोषण और संस्कार करने लगे । इसीसे अंग्रेजी राज्य और पादरी लोग ही उसके पालनकर्त्ता कहे जाते हैं" ।

जिस उर्दू की चर्चा दिल्ली के शाही दर्बारों में भी औरंगजेब के पीछे मुग़ल राज्य के अधः-पतन के साथ शुरू हुई उसकी इतिहासपरम्परा के सामने हिन्दी की इतिहासपरम्परा कुछ न ठहरी । जो पृथ्वीराज के समय के वीरों की भाषा रही, जिसमें अमीर खुसरो और मलिक मुहम्मद जायसी ने पहेलियां और कहानियां कहीं, जिसके महाकवियों ने भारत में भक्ति और प्रेम का स्रोत बहाया क्या उसके गौरव के भुलाने ही में अब देश का कल्याण है ? डाक्टर साहब ने जो उर्दू के शब्दभांडार की बात कही वह भी विलक्षण ही है । हिन्दी शब्दों के सिवाय जो शब्द उर्दू में हैं वे अरबी, फ़ारसी तुर्की आदि के हैं । ये विदेशी शब्द अधिकतर सीख सीख कर भाषा में भरे जाते हैं इसमें तो कुछ सन्देह ही नहीं । उन संस्कृत शब्दों की ओर जिनका प्रचार न कि केवल सारे भारतवर्ष ही में वरन सिंहल-द्वीप, ब्रह्मदेश और श्याम आदि में है उर्दू भूल कर भी नहीं ताकती । और कहां तक कहें संस्कृत के उन साधारण शब्दों के लिये भी जो गांव गांव घर घर सुनने में आते हैं उर्दू में जगह नहीं । जैसे सुख, दुःख, दया, माया, प्रेम, प्रीति कलह, द्वार, शोक, शोच, रीति, प्राण, जीवन, ज्ञान, ऐश्वर्य्य, वैभव, संकोच अतिथि, चिंता, निश्चिंत, पाप, पुण्य, धर्म इत्यादि । पर हिन्दी उन फ़ारसी वा अरबी शब्दों को लाते हुए ज़रा भी संकोच नहीं करती जो लोगों की बोलचाल में आ गए हैं । यह प्रवृत्ति उसकी बहुत पुरानी है । सूरदास और तुलसी दास आदि ने उन विदेशी शब्दों से जो देश में बस गए हैं पूरा काम लिया है । (१) बहुत से ऐसे ठेठ हिन्दी के शब्द पड़े हैं जिनके बिना हमारा नित्य का काम एक घड़ी भी नहीं चल सकता पर जिनके बिना उर्दू साहित्य का काम बड़े मज़े में चला जाता है । इससे हम क्या समझें! यही न कि उर्दू साहित्य से और हमारे सांसारिक जीवन से बहुत कम लगाव है । (२) वैज्ञानिक दार्शनिक तथा और गंभीर विषयों को समझाने के लिये हिंदी संस्कृत से सहायता लेगी जिसके समझने और जानने वाले इस देश में फ़ारसी अरबी की अपेक्षा दसगुने से अधिक होंगे । (३) दूसरी बात यह है कि उर्दू हिन्दुस्तान की बँगला मराठी, गुजराती आदि किसी की साहित्यभाषा से नहीं मिलती अतः वह इन भाषाओं के बोलने वालों के बीच प्रचार कैसे पा सकती है ? पर हिन्दी से उनका बड़ा घनिष्ट सम्बन्ध है । कहीं कहीं तो केवल क्रिया आदि के रूपों को बदलने ही से दो भाषाएं एक हो जाती है । अतः स्पष्ट है कि राष्ट्रभाषा बनाने के लिये हम हिन्दी, बंगला मराठी, गुजराती आदि ही में से किसी को चुन सकते हैं । उर्दू की ओर तो ध्यान ही नहीं जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता। ये भिन्न भिन्न भाषावाले थोड़ी बहुत राह दे सकते हैं, अपनी भाषाओं को बिलकुल किनारे नहीं कर सकते। हिन्दी की कोई पुस्तक उठाकर पढ़िये उसे आपके पास बैठे हुए बंगाली, महाराष्ट्र, और गुजराती थोड़ा बहुत सब समझ लेंगे पर उर्दू की कोई इबारत पढ़ने लगिए तो वे आपका मुंह ताकने लगेंगे। डाक्टर साहब की भाँति क्या सब बंगालियों को अपने मधुसूदन दत्त, बङ्किम और नवीन के वाक्यों पर कुछ भी ममत्व नहीं! क्या वे उनकी शब्दावली को बिलकुल पलट देंगे और गालिब और सौदा की भाषा लिखने पढ़ने लगेंगे? क्या हम अपने सूर, तुलसी, रहीम तथा हरिश्चन्द्र और प्रतापनारायण को बिलकुल भूल जायँ? इन हिन्दी, बंगला, मराठी आदि भाषाओं के ठेठ शब्द भी प्रायः मिलते जुलते क्या एक ही हैं। और वे सब आवश्यकतानुसार संस्कृत से सहायता लेती हैं। रह गई तामील और तैलंगी, वे भी संस्कृत शब्दों की सहायता से चलती हैं। इस एकता को नष्ट करने की जो चेष्टा करे वह देश का हितैषी कभी नहीं हो सकता।

(४) इस बात को दुनिया जानती है कि उर्दू में संस्कृत वा प्राकृत शब्दों का रत्ती भर भी गुज़र नहीं। अब उर्दू का ढांचा और व्याकरण बिल्कुल हिन्दी का है, उसके शब्द भी बहुत से हिन्दी के हैं। अतः व्याकरण सम्बन्धी किसी बात की खोज के लिए प्राकृत से होते हुए संस्कृत तक जाना होगा। इसी प्रकार शब्दों की व्युत्पत्ति भी प्राकृत और संस्कृत में टटोलनी होगी पर यह बात उर्दू पंडितों के लिए असंभव सी है, क्योंकि उर्दू-साहित्य-सेवा के लिये अरबी और फ़ारसी की लियाक़त की ज़रूरत होती है न कि संस्कृत और प्राकृत की। प्रायः सब उर्दू लेखक इन संस्कृत और प्राकृत शब्दों से लगाव न रखने के कारण अपनी भाषा के शब्दों की व्युत्पत्ति आदि कुछ भी नहीं जानते। उनका व्याकरण विचार लखनऊ और दिल्ली के मुहाविरों ही तक ख़तम हो जाता है। हिन्दी में विभक्ति प्रत्यय पर जो लेख सम्वादपत्रों में निकले उन्हें उर्दू वालों ने बड़े आश्चर्य्य के साथ देखा। पर हिन्दी लिखने पढ़ने वाले लोग चाहे वे संस्कृत न भी जाने बहुत से संस्कृतशब्दों से जानकार रहते हैं और प्राचीन (७०० वर्ष तक के) ग्रन्थों को पढ़ते पढ़ते शब्दों की क्रमागत बनावट आदि का पूरा ज्ञान रख सकते हैं। अतः देश में उर्दू फैलाना मानो मूर्खता फैलाना है। किसी उर्दू पंडित ने कुछ दिन हुए इतिहास की एक पुस्तक लिखी। उसमें 'मौर्य्यवंश का ज़िक्र करते हुए आपने लिखा... "यह ख़ान्दान मोरिया इसलिए कहलाया कि उसके झंडों पर मोर का निशान बना रहता था"। उर्दू द्वारा ऐसे ही लोगों की सृष्टि होगी।

इसके बाद डाकृर निशिकान्त चटर्जी निज़ाम साहब के दरबार की तारीफ करते हुए उनकी शायरी की तारीफ करते हैं और कहते हैं कि "आसफ" (निज़ाम बहादुर का तख़ल्लुस) की ग़ज़लें उनके राज्य के एक छोर से लेकर दूसरे छोर तक सब के मुंह से सुनाई पड़ती हैं। निज़ाम बहादुर की तारीफ गा कर फिर आप उनके वज़ीर महाराजा सर किशुन परशाद की तारीफ करते हैं, जो शायरी में अपना तखल्लुस "शाद" रखते हैं। मालूम होता है कि इसी इतने के लिए आप ने इतना बखेड़ा रचा।

आप अपने पक्ष के समर्थन में ये पांच दलीलें पेश करते हैं--

उर्दू भारतवर्ष की देशभाषा रही है और है। वह ढाका से लेकर कराची और लाहौर से लेकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तंजौर तक बोली और समझी जाती है। अतः उसके बोलनेवाले और भाषाओं के बोलनेवालों की अपेक्षा अधिक हैं।

पाठक, देखिये! जो बात हिन्दी के विषय में बराबर बड़े बड़े विद्वानों द्वारा कही जा रही है उसी को ठाकुर साहब ने उर्दू पर घटाया है। हिन्दीबोलने वाली जनसंख्या ही को आपने कौशल से उर्दू बोलने और समझनेवाली बतलाया है। पर इसे कोई स्वीकार नहीं कर सकता। उर्दू में जो हिन्दी के शब्द मिले हैं, उन्हीं ने आप को यह कहने का अवसर दिया है। आपके "तशरीफ लाइए", इस्म शरीफ और "दौलतखाना" को समझने वाले किन किन प्रान्तों में मिलेंगे बताइ तो। "बैठिये" "आपका नाम क्या है" "घर कहां है", जब कहा जायगा तभी प्रत्येक प्रान्त के लोग समझेंगे। ये वाक्य ठेठ हिन्दी के हैं और समझ लिए गए। अब यदि हम इनके स्थान पर संस्कृत मिलाकर "विराजिए" "आप का स्थान कहां है", कहें तो भी और प्रान्त वाले बड़ी अच्छी तरह से समझ लेंगे। अब पक्षपात छोड़ कर विचारने की बात है कि देश में हिन्दी के समझनेवाले अधिक हैं कि उर्दू के।

(२) उर्दू अंग्रेज़ी के समान एक मिलीजुली और खिचड़ी भाषा है जिसमें हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों के भाव हैं।

इस कथन की असारता हम पहिले दिखा चुके हैं। खेद के साथ कहना पड़ता है कि इस भाषा में हिन्दुओं के कोई भाव नहीं हैं। इसमें उनके धार्म्मिक शब्द तक नहीं, उनके पूर्व पुरुषों की अधिक चर्चा नहीं। इसमें हमारे नित्य के काम के शब्दों का भी समावेश नहीं। हमारी बहुत सी ऐसी गृहस्थी की चीजें हैं जिनका नाम लेना भी उर्दू को नापसन्द हैं। हमारे जीवन से इस भाषा का कोई लगाव नहीं। बहुत से ऐसे संस्कृतशब्द हैं जिन्हें इस देश के स्त्री पुरुष, पढ़े अनपढ़े सब बोलते हैं पर जिनके उच्चारण करने तक की सामर्थ्य उर्दू में नहीं। किन्तु हमारे मुसलमान भाइयों के भाव और शब्द हिन्दी में बराबर पाए जाते हैं। मलिक मुहम्मद जायसी, नूर मुहम्मद आदि ने अपने धर्म्म की बहुत सी बातें अपनी हिन्दी पुस्तकों में लिखी हैं। हिन्दी अरबी वा फारसी के शब्दों को उच्चारण करने में ज़रा भी नहीं हिचकती। मुसमान लोग भी ईसाइयों की भांति यदि अपने धर्म्म की बातों को हिन्दी में लिखा करें तो बड़ी अच्छी बात हो।

ठाकुर साहब ने हिन्दी और उर्दू के बीच ऐंग्लो सैक्सन और अंग्रेजी का सम्बन्ध बतलाकर बड़ी विचित्रता की है। ठाकुर साहब को जानना चाहिए कि हिन्दी एक मिली जुली साहित्य की ऊंची भाषा है। इसको विदेशी विद्वानों ने भी स्पष्ट कहा है। बेट साहब ने लिखा है-The number of Persian and Arabic words is sufficient to prove that Hindi, in common with other languages, is composite.

(३) उर्दू अंग्रेज़ी के समान एक कामकाजी और लचकदार भाषा है जिसमें जितनी नई बातें मिलाई जायँ सब मिल सकती हैं। इससे भविष्य में उसकी बेहद उन्नति हो सकती है।

इसकी जाँच तो पहिले हो चुकी। जिसमें हमारे नित्य की बोलचाल के संस्कृतशब्दों के उच्चारण करने की क्षमता नहीं, हमारे घरेलू और कामकाज के शब्द जिसकी नादरुचि के के अनुकूल नहीं वह कितनी नई बातों को ग्रहण कर सकती है समझने की बात है। नई बातों को ग्रहण करने का गुण हिन्दी में है। यह हिन्दी ही का गुण था कि उसमें अरबी और फारसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के बहुत ही अधिक शब्द मिलाकर कुछ लोगों ने अपने लिखने पढ़ने के लिए एक अलग भाषा बनाई जिसकी ध्वनि यहां तक विदेशी हो गई कि देश की बोलचाल और कामकाज के शब्द भी उसे अपरिचित और बेमेल लगने लगे। अब हिन्दी और उर्दू में भेद किस बात का है वह सुनिए। जो अरबी फ़ारसी आदि के शब्द बोली में मिल गए हैं हिन्दी उनका व्यवहार बड़ी खुशी से करती है। पर यदि उसे नए शब्दों की ज़रूरत होती है तो वह अपनी और बहिनों की तरह उन्हें संस्कृत से लेती है। यह स्थिर करने के लिए कि कौन कौन से विदेशी शब्द हमारी बोली में मिल गए हैं हम यह देखते हैं कि किन किन शब्दों को वे लोग बोलते हैं जिन्हों ने उर्दू वा फारसी की शिक्षा कभी नहो पाई। जिन शब्दों को लोग पढ़कर वा मौलवी साहब से सीख कर बोलते हैं वे हमारी भाषा के नहीं समझे जाते।

(४) इसे अंग्रेजी सरकार का सहारा रहा है और अब भी है।

ठीक है। इस का कारण यह है कि अंग्रेज सरकार ने इन प्रान्तों के शासनसम्बन्धी कागज पत्र उसी भाषा में पाए। पर अंग्रेज सरकार के पहले देश का राज्य जिन लोगों के हाथ में था उनका प्रबन्ध ऐसा विस्तृत और व्यवस्थित न था कि सारी प्रजा को लगाव में रख सके। ज़िलों और तहसीलों में अमलों और क्लर्कों की इतनी बड़ी सेना नहीं थी। प्रजा के बहुत से काम तो बिना किसी लिखा पढ़ी के तैकर दिए जाते थे। अत: उस समय राजकाज किस भाषा में चलाया जाता है इस की परवा करने की किसी को-उतनी जरूरत न थी; पर अब यह अवस्था नहीं है। अब सरकार इस बात को अच्छी तरह देख रही है कि कचहरियों में जो भाषा लिखी पढ़ी जाती है वह जनसाधारण की भाषा नहीं है। उसके समझने के लिए बहुत सी दीन प्रजा को पेट काट कर पैसे खर्च करने पड़ते हैं। दूसरे सरकार से सहारा पाकर ही कोई भाषा बड़ी नहीं हो जाती इसे आप खुद आगे चल कर स्वीकार करते हैं॥

(५) उर्दू ऐसी लिपि में लिखी जाती है जिस में शीघ्रलेखनप्रणाली का गुण है और जो कैथी वा नागरी की अपेक्षा अधिक आसानी से लिखी जाती है। इसके सिवाय इसके अक्षर ऐसे सुन्दर और मनोहर होते हैं कि देखते ही बनता है।

जनाब डाक्टर साहब! यह ख्याल बहुत पुराने ज़माने का है कि हिन्दी की अपेक्षा उर्दू बहुत ही जल्दी लिखी जाती है। अब यह ग़लत साबित हुआ। और थोड़ी जल्दी लिखी भी जाय तो उसके पढ़ने की दिक़्क़त उसकी तेज़ी से सौगुनी हजारगुनी बढ़ कर है। जिस फ़ारसीलिपि की गड़बड़ी के कारण चौथाई प्रजा त्राहि: त्राहि कर रही है, जिसमें हमारे मुहँ से निकले हुए शब्दों को ठीक ठीक अंकित करने की शक्ति नहीं उससे हमें क्या लाभ पहुंच सकता है? जिनको एक दिन में सीख कर लोग मनुष्य के मुहँ से निकली हुई प्रत्येक ध्वनि को अंकित करने में समर्थ हो सकते हैं उन नागरीअक्षरों के गुण बतलाने की यहां जगह नहीं। जिस वर्णमाला के वैज्ञानिक क्रम और विभाग को देख कर यूरोपियन विद्वान इतने चकित हुए कि उसे अपौरुषेय तक कह डाला उससे जो भारतवासी अपरचित रहे उसे देश के दुर्भाग्य के कारणों में से समझना चाहिए।

रही फ़ारसी अक्षरों की ख़ूबसूरती। मजनूँ की निगाह से देखने वालों की तो बात ही और है पर इस देश के अधिकांश लोग उसपर मोहित नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। जिन अक्षरों का अच्छा टाइप तक नहीं ढल सकता उन्हें लेकर शिक्षित समाज क्या करेगा ?

इसके उपरान्त चटर्जी साहब ने जान बीम्स और अपने उर्दू हिन्दी के शिक्षक गार्सिन डिटासी के वाक्य उद्धृत करके अपने मत को पुष्ट करना चाहा है। पर डाकृर साहब को चाहिए था कि वे सब विद्वानों की सम्मतियों को मिलान करके देखते। डाक्टर हार्नली ने तो साफ़ कहा है:—
With the extension of the Mohammedan power, the use of urdu spread over the Hindi area, but it remainded the language of those exclusively, who were more immediately connected with that power; it never became the vernacular of the people. इसके सिवाय चटर्जी साहब को जानना चाहिए कि उन दोनों विद्वानों के पीछे जिनका आपने प्रमाण दिया है भाषासम्बन्धी खोज बड़ी छानबीन के साथ हुई है। डाक्टर ग्रियर्सन ने अपना क्या मत प्रगट किया है इस पर भी आपने विचार किया ?

आगे चल कर चटर्जी महोदय उर्दू सेवियों को चिताते हैं कि 'भाइयो, अगर तुम उर्दू का प्रचार करना चाहते हो तो हिन्दी के अधिक शब्दों का व्यवहार करो, क्योंकि यह एक साधरण नियम है कि भाषा की उन्नति उसकी विशुद्धता, सरलता, और सुबोधता के अनुसार होती है'। इस कथन में डाक्टर महोदय स्वीकार करते हैं कि हिन्दी के शब्द अधिक सुबोध और सरल हैं। अत: जिसके शब्दों की सरलता और सुबोधता के सहारे आप एक अजनबी बोली को फैलाना चाहते हैं उस देश की स्वाभाविकभाषा हिन्दी ने आपकी कौनसी गठरी मारी है कि आप इतने लोगों को उसकी ओर से फेरा चाहते हैं। जब आपके बंगाल, महाराष्ट्र और गुजरात आदि प्रान्तों के विद्वान भाई नागरी अक्षर और हिन्दी भाषा के लिए उद्योग कर रहे हैं तब आप अपनी डेढ़ चावल की खिचड़ी अलग क्यों पकाने गए ?

दूसरी सलाह आप यह देते हैं कि उर्दू लेखकों और ग्रन्थकारों को चाहिए कि वे लोग अपने भाव अपने नायक नायिका और अपनी उपमाएं भारतवर्ष से लिया करें अरब और फ़ारस से नहीं। अर्थात वे हातिम नौशेरवाँ, और रुस्तम की जगह कर्ण, युधिष्ठिर और भीम की तारीफ़ किया करें, बुलबुल की सदा की जगह कोकिल और पपीहे की बाणी सुनें, लाला और नरगिस की जगह कुन्द केतकी की बहार देखें, यारों के गन्दे कूचों को छोड़ लताकुंज और काननों में फेरा लगावें, शृङ्गार में कफ़न, ख़ून और ख़ंजर का वीभत्स व्यापार छोड़दें।

अन्त में आप अपने इन नीचे लिखे हुए वाक्यों से उर्दू की यथार्थ स्थिति आप ही खोल देते हैं:—

"मुसल्मानों को भारतवर्ष के प्राचीन ऐतिहासिक महापुरुषों का उतना ही अभिमान करना चाहिए जितना हिन्दुओं को। यदि इस देश के सब मुसल्मान भारतवर्ष के प्रति वैसा ही प्रेम प्रगट करते जैसा कि उनके एक भाई ने तो आज उर्दू साहित्य पर यह कलंक न लगाया जाता कि वह परिपूर्ण और उन्नत भावों से युक्त नहीं है, वह देश की आजकल की आवश्यकताओं के उपयुक्त नहीं है, वह देश के भविष्य शिक्षित सन्तानों के काम की नहीं है"।

पाठक इन उपर्युक्त वाक्यों से हम क्या समझें ? यही न कि उर्दू को एक विशेष वर्ग के लोगों ने अपने लिये बनाया है। वह देश के लोगों की भाषा नहीं है।

——:o:——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परलोकवासी श्रीरमेशचन्द्र दत्त।

श्रीयुक्त रमेशचन्द्र दत्त का जन्म सन १८४८ ई. में एक प्रतिष्ठित बंगाली कायस्थकुल में हुआ था। उनकी बुद्धि लड़कपन ही से तीव्र थी। १८६४ में इन्होंने इन्ट्रेंस पास किया और सन् १८६६ की एफ० ए० की परीक्षा में वे सब से प्रथम हुए। सन १८६८ में ये सुरेन्द्रनाथ बनर्जी और बिहारी लाल गुप्त के साथ घर से बिना कहे इंगलैंड चले गए। १८६९ में इन्होंने सिविलसर्विस की परीक्षा पास की जिसमें इनका नम्बर तीसरा आया। संस्कृत में ये सब से प्रथम हुए, और अंग्रेज़ी में करीब ३०० अंग्रेज़ों के बीच में ये दोयम उतरे।

यूरप के कई स्थानों में घूम घाम कर आप १८७१ में अपने देश को लौट आए और तब से बराबर १८८२ तक भिन्न भिन्न सरकारी पदों पर नियुक्त रहे। १८७४के अकाल और १८७६ के तूफान में इन्होंने बड़ा काम किया। अंग्रेजी साहित्यपर इनका सर्वोच्च अधिकार था ही, इन्होंने नौकरी करने के थोड़े दिन के बाद ही "यूरपमें तीन वर्ष" (Three years in Europe) नामक पुस्तक अंग्रेज़ी में लिखी। उसके बाद ही "बंगाल के किसान" और बंगलाभाषा पर दो पुस्तकें लिखीं गईं। उस समय श्रीयुक्तबङ्किम चन्द्र चट्टोपाध्याय बँगला साहित्य में जीवन डाल रहे थे और अपने "बंग-दर्शन" निकालने की तैयारी में थे। उन्होंने रमेशचन्द्र दत्त से बंगभाषा में लेखनी उठाने के लिये कहा। दत्त बाबू ने कहा "मुझे बंगला की साहित्य भाषा का विशेष ज्ञान नहीं। कैसे लिखूं?" बङ्किम बोले "बंगाली होकर ऐसी बात न कहो। बंग भाषा और बंग साहित्य को अभी बनाना है। जो कुछ तुम्हारे ऐसे पुरुष लिखेंगे वही साहित्य होगा।" इन वाक्यों से उत्साहित हो कर रमेशचन्द्र ने बंग भाषा में पुस्तकें लिखनी आरम्भ कीं। शीघ्र वे बंगला के प्रसिद्ध लेखक हो गए। उनके 'बंगविजेता' 'माधवी-कंकण' 'जीवनसन्ध्या' और "जीवन प्रभात" आदि ऐतिहासिक और सामाजिक उपन्यास न कि केवल बंगभाषा ही में वरन उन सब भाषाओं में जिन में वे अनुवादित होकर कर गए हैं, सब दिन आदर और रुचि के साथ पढ़े जायंगे। सन् १८८५ में इन्होंने छुट्टी ली और ऋग्वेद का बंगला अनुवाद किया। छुट्टी के दिन इन्हों ने यूरप के भिन्न भिन्न देशों में घूमघाम कर बिताए। इसी मातृ भाषा की सेवा ने इस महानुभाव के महत्व में माधुर्य्य मिलादिया है। उन लोगों को जो विद्या को एक तड़क भड़क की सामग्री समझते और अपनी राजनैतिक ऐंठ में भूले रहते हैं इस अपने से कहीं अधिक अंग्रेजी के विद्वान और लब्धप्रतिष्ठ व्यक्ति से शिक्षा लेनी चाहिए। जो अपनी मातृभाषा की अवहेलना कर के देश सेवा की शान दिखलाते हैं वे हमारी दृष्टि में कुछ नहीं जँच सकते। हिन्दुस्तानियों में अंग्रेज़ी साहित्यसेवी ग्रन्थकारों के बीच गणना दत्त ही की हुई। इन्होंने अंग्रेजी साहित्य में बहुत सी पुस्तकें लिखीं; पर साथ ही ये अपनी मातृभाषा को न भूले। आज हम देशभाषा के नाते ऋग्वेद के बंगला अनुवादक, बंगविजेता, माधवी कंकण, जीवन प्रभात, जीवनसंध्या, 'संसार', और 'समाज' के रचयिता और "बंगीयसाहित्यपरिषद्" के संस्थापक के लिये आंसू बहा रहे हैं॥

सन् १८९० में रमेशचन्द्र दत्त ने अपना प्रसिद्ध अंग्रेजी ग्रन्थ 'प्राचीन भारत की सभ्यता' का इतिहास लिखा। इसी वर्ष ये बर्दवान के मजिस्ट्रेट हुए। सन् १८९२ में इन को सी० आई० ई०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की उपाधि मिली और ये फिर तीसरी बार विलायत गए। सन् १८९३ में स्वदेश आकर इन्होंने "बंगीय-साहित्य-परिषद" स्थापित किया और उस के प्रथम सभापति हुए।

उन दिनों हिन्दुस्तानियों के लिये जज और मजिस्ट्रेट होना बड़ा कठिन समझा जाता था, पर अपनी कार्य्यदक्षता के बल से ये १८९४ में बर्दवान डिविज़न के कमिश्नर नियुक्त हुए। किसी और हिन्दुस्तानी को आज तक यह सरकारी पद नहीं प्राप्त हुआ है। (क्रमशः)

सभा का कार्य्यविवरण।

शनिवार ता० २७ नवम्बर १९०९ संध्या के पांच बजे

स्थान सभा-भवन।

(१) बाबू अमीरसिंह के प्रस्ताव तथा बाबू बालकृष्ण दास के अनुमोदन पर बाबू जुगुलकिशोर सभापति चुने गए।

(२) गत अधिवेशन (ता० ३० अक्तूबर १९०९) का कार्यविवरण उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ।

(३) निम्न लिखित महाशय सभासद चुने गए।

(१) बाबू पूर्णचन्द्र डांगरा C/o सेठ खींवराज जी गोविन्दरामजी जावरा-मालवा ३) (२) बाबू बद्रीदत्त हेड़ा, वृन्दामिल का दफ्तर, ब्यावर ३) (३) बाबू लालचन्द्र, दफ़्तर लाटसाहब बहादुर पंजाब-लाहौर १॥) (४) बाबू चन्द्रिकाप्रसाद-डा० लोटन, जि० बस्ती १॥) (५) बाबू रामरत्नलाल-डिपटी कलेक्टर-बलरामपुर, जिला गोंड़ा ३) (६) महन्त जगन्नाथदासजी-ढेकहरी-पो० ढेबरुआ जि० बस्ती १॥) (७) बाबू सरयूप्रसाद-छावनी पो० बढ़नी बाजार, जि० बस्ती १॥) (८) बाबू झिनकूलाल मुदर्रिस मदरसा-ढेकहरी पो० ढेबरुआ, जिला बस्ती १॥) (९) पण्डित भुवनेश्वरी प्रसाद पांडे, अगया पो० डुमरियागंज जि० बस्ती १॥) (१०) बाबू नागेश्वर प्रसाद नायब मुदर्रिस टाउन स्कूल हल्लौर पो० डुमरियागंज जि० बस्ती १॥) (११) बाबू शिवरतन लाल-सोहरौली, पो० डुमरियागंज जि० बस्ती १॥) (१२) पण्डित जमुनाप्रसाद मिश्र इन्द्री-ग्रान्ट पो० सिसरौलिया जि० बस्ती ३) (१३) बाबू शिवदत्त-नायब मुदर्रिस-मदरसा डुमरियागंज जि० बस्ती १॥) (१४) पण्डित रामसहाय शुक्ल प्रथमाध्यापक तहसीली स्कूल, महोबा १॥) (१५) पण्डित शिवचरनलाल तिवारी-प्रेसीडेण्ट-सनातन हिन्दूधर्मसंस्कृतपाठशाला-महोबा ३) (१६) बाबू गोविन्दप्रसाद देवढ़ी राजा रामबख्स-हैदराबाद दक्खिन ५) (१७) बाबू नानकप्रसाद-बाराबंकी ३) (१८) पण्डित राम सेवक पांडे ब्रह्मनीपुरा-बहराइच ३) (१९) बा० रामलाल कन्हैयालाल-चौक बाजार बहराइच १॥) (२०) बाबू वृद्ध विहारी लाल बी०ए०बी०एस०सी० सेकेण्ड मास्टर जि० स्कूल बहराइच १॥) (२१) बाबू घनश्यामदास सिंह-वकील-बहराइच १॥) (२२) बाबू अंबिका प्रसादसिंह-चौधरी टोला-बांकीपुर ३) (२३) पण्डित शालिग्राम द्विवेदी एम० ए० अध्यापक म्योर कालेज इलाहाबाद ५) (४२) बाबू पीताम्बर प्रसाद श्रीवास्तव-वकील जबलपुर ३) (५२) बाबू कमलाकान्त नायक C/o बाबू विजेश्वर भट्टाचार्य्य लक्सा काशी, ३) (२६) बाबू लखन किशोर नारायण सिंह C/o डा० विजेश्वर भट्टाचार्य लक्सा काशी ३)

(४) सभासद होने के लिये १० महाशयों के नवीन आवेदन पत्र सूचनार्थ उपस्थित किये गए।

(५) निम्न लिखित सभासदों के इस्तीफे उपस्थित किये गए और स्वीकृत हुए:—

(१) बाबू अवध विहारी लाल-कबाड़ी बाजार बुलन्दशहर (२) बाबू जगमोहन दास-काशी।

(६) निम्न लिखित पुस्तकें धन्यवाद पूर्वक स्वीकृत हुईं-संयुक्त प्रदेश की गवर्न्मेंट। रायबरेली, गोंडा, जौनपुर बलिया, परतापगढ़, खेरी, बाराबंकी, हरदोई, बस्ती पीलीभीत, बनारस, बदाऊं, आगरा, नैनीताल, फैजाबाद, बिजनौर, सीतापुर, फतहपुर, और गाजीपुर का डिस्ट्रिक्ट गज़ेटियर।

Papers connected with the Industrial Conference held at Naini Tal 1907

बाबू जयशंकर प्रसाद काशी, उर्वशी चम्पू। भारतमित्र आफ़िस कलकत्ता (१) जीवन मृत रहस्य (१) मार्कण्डेय पुराण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri.

एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल-कलकत्ता Memoirs of the Asiatic Society of Bengal Vol II Numbers 8 and 9. A polyglot list of birds in Turkey, Manchur and Chinese. Journal and Proceedings of the Asiatic Society Vol V no's 2, 3, 4, 5, and Vol. LXXV. No. 4। मंदराज की गवर्न्मेंट A descriptive catalogue of the Sanskrit manuscripts in the Government Oriental Manuscript Library Madras Vol VI (Contd)

बाबू श्यामसुन्दरदास बी० ए०, शकुन्तला नाटक। पण्डित भुवनेश्वर मिश्र दरभंगा, बलवन्त भूमिहार। बाबू राधारमण गुप्त राजा दर्वाजा काशी, स्त्री शिक्षा पर लेख २ प्रति। खरीदी गई तथा परिवर्तन में प्राप्त :-बालहिन्दो व्याकरण, बाल विष्णु पुराण, बाल हितोपदेश, बाल पंच तंत्र, कविता कलाप, वारिन हेस्टिङ्गस, मलका चांदबीबी, दूसरा भाग, लीलावती, कैकेयी की जीवनी, सीताजी, दोनकावपोश दूसरा और तीसरा भाग, प्रभातकुमारी, शमशेर, अनन्त उपन्यास, मुन्नाजान। पण्डित नीलकण्ठ द्वारिकाप्रसाद, अमीनाबाद लखनऊ, श्रीसुदामाकृष्ण नाटक, व्यय, Indian Antiquary for October anp November 1909.

(७) बाबू श्यामसुन्दरदास बी० ए० का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने उपसभापति के पद से इस्तीफा दिया था।

निश्चय हुआ कि उनका इस्तीफा स्वीकार किया जाय और उनके स्थान पर बाबू गोविन्द दास उपसभा पति चुने जांय।

(८) पण्डित रामनारायण मिश्र बी० ए० का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने सूचना दी थी कि शिमले से उनकी बदली अब बरेली में होगई है अतः पंजाब प्रान्त से प्रवन्धकारिणीसभा में उनके स्थान पर कोई दूसरा सभासद नियत किया जाय।

निश्चय हुआ कि प्रवन्धकारिणी सभा में उनके स्थान पर पंजाब प्रान्त से बाबू श्यामसुन्दरदास जी नियत किए जांय।

(९) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

सुरेन्द्रनारायण शर्म्मा
उपमन्त्री

आय व्यय का हिसाब।
(नवम्बर १९०९)

आय	धन की संख्या		
गत मास की बचत	४१८८	८	१/२
सभासदों का चन्दा	१०१	१४	०
पुस्तकालय का चन्दा	१४	८	०
पुस्तकों की बिक्री	६६	१२	०
नागरी प्रचार	०	०	६
पृथ्वीराजरासो	६	०	०
फुटकर आय	०	१	०
जोड़	४३८७	११	६१/२

व्यय	धन की संख्या		
आफ़िस के कार्यकर्ताओं का वेतन	९८	१३	६
डांक व्यय	२६	०	०
पुस्तकालय	२७	६	०
हिंदी पुस्तकों की खोज	४०	०	०
फुटकर व्यय	२८	८	३
हिन्दी कोश	४४३	८	४१/२
स्थायीकोश	६०	०	०
नागरी प्रचार	८	४	०
छपाई	१०८	११	४
	८१३	५	५१/२
बचत	३५७४	६	१
जोड़	४३८७	११	६१/२

रोकड़ सभा	५४१=)१
बनारस बंक (कोश विभाग)	४४६९॥)१०
	४५१९=)११
बंक का देना	८४१॥)१०
	३५७४।=)१

देना ९०००)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभा के पारितोषिकों की सूची।

(१) इस वर्ष के सभा के नियमित दो मेडलों के लिये निम्न लिखित विषय नियत हैं। ये लेख ३१ दिसम्बर १९०९ तक सभा में आजाने चाहिएं।

वैज्ञानिक विषय।

प्राकृतिक अवस्था का उत्तर भारत के सामाजिक जीवन पर प्रभाव।

सधारण (विद्या) विषय।

अकबर के पूर्व हिन्दी की अवस्था।

(२) डाक्टर छन्नूलाल मेमोरियल मेडल-यह सोने का मेडल उस व्यक्ति को दिया जायगा जिसका लेख "स्त्रियों के रोग" पर सब से उत्तम होगा। लेख सरल हिन्दी में होना चाहिए और सभा के पास ३१ दिसम्बर १९०९ तक आजाना चाहिए।

(३) ५००) का पुरस्कार—सभा द्वारा निश्चित अनुक्रमणिका के आधार पर जो हिन्दी का सब से उत्तम व्याकरण लिखेगा उसे यह पुरस्कार दिया जायगा। व्याकरण ३१ दिसम्बर १९०९ तक सभा के पास आजाना चाहिए। यदि कई व्याकरणों के भिन्न भिन्न अंश उत्तम समझे जायंगे तो यह पुरस्कार उन सब लोगों में बाँट दिया जायगा और उन ग्रन्थों को घटाने बढ़ाने आदि का इस सभा को पूरा अधिकार होगा। सभा द्वारा निश्चित अनुक्रमणिका दो पैसे का टिकट डाकव्यय के लिये भेजने पर सभा के मंत्री से मिल सकती है।

ममीरे का सुरमा।

एसिष्टण्ट केमिकल एकजामिनर साहब गवरमेण्ट पञ्जाब द्वारा परीक्षित व प्रमाणित हो चुका है। माननीय अंग्रेजी मेडिकल कालिज के अफ़सर डाक्टरों राजों महाराजों विलायत की युनिवरसिटी से सनद पाए डाक्टरों ने परीक्षा करके इस अञ्जन की सचाई प्रकट की है और बताया है कि नेत्र रोगों के लिये यह सुरमा अकसीर गुण रखता है। दृष्टि की कमजोरी, आंखों का अन्धशून्य, जाला, पड़वाल, गुबार, फुंसी, आंखों से पानी का बहना, आंखों की लाली मोतियाबिन्द की प्रथम अवस्था, खाज, खुजली इत्यादि।

माननीय डाक्टर और हकीम आंख के रोगियों को जो उनके पास आते हैं यह सुरमा देते हैं। चार दिन के लगाने से आंखों की दृष्टि ठीक हो जाती है। बालक से लेकर बूढ़े तक के लिये यह अञ्जन एक समान लाभदायक है। मूल्य इस कारण कम रक्खा गया है कि धनाढ्य और दीन दोनों इससे लाभ उठा सकें। मूल्य एक तोला का जो एक वर्ष के लिये बहुत है २) दो रुपया है। ममीरे का सच्चा सुरमा जो बहुत उत्तम ३) तीन रुपये तोला। एक खालिस ममीरा एक माशा २०) है। डाक का खर्चा ग्राहक के जिम्मे। पत्र भेजने के समय अखबार का नाम लिखो। पता-प्रोफेसर मायासिंह अहलवालिया-मुकाम-बटाला जिला गुरदासपुर-पञ्जाब।

संत बानी पुस्तक माला

अर्थात्
प्राचीन महात्माओं
की कुलिस बानी का
जो गुप्त होती जाती है जीर्णोद्धार
कर उनके जीवन-चरित्र के

कबीर सा०, तुलसी सा०, पल्टू सा०,
जगजीवन सा०, रैदासजी, चरनदास की
दरिया सा०, दयाबाई, सहजोबाई, इत्यादि।

बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद से इश्तिहार मँगा कर देखिये।

Printed by Mahdo Prasad, at the Bharat Press, Benares, for B. Gauri Shankar Prasad, Publisher.
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सम्पादक
रामचन्द्र शुक्ल ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered No A 414

नागरीप्रचारिणी पत्रिका ।

[मासिक पत्रिका]

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल । बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ॥
करहु बिलंब न भ्रात अब, उठहु मिटावहु सूल । निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जु सब को मूल ॥
विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार । सब देशन सों लै करहु, भाषा मांहि प्रचार ॥
प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि यत्न । राज काज दर्बार में, फैलावहु यह रत्न ॥ हरिश्चन्द्र

भाग १४ | १५ जनवरी १९१० । | संख्या ५

सूचना और सम्मति ।

किसी पिछली संख्या में हमने हिन्दी दैनिक पत्र के अभाव पर दुःख प्रगट किया था । उस समय हमें यह भरोसा न था कि हम इतने शीघ्र उस दुःख के हेतु को भावी अभाव का आभास पा कर प्रसन्न हो सकेंगे । सब से पहिले सहयोगी "अभ्युदय" कमर कस कर अर्द्ध साप्ताहिक होने के लिये तैयार हुआ । अब इधर "सम्राट" भी दैनिक होने के लिये आकुल हो रहा है । "आर्य्यमित्र" ने भी, सुनते हैं, यही ठानी है । आशा है कि हमारे इन साहसी सहयोगियों को अपने ग्राहकों का पूरा सहारा मिलेगा और वे नई नोक झोंक के साथ हिन्दी पाठकों के सामने आवेंगे ।

:o:

बाबू जगन्मोहन वर्माने, जो कोश के लिये धन बटोरने निकले हैं, नवम्बर और दिसम्बर महीनों में जिन जिन स्थानों में जो जो उद्योग किए उनका विवरण इस प्रकार है:-

आज़मगढ़---१५ से २५ नवम्बर तक ।

यहां ठेठ हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक पं० अयोध्या सिंह उपाध्याय से बहुत सहायता मिली । २१ ता० को सब्ज़ीमंडी में नागरीप्रचारार्थ एक सभा हुई जिसमें कोश विभाग की ओर से अपील की गई ।

चन्दा

पंडित अयोध्यासिंह उपाध्याय	...	५)
फुटकर	...	२६)

बलिया---२५ नवम्बर से ५ दिसम्बर तक

मुख्य मुख्य सज्जनों से मिले । बाबू जमुनाप्रसाद रईस ने २५) देने का वादा किया ।

चन्दा

बाबू जयमंगलसिंह डि० कलक्टर	...	१०)
डाक्टर बलदेवसिंह सिविल सर्जन	...	५)
फुटकर	...	३१॥)

मुज़फ्फ़रपुर---६ से १४ दिसम्बर तक ।

कौंसिल के मेम्बरों के चुनाव की तेज़ी थी इससे कार्रवाई धीमी रही । बाबू बैजनाथ नारायण वकील ने जनवरी में वकीलों से २०) दिलाने का वचन दिया ।

चन्दा

बाबू वैद्यनाथ सिंह रईस ...	...	५)

छपरा---१५ से २४ दिसम्बर तक ।

श्रीमान जस्टिस सारदाचरण मित्र से मिलकर एक सभा की । जस्टिस महोदय ने कृपा पूर्वक १००) देने का वादा किया है । अन्य सज्जनों से भी जनवरी में बहुत कुछ मिलने की आशा है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनवरी और फ़रवरी में बाबू जगन्मोहन वर्मा इन इन स्थानों में जायगे-

छपरा, बेतिया, मोतिहारी, मधुबनी, दरभंगा मुज़फ़्फ़रपुर, दानापुर, पटना, बांकीपुर, गया ।

नवंबर की संख्या में हितबादी महाशय ने "एकलिपिविस्तारपरिषद्" "और देवनागर" पत्र के उद्देश्यों के विषय में शंकाएं की थीं। "हितवार्त्ता" के सुयोग्य सम्पादक ने इन शंकाओं का बना रहना अच्छा न समझ कर उनके दूर करने का बीड़ा उठाया और "देवनागर" के संचालकों को अपना मत प्रगट करने के लिये उभाड़ा । उन्होंने पंडित उमापति दत्त पांडे बी० ए० से बातचीत करते हुए यह भी कहा कि "एकलिपिविस्तार परिषद" के मंत्री श्रीयुक्त सारदाचरण मित्र महोदय यदि अपने हाथ से एक पत्र लिखदें कि हम सिवाय हिन्दी के बंगला अथवा और किसी भाषा को राष्ट्र भाषा बनाना नहीं चाहते तो बहुत अच्छा हो । फल यह हुआ कि देवनागर सम्पादक ने हितवार्त्ता में यह मत प्रकाशित कर दिया कि हम लोग हिन्दी को छोड़ और किसी भाषा को प्रधानता देना नहीं चाहते, पर हमारा प्रधान उद्देश्य नागरी अक्षरों का प्रचार है; राष्ट्र भाषा गौण है । श्री युक्त सारदाचरण मित्र महोदय ने भी अपने पत्र में साफ लिखा कि It is absolutely false that I am opposed to Hindi. I think Hindi is the only language that may be the medium of inter-communication. (अर्थात) यह बिलकुल झूठ है कि मैं हिन्दी का विरोधी हूं । मैं तो समझता हूं कि हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जिसके द्वारा भिन्न भिन्न प्रान्तों के लोग परस्पर के विचार प्रगट कर सकते हैं । इन बातों के खुलने से हमें जो सन्तोष हुआ है उसके लिए हम सहयोगिनी हितवार्त्ता को धन्यवाद देते हैं ।

परलोकवासी श्रीरमेशचन्द्रदत्त ।

(२)

बर्दवान से ये उड़ीसा विभाग के कमिश्नर हो कर गए । वहीं से अन्त में २७ वर्ष तक सरकारी शासन करके ये उससे अलग हुए और देशसेवा की ओर झुके । इंगलैण्ड में रह कर ये दादाभाई नौरोजी आदि के साथ राजनैतिक सुधार का उद्योग करने लगे । वहीं से इन्हों ने रामायण और महाभारत का अंग्रेज़ी अनुवाद निकाला । सन १८९९ में आप कांग्रेस के सभापति चुने गए । इसी वर्ष इन्होंने बम्बई और मद्रास की प्रजा को अखरने वाली मालगुजारी के घटाने का उद्योग किया और सरकार से बहुत कुछ लिखा पढ़ी की । इसी लिखा पढी के सिलसिले में इन्होंने पार्लामेण्ट के बहुत से कागजों को संग्रह किया और उसी मसाले से भारतवर्ष का एक आर्थिक इतिहास लिख डाला जो दो खण्डो में समाप्त हुआ । यह पुस्तक अपने ढंग की एक हुई । सन १९०४ में महाराजा गायकवाड़ ने बहुत कह सुन कर इन्हें अपना राजस्व-मन्त्री बनाया । इस पद पर रह कर प्रजा के हित के इन्होंने बड़े बड़े काम किए । गरीब प्रजा की ३० लाख मालगुजारी माफ की, न्याय और शासन विभाग अलग कराया, कानूनी कौन्सिल बैठवाई और प्रजा के चुने हुए प्रतिनिधियों द्वारा शासन क्रम की नींव डाली । बड़ौदा राज्य में बलात शिक्षा भी इन्हीं के उद्योग से प्रचलित हुई । वहां प्रत्येक व्यक्ति के लिए अपने लड़कों को पाठशाले भेजना आवश्यक है । सन १९०७ में श्रीयुक्त रमेशचन्द्र दत्त सरकारी अधिकारविभाजक कमीशन (Decentralisation Commission) में नियुक्त हो कर गए । भारतमंत्री लार्ड मार्ले ने शासनसं[illegible] के सम्बन्ध में इनसे बहुत कुछ परामर्श लि[illegible] इधर ये बड़ौदा राज्य के दीवान हो ग[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से हुआ । 'भारतवर्षीय-साहित्य-समिति' इन्होंने स्थापित की । हिन्दी को राष्ट्रभाषा और नागरी को राष्ट्रलिपि बनाने का प्रस्ताव इन्होंने किया । २९ दिसम्बर १९०५ को नागरीप्रचारिणी सभा में एक लिपिप्रचार के लिये जो बड़ी भारी सभा हुई थी उसके सभापति आप ही थे । आप सभा से सच्ची सहानुभूति रखते थे और उसकी समय समय पर सहायता किया करते थे । कोश के लिये बड़ौदा राज्य से २०००) का दान इन्हीं की कृपा से मिला । भविष्य में इनसे हिन्दी का बहुत कुछ उपकार होता, पर परमात्मा ने इन्हें उठा लिया । इसे दुर्भाग्य के सिवाय और क्या कहें ?

भाषा की उन्नति ।

सर्वसाधारण की शिक्षा देशभाषाओं ही के द्वारा हो सकती है । देशभाषा जितनी ही अधिक उन्नत होगी सर्वसाधारण के विचार भी उतने ही अधिक उन्नत होंगे । भाषा की उन्नति से हमारा मतलब दो बातों से है:-

(१) एक तो भाषा रूपी कल की उन्नति, अर्थात उसकी अवतारणा वा प्रकाशन शक्ति की वृद्धि जिससे हृदय का कोई भाव भी खींच कर बाहर निकाला जा सके, सृष्टि का कोई रहस्य भी हृदय के भीतर प्रत्यक्ष किया जा सके । यह उन्नति कुछ तो शब्दों की संख्या पर निर्भर रहती है पर विशेष कर उनकी योजना पर । शब्दों का भाण्डार भरा पूरा रहने पर भी नवीन और स्वतन्त्र योजना के बिना भाषा जहां की तहां पड़ी रहती है, आगे नहीं बढ़ती । अतः उसकी वृद्धि ऐसे लेखकों के हाथ में पड़ कर होती है जो अपनी भावनाओं के अनुसार भाषा को ले चल सकते हैं । जिन्हें किसी शब्द के पहिले एक बँधे हुए विशेषण के सिवाय कोई दूसरा रखते डर लगता है उनके किये कुछ नहीं हो सकता । जो कई भाषाओं की भिन्न भिन्न प्रदर्शनप्रणालियों को परख कर वस्तुओं के भिन्न भिन्न रूपों और गुणों से जानकार रहते हैं आरम्भ में वे भी अपनी भाषा द्वारा देशवासियों को विस्तृत और सूक्ष्म दृष्टि प्रदान कर सकते हैं । अंग्रेजी कई भाषाओं की वर्णन प्रणालियों को लेकर अपनी इतनी उन्नति कर सकी है । जो पुस्तकें और भाषाओं से अनुवादित हो कर अंग्रेजी में जाती हैं वे नई बातों की जानकारी फैलाने के साथ ही साथ प्रच्छन्न रूप से अंग्रेजी भाषा में नवीन नवीन वर्णनशैलियों की भी जड़ जमाती हैं । अंग्रेज़ीभाषा पर पूर्वीय साहित्य का बड़ा भारी असर पड़ा है । संस्कृत और फ़ारसी पुस्तकों के अनुवादों ने अंग्रेजी भाषा की बहुत कुछ संकीर्णता हटाकर उसकी वर्णनशैली को प्रशस्त किया है । १९वीं शताब्दी के कई अंग्रेज़ कवियों में जगह जगह पूर्वीय वर्णन प्रणाली की छाया साफ़ दिखाई पड़ती है । इसीसे संस्कृत आदि और भाषाओं के अनुवाद जहांतक अविकल हो सकते हैं अंग्रेज़ी में किये जाते हैं । पृथ्वी पर की अनेक जातियाँ ज्यों ज्यों अपना व्यवहार एक दूसरे के साथ बढ़ाती जाती हैं त्यों त्यों उनकी भाषाओं की वर्णनप्रणालियां प्रशस्त होती जाती हैं, किसी वस्तु को कई रीति से वर्णन करना मानो उसे कई भिन्न भिन्न स्थानों से खड़े हो कर देखना है । अच्छे लेखक वे हैं जो अपने पाठकों को ऐसे स्थान पर ले जा कर खड़ा कर देते हैं जहां से निर्दिष्ट वस्तु का अंग प्रत्यंग प्रत्यक्ष हो जाता है । अतः वर्णन प्रणाली की प्रशस्तता वा उन्नति पहिली चीज़ है ॥

महाराष्ट्र-साहित्य-सम्मेलन इन्हीं के उद्योग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) दूसरी उन्नति प्रत्येक विषय के ग्रन्थों की बढ़ती है। जब हम अच्छी समयोपयोगी कल प्रस्तुत कर चुके तब हमें उससे भरपूर काम लेने और अच्छा अच्छा माल तैयार करने का उद्योग करना चाहिए। तैयारी के समय देश की मांग और आवश्यकता का ध्यान रख लेना भी बहुत ज़रूरी है। हिन्दी में अभी जिन जिन विषयों का अभाव है उनका पूरा करना भिन्न भिन्न वर्ग के लोगों के हाथ में है। आधुनिक विज्ञान, दर्शन, शिल्प शासनशास्त्र आदि के पारगामी जो हमारे प्रसिद्ध देशी भाई हैं हिन्दी की उनसे प्रार्थना है कि वे अपने अपने विषयों के अच्छे सर्वाङ्गपूर्ण ग्रन्थ या तो स्वयं लिखा करें या उन की तैयारी में सहायता दिया करें। मुझे पूरा भरोसा है कि केवल ऐसे लोगों को छोड़ जिन्हें यह सूझ रही है कि इस देश में सब विद्याओं और कलाओं का प्रचार अंग्रेज़ी ही के द्वारा होगा और किसी को इसमें आपत्ति न होगी। पर सोचने की बात है कि क्या भारत वर्ष के प्रत्येकश्रेणी के स्त्री पुरुष कभी एकदम अंग्रेज़ी बोलने लगेंगे? अथवा जो थोड़े से लोग अंग्रेज़ी लिखे पढ़े हैं उन्हीं से हमारी राजनैतिक, सामाजिक और औद्योगिक सब आवश्यकताएं पूरी हो जायँगी? क्या सब दिन इस बात की ज़रूरत बनी रहनी चाहिए कि हम पहिले एक विदेशी भाषा सीखने का श्रम उठाएँ तब जाकर कहीं किसी वैज्ञानिक वा औद्योगिक विषय का आरम्भ करें? निश्चय समझिए कि विज्ञान और कला आदि जब तक दूसरे की भाषा में हैं तब तक वे दूसरे की सम्पत्ति हैं। फिर हम क्यों न इन विषयों को अपनी पूंजी और अपना सहारा बना लें। इन के बिना पृथ्वी पर की कोई जाति अब अपना अस्तित्व क़ायम नहीं रख सकती।

मैं हर्ष से फूले अंग नहीं समाता जब देखता हूं कि अमेरिका और इङ्गलैण्ड की उच्च शिक्षा पाए हुए हमारे कुछ दूरदर्शी और विद्वान देश भाई इस बात को समझ रहे हैं। पंडित सत्यदेव ने, जिनके लेख "सरस्वती" में बराबर देखने में आते हैं, अमेरिका के शिकागो नगर में "हिन्दू साहित्य-सम्मिति" स्थापित करके बड़ी दूरदर्शिता का काम किया है। इस समिति का प्रभाव यह पड़ेगा कि जो भारतवासी अमेरिका में वैज्ञानिक शिक्षा पाने जायँगे वे अपना सम्बन्ध अपनी देशभाषा से बनाए रख सकेंगे और उसके प्रति अपने कर्त्तव्य को समझते रहेंगे। बाबू महेशचरणसिंह अमेरिका से विज्ञान और कृषि की ऊंचे दरजे की शिक्षा प्राप्त करके लौटे हैं। इन्होंने रसायन शास्त्र की एक पुस्तक लिख कर हमारी आशाओं के लिए एक अच्छा आधार खड़ा कर दिया है। इसी प्रकार हम प्रत्येक विभाग के विद्वानों से कुछ न कुछ आसरा रखते हैं। जापान की राजधानी टोकियों में एक हिन्दी विद्यालय का खुलना भी कुछ कम आशा बँधानेवाली बात नहीं है। सुनते हैं कि जापानी लोग भी नागरी अक्षरों के गुण को कुछ कुछ पहिचानने लगे हैं। वे देख रहे हैं कि उनकी भाषा भी नागरी अक्षरों में बड़ी सफ़ाई के साथ लिखी जा सकती है।

गुजरात का मत।

"महाराष्ट्र-साहित्य-सम्मेलन" की बात हम पहिले लिख चुके हैं। उसमें कई महाराष्ट्र सज्जनों ने जिस ज़ोर शोर के साथ हिन्दी का पक्ष लिया उससे यह पता लगता है कि देशहित की ओर उनकी कैसी स्वच्छ और प्रशस्त दृष्टि है। गुजरातीभाषियों में भी हिन्दी को भारतभाषा बनाने की चर्चा फैल चुकी है। गुजराती-साहित्य परिषद् में इस विषय पर बहुत वाद विवाद हुआ है। दीवान बहादुर अम्बोलाल साकरलाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देसाई ने परिषद् के सामने एक लिपि की उपयोगिता स्वीकार करते हुए हिन्दीभाषा के विषय में कहा:--

"शिक्षितों को चाहिए कि वे अपनी मानसिक उन्नति तथा विद्या और साहित्य की वृद्धि के निमित्त दो चार भाषाओं को सीखें। इसमें संदेह नहीं कि हिन्दी हमें न कि केवल तुलसीकृत रामायण ऐसे ग्रन्थों से परिचित करावेगी वरन व्यापार, लेन देन तथा देशहितकर उद्योगों में भी काम देगी। गुजरात और उत्तरीय भारत के बीच व्यापार बढ़ता जाता है अत: हमें हिन्दी की ओर विशेष ध्यान देना चाहिये। गुजरात का बहुत सा पुराना साहित्य ब्रजभाषा से मिला जुला है इससे गुजरातीप्रेमियों के लिए हिन्दी भाषा का पूर्णज्ञान प्राप्त करना बहुत ज़रूरी है।"

मिस्टर के० न० दिवातिया ने परिषद के पहिले दिन एक ग्रन्थ पढ़ा जिसमें उन्होंने भारत में एक भाषा होने की ज़रूरत माना पर कहा कि हिन्दी से काम न चलेगा हमें अंग्रेज़ी का सहारा लेना चाहिये।

राजकोट के रेवरेण्ड स्टीवेन्सन ने २२ सितम्बर के "काठियावाड़ टाइम्स" में मिस्टर यस० यन० पंडित के प्रतिकूल अपना यह मत प्रगट किया है कि चाहे हम काम काज चलाने के लिये एक भाषा ग्रहण कर लें पर हमें अलग अलग अपनी अपनी देश भाषाओं की उन्नति करनी चाहिए। आप का कहना है कि जब जुदे जुदे प्रान्त के लोगों को अपनी अपनी स्वाभाविक भाषाप्रणालियों के अनुसार उन्नति करने का मौक़ा दिया जायगा तभी वे अपना भरपूर बल लगा कर जातीय भांडार में अच्छे से अच्छे विचारों को भर सकेंगे।

गुजराती पत्र "सत्संग" की ४ अक्तूबर की संख्या में हिन्दी को भारतभाषा बनाने के पक्ष में एक ज़ोरदार लेख निकला है। उसमें दिखलाया गया है कि गुजरात निवासी अपने ऊंचे विचारों को प्रगट करने के लिये कभी कभी हिन्दी का व्यवहार करते हैं। बंकानेर के कवि और नाटककार मि० नाथूराम हिन्दी और गुजराती दोनों भाषाओं में लिखते हैं। गुजराती लोगों की कविता हिन्दी भाषा को पाकर बहुत अच्छी तरह बढ़ सकती है। मोरवी-ड्रामेटिक-कम्पनी अपने अभिनयों में गुजराती भाषा की जगह हिन्दी का व्यवहार करती है।

मि० नृसिंहराव भोलानाथ ने "गुजराती साहित्य-परिषद्" में जो लेख भेजा है उसमें उन्होंने परिषद को सलाह दी है कि वह सरकार से उधर के स्कूलों में हिन्दी की थोड़ी बहुत पढ़ाई जारी करने की प्रार्थना करे। उनका मत यह है कि हिन्दी को एक साझे की भाषा (Common vernacular) तो बनाना चाहिए पर उसे एकमात्र भाषा (Sole Vernacular) न बनाना चाहिए।

मिस्टर पी० यम० पटेल ने ७ अक्तुबर १९०९ के "काठियावाड़ टाइम्स" में एक लेख छपाया था जिसमें उन्हों ने इतने बड़े देश में केवल एक भाषा का आधिपत्य असम्भव बतलाया था। वे कहते हैं कि यदि अपनी मातृभाषा को एक बारगी छोड़ हम हिन्दी को ग्रहण कर लेंगे तो हमें पछिताना पड़ेगा और हमारी भावी सन्तति हमें कोसेगी। अत: यदि हिन्दी को दूसरी भाषा (Compulsory Second Language) का स्थान दिया जाय तो हमारा सब काम निकल सकता है। वह विद्वानों के व्यवहार की भाषा हो।

सब से अधिक पक्ष हिन्दी का राजकोट के श्रीमान् यस० यन० पंडित महोदय ने लिया है जिनके ६-७ लेख इस सम्बन्ध में "काठियावाड़ टाइम्स" (सितम्बर और अक्तूबर १९०९) में निकले हैं। इन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखों में आप ने भारत में एक भाषा की आवश्यकता दिखलाते हुए हिन्दी की योग्यता का बड़े अच्छे ढंग से प्रतिपादन किया है। आप ने आरंभ ही में कहा है कि भारत में जातीय एकता के लिये एक भाषा का होना भी ज़रूरी है। आजकल बड़ी भारी जरूरत उद्यम सम्बन्धी पश्चिमीय विज्ञान की जानकारी की है। पर एक भाषा न होने के कारण जो पुस्तकें इस विषय पर किसी एक भाषा में लिखी जाती हैं वे देश की जनसंख्या के बहुत थोड़े भाग तक पहुंच पाती हैं। अंग्रेज़ी में लिखी हुई पुस्तकें उद्यम में लगे हुए हमारे देशभाइयों के काम की नहीं होतीं क्योंकि उनमें से अधिकांश उस भाषा से अनभिज्ञ हैं। भिन्न भिन्न देश भाषाओं के ग्रंथकारों और प्रकाशकों को जो पाठकों की कमी के कारण हानि उठानी पड़ती है वह एक भाषा होने से तुरंत दूर हो सकती है। इसके अतिरिक्त सरकार को भी एक भाषा हो जाने से बड़ा भारी सुबीता हो जायगा। उसे एक प्रान्त के हाकिम की किसी दूसरे प्रान्त में बदली करने में अड़चन न होगी। क़ानूनों और आज्ञापत्रों को कई भिन्न भिन्न भाषाओं में न छपाना पड़ेगा। आजकल देश भर से सम्बन्ध रखने वाली बातों के विचार के लिए जो सभा समाज होते हैं उनमें अंग्रेज़ी का सहारा लेना पड़ता है जिससे सब श्रेणी के लोग उत्सुकता नहीं दिखला सकते। इसके अनन्तर पंडित महोदय ने उनलोगों के इस कथन का उत्तर दिया है कि एक भाषा होने से भिन्न भिन्न भाषाओं के पुराने तथा वर्त्तमान साहित्य को धक्का पहुंचेगा। आप कहते हैं कि किसी पुरानी देशभाषा और वर्त्तमान देश भाषा में जितना अन्तर है हिन्दी और उस पुरानी भाषा में उसकी अपेक्षा बहुत अधिक अन्तर न रहेगा। आगे चलकर आप ने इस बात को दिखलाया है कि अंग्रेज़ी को देश भाषा बनाने से हमारी बढ़ती नहीं हो सकती, वह हमें जनसमूह से मिलाने के स्थान पर पृथक करेगी।

हिन्दी को क्यों देशभाषा बनाना चाहिए इसके कारण आप ने ये बतलाए हैं—

(१) सौन्दर्य्य, माधुर्य्य और सम्पन्नता में वह संस्कृत के समान होने पर भी उसकी व्याकरण सम्बन्धी जटिलता से मुक्त है। उसका साहित्य भी भरा पूरा है। विलियम हंटर ने Imperial Gazetteer में लिखा है "हिन्दुस्तान की भाषाओं के बीच शक्ति और प्रभाव में हिन्दी सब से श्रेष्ट है"।

(२) हिन्दी सब से अधिक प्रचलित और जनप्रिय है। काठियावाड़ में गाँव गाँव तुलसीकृत रामायण का पाठ होता है। यहां प्रत्येक हरिभक्त के मुंह से हिन्दी का कोई न कोई दोहा सुनलीजिए। व्याख्यान देनेवाले जो और प्रदेशों से यहां (काठियावाड़ में) आते हैं वे हिन्दी ही में बोलते हैं। काठियावाड़ में नाटक पहिले हिन्दी भाषा में लिखे जाते थे।

(३) हिन्दी का व्याकरण गुजराती और मराठी के व्याकरण से सीधा है। उसकी शब्दावली और भाषाओं की शब्दावली से बिलकुल मिली हुई है जिससे सब प्रान्तों के लोग उसे थोड़ा बहुत समझ सकते हैं। यहां तक कि जो देवनागरी अक्षर पढ़ सकता है वह हिन्दी भी समझ सकता है।

(४) हिन्दी की नागरी लिपि और मराठी की बालबोध लिपि एक ही हैं। गुजरात और काठियावाड़ में भी धर्म्मसम्बन्धी ग्रन्थ नागरी अक्षरों में लिखे जाते हैं।

(५) हिन्दुस्तान के अठारह करोड़ आदमी आर्य्य भाषाएँ बोलते हैं। इनमें से आठ करोड़ वा आधे के लगभग तो हिन्दी बोलनेवाले हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाकी जो हैं वे थोड़ी बहुत हिन्दी समझ लेते हैं

(६) पाठशालाओं के विद्यार्थी बहुत थोड़े समय और ख़र्च में हिन्दी सीख सकते हैं। यदि हिन्दुस्तान भर की प्रारम्भिक पाठशालाओं में हिन्दी की दो या तीन रीडरें जारी कर दी जांय तो कुछ वर्ष के भीतर ही सारे भारतवर्ष के पढ़े लिखे लोग हिन्दी पढ़ने लिखने लग जायँ। इस अवसर पर यदि सरकार इस का प्रबन्ध कर के हमारी सहायता करे तो बहुत कुछ सफलता हो।

अन्त में काशी की नागरीप्रचारिणी सभा की ओर ध्यान आकर्षित कर के आप ने कहा है कि यदि अलग अलग कई भाषाओं के साहित्य संगठन करने की ओर कम ध्यान देकर भारतवासी इस सभा की सहायता में दत्तचित्त हो जायँ तो बड़ा काम हो।

मि० यस० यन० पंडित ने इस बात को बड़े दुःख के साथ सूचित किया है कि पुराने समय में जितने भूभाग में एक लिखने पढ़ने की भाषा का प्रचार था उतने ही में अब दो या कई भाषाओं के साहित्य गठन करने की प्रवृत्ति उत्पन्न हो गई है। आप ने एक पुस्तक का हवाला दिया है जिस में सन १७६७ ई० की लिखी हुई कुछ चिट्ठियां हैं जिन्हें गोआ और कंकण प्रदेश के निवासियों ने एक दूसरे के पास भेजा थीं। ये चिट्ठियां सब मराठी भाषा में हैं। पर अब आजकल इसी प्रवृति के अनुसार गोआनीं और कंकनी भाषाओं की अलग अलग पुस्तकें छपती हैं। इस प्रवृत्ति को रोकना चाहिए, नहीं तो धीरे धीरे कच्छी—साहित्यपरिषद्, मारवाड़ी—साहित्य—परिषद, भोजपुरीसाहित्य-परिषद,बिहारी-साहित्य-परिषद उठ खड़े होंगे और भाषा की रहीसहीएकता भी नष्ट होजायगी।

भारतवर्ष में आध्यात्मिक एकता तो कई हज़ार वर्षों से चली आ रही है। संस्कृत भाषा और उसका साहित्य एक ऐसे सूत्र हैं जो अनादिकाल से भारत के आर्य्यों तथा आर्य्यसभ्यता ग्रहण करनेवाले और लोगों को भी एक में बांधे हुए हैं। संस्कृत साहित्य द्वारा प्रचारित भाव भारतवासियों की नस नस में भरे हुए हैं। उनकी विचार करने की प्रणाली एक है। ऐसा जान पड़ता है कि हमारे पूर्वजों को इस एक भाषा की आवश्यकता प्राचीन काल में सूझी थी। तभी उन्हों ने एक व्याप्त भाषा को संस्कृत बना कर उसका साहित्य बढ़ाया। अतः संस्कृत के स्थान पर यदि उसी प्रकार आज हम हिन्दी को ग्रहण करलें तो हम अपने पूर्वजों का अनुकरण मात्र करेंगे।

आप ने हिन्दीप्रचार का यह उपाय बतलाया है कि प्रत्येक देशभाषा के सामयिक पत्रों में कुछ कालम हिन्दी के रहा करें। फिर धीरे २ ज्यों ज्यों लोग अभ्यस्त होते जायँ हिन्दी लेखों की संख्या बढ़ती जाय। यह कोई कठिन बात नहीं है। जस्टिस बदरुद्दीन ने अपने परिवार के सब लोगों की भाषा गुजराती से बदल कर उर्दू कर दी थी।

हमारा ढंग।

देखिए, और प्रान्तों में हिन्दी की चर्चा किस वेग के साथ बढ़ रही है। कितने लोगों की दृष्टि इस समय हिन्दी पर है! अब इस अवस्था में हमें भी कुछ करना चाहिए वा चुपचाप हाथ पर हाथ रक्खे बैठे रहना चाहिये। हिन्दी के लिए अभी मुख्य कार्य्यक्षेत्र युक्तप्रान्त ही है। पर अपनी भाषा की ओर जैसी उदासीनता इस प्रान्त के लोग दिखा रहे हैं वैसी किसी सभ्य मनुष्य-समाज में नहीं देखी जाती। सच तो यह है कि अभी तक हम लोग अपने को ऐसे ही कामों में फँसा कर अपना जन्म सफल समझते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आए जिन से अशिक्षित लोगों पर कुछ रोब दाब रहे वा जो झटपट हमारे आस पास के लोगों की दृष्टि में हमें भड़कीला बना दें। शिक्षित और विचारवान पुरुषों की दृष्टि में अपने को बड़ा और प्रतिष्ठित बनाने की आकांक्षा शायद ही किसी किसी ने की है। ऐसा होना स्वाभाविक भी है। क्योंकि देश में अधिक भाग "भय बिनु होइ न प्रीति" माननेवाले अशिक्षितों और अनुन्नत विचार के लोगों का है; मानव कर्म्म के मूल्य को यथार्थरूप से परखनेवाले शिक्षितों और विवेकियों की संख्या थोड़ी है। अतः साधारण समझ के आदमियों को अधिक लोगों से मान पाने की चाह हुआ ही चाहे। सारांश यह कि अभी तक वर्त्तमान स्थिति में अपने को अनायास निमग्न करना ही यहां के लोगों ने पसन्द किया है। और प्रान्तवालों की तरह उस स्थिति को परिवर्त्तित और उन्नत करने का प्रयास वे नहीं वा बहुत कम करते हैं। आस पास के लोगों ने जिन बातों में बड़प्पन समझा, चाहे उनमें कुछ वास्तविक महत्व या उच्चता न हो, उन्हीं को पाने में लोग अपनी सारी बुद्धि और चतुराई ख़र्च कर देते हैं। इस अवस्था में साधारण लोगों के लिए ऐसी बातों की ओर ध्यान देना जिनसे स्वार्थ और सामयिक मान की अपेक्षा लोकोपकार और स्थायी मान की अधिक सम्भावना हो, असम्भव होता है। यह काम असाधारण लोगों का होता है जो भ्रान्त जनसंख्या से, चाहे वह कितनी ही बड़ी हो, मान पाने की लालसा न रख, वरन् अपमान तक सह कर, सच्चे महत्व के कार्य्य कर जाते हैं। कुछ लोगों के अनुकरण करने से धीरे धीरे देशमें एक ऐसा दल संगठित हो जाता है जो उन कार्य्यों का महत्व समझता है। फिर तो एक समय ऐसा आता है जब उन्हीं कार्य्यों का साधन अधिकांश लोगों के जीवन की अभिलाषा हो जाती है और देश का भला हो जाता है। भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र ने जिस समय हिन्दी को समयानुकूल पथ पर ले आकर खड़ा कर दिया उस समय यहांके लोग किसी और ही धुन में थे। अपने देश की भाषा को संसार के आधुनिक कार्य्यक्षेत्र में लानेकी उन्हें फ़िक्र न थी।

यद्यपि अब हिन्दी के लिए एक दूसरा समय आया है पर अभी तक इधर के बहुत से नवशिक्षित लोग उसमें अपने ठाट बाट का कोई रंग न देख उसकी सेवा से विमुख हैं। माना कि हिन्दी के ग्रंथकार वा लेखक होने से उन्हें कोई ख़िताब न मिल जायगा, लोगों पर रोब ग़ालिब करने का मौका न मिल जायगा, उनमें राजनैतिक ज्ञान (Political aggr andizement) न आ जावेगी, पर अपने कर्त्तव्य का पालन भी तो कोई चीज़ है। देश भाइयों में विचारों की एकता फैलाना भी तो धर्म्म है। बंगाल में बंकिमचन्द्र चटर्जी और रमेशचन्द्र दत्त ऐसे लोगों ने बंगला के उपन्यास लिखने में अपना गौरव समझा, प्रोफेसर जे० सी० बोस ऐसे लोग बंगभाषा के लेख लिखने में अपने को धन्य मानते हैं पर इस प्रान्त के उच्चशिक्षित कहलाने वाले बहुत लोग अभी तक हिन्दी लिखने में अपना कुछ मान नहीं समझते। यह दुःख की बात है। किसी जाति का स्थायी गौरव उसके साहित्य में रहता है। किसी एक जाति के साहित्य को कोई दूसरी जाति कभी अपना नहीं सकती, उसकी ऐतिहासिक विचारपरम्परा से अपनी ऐतिहासिक विचारपरम्परा मिला नहीं सकती। अतः जब तक हम अपनी भाषा को समय के साथ २ न दौड़ावेंगे तब तक हम निरुद्यमी, आलसी और असभ्य समझे जायँगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ सूचना ॥

'स्त्रियों के रोग' सम्बन्धी लेख के आने के लिए जो समय नियत किया गया था उसे अब सभा ने बढ़ा दिया है। अब लेख २८ फरवरी १९१० तक आ जाना चाहिये।

प्रवन्धकारिणी सभा।

सोमवार ता० १३ दिसम्बर १९०९ सन्ध्या के ५½ बजे स्थान सभा भवन।

उपस्थित।

रेवरेन्ड ई० ग्रीव्स सभा पति, पं० केशवदेव शास्त्री। गोस्वामी राम पुरी, पं० सुरेन्द्र नारायण शर्म्मा, बाबू गौरीशंकर प्रसाद, बाबू गोपाल दास।

(१) गत अधिवेशन (ता० १५ अक्टूबर ०८) का कार्य्य विवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ।

(२) पं० सखाराम गणेश देउस्कर का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्हों ने लिखा था कि सभा के सोलहवें वार्षिक विवरण में विभक्ति के सम्बन्ध में जो मन्तव्य प्रकाशित किया गया हैं उसमें जो उन पर दोषारोपण किया गया है वह ठीक नहीं है।

निश्चय हुआ कि साधारण सभा में यह प्रस्ताव किया जाय कि सोलहवें वार्षिक विवरण में देउस्कर महाशय के विषय में जो कुछ लिखा गया है उस पर सभा दुःख प्रकाश करे।

(३) पं० ब्रजरत्न भट्टाचार्य्य का २२ अक्टूबर का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्हों ने प्रस्ताव किया था कि (१) विलायत से आए हुए सिविलियनों की परीक्षा हिन्दी में भी हुआ करे (२) लोअर मिडिल और मिडिल सेकशनों में संस्कृत के साथ हिन्दी भी पढ़ाई जाय और (३) संयुक्त प्रान्त के सरकारी गज़ट का जो भाग उर्दू में छपता हैं वह हिन्दी में भी छपा करे।

निश्चय हुआ कि (१) यह परीक्षा हिन्दी में भी होती हैं (२) इस सम्बन्ध में सभा ने पहिले गवर्मेन्ट से जो पत्र व्यवहार किया था उसकी पूरी फाइल के साथ यह विषय आगामी अधिवेशन में उपस्थित किया जाय और (३) इसके लिये गवर्न्मेन्ट से प्रार्थना की जाय।

(४) पं० श्याम विहारी मिश्र और बाबू चतुर्भुज सहाय वर्म्मा का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि सभासदों के आवेदन पत्र के फार्म पर "मैं इन सभ्य महाशय को भलीभांति जानता हूं और मेरी सम्मति में ये सभासद होने के योग्य हैं" ये शब्द न रक्खे जांय।

निश्चय हुआ कि साधारण सभा में यह प्रस्ताव किया जाय कि इस सभा की सम्मति में "मैं इन सभ्य महाशय को भली भांति जानताहूं और" ये शब्द निकाल दिये जाने चाहिए और "मेरी" के स्थान पर "हमारी" होना चाहिए। साथ ही इस संबंध में एक नोट इस विषय का देना चाहिए कि जो महाशय किसी सभासद से प्रस्ताव तथा अनुमोदन न करा सकते हों वे अपना पूरा पता पद इत्यादि लिख कर किसी अन्य प्रतिष्ठित महाशय से परिचय दिला सकते हैं। इस सभा के अन्य स्थानिक सभासद विचार करके आवेदनपत्र पर प्रस्ताव तथा अनुमोदन कर सकेंगे।

(५) बाबू रामकृष्ण गुप्त का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्हों ने सभा के ता० १३ सितम्बर ०८ के निश्चय नं० ३ के सम्बन्ध में लिखा था कि पटवारी की खतौनी में आवपाशी के महसूल का हिसाब नहीं रहता और गवर्न्मेन्ट काश्तकारों से यह महसूल वसूल करने के लिये जो फिहरिस्त जमीन्दारों के पास भेजती है वह उर्दू में रहती है। अतः सभा उद्योग करे कि यह फिहरिस्त नागरी में रहे।

(६) निश्चय हुआकि इसके लिये गवर्न्मेन्ट से प्रार्थना की जाय।

सभा द्वारा प्रकाशित होने के लिये निम्न लिखित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख तथा पुस्तकें ग्रंथमाला और लेख माला के सम्पादक की सम्मति के सहित उपस्थित की गईः—अर्थात मुंशी देवी प्रसाद का "युवती योग्यता" शीर्षक लेख और पं० सूर्य्यनारायण दीक्षित की भेजी हुई "दोहा सार" और "चकत्ता की पातस्याही" नामक पुस्तकें ।

निश्चय हुआ कि "युवती योग्यता" शीर्षक लेख नागरी प्रचारिणी लेखमाला में और "दोहा सार" ग्रंथमाला में प्रकाशित किया जाय। "चकता की पातस्याही" वर्त्तमान रूप में प्रकाशित नहीं की जा सकती ।

(७) पं० गोकुल प्रसाद पाठक का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि सभा वेदों का अनुवाद सरल भाषा में छपवावे और इसके लिये श्री मान् गायकवाड़ की सहधर्म्मिणी से सहायता के लिये प्रार्थना करे ।

निश्चय हुआ कि सभा इस समय इस कार्य्य को नहीं उठा सकती । वे इसके छपवाने के सम्बन्ध में भारत धर्म्म महामंडल से पत्रव्यवहार करें ।

(८) निश्चय हुआ कि पं० केशवदेव शास्त्री से प्रार्थना की जाय कि वे सभा को इस विषय में सम्मति दें कि पत्रिका के नवीन रूप में अब विज्ञापन की छपाई किस प्रकार ली जाय ।

(९) मंत्री ने सूचना दी कि निम्न लिखित २६ महाशयों के यहाँ दो वर्ष से अधिक का चन्दा बाकी पड़ गया है ।

(१०) बरोदा राज्य का १५ अक्टूबर का पत्र नं० २११ उपस्थित किया गया जिसमें श्रीमान् महाराजा साहब बरोदा ने हिन्दी कोश के लिये सभा को दो हज़ार रुपये की सहायता इस शर्त पर देनी स्वीकार की थी कि कोश छपने पर उसकी इतने मूल्य की प्रतियां बरोदा राज्य को भेजी जांय ।

निश्चय हुआ कि यह सहायता धन्यवाद पूर्वक स्वीकार की जाय और श्रीमान् से प्रार्थना की जाय कि वे द्रव्य भेजने की कृपा करें ।

(११) मिस्टर जी० एल० उपाध्याय का कार्ड उपस्थित किया गया जिसमें उन्हों ने स्त्रियों के रोग सम्बन्धी लेख की अवधि बढ़ाए जाने के लिये प्रार्थना की थी ।

निश्चय हुआ कि इसकी अवधि २८ फरवरी १९१० तक के लिये बढ़ा दी जाय ।

(१२) इलाहाबाद युनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार का अक्टूबर का पत्र सूचनार्थ उपस्थित किया गया जिसमें उन्हें ने लिखा था कि देशी भाषाओं की पढ़ाई एफ० ए० बी० ए० आदि परीक्षाओं में भी होने के विषय को सिन्डिकेट के आगामी अधिवेशन में उपस्थित करेंगे ।

निश्चय हुआ की रजिस्ट्रार महाशय से पूछा जाय कि उसका क्या फल हुआ ।

(१३) पं० बाबू राम शर्म्मा का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि हस्तलिपि परीक्षा में सभा विद्यार्थियों को जो पारितोषिक धन रूप में देती है उसके बदले उन से पूछ कर उन्हें उसी मूल्य के सभा के पत्र दिये जायं और यदि उन्हें यह अभीष्ट न हो तो उस अवस्था में उन्हें कोई एक पत्र और उसका मूल्य काट कर शेष रुपया नक़द दिया जाय ।

निश्चय हुआ कि यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं हो सकता ।

(१४) सभा पति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई—

—:o:—

साधारण अधिवेशन ।

शनिवार ता० २५ दिसम्बर १९०९ संध्या के ५½ बजे स्थान सभा-भवन ।

(१) बाबू अमीर सिंह के प्रस्ताव तथा पं० रामचन्द्र शुक्ल के अनुमोदन पर पं० रामनारायण मिश्र बी० ए० सभापति चुने गये ।

(२) गत अधिवेशन (ता० २७ नवम्बर ०९) का कार्य्य विवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ ।

(३) प्रबन्धकारिणी सभा के ता० १५ अक्तूबर ०९ का कार्य्य विवरण सूचनार्थ उपस्थित किया गया ।

(४) निम्न लिखित महाशय नवीन सभासद चुने गये ।

१ पं० वंशीधर याज्ञिक–चौधरी टोला–पो० महेन्दु बांकीपुर ३) २ श्रीयुक्त चन्द्रमणि भिक्खु-माया कुंवर कसया गोरखपुर ५)-३ बाबू धनपतराय-सब डिप्टी इन्स्पेक्टर आफ़ स्कूल्स महोबा-ज़ि० हमीरपुर १॥) ४ पं० सखाराम गणेश देउस्कर ७।१।१ बुकिया स्ट्रीट कलकत्ता ५) ५ ठाकुर प्रताप सिंह जी राजमहल नीम राना वाया ब़ेराका १०) ६ बाबू मथुरा प्रसाद राय टीकापुर, बी०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निज़ामाबाद जि० आज़मगढ़-१॥) ७ पं० चूरन दुबे-मुन्सरिम मुन्सफी आजमगढ़ १॥) ८ बाबू जानकी सिंह वर्म्मा कलेक्टरी आज़मगढ़ १॥)-९ पं० रविशंकर नागर महल्ला गोविन्द जी नायक,काशी-१॥) १० बाबू गंगा प्रसाद बी० ए० एस० सी० थर्ड मास्टर हाई स्कूल, बाराबंकी-३)

(५) सभासद होने के लिये ३२ महाशयों के नवीन आवेदनपत्र सूचनार्थ उपस्थित किये गये ।

(६) निम्नलिखित पुस्तकें धन्यवाद पूर्वक स्वीकृत हुई- १ पं० गौरचरण गोस्वामी, वृन्दावन —अभिमन्युवध २ स्वामी सतगुरुप्रसाद शरण, श्री गुरु रामजी पुस्तकालय, गोंड़ा-साहित्य हत्या, कर्म्म साधन भूमिका, ३ बाबू बनवारी लाल, उलाव, ज़ि० मुंगेर-कंसविध्वंस, ४ बाबू जयशंकर प्रसाद, सराय गोवर्धन काशी-प्रेमराज्य ५ खत्री एसोसियेशन काशी-खत्री एसोसियेशन का द्वितीय वार्षिकोत्सव ६ बाबू द्वारका प्रसाद अत्तार बाजार बहादुरगंज शाहजहांपुर-आर्य्यसमाज गौरवादर्श। खरीदी गई-मनुष्य के कर्त्तव्य, रियज्जी, यमनराज्य वंशावली Indian Antiquary for December 1908 and December 1909

(७) सभा के सभासद बाबू लाल बिहारी सिंह जगतगंज काशी, का इस्तीफ़ा उपस्थित किया गया ।

निश्चय हुआ कि यह स्वीकार किया जाय और बाबू लाल बिहारी सिंह से प्रार्थना की जाय कि उनके यहां सभा का जो चन्दा बाकी है उसे वे शीघ्र भेज दें ।

(८) पं० रामचन्द्र शुक्ल के प्रस्ताव पर सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि सभा को अपने आनरेरी सभासद एवं हिन्दी के बड़े भारी सहायक मिस्टर रमेशचन्द्र दत्त सी० आई० ई० की असामयिक मृत्यु पर बड़ा शोक है । तथा ऐसे सहायक की मृत्यु से हिन्दी भाषा को बहुत हानि पहुंची है । उनकी धर्मपत्नी को सभा की ओर से शोक प्रकाशक पत्र भेजा जाय ।

(९) मंत्री ने सभा के सभासद राय शिवसिंह भंडारी की मृत्यु की सूचना दी जिस पर सभाने शोक प्रकट किया ।

(१०) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई—

सुरेन्द्रनारायण शर्म्मा ।

उपमंत्री ।

आय व्यय का हिसाब ।

(दिसम्बर १९०९)

आय	धन की संख्या		
गत मास की बचत	३५७४	९	१
सभासदों का चन्दा	७७	४	०
पुस्तकालय का चन्दा	७६	१२	०
पुस्तकों की बिक्री	७०	५	०
हिन्दी कोश	५५	७	०
पृथ्वीराजरासो	१८	१२	०
ब्याज	१	६	०
जोड़	३८७४	४	१

व्यय	धन की संख्या		
आफ़िस के कार्यकर्ताओं का वेतन	६७	१०	६
डांक व्यय	२५	८	९
पुस्तकालय	५२	५	३
हिंदी पुस्तकों की खोज	२०	२	०
फुटकर व्यय	४	०	३
हिन्दी कोश	४९४	११	३
नागरी प्रचार	१३	४	०
ब्याज	५	०	४
	६८२	१०	४
बचत	३१९१	९	९
जोड़	३८७४	४	१

रोकड़ सभा	१६॥≡)७
बनारस बंक (कोश विभाग)	४०१७।-)४
	४०३४)११
बंक का देना	८४२।≡)२
	३१९१॥-)॥।

देना ६०००)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभा के पारितोषिकों की सूची ।

(१) इस वर्ष के सभा के नियमित दो मेडलों के लिये निम्न लिखित विषय नियत हैं । ये लेख ३१ दिसम्बर १९०९ तक सभा में आजाने चाहिएं ।

वैज्ञानिक विषय ।

प्राकृतिक अवस्था का उत्तर भारत के सामाजिक जीवन पर प्रभाव ।

सधारण (विद्या) विषय ।

अकबर के पूर्व हिन्दी की अवस्था ।

(२) डाक्टर छन्नूलाल मेमोरियल मेडल-यह सोने का मेडल उस व्यक्ति को दिया जायगा जिसका लेख "स्त्रियों के रोग" पर सब से उत्तम होगा । लेख सरल हिन्दी में होना चाहिए और सभा के पास २८ फरवरी १९१० तक आजाना चाहिए ।

(३) ५००) का पुरस्कार—सभा द्वारा निश्चित अनुक्रमणिका के आधार पर जो हिन्दी का सब से उत्तम व्याकरण लिखेगा उसे यह पुरस्कार दिया जायगा। व्याकरण ३१ दिसम्बर १९०९ तक सभा के पास आजाना चाहिए । यदि कई व्याकरणों के भिन्न भिन्न अंश उत्तम समझे जांयगे तो यह पुस्कार उन सब लोगों में बाँट दिया जायगा और उन ग्रन्थों को घटाने बढ़ाने आदि का इस सभा को पूरा अधिकार होगा । सभा द्वारा निश्चित अनुक्रमणिका दो पैसे का टिकट डाकव्यय के लिये भेजने पर सभा के मंत्री से मिल सकती है ।

ममीरे का सुरमा ।

एसिष्टण्ट केमिकल एकजामिनर साहब गवरमेण्ट पञ्जाब द्वारा परीक्षित व प्रमाणित हो चुका है । माननीय अंग्रेजी मेडिकल कालिज के अफ़सर डाक्टरों राजों महाराजों विलायत की युनिवरसिटी से सनद पाए डाक्टरों ने परीक्षा करके इस अञ्जन की सचाई प्रकट की है और बताया है कि नेत्र रोगों के लिये यह सुरमा अकसीर गुण रखता है । दृष्टि की कमजोरी, आखों का अन्धशून्य जाला, पड़वाल, गुवार, फुंसी, आंखों से पानी का बहना, आंखों की लाली मोतियाबिन्द की प्रथम अवस्था, खाज, खुजली इत्यादि ।

माननीय डाक्टर और हकीम आंख के रोगियों को जो उनके पास आते हैं यह सुरमा देते हैं चार दिन के लगाने से आंखों की दृष्टि ठीक हो जाती है । बालक से लेकर बूढ़े तक के लिये यह अञ्जन एक समान लाभदायक है । मूल्य इस कारण कम रक्खा गया है कि धनाढ्य और दीन दोनों इससे लाभ उठा सकें । मूल्य एक तोला का जो एक वर्ष के लिये बहुत है २) दो रुपया है । ममीरे का सच्चा सुरमा जो बहुत उत्तम ३) तीन रुपये तोला । एक खालिस ममीरा एक माशा २०) है । डाक का खर्चा ग्राहक के जिम्मे । पत्र भेजने के समय अखबार का नाम लिखो । पता-प्रोफ़ेसर मायासिंह अहलवालिया-मुकाम-बटाला जिला गुरदासपुर-पञ्जाब ।

संतबानी पुस्तकमाला

अर्थात प्राचीन महात्माओं की दुर्लभ बानी का जो गुप्त होती जाती हैं जीर्णोद्धार मय उनके जीवन-चरित्र के

कबीर सा०, तुलसी सा०, पलटू सा०, जगजीवन सा०, रैदासजी, चरनदास जी, दरिया सा०, दयाबाई, सहजोबाई, इत्यादि ।

बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद से इश्तिहार मँगा कर देखिये ।

Printed by Mahdo Prasad at the Bharat Press, Benares, for Nagri Prachorini Sabha Kashi Publisher.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri.

सम्पादक
रामचन्द्र शुक्ल।

Registered No A 414

नागरीप्रचारिणी पत्रिका।

[मासिक पत्रिका]

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल। बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल॥
करहु बिलंब न भ्रात अब, उठहु मिटावहु सूल। निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जु सब को मूल॥
विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार। सब देशन सों लै करहु, भाषा मांहि प्रचार॥
प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि यत्न। राज काज दर्बार में, फैलावहु यह रत्न॥ हरिश्चन्द्र।

भाग १४ | १५ फरवरी १९१० । | संख्या ६

सूचना और सम्मति।

बंगीय-साहित्य-सम्मेलन की तीसरी बैठक सरस्वती पूजा की छुट्टियों में १३,१४ और १५ फ़रवरी को भागलपुर में होगी। श्रीमान् जस्टिस सारदाचरण मित्र महोदय ने सभापति का आसन ग्रहण करना स्वीकार किया है। यदि हिन्दी साहित्य-सेवियों का भी एक सम्मेलन उत्तरीय भारत के भिन्न भिन्न नगरों में प्रतिवर्ष हुआ करे तो बड़ा अच्छा हो। इससे भाषा के सम्बन्ध में एक प्रकार की जागृति उत्पन्न होती रहेगी और लोगों का ध्यान उसके महत्व की ओर बराबर बढ़ता जायगा। यदि हिन्दी-प्रेमी लोग चाहें तो यह कोई बड़ी बात नहीं है।

सरकार पंडित हरप्रसाद शास्त्री एम० ए० द्वारा राजपूताने में डिंगल भाषा की कविताओं का संग्रह करा रही है। इनमें से बहुत सी ऐसी हैं जो लिखी नहीं गई हैं; चारणों और भाटों को ज़बानी याद हैं। इनके लिखवाने का प्रबंध किया गया है। आशा है कि जिन कविताओं में कुछ विशेष ऐतिहासिक रहस्य पाए जायंगे उनके प्रकाशित करने वा कराने का प्रबंध भी सरकार करेगी।

सेठ चीनू भाई माधवलाल ने अहमदाबाद में एक विज्ञानशाला स्थापित करने के लिए चार लाख रुपए का दान किया है। आज कल ऐसे दानियों की बड़ी ज़रूरत है।

गौतम बुद्ध की जो हड्डियां पेशावर में निकली थीं इतने दिनों के सोच बिचार के पीछे अब सरकार ने उन्हें बरम्हा के मंडले नगर में स्थापित करने की आज्ञा दी है। "रंगून गज़ट' कहता है कि यह अच्छा ही हुआ क्योंकि भारतवर्ष के प्रान्तों में ब्रह्मदेश ही ऐसा है जिसमें बौद्ध लोग बसते हैं। ठीक है, पर यदि ये हड्डियाँ उन स्थानों में से किसी में प्रतिष्ठित की जातीं जो उनके पवित्र जीवन की किसी घटना से सम्बन्ध रखते हैं तो और भी अच्छा होता।

लंडन नगर में समस्त पूर्वीय भाषाओं की शिक्षा के लिए एक बड़ा भारी विद्यालय खोलने का उद्योग हो रहा है। इसके लिए वहां के बड़े बड़े लोगों की एक कमेटी भी बन गई है। इंगलैंड निवासियों को सहसा इस बात पर लज्जा आई है कि यूरप के बर्लिन, पैरिस, वियना, रोम आदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्वीय देशों से कम सम्बन्ध रखने वाले नगरों में तो पूर्वीय भाषाओं की शिक्षा में इतने अधिक रुपए लगाए जायँ और लंडन में इतनी उदासीनता बनी रहे। यह निश्चित हो चुका है कि इस प्रस्तावित विद्यालय में नई और पुरानी दोनों भाषाएं सिखाई जायंगी। पर अभी सरकार ने केवल चलित (Living) भाषाओं ही के लिए रुपया देना स्वीकार किया है क्योंकि उनकी ज्यादा ज़रूरत है। इसके अन्तर्गत एक बड़ा भारी पुस्तकालय रहेगा जिसमें पूर्वीय भाषाओं के पुराने से पुराने और नए से नए ग्रन्थों के संग्रह के सिवाय उनके सामयिक पत्र भी रक्खे जायंगे। अभी स्थायी रूप से जिन जिन भाषाओं के अध्यापकों की ज़रूरत होगी वे ये हैं:—

तुरकी, अरबी, और फ़ारसी-जो यूरप से सब से पहिले पड़ने वाले देशों की भाषाए हैं।

हिन्दी, हिन्दुस्तानी और बँगला, पूर्वीय और उत्तरीय भारत के लिए।

मराठी और गुजराती-पश्चिमी भारत के लिए। तामील, तैलंगी और कनाड़ी-दक्षिण भारतकी भाषाएं।

बरम्ही और मलाया-जिन्हें बरम्हा, श्याम और मलायाद्वीपों के लोग लिखते पढ़ते और बोलते हैं।

चीनी और जापानी-दूरस्थ पूर्वीय देशों की प्रतिनिधि।

स्वहिली और हंसा-अफ्रिका की भाषाओं में से।

इन भाषाओं के स्थायी अध्यापकों के सिवाय कमेटी ने आर्सेनियन, आसामी, पंजाबी, तिब्बती, पश्तो, सिंहली, श्यामी, पालीनिशियन, जूलू आदि पर व्याख्यान देनेवालों की नियुक्ति भी आवश्यक बतलाई है। इस विद्यालय का वार्षिक व्यय १२७२५ पाउंड मंजूर हुआ है जिसमें से १०००० पाउंड तो अध्यापकों को वेतन दिया जायगा और बाक़ी पुस्तकालय आदि के लिए होगा।

आजकल सब बड़े बड़े दफ़्तरों में अंग्रेज़ी लिखने के लिए प्रायः टाइपराइटरों से काम लिया जाता है। इससे बड़ा सुबीता होता है। देशी भाषाओं के अक्षरों के टाइपराइटर बनाने का उद्योग बहुत दिनों से हो रहा था। अब हिन्दी और उर्दू के टाइपराइटर तैयार हो गए हैं। हिन्दी का टाइपराइटर अमेरिका से बनकर पहिले पहिल बम्बई में आया था। वहां कुछ लोगों ने उससे काम भी लिया था। लहौर की प्रदर्शिनी में भी यह टाइपराइटर दिखाया गया था। अभी संयुक्त अक्षरों में कुछ कुछ त्रुटियां हैं, जो, आशा की जाती है कि शीघ्र दूर हो जायंगी।

मंगल ग्रह अभी हाल में पृथ्वी के इतने निकट आगया था कि वैज्ञानिक लोग उसके सम्बन्ध में नई नई बातो का पता लगाने के लिए उछल पड़े थे। किन्तु फल यह हुआ कि जो सिद्धान्त उसके विषय में आजतक स्थिर हो चुके थे वे भी हवा हो गए। मंगल की नहरों और वहां के अद्भुत निवासियों के विषय में इधर बहुत कम सन्देह लोगों को रह गया था। पर ग्रीनिज़ वेधशाला के मिस्टर मांडर ने रायल अस्ट्रानामिकल सोसाइटी के सामने एक व्याख्यान दिया है जिसमें उन्होंने कहा है कि हाल में जो मंगल ग्रह के फ़ोटोग्राफ़ लिए गए उनसे प्रगट हुआ कि ये नहरें केवल चक्षुभ्रम थीं। इन फ़ोटोग्राफ़ों में उस ग्रह के ध्रुव तथा और सब अंग आगए हैं पर इन नहरों का कहीं नाम निशान भी नहीं है। अन्त में सभापति और सब सदस्य इस बात पर सहमत हुए कि नहरों की बात बिल्कुल झूठ थी। जब नहरें ही न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रह गईं तब वहां मनुष्यों का कौन ठीक ? क्योंकि उनके अस्तित्व का अनुमान तो इन्हीं नहरों को समझ कर हुआ था।

गत १९ जनवरी को एकलिपि-विस्तार-परिषद् की कार्य्यकारिणी सभा का एक अधिवेशन हुआ था। पं० सखाराम गणेश देउस्कर महाशय ने सभापति का आसन ग्रहण किया था। भारतमित्र सम्पादक पंडित अमृतलाल चक्रवर्ती के प्रस्ताव और श्रीयुक्त बाबूराव पराड़कर के अनुमोदन पर सर्वसम्मति से यह स्थिर हुआ कि बँगला पत्रों के अधिकारियों से प्रार्थना की जाय कि वे अपने पत्रों के अग्रलेखों के शीर्षक बँगला अक्षरों के साथ साथ नागरी अक्षरों में भी छापा करें। सभा ने इन तीन विषयों पर लेख भेजनेवालों को सोने चांदी के पदक देना भी निश्चित किया (१) भारतवर्ष में एक लिपि प्रचार की उपयोगिता और उसके प्रचार का उपाय (२) हिन्दी, भारत की राष्ट्र भाषा (३) जनसाधारण में शिक्षा प्रचार। अब परिषद् के उद्देश्योंके विषयमें किसी को कुछ सन्देह न करना चाहिये।

——:o——

३ फ़रवरी की "शिक्षा" ने इस सभा के कोश विभाग के सम्बन्ध में दो नोट दिए हैं। एक में तो उसने न जाने किस आधार पर लिखा है कि कोश के चन्दे के लिए जो महाशय बाहर घूम रहे हैं उन्हें सफलता नहीं हो रही है। कहने की आवश्यकता नहीं कि इस कार्य्य में लोग उत्साह के साथ सहायता दे रहे हैं और देने का बचन दे रहे हैं। दूसरे नोट में लिखा गया है कि किसी कार्य्यकर्त्ता के अनुचित व्यवहार के कारण कोश का काम रुक गया है। इस विषय में मैं सिर्फ़ इतनाही कहना चाहता हूं कि कोश का काम रुका नहीं है; बराबर जारी है। आशा है कि इन बातों को जान कर सहयोगिनी को प्रसन्नता होगी।

जापानी खोज।

जापानी बौद्धों के अधिष्ठाता काउंट ओटनी का सेक्रेटरी टाशिबाना नामक एक बीस वर्ष का युवा जापानी मध्यएशिया में पुरावृत्त के अनुसन्धान के लिए निकला। जून १९०८ में वह चीन की राजधानी पेकिन से कुछ छकड़े और टट्टू लेकर मंगोलिया के प्रधान नगर उरगा की ओर गया। वहां से सेनामार्ग से वह उलियस्तानी गया। राह में उसने ओरखन नगर के खँडहरों को देखा जो किसी समय मंगोलों की राजधानी थी। यहां उड़गकी ख़ां का स्मारक मिला जिसमें कई शिलालेख सातवीं शताब्दी से कुछ पीछे तक के थे। वहां से काब्दो नगर देख कर उसने अल्टाई पर्वत को पार किया और चीनी तुर्किस्तान की राजधानी उरुम्टाई में आ कर कुछ दिन रहा। जाड़े में वह टरफ़न पहुंचा जो सोलहवीं शताब्दी तक एक समृद्ध नगर था। उसके आस पास बौद्धमन्दिरों के बहुत से खँड़हर हैं। टाशिबाना यहां एक महीने रह कर स्थानों को खोद कर छानबीन करता रहा। उस का परिश्रम सफल हुआ और उसे वहां कई बहुत प्राचीन बौद्धसूत्र मिले। इनमें से कुछ तो चौथी शताब्दी के थे और बाक़ी सातवीं के। जनवरी १९०९ में वह टरफ़न से चल कर काश्गर और कुर्ला आया जहां पहले डाक्टर स्टीन ने कुछ छानबीन की थी। कुर्ला से उसकी मंडली दो दलों में बँट गई। एक दल तो व्यापार मार्ग से सीधे काशगर की ओर गया और दूसरा टारिम नदी के कछारों से होता हुआ लाबनार की झील की ओर बढ़ा। टाशिबाना इसी दूसरे दल के साथ चला क्योंकि उसे लूमन नगर की जाँच करनी थी। यह लूमन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नगर एक प्राचीन राजवंश की राजधानी थी जिसने २०० ई० पूर्व से लेकर छठवीं शताब्दी तक राज्य किया । यहां पर उसने बहुत सी अमूल्य हस्तलिखित पुस्तकों को खोदकर निकाला । इसके अनन्तर वह चर्चिन और निया में गया जहां से उसने टारिम के रेगिस्तान की ओर कई चढ़ाइयां कीं पर हर बार पानी के अभाव के कारण वह लौट लौट आया । ६ जुलाई को वह काशगर आया और फिर दूसरे दल को भी साथ ले कर २७ अक्तूबर को लेह पहुंचा । काउंट ओटनी भी उस समय भारत की सैर करते हुए काश्मीर के सोनामर्ग नामक स्थान में पहुंचे हुए थे । वहीं पर टाशिबाना आ कर उनसे सातवीं नवम्बर को मिला । इस तरह इस अल्पवयस्क साहसी जापानी युवक ने मध्य एशिया की छानबीन की जहां न जाने कितने हस्तलिखित ग्रन्थ गड़े पड़े हैं ।

टाशिबाना भारतवर्ष में भी आया था और अपने साथ तीस लम्बे लम्बे प्राचीन हस्तलिखित खर्रे लाया था जिनमें पूर्ण और अपूर्ण बहुत से बौद्धसूत्र हैं । इनमें से एक तो उर्गा का है जो बारह गज लम्बा है । दूसरा लम्बाई में तीन फुट है । इसमें एक तरफ तो चीनी भाषा में बौद्धसूत्र हैं और दूसरी तरफ मंगोलभाषा में मंजुश्री की बन्दना है। इन के सिवाय छोटे छोटे पत्रों का बड़ा भारी संग्रह है जिनमें चीनी-उरगर, कोक-तुर्की, और काशगर ब्राह्मी के लेख हैं। कुछ काठ के टुकड़े भी हैं जिन में तिब्बती–ब्राह्मी और खरोष्टी लिपियाँ अङ्कित हैं। सब से अधिक ध्यान देने योग्य एक चीनी राजदूत का "स्थानिक राजाओं" के नाम एक पत्र है जिसमें वह अपने को "पश्चिमीय देशों का कार्य्य-निरीक्षक" लिखता है । इस पद का उल्लेख चीनी इतिहास में नहीं मिलता । ऐसा अनुमान होता है कि पत्र का लेखक हन राजबंश की उस पिछली शाखा का कर्म्मचारी था जिसका शासन पहिली और दूसरी शताब्दियों में था । पत्र पर कोई तिथि नहीं है, पर वह दूसरी शताब्दी से इधर का नहीं हो सकता ।

काउंट ओटनी और टाशिबाना इन सब चीज़ों को लेकर यूरप गए हैं । वहां इनकी जाँच होगी । एक महीना हुआ कि इन खर्रों और पत्रों को "कलकत्ता मदरसा" के मिस्टर रास ने देखा था और बहुतों को पढ़ा भी था क्योंकि उनके अक्षर बहुत दिव्य और स्पष्ट हैं ।

भारतीय शिल्पकला ।

मिस्टर बिन्सेंट स्मिथ ने, जो भारतीय शिल्प के बड़े जानकार समझे जाते हैं, ११ जनवरी को लंडन की रायल एशियाटिक सोसाइटी में एक लेख पढ़ा । उन्होंने पहिले तो उन बहुत से यूरोपियन महापुरुषों के मतों का उल्लेख किया जिन की समझ में भारत में कोई कला थी ही नहीं और यदि थी भी तो बहुत निम्न श्रेणी की । इसके पीछे उन्होंने मिस्टर हावेल और डाक्टर कुमार स्वामी का यह सिद्धान्त–जो कि उन्हें बिलकुल नया और अनोखा मालूम हुआ–कह सुनाया कि "भारतीय शिल्पकला संसार में सबसे उत्तम है ।" मि० हावेल कलकत्ता और मद्रास आर्टस्कूलों के प्रिन्सिपल रहे हैं। स्मिथ साहब ने मि० हावेल के नव-प्रकाशित "Indian Sculpture and Painting" और डाक्टर कुमारस्वामी के "Mediaeval Singhalese" नामक पुस्तकों की ओर ध्यान दिलाया जिन में उदाहरण की भांति हिन्दुस्तानी चित्रकारी और शिल्प के बहुत से नमूने दिखाए गए हैं । वक्ता महाशय ने कहा कि पहिले तो भारतीय शिल्पकला को लोग हेय और तुच्छ दृष्टि से देखते थे । इसका कारण यह था कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दू देवताओं की जो साधारण मूर्त्तियाँ बनाई जाती हैं वे बेढंगी, विकराल और घृणोत्पादक होती हैं"। पर अच्छी चीजें भी ढूँढ़ने से मिलही जाती हैं। फ़र्गुसन साहब ने भारतीय शिल्प की श्रेष्ठता अच्छी तरह से दिखलाई।

भारतीय शिल्प दो भागों में बँट सकता है-(१) हिन्दू, जिसके अन्तर्गत बौद्ध और जैन भी हैं (२) और मुसलमानी। आपने कहा कि हिन्दू लोग पशु और वृक्ष अंकित करने में यूनानियों से बढ़ कर थे। सारनाथ में जो चमचमाता हुआ अशोक का स्तम्भ निकला है उसे मि० मार्शल एशियावासी यूनानियों का बनाया बतलाते हैं। इस पर स्मिथ साहब ने कहा "भारतीय कला की सब शाखाओं में यूनानी प्रभाव को बढ़ाकर कहनेकी उधर हम लोगों की आदत पड़ गई थी"।(छूटी कि नहीं?) फिर आगे चल कर आप यह भी कहते हैं-"हिन्दूलोग विदेशी वस्तुओं को ग्रहण करने में बड़े चालाक थे; वे जिस विदेशी वस्तु को लेते थे उसे ऐसा कर डालते थे कि वह उन्हीं के देश की मालूम होने लगती थी।"

उत्तर-पश्चिम सीमा प्रान्त में निकली हुई यूनानियों और बौद्धों की सम्मिलित कारीगरी पहिले (शायद उसी ग्रीसभक्ति के कारण) सब से उत्कृष्ट समझी जाती थी। अब मि० हावेल और डाक्टर कुमारस्वामी उन्हें सब से निकृष्ट बतलाते हैं। स्मिथ साहब ने कहा कि मैं इन दोनों महाशयों से सहमत नहीं हो सकता। आगे चल कर पुरानी देवमूर्त्तियों के विषय में आप ने फिर कहा -"अब यह सिद्ध हो चुका है कि इन मूर्त्तियों की देह जो कहीं कहीं बिलकुल चौरस देखने में आती है इसका कारण यह नहीं कि प्राचीन शिल्पी पुट्ठे और उभाड़ बनाने में असमर्थ थे। हाथ और पैर बनाने में उन्होंने अपनी इस सामर्थ्य का पूरा परिचय दिया है। अंगों और अंवयवों की अस्वाभाविकता धार्मिक कारणों से है न कि अनाड़ीपन के कारण।"

भारतीय चित्रकारी के विषय में आपने कहा कि इसके पुराने नमूने जो ईसा से दो शताब्दी पहिले के हैं ओड़िसा की गुफाओं में हैं। अजन्ता गुफा की चित्रावली भी ध्यान देने योग्य है जो ६४२ ई० तक की है। इसके उपरान्त पारसी कारीगरी का उल्लेख करते हुए आप ने कहा कि वह भारतवर्ष में जनप्रिय न हुई। मुसलमान बादशाहों और नवाबों ही के शौक़ की चीज़ रही। सर क्लार्क के ये वाक्य आपको बहुत पसन्द आए कि "हिन्दुस्तानी कारीगरी का आगम व्यर्थ की प्रशंसा से मारा गया।"

व्याख्यान के पीछे डाक्टर कुमारस्वामी ने एक बंगाली चित्रकार की कारीगरी के नमूने दिखलाए और सभा समाप्त हुई।

—:o:—

एक नया आन्दोलन।

उपर्युक्त शीर्षक के अन्तर्गत "ईस्ट एँड वेस्ट" के सम्पादक ने एकलिपि और एकभाषा पर (दिसम्बर १९०९) अपने कुछ विचार प्रगट किए हैं जिनका सारांश नीचे दिया जाता है।

एक भाषा और एक लिपि का होना स्वप्न के समान नहीं है। बाबुल का धरहरा फिर से उठाना असंभव क्यों समझा जाय? भाषा में जो परस्पर सहानुभूति उत्पन्न करने की शक्ति है उसे कोई अस्वीकार नहीं कर सकता। एक भाषा रहने से कोई व्यक्ति अपनी आत्मा का प्रतिविम्ब दूसरे में देख सकता है। कोई विरोध आ पड़ने पर भी मेल की आशा बनी रहती है। यद्यपि अंग्रेज़ और अमेरिकन अलग होगए हैं पर भाषा के कारण उनमें बहुत कुछ आत्मीयता बनी हुई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत काल तक संस्कृत भाषा भारतवर्ष के भिन्न भिन्न भागों को एक किए रही। विल्सन ने ठीक ही कहा है—"इस विस्तृत देश के हिन्दुओं को हम संस्कृत ही के सहारे अच्छी तरह पहिचान सकते हैं। उनके उद्योगों, कर्म्मों, धारणाओं तथा त्रुटियों का उद्गमस्थान संस्कृत है"। संस्कृत किसी न किसी समय कहीं पर ठीक उसी तरह अवश्य बोली जाती रही होगी जैसे अंग्रेज़ी लंडन में और मराठी पूना में। यह भी सम्भव है कि जिस समय वह बोली जाती रही होगी उसका विस्तार भारत में बहुत दूर तक न रहा हो। पर पीछे से उसके साहित्य ने, उसके साहित्य की भाषा ने, देश के प्रत्येक विभाग के विद्वानों को एक दूसरे से मिलकर बातचीत करने योग्य बना दिया। अतः कुछ लोगों ने संस्कृत को भारत की राष्ट्र भाषा बनाने का परामर्श दिया है। पर उसे ग्रहण करने में दो बाधाएं हैं। एक तो यह कि वह कहीं बोली नहीं जाती, दूसरी यह कि उसका व्याकरण बड़ा विकट और विस्तृत है। इस दूसरी बाधा को दूर करने के लिए किसी २ ने संस्कृत व्याकरण को सुगम और सरल करने की व्यवस्था दी है। पर कहने की आवश्यकता नहीं कि यदि संस्कृत का व्याकरण परिवर्त्तित करके सरल कर दिया जायगा तो वह संस्कृत ही न रह जायगी। वह एक नई भाषा हो जायगी जिसे बिना किसी साहित्य के अपने लिए राह निकालनी पड़ेगी।

अब रही अंग्रेज़ी। किसी देशभाषा की अपेक्षा अंग्रेज़ी का सीखना कठिन ही है। प्रत्येक श्रेणी के भारतवासी को उसे अच्छी तरह सीखने भर का समय मिलना एक अनहोनी बात समझिए। हिन्दी उन स्थानों में भी अच्छी तरह समझ ली जाती है जहां के लोग उसके बोलने में अभ्यस्त नहीं हैं। महाराष्ट्र लोग तो उसे समझते ही हैं पर मद्रास प्रान्त तक में संस्कृत-शब्दों के प्रभाव से वह थोड़ी बहुत समझी जा सकती है। हिन्दी का व्याकरण भी सीधा है अतः उसका सीखना मद्रासियों को भी अंग्रेज़ी से सुगम ही पड़ेगा। यह सब कुछ सही; पर अब प्रश्न यह है कि उसके सीखने की परवा कौन करेगा? किसको पड़ी है कि बैठे बिठाए एक और भाषा सीखे? इसका उत्तर हिन्दी के पक्षपाती लोग यह देते हैं कि भिन्न भिन्न प्रान्तों के अंग्रेज़ी पढ़े लोग जिस प्रकार देश की बातों पर परस्पर विचार प्रगट करते हैं उसी प्रकार अंग्रेज़ी न जानने वाले लोग भी करना चाहेंगे, दूसरे प्रान्त के निवासियों के साथ विचार परिवर्त्तन की आकांक्षा रखनेवालों की संख्या अब दिन दिन बढ़ेगी।

यह एकभाषा विषयक आन्दोलन किसी उद्वेग से नहीं उत्पन्न हुआ है वरन् सोच समझ कर चलाया गया है। इस की सफलता के लिए सलाह दी गई है कि समस्त भारतवर्ष के विद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जाय। इससे शिक्षा का व्यय अवश्य बढ़ेगा। इस व्यय को कुछ कम करने का एक उपाय यह हो सकता है कि भिन्न भिन्न प्रान्तों से अध्यापक लोग हिन्दी सीखने के लिए काशी या किसी और स्थान में भेजे जायँ। पर यह तो मानना ही होगा कि शिक्षा का खर्च बढ़ेगा। संस्कृत आदि भाषाओं के लिए जिस प्रकार व्यय करना पड़ता है उसी प्रकार हिन्दी के लिए भी करना पड़ेगा।

यह सब क्यों? इस लिए कि जिसमें भारतवर्ष के भिन्न भिन्न प्रान्तों के निवासीगण अपनी भलाई बुराई के सम्बन्ध में परस्पर बातचीत कर सकें। इस आन्दोलन की उपयोगिता और भावी सफलता का अन्दाज इस परीक्षा से हो सकता है। प्रत्येक बड़े नगर में हिन्दी के दरजे खोले जायँ। यदि देखा जाय कि लोग अपनी खुशी से बराबर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनमें आरहे हैं तो यह समझना चाहिए कि लोगों के हृदय में हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने की इच्छा जागृत होगई है। नहीं तो इस आन्दोलन को बालू पर की भीत ही समझना चाहिए।

प्रेरित पत्र।

श्रीयुत सम्पादक नागरीप्रचारिणी प्रत्रिका काशी महोदय,।

आपकी पत्रिका की ता० १५ जनवरी सन् १९१० की संख्या में जो प्रबन्धकारिणी सभा का कार्यविवरण पृष्ठ ५८ पर छपा है उसमें सरल भाषा में वेदों का अनुवाद छपाने के विषय में पं० गोकुल प्रसाद पाठक के एक पत्र का उल्लेख है। इसी प्रसङ्ग में मैं; आप की प्रसिद्ध पत्रिका के द्वारा हिन्दी के प्रेमियों का ध्यान ऋग्वेद के एक बहुत अच्छे अनुवाद की ओर खींचता हूं।

मुलतान के राय शिवनाथ साहब आहिताग्नि ऋग्वेद संहिता का एक अति उत्तम संस्करण निकाल रहे हैं। इसे निकालते प्रायः तीन वर्ष से ऊपर होते आये। पहिले महीने महीने एक संख्या निकलती थी, अब दो महीने में निकलती है। इसमें पहिले प्रत्येक मंत्र का देवता और छन्द लिखकर मन्त्र छपा रहता है। उस के नीचे पद पाठ, प्रत्येक शब्द का अर्थ और व्याकरण की विशेषताएं रहती हैं। इसके पीछे सरल संस्कृत में अर्थ देकर सरल हिन्दी में अनुवाद और व्याख्यान, तथा कठिन विषयों पर टिप्पणियां दी जाती हैं। कर्म, विनियोग, इतिहास और तत्वों का विचार भी यथास्थान रहता है।

अबतक इसके ३८ अङ्क (१६९६पृष्ठ) निकले हैं जिनमें ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के ६६ सूक्तों का व्याख्यान छप चुका है। वार्षिक मूल्य केवल दो रुपये हैं। प्रतिवर्ष इतनी थोड़ी रकम देने से साधारण लोग भी इस भाष्य के ग्राहक बहुत अच्छी तरह बन सकते हैं।

मेरे मतमें ऐसा सरल और विषद भाषानुवाद कोई नहीं हुआ। इसमें किसी सम्प्रदाय वा समाज की खींचखांच नहीं है; केवल शब्दार्थ और तत्त्वार्थ लिखा जाता है। हिन्दी के प्रेमियों को, संस्कृत के अनुरागियों को, हिन्दू धर्म्म के अनुयायियों को और भारतवर्ष के प्राचीन गौरव के भावुकों को आहिताग्नि शिवनाथ जी के इस पुरुषार्थ में सहायता करनी चाहिए। शङ्कर पण्डित के मराठी 'वेदार्थ यत्न" और रमेशचन्द्रदत्त के बंगला ऋग्वेदानुवाद के जोड़ का यह कार्य है। भेद इतना है कि इसके साथ ही पदपदार्थ संस्कृत में भी हैं जिससे इसकी उपयोगिता कई गुनी बढ़ गई है। यदि सर्वसाधारण सहायता करें और उत्तेजना दें तो यह "वैदिक जीवन" इतने धीरे न छपे।

इसमें सन्देह नहीं कि आहिताग्नि शिवनाथ जी और उनके सहायक पण्डित न कि केवल हिन्दी भाषा के एक बड़े अभाव को पूरा कर रहे हैं प्रत्युत हिन्दी भाषा के गौरव को ऊंचा कर रहे हैं। इसके लिये सबको उनका कृतज्ञ होना चाहिए और कृतज्ञता का इससे अच्छा और स्वरूप नहीं हो सकता कि सभी यथाशक्ति इसके ग्राहक बनें जिसमें उनको स्वयं भी स्वाध्याय का पुण्य हो और यह संस्करण भी प्रकाशित होता चला जाय।

पत्रव्यवहार श्रोत्रायन वाली कोठी, मुलतान, पंजाब, के पते से करना चाहिए।

श्रीचन्द्रधर शर्म्मा
अजमेर।

प्रबन्धकारिणी सभा।

सोमवार ता० २४ जनवरी १९१० सन्ध्या के ५ बजे

स्थान सभाभवन।

उपस्थित।

महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी, रेवरेण्ड ई० ग्रीव्ज, बाबू गौरीशङ्कर प्रसाद बी० ए० एल० एल० बी०, पं० कृष्णाराम मेहता बी० ए० एल एल बी०, पण्डित माधव प्रसाद पाठक, बाबू गोपाल दास।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१) गत अधिवेशन ता० १३ दिम्बर १९०९ का कार्य विवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ ।

(२) आज के अधिवेशन के कार्य के सम्बन्ध में बाबू श्याम सुन्दरदास बी० ए०, पंडित श्यामविहारी मिश्र एम० ए० और गोस्वामी रामपुरी की सम्मतियां उपस्थित की गईं ।

(३) पण्डित रामनारायण मिश्र का २८ दिसम्बर का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्हों ने प्रस्ताव किया था कि (१) नागरी प्रचारिणी पत्रिका में एक लेख छपा है जिसमें एकलिपि-विस्तार-परिषद पर अनेक आक्षेप हैं और सम्पादक महाशय ने भी उसी के अनुकूल अपनी सम्मति प्रगट की है अतः यदि यह सम्मति सभा की न हो तो ऐसा स्पष्ट लिख देना चाहिए (२) ग्रन्थमाला को भांति लेखमाला के लेख भी जुदे पुस्तकाकार तैयार किए जायँ ।

निश्चय हुआ कि पत्रिका के सम्पादक की सम्मति को सभा की सम्मति नहीं समझना चाहिए (२) लेखमाला में छपे हुए लेख जुदे पुस्तकाकार भी बँधवाए जाने चाहिए ।

(४) पारितोषिक के लिये आए हुए दो सज्जनों के व्याकरण उपस्थित किये गए और साथ ही पण्डित माधव प्रसाद पाठक का १० जनवरी का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्हों ने इसकी अवधि ३१ मार्च १९१० तक बढ़ाए जाने के लिये प्रस्ताव किया था।

निश्चय हुआ कि इसकी अवधि ३१ मार्च १९१० तक बढ़ा दी जाय ।

(५) इलाहाबाद युनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार का १३ दिसम्बर का पत्र उक्त युनिवर्सिटी के वाइस चान्सेलर की २० नवम्बर १९०९की वक्तृता के साथ उपस्थित किया गया जिसमें लिखा था कि उच्च कक्षाओं में देशी भाषाओं की पढ़ाई की ओर फेकल्टी आफ आर्ट्स उचित ध्यान दे रही है ।

निश्चय हुआ कि युनिवर्सिटी की मार्च की मीटिङ्ग में यदि इस विषय में कुछ निश्चित न हो तो युनिवर्सिटी का ध्यान इस ओर पुनः आकर्षित किया जाय ।

(६) बाबू माधव प्रसाद की यह सूचना उपस्थित की गई कि वनिताविनोद की १३१ प्रतियां अब उनके पास शेष रह गई है अतः सभा इसके दूसरे संस्करण का प्रबन्ध कर सकती है ।

निश्चय हुआ कि बाबू माधवप्रसाद से पूछा जाय कि वे इसके दूसरे संस्करण की कितनी प्रतियां किन शर्तों पर खरीद सकते हैं ।

(७) कोश कमेटी के ये प्रस्ताव उपस्थित किए गए कि (१) जो लोग ५०) रु० वा इससे अधिक धन से हिन्दी कोश के लिये सभा की सहायता करें उन्हें इसके लिये हिन्दी कोश की एक प्रति विना मूल्य दी जाय और उनका नाम कोश के साथ छापा जाय (२) जो लोग २५०) वा इससे अधिक धन दिलाने में सभा की सहायता करें उन्हें कोश की एक प्रति दी जाय और उनका नाम सहायक की भांति कोश के साथ छापा जाय ।

निश्चय हुआ कि इस विषय को सभा एक बार निश्चित कर चुकी है अतः अब इस सम्बन्ध में अन्य महाशय भी जो प्रस्ताव करना चाहें उन सब के साथ यह सभा में उपस्थित किया जाय ।

(८) जड़ावर के लिये पनारू चौकीदार का प्रार्थना पत्र उपस्थित किया गया ।

निश्चय हुआ कि जड़ावर के लिये उसे २) रु० दिया जाय ।

(९) सभा द्वारा प्रकाशित होने के लिए निम्न लिखित लेख, ग्रन्थमाला तथा लेख माला के सम्पादक की सम्मति के सहित उपस्थित किए गए अर्थात् (क) डाक्टर भांडारकर का Guhilots पर अंग्रेजी लेख (ख) चित्रावली नामक प्राचीन ग्रंथ (ग) पं० गणपतराम जानकीराम दुबे का "शेख़ मुहम्मद बाबा" शीर्षक लेख ।

निश्चय हुआ कि (क) पण्डित कृष्णाराम मेहता से इसके हिन्दी अनुवाद करने के लिए प्रार्थना की जाय और उनका अनुवाद मिलने पर यह विषय सभा में विचारार्थ उपस्थित किया जाय (ख) यह ग्रन्थमाला में छापा जाय और (ग) यह लेखमाला में छापा जाय ।

(१०) बाबू जगन्मोहन वर्म्मा के पत्र के सहित पण्डित माधव प्रसाद पाठक का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि "आर्ष प्राकृत व्याकरण" शीर्षक लेख जो लेख माला के दूसरे अंक में बहुत अशुद्ध छपा है पुनः छपवाया जाय अथवा उसका शुद्धिपत्र छाप दिया जाय ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निश्चय हुआ कि उसका शुद्धिपत्र छपवा दिया जाय और सम्पादक से प्रार्थना की जाय वे ग्रन्थकर्ता से यह शुद्धिपत्र तैयार करावें।

(११) कोश कमेटी का यह निश्चय सूचनार्थ उपस्थित किया गया कि उक्त विभाग के बिल का रुपया कोश के सम्पादक और उस विभाग के मंत्री दोनों के हस्ताक्षर अथवा सम्पादक की सम्मति से केवल मंत्री कोश विभाग के हस्ताक्षर पर दिया जाया करे।

(१२) निश्चय हुआ कि रेडिचो पदक अथवा राधा कृष्ण दास पदक के लिये कोई लेख अब तक नहीं आया अतः इनके लिये जो विषय गत वर्ष नियत थे वे ही इस वर्ष भी रक्खे जांय।

(१३) बाबू श्यामसुन्दर दास का यह नोट उपस्थित किया गया कि पण्डित रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी कोश के सम्पादन के कार्य से काश्मीर जांयगे अतः पत्रिका के सम्पादन का उपयुक्त प्रबन्ध होना चाहिए। साथ ही मंत्री ने सूचना दी कि शुक्ल जी काश्मीर से भी पत्रिका सम्पादन करने के लिये तैयार हैं।

निश्चय हुआ कि पण्डित रामचन्द्र शुक्ल ही इस वर्ष पत्रिका के सम्पादक रहें।

(१४) बाबू मन्नूलाल गुप्त का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि लेख माला का वार्षिक मूल्य केवल १) रु० रक्खा जाय और ४) रु० वार्षिक चन्दा देने वाले सभासदों को पत्रिका ग्रन्थ माला और लेखमाला तीनों दी जांय।

निश्चय हुआ कि सभा इस विषय में जो कुछ निश्चित कर चुकी है उसमें अभी परिवर्तन करने की आवश्यकता नहीं समझती।

(१५) कार्माइकल लाइब्रेरी का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उस ने सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की एक एक प्रति बिना मूल्य मांगी थी।

निश्चय हुआ कि सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की एक एक प्रति उसे बिना मूल्य दी जाय।

(१६) पण्डित रामचन्द्र शुक्ल का ११ जनवरी का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि वे "लाइट आफ एशिया" नामक पुस्तक का अनुवाद अब तक समाप्त नहीं कर सके हैं इस कारण इसके लिये उन्हें छ मास का समय और दिया जाय।

निश्चय हुआ कि यह स्वीकार किया जाय।

(१७) बाबू श्यामसुन्दर दास का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि सभा के ग्रन्थों में छापे की बहुत अशुद्धियां होती हैं अतः इसका कुछ प्रबन्ध करना आवश्यक है।

निश्चय हुआ कि इसके प्रबन्ध के लिए पत्रिका, ग्रन्थमाला और लेखमाला के सम्पादकों से सम्मति मांगी जाय।

(१८) कोश कमेटी का २२ जनवरी १९१० का निम्न लिखित निश्चय नं० २ सूचनार्थ उपस्थित किया गया।

"तारीख १७ जनवरी १९१० का भारतजीवन, ता० १५ जनवरी का भारतेन्दु और ता० २१ जनवरी का अभ्युदय उपस्थित किया गया जिनमें कोश विभाग के मंत्री पण्डित केशव देव शास्त्री के विरुद्ध लेख छपे थे। निश्चय हुआ कि इन लेखों में पण्डित केशवदेव शास्त्री के विरुद्ध जो बातें छपी हैं वे व्यर्थ और निर्मूल हैं।"

निश्चय हुआ कि यह सभा उक्त निश्चय की पुष्टि करती है और यह भी प्रगट कर देना चाहती है कि पण्डित केशव देव शास्त्री ने सभा की सेवा अनेक प्रकार से उत्तमता तथा कर्तव्यपरायणता के साथ की है। उन पर जो कटाक्ष समाचारपत्रों में किए गए हैं वे व्यर्थ हैं और उनके लिये यह सभा दुःख प्रकाश करती है।

(१९) पण्डित कृष्णाराम मेहता के प्रस्ताव पर निश्चय हुआ कि सभा के मंत्री कोश प्रबन्धकर्तृ कमेटी के सभासद नियत किये जांय और उनको उस कमेटी में वे ही अधिकार हों जो उसके अन्य सभासदों को हैं।

(२०) महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी की "राम कहानी" नामक पुस्तक के विषय में पंडित श्याम बिहारी मिश्र एम० ए०, बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए० तथा पण्डित रामनारायण मिश्र बी० ए० की सम्मतियां उपस्थित की गईं।

निश्चय हुआ कि इनकी नकल महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी के पास भेजी जाय और उनसे प्रार्थना की जाय कि उन सम्मतियों पर ध्यान रखते हुए वे ग्रन्थ में आवश्यक परिवर्तन करदें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२१) गोस्वामी रामपुरी का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि सभा ब्रह्मचर्याश्रम पर अच्छे लेख लिख वाने तथा उन्हें पत्रिका में छपवाने का प्रबन्ध करे।

निश्चय हुआ कि यदि गोस्वामी जी इस विषय पर कोई अच्छा लेख लिखवाने का प्रबन्ध करें तो सभा उसके प्रकाशित करने के सम्बन्ध में विचार करेगी।

(२२) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

साधारण अधिवेशन ।

शनिवार ता० २९ जनवरी १९१० संध्या के ५॥ बजे

स्थान—सभाभवन ।

(१) पण्डित रामचन्द्र शुक्ल के प्रस्ताव तथा पण्डित बृजभूषण ओझा के अनुमोदन पर बाबू जुगुलकिशोर सभापति चुने गए।

(२) गत अधिवेशन (ता० २५ दिसम्बर १९०९) का कार्य विवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ।

(३) प्रबन्धकारिणी सभा का ता० १३ दिसम्बर १९०९ का कार्यविवरण सूचनार्थ उपस्थित किया गया।

(४) निम्नलिखित महाशय नवीन सभासद चुने गए।

(१) बाबू चंडी प्रसाद एकाउण्टेण्ट डिस्ट्रिक्ट बोर्ड बलिया १॥) (२) बाबू श्रीरामलाल वकील। बलिया ३) (३) बाबू ब्रजविहारी लाल, वकील। बलिया ३) (४) बा० महादेवप्रसाद, वकील। बलिया ३) (५) पण्डित राम दहिन पांडे, वकील। बलिया ३) (६) बा० जमुना प्रसाद बेंकर और ज़मीदार बलिया ५) (७) बाबू रघुनाथ प्रसाद सिंह नायबतहसीलदार प्लेग। बलिया १॥) (८) बाबू मौजीराम असिस्टेंट सर्जन आन प्लेग डयूटी। बलिया १॥) (९) बाबू सीताराम राय, भटवाधक पो० सिकन्दर पुर जि० बलिया ३)(१०) बाबू सरजू प्रसाद सिंह जिलेदार, कोर्ट छावनी रेवती पो० रेवती जिला, बलिया ३) (११) बाबू ललता प्रसाद, हेडक्लार्क दफ्तर पुलिस। बलिया १॥) (१२) बाबू धनेश्वरराय म्युनिसिपल आफ़िस। बलिया १॥) (१३) बाबू बलदेव सिंह, सिविलसर्जन। बलिया ३) (१४) बाबू लाल विहारी सिंह ज़िलेदार, करनई पो० फेफना जिला बलिया ३) (१५) बाबू नवाबलाल वकील। बलिया ५) (१६) बाबू हरवधन लाल एडिशनल सब जज, सहारन पुर ३) (१७) पण्डित जगन्नाथ शरण, रतनपुरा छपरा ३) (१८) बाबू सच्चिदानन्द प्रसाद C/o मुं० राम कृष्ण लाल वकील मुंसफ़ी रसड़ा जि० बलिया १॥) (१९) पण्डित जगदेव मिश्र, इन्सपेक्टर ट्रेनिङ्ग क्लास, रसड़ा १॥) (२०) बाबू बांकेसिंह नायब मुदर्रिस तहसीली स्कूल, बांसडीह जि० बलिया १॥, (२१) बाबू शिवपूजन सिंह हेड मास्टर टौन स्कूल रसड़ा जि० बलिया ३) (२२) पं० पुरुषोत्तम नारायण नन्दे, पुरानी बजार, मुजफ्फरपुर १॥) (२३) बाबू वैद्यनाथप्रसाद सिंह मुजफ्फरपुर ३) (२४) राय बेनीप्रसाद खत्री पुरानी बजार मुजफ्फरपुर १॥) (२५) पण्डित विन्ध्येश्वरी दत्त शुक्ल वकील रतनपुरा छपरा ३) (२६) बाबू लालबहादुर वकील, छपरा ५) (२७) बाबू अशर्फी लाल बी० ए०बी०एस० सी० सब डिप्टी इन्सपेक्टर आफ स्कूल्स बरेली १॥) (२८) कुं० रामप्रताप सिंह बी० ए० बी० एस० सी० वकील। बरेली १॥) (२९) बाबू बलदेव प्रसाद वकील। बरेली १॥) (३०) बाबू कालिका प्रसाद बी० ए० डिप्टी इन्सपेक्टर आफ स्कूल्स। बदाऊं १॥)(३१) बाबू केशवदास अग्रवाल सेवकराम सदावर्ती की गली ठठेरी बाजार काशी ३)(३२) महाशय विहारी लाल चटिया पो० देवरनियां जि० बरेली १॥)

(५) सभासद होने के लिये ३० महाशयों के नवीन आवेदन पत्र सूचनार्थ उपस्थित किये गए।

(६) निम्न लिखित पुस्तकें धन्यवाद पूर्वक स्वीकृत हुईं—

पण्डित नारायणपति त्रिपाठी औरंगाबाद काशी (१) स्तोत्र पञ्चरत्न (२) काशी यात्रा। पंडित रामनारायण मिश्र बी० ए० काशी (१) हल्दीघाट का युद्ध। स्वामी सतगुरु प्रसाद शरण, श्री गुरु राम जी पुस्तकालय गोंड़ा (१) सद्गुरु चरित्र सुमिरनी। पंडित शिवशङ्कर भट्ट हेडमास्टर मिडिल स्कूल कौड़िया (१) भक्त चरितामृत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाबू सीता राम वर्म्मा मानमन्दिर काशी (१) अवलाहितकारी । मुं० महम्मद खां बी० ए० हेडमास्टर गवर्न्मेंट हाई स्कूल होशंगाबाद (१) अङ्क गणित (२) शिक्षा पद्धत्ति । ठाकुर जगन्नाथ सिंह वर्म्मा चन्देल बरखेरवा पो० बघौली ज़ि० हरदोई (१) हिन्दू विवाह और उसके प्रचलित दूषण

संयुक्त प्रदेश की गवर्न्मेंट :-

District Gazetter of Banda, (2) Imperial Library Catalogue Part II, (3) Annual Progress Report of the Archæological surveyor, Northern Circle for the year ending 31st March 1909. (4) General Report on public Instruction in the United Provinces of Agra & Oudh for the year ending 31st March 1909 पण्डित गौरचरण गोस्वामी वृन्दावन (१) चोरी है कि दग़ाबाजी । एशियाटिक सोसायटी आफ बंगाल, कलकत्ता (1) Journal and Proceedings of the Society Vol IV Nos 10 and 11 Vol V No 1 (2) Indian Antiquary for January 1910

परिवर्तन में प्राप्त (१) कौशल किशोर दूसरा भाग, (२) दो नकाब पोश चौथा भाग (३) मलका चांद बीबी तीसरा भाग ।

(७) प्रवन्धकारिणी सभा के प्रस्ताव पर निश्चय हुआ कि (क) सभा के सोलहवें वार्षिक विवरण में विभक्ति के सम्बन्ध में पण्डित सखाराम गणेश देउस्कर पर जो दोषारोपण किया गया है उस पर यह सभा दुःख प्रगट करती है (ख) सभासदों के आवेदनपत्र के फार्म में से "मैं इन सभ्य महाशय को भली भांति जानता हूं और" ये शब्द निकाल दिये जांय और "मेरी" के स्थान पर "हमारी" बना दिया जाय । साथ ही इस सम्बन्ध में एक नोट इस विषय का दिया जाय कि "जो महाशय किसी सभासद से प्रस्ताव तथा अनुमोदन न करा सकते हों वे अपना पूरा पता, पद इत्यादि लिख कर किसी अन्य प्रतिष्ठित महाशय से परिचय दिला सकते हैं । इस पर सभा के अन्य स्थानिक सभासद विचार करके आवेदन पत्र पर प्रस्ताव तथा अनुमोदन कर सकेंगे ।"

(८) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई ।

सुरेन्द्रनारायण शर्म्मा ।

उपमंत्री ।

आय व्यय का हिसाब ।

(जनवरी १९१०)

आय	धन की संख्या		
गत मास की बचत	३१८१	८	८
सभासदों का चन्दा	८०	१	०
पुस्तकालय का चन्दा	४६	१२	०
पुस्तकों की बिक्री	१२०	१२	६
हिन्दी कोश	१६७	०	२
पृथ्वीराजरासो की बिक्री	१	८	०
नागरी प्रचार	१	४	०
फुटकर	४	४	०
जोड़	३६२३	३	५

व्यय	धन की संख्या		
आफ़िस के कार्यकर्ताओं का वेतन	६६	१३	६
डांक व्यय	१७	१०	३
पुस्तकालय	१८	१०	३
हिंदी पुस्तकों की खोज	४५	३	०
फुटकर व्यय	१०	३	८
हिन्दी कोश	३१७	२	७
नागरी प्रचार	१३	४	०
ब्याज	२७	८	०
स्थायी कोश	६०	०	०
	५७७	७	४
बचत	३०४५	१२	१
जोड़	३६२३	३	५

रोकड़ सभा	१५२-)१०
बनारस बंक (कोश विभाग)	३८७०॥-)५
	४०२२॥≡)३
बंक का देना	८७६॥≡)२
	३०४५॥)१

देना ६०००)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभा के पारितोषिकों की सूची ।

(१) इस वर्ष के सभा के नियमित दो मेडलों के लिये निम्न लिखित विषय नियत हैं । ये लेख ३१ दिसम्बर १९०९ तक सभा में आजाने चाहिएं ।

वैज्ञानिक विषय ।

प्राकृतिक अवस्था का उत्तर भारत के सामाजिक जीवन पर प्रभाव ।

सधारण (विद्या) विषय ।

अकबर के पूर्व हिन्दी की अवस्था ।

(२)डाक्टर छन्नूलाल मेमोरियल मेडल-यह सोने का मेडल उस व्यक्ति को दिया जायगा जिसका लेख "स्त्रियों के रोग" पर सब से उत्तम होगा । लेख सरल हिन्दी में होना चाहिए और सभा के पास २८ फरवरी १९१० तक आजाना चाहिए ।

(३) ५००) का पुरस्कार—सभा द्वारा निश्चित अनुक्रमणिका के आधार पर जो हिन्दी का सब से उत्तम व्याकरण लिखेगा उसे यह पुरस्कार दिया जायगा । व्याकरण ३१ दिसम्बर १९०९ तक सभा के पास आजाना चाहिए । यदि कई व्याकरणों के भिन्न भिन्न अंश उत्तम समझे जांयगे तो यह पुरस्कार उन सब लोगों में बाँट दिया जायगा और उन ग्रन्थों को घटाने बढ़ाने आदि का इस सभा को पूरा अधिकार होगा । सभा द्वारा निश्चित अनुक्रमणिका दो पैसे का टिकट डाकव्यय के लिये भेजने पर सभा के मंत्री से मिल सकती है ।

ममीरे का सुरमा ।

एसिष्टण्ट केमिकल एकजामिनर साहब गवरमेण्ट पञ्जाब द्वारा परीक्षित व प्रमाणित हो चुका है । माननीय अंग्रेजी मेडिकल कालिज के अफ़सर डाक्टरों राजों महाराजों विलायत की युनिवर्सिटी से सनद पाए डाक्टरों ने परीक्षा करके इस अञ्जन की सचाई प्रकट की है और बताया है कि नेत्र रोगों के लिये यह सुरमा अकसीर गुण रखता है । दृष्टि की कमजोरी, आंखों का अन्धशून्य जाला, पड़वाल, गुबार, फुंसी, आंखों से पानी का बहना, आंखों की लाली मोतियाबिन्द की प्रथम अवस्था, खाज, खुजली इत्यादि ।

माननीय डाक्टर और हकीम आंख के रोगियों को जो उनके पास आते हैं यह सुरमा देते हैं । चार दिन के लगाने से आंखों की दृष्टि ठीक हो जाती है । बालक से लेकर बूढ़े तक के लिये यह अञ्जन एक समान लाभदायक है । मूल्य इस कारण कम रक्खा गया है कि धनाढ्य और दीन दोनों इससे लाभ उठा सकें । मूल्य एक तोला का जो एक वर्ष के लिये बहुत है २) दो रुपया है । ममीरे का सच्चा सुरमा जो बहुत उत्तम ३) तीन रुपये तोला । एक खालिस ममीरा एक माशा २०) है । डाक का खर्चा ग्राहक के जिम्मे । पत्र भेजने के समय अखबार का नाम लिखो । पता-प्रोफेसर मायासिंह अहलवालिया-मुकाम-बटाला जिला गुरदासपुर-पञ्जाब ।

संतबानी

अर्थात
प्राचीन महात्माओं
की दुर्लभ बानी का
जो गुप्त होती जाती हैं जीर्णोद्धार
मय उनके जीवन-चरित्र के

बेलवेडियर प्रेस,
इलाहाबाद से
इश्तिहार मँगा
कर देखिये ।

कबीर सा०, तुलसी सा०, पल्टू सा०,
जगजीवन सा०, रैदासजी, चरनदास जी,
दरिया सा०, दयाबाई, सहजोबाई, इत्यादि ।

पुस्तकमाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Printed by Mahdo Prasad at the Bharat Press, Benares, forNagri Prachorini Sabha Kashi Publisher.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक
रामचन्द्र शुक्ल ।

Registered No A 414

नागरीप्रचारिणी पत्रिका ।

[मासिक पत्रिका]

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल । बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ॥
करहु विलंब न भ्रात अब, उठहु मिटावहु सूल । निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जु सब को मूल ॥
विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार । सब देसन सों लै करहु, भाषा मांहि प्रचार ॥
प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि यत्न । राज काज दर्बार में, फैलावहु यह रत्न ॥ हरिश्चन्द्र

भारत प्रेस काशी में बाबू माधो प्रसाद के प्रबन्ध से छप कर नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित ।

भाग १४ | १५ मार्च १९१० । | संख्या ७

निवेदन ।

पत्रिका ने वर्त्तमान रूप धारण करते समय यह आशा की थी कि हिन्दी के विज्ञ लेखक और हितैषीगण अपने लेखों और प्रस्तावों से बराबर उसके उद्देश्य की पूर्त्ति में सहायता करते रहेंगे । पर खेद के साथ कहना पड़ता है कि दो तीन सज्जनों को छोड़ और किसी ने इस ओर ध्यान न दिया । यह तो प्रत्यक्ष ही है कि इस समय हिन्दी के सम्बन्ध में जागृति उत्पन्न करने की बहुत बड़ी आवश्यकता है । हमें ऐसे ऐसे उपायों को ढूँढ़ते रहना चाहिए जिनसे हिन्दी की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित हो । अब हम फिर आशा करते हैं कि हमारे हिन्दीप्रेमी भाई हिन्दी के प्रचार और उन्नति के सम्बन्ध में अच्छे अच्छे लेख और प्रस्ताव भेज कर इस पत्रिका की उपयोगिता को बढ़ाते रहेंगे ।

सूचना और सम्मति ।

बंगीय-साहित्य-सम्मेलन जो फ़रवरी में भागलपुर में हुआ था उसमें वैज्ञानिक कोश, ऐतिहासिक खोज आदि कई उपयोगी विषयों पर विचार हुआ था । स्वर्गवासी श्रीयुक्त रमेशचन्द्र दत्त महोदय के नाम पर एक साहित्यभवन खोलने का प्रस्ताव किया गया तथा विज्ञान और कलाकौशल की शिक्षा के लिए एक विद्यालय का स्थापन आवश्यक ठहराया गया था । विगत संख्या में हमने इसी साहित्य सम्मेलन की सूचना देते हुए हिन्दी साहित्य सम्मेलन करने की चर्चा छेड़ी थी । अभ्युदय में भी इसी अभिप्राय का नोट एक महाशय ने लिखा था जिसमें उन्होंने सम्मति दी थी कि यह हिन्दी सम्मेलन प्राविंशल कानफ़रेन्स के अवसर पर काशी में कर डाला जाय और उसके लिए नागरीप्रचारिणी सभा उद्योग करे । बात तो अच्छी थी । परंतु व्यय कहां से आता ।

इलाहाबाद से २४ मील दूर जसरा नामक एक स्थान है । उसीके पास बिहटा नामक ग्राम है । इसी बिहटा में आज कई महीने से सरकारी पुरातत्व विभाग का काम लगा हुआ है । प्राचीन बौद्धों के बहुत से चिन्ह वहां पाए गए हैं । पुराने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिक्के, पत्थर की मूर्त्तियां, स्फटिक की माला आदि कितनी ही चीजें मिली हैं। ऐसा अनुमान किया गया है कि मौर्यवंश तथा उसके परवर्त्ती गुप्त वंश के राजत्व काल तक यहां एक समृद्ध नगर था जो कि अब काल पाकर मिट्टी की तह में मिल गया है।

पायनियर में एक महाशय ने अपने एक लेख में यह दिखलाया है कि औरंगजेब के समय में जाटों ने महाप्रतापी अकबर की ठठरी को उसकी कब्र से निकाल कर जला डाला था। इस का उल्लेख वेनिस निवासी निकोलो मानुकी नामक एक व्यक्ति ने, जो औरंगजेब के समय में यहां बहुत दिनों तक रहा, इस प्रकार किया है:-"बहुत से जाट इकठ्ठे होकर महाविजयी अकबर की क़ब्र के पास पहुंचे। उसके जीते जी तो वे उसका कुछ न कर सके, पर मरने पर उन्होंने उसकी कब्र से अपना बदला लिया। उन्होंने तांबे के फाटक को तोड़ डाला, जवाहिरात तथा चांदी सोने के पत्तरों को लूट लिया। इसके उपरान्त अकबर की ठठरी को कब्र में से घसीट कर उन्होंने उसे आग में डाल कर जला डाला।"—(Storia de mogor II 320) पर इस घटना का सन् जो दिया गया है वह बहुत गड़बड़ है। पुस्तक का अंश जो ऊपर उद्धृत है उसमें तो सन १६९१ दिया है पर उसी पुस्तक में एक दूसरे स्थान पर लिखा गया है कि "जब औरंगजेब शिवा जी से लड़ रहा था उस समय जाटों ने ऐसा किया"। शिवा जी की मृत्यु सन १६८१ में हो चुकी थी। सम्भव है कि समय उतारने में कुछ भूल हो गई हो और घटना सत्य हो, क्यों कि ऐसी जनश्रुति भी जाटों में प्रचलित है।

सिन्ध के थार परखर जिले में मीरपुरखास एक गाँव है। यहां बौद्धों के बहुत से प्राचीन चिन्ह मिले हैं। मीरपुर गाँव के उत्तर मिट्टी और ईटों के बहुत से ढूह हैं। इन में से बहुत सी ईटों को तो लोग खोदकर उठा ले गए हैं। फ़रवरी के आरम्भ में बम्बई पुरातत्व विभाग के सुपरिंटेंडेंट मि० कज़िंस मीरपुर आए। उन्होंने उन ढूहों को देखते ही समझ लिया कि वे बौद्ध मठों के खँड़हर हैं। इनमें जो सब से बड़ा ढूह था वही पहले खोदा जाने लगा। दस दिन के उपरान्त १३ फ़रवरी को एक मज़दूर का फावड़ा एक मूर्त्ति के सिर पर लगा। आस पास की मिट्टी साफ़ की गई और बुद्ध की एक ध्यानावस्थित प्रतिमा दीवार में बैठाई हुई मिली। मूर्त्ति बड़ी सुन्दर थी, उसके मुख मंडल पर मुस्किराहट झलक रही थी। इसी तरह खोदते हुए बहुत सी प्रतिमाएँ दीवारों में लगी हुई मिलीं। उनके चारों ओर बहुत अच्छा काम बना हुआ था। यह दीवार ५७ फुट लम्बी थी। और जो दीवारें खोद कर निकाली गईं उन में भी इसी तरह का काम बना हुआ मिला। एक २५ फ़ुट गहरा कूआ भी दिखाई पड़ा। अन्त में खोदते खोदते स्तूप के केन्द्र तक लोग पहुंचे जहाँ ईटों की बनी हुई एक ऊँची बेदी मिली। इसके नीचे १५ इंच लम्बे और १ फुट चौड़े घेरे में पत्थर का एक सन्दूक मिला जिसके अग्नि और नैऋत्य कोणों पर मिट्टी के दो छोटे छोटे बरतन रक्खे हुए थे जिनमें बालू भरी थी। पत्थर के ऊपर अन्न, सुवर्ण के टुकड़े, मूंगे की माला तथा चौखूंटे तांबे के सिक्के बिखरे हुए थे। मिट्टी के बरतनों को झाड़ने से उनमें केवल बालू ही बालू निकली। इसके पीछे पत्थर का एक डब्बा उठा कर खोला गया जिस में स्फटिक का एक तीन इंच लम्बा पात्र मिला। इस पात्र का आधा भाग चांदी से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मढ़ा हुआ था। पात्र के चारों ओर जो स्थान खाली था उसमें मूंगे और स्फटिक की माला, मोती के छोटे दाने पड़े हुए थे। एक छोटी सी सोने की अंगूठी भी उनमें थी। स्फटिक का पात्र खोलने पर उसमें और एक छोटा चांदी का डिब्बा सोने के पत्तर से मढ़ा हुआ मिला जिसके चारों ओर भूरे रंग की राख पड़ी हुई थी। इसके भीतर एक पौन इंच लंबी डिबिया निकली। ढक्कन हटाने से इसके भीतर कुछ थोड़ीसी राख और स्फटिक के टुकड़ों के सिवाय और कुछ न मिला। राख की परीक्षा करने पर वह मनुष्य के शव की भस्म सिद्ध हुई। इसी भस्म की प्रतिष्ठा में इतना बड़ा स्तूप उठाया गया था। भस्म अधिक होने के कारण वह डिबिया के बाहर भी चारों ओर रख दी गई थी। मिस्टर कज़िन्स ने इन वस्तुओं को चौथी शताब्दी का अनुमान किया है। मनौती करने वालों के कुछ लेख भी मिट्टी की पट्टियों पर मिले हैं।

—०—

"रेखाक्षर अर्थात् हिन्दी की संक्षेप लेख प्रणाली" विलायत से छपकर आगई है। इसके बनाने वाले श्रीयुक्त श्रीश्चन्द्र बसु और पं० निक्का-मिश्र हैं। इसकी शैली सीधी होने के कारण इसकी सहायता से लोग बहुत शीघ्र शीघ्रलिपि में निपुण हो कर अपना काम निकाल सकते हैं। इसको छपवा कर तैयार कराने में बहुत व्यय पड़ा है। भारतवर्ष के बड़े बड़े प्रेस जब इसे छापने पर उद्यत न हुए तब यह इंगलैंड भेजी गई। आशा है कि संयुक्तप्रान्त, बिहार, मध्यप्रदेश की गवर्न्मेंट इसका प्रचार करेंगी और स्कूलों के अध्यक्ष इसकी शिक्षा का प्रबंध करेंगे। पुस्तक का मूल्य १) रुपया है।

—:o:—

सम्राट् को साप्ताहिक से दैनिक करने की सब तैयारियां हो चुकी हैं। यदि ५०० ग्राहक हो गए तो आगामी चैत्र शुक्ल रामनवमी से वह दैनिक हो जायगा। इसका वार्षिक मूल्य १०) निश्चित किया गया है। सम्पूर्ण हिन्दी से अनुराग रखने वाले लोगों को चाहिये कि वे शीघ्र ग्राहक होने की सूचना उक्त पत्र के मैनेजर म० कु० बाबू क्षत्रपति सिंह जू देव, कालाकांकर के नाम भेज दें। जो महाशय सूचना के साथ २ वार्षिक मूल्य भी भेज देंगे उनको दैनिक "सम्राट्" की पहिली कापी के साथ दो पुस्तकें उपहार में भी दी जायंगी।

—:o:—

उर्दू साहित्य सम्मेलन।

विगत ईस्टर की छुट्टियों में उर्दू भक्तों ने बदाऊं में अपना एक सम्मेलन कर डाला। हैदराबाद सरकार के पूर्व होम सेक्रेटरी मौलवी अज़ीज़ मिरज़ा सभापति के आसन पर सुशोभित हुए थे। मौलवी साहब ने पहिले सम्मेलन करने का कारण बतलाकर फिर उर्दू का इतिहास कह सुनाया और इस बात को अस्वीकार किया कि उर्दू किसी धर्म्म वा जाति विशेष के लोगों की भाषा है। आपकी समझ में वह हिन्दी और मुसलमानों को एक करने वाली शक्ति से उत्पन्न हुई है। मुसलमान लोग उसे उर्दू कह सकते हैं और हिन्दू लोग हिन्दुस्तानी (हिन्दू लोग तो नहीं, हां अंगरेज़ लोग अलबत्ता उसे इस नाम से पुकारते हैं)। सभापति ने अपने स्वधर्म्मियों को इस लिये कोसा कि वे संस्कृत के अमूल्य रत्नों से उर्दू का भंडार नहीं भरते। मौलवी साहब ने यह भी बतलाया कि उर्दू कविता में देशी रङ्गत इस कारण नहीं आती कि उसके कवि लोग बैठे तो रहते हैं हिन्दुस्तान में और ख्वाब देखते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ़ारस का। मौलवी साहब ने आगे चल कर कहा "बड़े खेद की बात है कि यद्यपि संयुक्त प्रदेश उर्दू साहित्य का उद्गमस्थान है पर उसमें "हिंदुस्तानी" को छोड़ और कोई ऐसा पत्र नहीं है जो अपने कर्त्तव्य का पालन करताहो वा सर्वसाधारण की सम्मति पर कुछ प्रभाव डालता हो अथवा जिसका प्रचार इतना हो कि वह अपना ख़र्च निकाल सके।" हिन्दी प्रेमियों को अब भी चेतना चाहिऐ।

भीटा के खँड़हर।

अन्यत्र भीटा में जिन प्राचीन बौद्ध चिन्हों के पता लगने का हमने उल्लेख किया है उनका ब्योरा एक महाशय ने "लीडर" में इस प्रकार दिया है।

सरकारी पुरातत्व बिभाग मि० मार्शल की अध्यक्षतामें दिसम्बर १९०९ से भीटा के खंड़हरों को खोदने में लगा था। उसका काम गत फ़रवरी महीने में समाप्त हुआ।

टीलों को खोदने पर उनके भीतर एक अच्छा नगर निकला जिसमें चौड़ी चौड़ी सड़कें, गलियां, पक्की नहरें, और नालियां बनी थीं।

ईंट के बने पक्के मकानों की श्रेणियां खोद कर निकाली गई हैं जिनमें से कोई तो २४ फुट ज़मीन के नीचे गड़ी थीं। ईंटें वैसी ही बड़ी २ और चिपटी हैं जैसी कि झूँसी और कोसम आदि के खँड़हरों में मिलती हैं। घर ठीक सीधी क़तार में क्रम के साथ बने हुए हैं। दीवारें नीवँ के पास चौड़ी और उसके ऊपर पतली हैं। घरों की श्रेणियों के मध्य में गलियां बनी हैं जिनके बीचो बीच ठीक उसी तरह पक्की नहरें निकाली गई हैं जैसी कि बरेली आदि नगरों में अब तक देखने में आती हैं। इन मकानों में एक बड़ी भारी विलक्षणता है। दीवारों में आने जाने के लिये कोई मार्ग नहीं है। न दरवाज़े हैं, न खिड़कियाँ दीवारों में, यदि कहीं एकाध दरवाज़े आदि के चिन्ह हैं भी तो वे ईंटों से बंद किए हुए हैं। जान पड़ता है कि मकान खपड़ों से छाए हुए थे क्योंकि खपड़ों के बड़े पुराने नमूने उनमें मिले हैं। यह नहीं मालूम होता कि लोग कोठरियों में कैसे आते जाते थे। कई पक्के कुएं भी निकले हैं। वे बिलकुल दुरुस्त हैं, उनमें से कुछ तो ईंटों के बने हुए हैं और कुछ पत्थरों के। पत्थर की पटिया इस रीति से जोड़ी गई हैं कि जोड़ मालूम नहीं होते। इनमें से एक कुएं में हड्डियां भरी मिलीं। घरों के भीतर अनाज के बखार मिले। मिट्टी के बड़े बड़े कुंडे दीवारों से लगे हुए अथवा कोनों पर रक्खे हुए पाए गए। कोठरियों के भीतर चक्की, जांता, ओखली तथा और भी गृहस्थी की चीज़ें मिलीं। पत्थर की एक बड़ी खंडित मूर्त्ति भी एक घर में पाई गई जिसके बाहु पर आभूषण बनाए गऐ थे।

ध्यानी बुद्ध के कई सिर तथा बुद्ध और द्वारपाल की खंडित प्रतिमाएं भी मिली हैं। कुछ थोड़ी सी पत्थर की मूर्त्तियां, औज़ार तथा शिला लेख भी निकले हैं। एक बड़ा शिला लेख है जो अभी उतारा नहीं गया है। कुछ तांबे के सिक्के भी निकले हैं, पर वे अभी साफ़ नहीं किए गए हैं। बहुत अच्छी कारीगरी के मिट्टी के बरतन ज्यों के त्यों मिले हैं जिनके ऊपर का रोगन अभी तक चमक रहा है। उनमें से कुछ बरतन ये हैं:—टोंटीदार मिट्टी के गडुए जिन से लोगों का यह भ्रम दूर हो सकता है कि हम लोगों ने टोटीदार बरतन बनाना मुसलमानों के आने पर सीखा है। हर एक प्रकार के कलसे, सुराहियां, आदि खोद कर निकाली गई हैं। पकी हुई मिट्टी के खिलौने बुद्ध के सिर आदि पड़े पाए गए हैं। ये मिट्टी के खिलौने ठीक उसी तरह के हैं जैसे आज कल गांव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के कुम्हार लोग लड़कों के खेलने के लिये बनाते हैं। मिट्टी के कलछुले पाए गए हैं जिनका व्यवहार भोजन बनाने में होता था। त्रिशूल के आकार का एक लोहे का कटार, पूजा करने के लिये लोहे का एक सिंहासन तथा मिट्टी का एक कमंडल भी खोद कर निकाले गए हैं।

मिट्टी के बरतनों और खपड़ों की जाँच करके यह अनुमान किया गया है कि वे ईसा से दो शताब्दी पूर्व से लेकर चौथी शताब्दी तक के हैं। प्रयाग के ज़िले में बहुत से टीले और खंड़हर हैं जिन्हें खोदने से बहुत सी काम की बातें मालूम हो सकती हैं।

मान्य भाषा।

सब से पहिले हमें यह देखना है कि साहित्य की भाषा का संगठन होता कैसे है। एक भाषा ग्रहण करने के पहिले लोग लिखने पढ़ने में अपने२ प्रान्त की भिन्न भिन्न बोलियों का व्यवहार करते हैं। जिस भूभाग में लिखने पढ़ने की चर्चा तथा भिन्न भिन्न प्रदेशों के लोगों के सम्मेलन का अवसर अधिक होता है, अच्छे प्रभावशाली कवि और ग्रंथकार होते हैं, उसकी बोली का अनुकरण धीरे धीरे और भागों के लोग भी करने लगते हैं। इस प्रकार क्रमशः वह बोली और और प्रान्तों के पढ़े लिखे लोगों पर अपना अधिकार जमा कर एक बड़े भूभाग की साहित्य भाषा बन जाती है। अतः यह सिद्ध हुआ कि साहित्य की भाषा यथार्थ में किसी एक प्रान्त की बोली ही है जो कुछ परिवर्त्तित और परिमार्जित होती, आवश्यकतानुसार दूसरी बोलियों के शब्दों को समेटती अन्य प्रान्तों के बीच भी फैल जाती है। वह कोई बिलकुल गढ़ी हुई, बनावटी वा आकाश से उतरी हुई भाषा नहीं होती। यदि उस बोली का व्याकरण सीधा, और उसके नियम बिस्तृत हुए तो वह और भी जल्दी अपने लिये जगह कर लेती है। जो लोग संस्कृत को बिलकुल बनावटी और गढ़ी हुई भाषा समझे हुए हैं उन्हें शायद यह बात अच्छी न लगे। पर यदि वे बिचार कर देखेंगे तो उनके जी में भी यह बात जमने लगेगी कि आरंभ में एक मूल आर्य्य भाषा से निकल कर फैली हुई अनेक बोलियों में से एक को चुन कर ही उसका संस्कार किया गया था। यदि ऐसा न होता तो पाणिनि को अपने सूत्रों में पूर्वीय और पाश्चात्य प्रयोगों का निर्देश न करना पड़ता। जब कुछ आर्य्य लोग पंजाब से चल कर जहां उनकी बस्ती जम गई थी, पूर्व और दक्षिण की ओर फैलने लगे तब उनकी बोलियों में स्थानिक अनार्य्य भाषाओं के संसर्ग से विभेद पड़ने लगा। इसी अनार्य्यत्व को बचाने के लिये प्राचीन वैयाकरण पंजाब और अफ़गानिस्तान के मध्य की बोली को आर्य्यों की टकसाली भाषा मान कर उसके नियम ढूंढ़ ढूंढ़ कर निकालने लगे। वह नियमों से जकड़ दी गई। काल पाकर जब वह बोलचाल से उठ गई तब उसे केवल इन्हीं नियमों और सूत्रों के सहारे पर शिक्षित लोग चलाने लगे। अतः यह न समझना चाहिए कि इन नियमों और सूत्रों से जितने प्रयोग सिद्ध हो सकते हैं वा जितने शब्द बन सकते हैं वे सब के सब बोलचाल में थे।

यद्यपि आरंभ में हिन्दी कविता भिन्न भिन्न प्रदेशों में भिन्न भिन्न बोलियों में होनी आरंभ हुई पर १६ वीं शताब्दी के कृष्णोपासक वैष्णव कवियों के समय से उसे कुछ कुछ एकरूपता प्राप्त होने लगी। देशके प्रत्येक बिभाग के लोग ब्रज भाषा ही में कविता करने का प्रयत्न करने लगे। कवित्त, सवैया, छप्पय आदि के लिये तो मानो ब्रजभाषा बनी ही थी। केवल दोहे और चौपाइयों में और प्रान्तों की बोलियों के लिये कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगह रह गई । यहां तक कि गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी अपनी कवितावली की भाषा ब्रज ही रक्खी । अतः हमें यह कहने में कुछ संकोच नहीं कि इन्हीं ब्रज के भक्त कबियों की भाषा ऐसी हुई जो अपने मंडल से और आगे बढ़ी और फैली । आज यदि ये ब्रजभाषा के कबि राह न निकाल गए होते तो वर्त्तमान हिन्दी और उर्दू गद्य को इतने विस्तृत भूभाग में स्थान न मिलता, सारे उत्तरीय भारत के लिये एक साहित्य भाषा संगठित न होती ।

आगरे और दिल्ली के आस पास की बोली ही गद्य के लिये चुनी गई । लल्लू लाल ने अपना प्रेमसागर इसी बोली में लिखा । अब यह खड़ी बोली साहित्य की मान्य भाषा हो गई है । इधर बोलियों का मुख्य प्रभेद क्रिया के रूपों में देख पड़ता है । अतः यह जानने के लिये कि हिन्दी की यह टकसाली भाषा यथार्थ में कहां की है हमे यह देखना होता है कि उसकी क्रिया के रूपों का व्यवहार किस भूभाग के ग्रामों में होता है । यह जानी हुई बात है कि "हम आते हैं" "वे जा रहे हैं" और "वह आवेगी" आदि वाक्य दिल्ली आगरा, मेरट आदि की दिहातों को छोड़ बनारस, बलिया और आज़मगढ़ की दिहातों में नहीं बोले जाते । अतः वर्त्तमान हिन्दी भाषा का घर दिल्ली आगरे के आस पास की भूमि ही कही जा सकती है । यहां पर खड़ी बोली और ब्रजभाषा के भेदनिर्णय की आवश्यकता नहीं है । पंजाबी तथा ब्रजभाषा का संगमस्थान दिल्ली की खड़ी भाषा पर अधिक ज़ोर दिया गया है जिससे पंजाब और गंगा जमुना के प्रदेश एक भाषासूत्र में बंध गए । अस्तु, किसी शब्द का कौन सा रूप ग्राह्य है यह स्थिर करने के लिये हम यह देखते हैं कि उसका कौन सा रूप ऊपर कहे हुए स्थानो में प्रयुक्त होता है । इसी प्रकार किस शब्द वा वाक्य की अपेक्षा कौन शब्द वा वाक्य माननीय है इसका निश्चय भी किया जाता है । जैसे बनारस, मिरज़ापुर गोरख पुर आदि के पढ़े लिखे लोग "थरिया" "सूति जाव" आदि न लिख कर 'थाली' "सो जाओ" लिखेंगे । इसी तरह 'गोड़' के स्थान पर वे 'पैर' ही लिखेंगे । जो लोग लिखने पढ़ने की हिन्दी में इन प्रान्तीय शब्दों को लाते हैं वे कुशिक्षित समझे जाते हैं । खेद के साथ कहना पड़ता है कि कुछ हिन्दी लेखक इस प्रान्तीय दोष (Provincialism) से अपने को नहीं बचा सकते हैं । अभी हाल में एक पुस्तक बनी है जिसमें खड़ी बोली के साथ एक पूर्वीय ज़िले के प्रचलित शब्दों का बड़ा बेढंगा मेल कराया गया है ।

समाप्त करने के पहिले एक बात कह देना आवश्यक है । यद्यपि यह मान्य भाषा Standard language यथार्थ में एक प्रान्त की बोली ही होती है पर जब वह एक बड़े भूभाग की साहित्यभाषा हो जाती है तब वह अपनी संकीर्णता को कम करने लगती है । वह अपने अभाव की पूर्त्ति के लिये और और प्रान्तों के शब्दों को लेती है । यदि किसी पशु पक्षी वृक्ष वा किसी और वस्तु का नाम उसके मूलस्थान में न हुआ तो और प्रान्तों में उनके जो नाम प्रचलित हैं वे ले लिये जाते हैं । अभी हमारी हिन्दी में बहुत से पशु, पक्षी तथा और बहुत सी वस्तुओं के नाम स्थिर नहीं हैं । लोग अपने प्रान्त के अनुसार उनके लिये भिन्न भिन्न नामों का प्रयोग करते हैं । अब ये नाम उपर्युक्त प्रक्रियानुसार स्थिर हो जाने चाहिएं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेरित पत्र ।

महाराणा उदयपुर का ब्राह्मण-क्षत्री होना ।

दतिया से एक महाशय ने निम्नलिखित नोट सर्वसाधारण की सूचना के लिये भेजा है ।

हाल में एशियाटिक सोसाइटी आफ़ बंगाल के जर्नल और प्रोसीडिंगस पुस्तक ५ नं० ६ जून सन् १९०९ई०पृष्ठ १६१-१८१ तक में एक "गुहिलोटस" नामक लेख, पूना के मिस्टर जी० आर० भंडारकर एम०ए० महाशय का लिखा छपा है । उसमें उन्हों ने उदयपुर वाले पं० गौरीशंकर ओझा के बताये और दिये एकलिंग महात्म्य, आबू की समरसी की प्रशस्ति और मूता नैणसी की ख्याति आदि के प्रमाणों पर से यह सिद्ध कर बताया है कि गुहिलोटस अर्थात् मेवाड़ राजवंश के राजा असल में गुजरात के बड़नगर अर्थात् आनन्दपुर से आये हुए नागर ब्राह्मण थे और चितौड़ के परम प्रसिद्ध प्रथम राजा बाप्पा को हारीत ऋषि ने अपना क्षत्रित्व देकर ब्राह्मणपना लेलिया। मिस्टर भंडारकर ने सब प्रमाणों पर विचार करके अंतिम सिद्धान्त यह किया है कि "गुहिलोटस" असल में नागर ब्राह्मण थे और फिर क्षत्री बने हैं । उनका यह कथन है:—

That the guhilots were originally Nagar Brahmans, afterwards became Kshatriyas, is certain and incontrovertible, as we have seen above'.

और उन्होंने इस विषय के प्रमाण बताने, देने, और नकल करा देने के विषय में पं० गौरी शंकर ओझा का ऐसे धन्यवाद प्रकाश किया है:-

"If anybody is still sceptic about this conclusion, his doubt is completely set at rest by the following extract from the Ekaling-mahatmya composed during the reign of Rana Kumbha, for which I am indebted to the kindness of Pandit Gauri shankar Ojha."

"This Chhappaya was copied from Pandit Gaurishanker's copy of Muta Nensis Khyat.

यदि मिस्टर भंडारकर का कथन सही करके मान लिया जावे तो महाराणा उदयपुर को जो सूर्य्यवंशी क्षत्रिय होने का गौरव है वह नहीं रहता । ऐसी दशा में महाराणा साहब को उचित है कि वे अपनी वंश परम्परा के विषय में खोज के साथ प्रबंध प्रकाशित करावेंगे । यह प्रश्न उदयपुर से श्रीमानों के मुलाजिमों ने ही उठाया है और सबूत भी वहीं से दिया गया है । कई सज्जनों ने जो इतिहास के परम अनुरागी हैं, पंडित मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या जी को इस विषय में लिखा था । उन्होंने उत्तर दिया कि पं० गौरीशंकर और मिस्टर भंडारकर का कथन विलकुल अयुक्त है । पंड्या जी ने उदयपुर राज्य के कई इतिहासानुरागी सज्जनो के कहने पर मिस्टर भंडारकर के सिद्धान्त का खंडन लिखना भी स्वीकार किया है । परंतु वे मिस्टर भंडारकर के एक दूसरे लेख की, जो इसी विषय में प्रकाश होने वाला है, प्रतीक्षा कर रहे हैं जिसमें दोनों का एक साथ खंडन लिख दिया जाय ।

एक इतिहास प्रेमी ।

श्रीयुत सम्पादक
नागरीप्रचारिणी पत्रिका ।

महाशय,

आज मैं आपकी पत्रिका द्वारा एक विषय पर हिंदी साहित्य समाज का ध्यान दिलाना चाहता हूं । मुझे आशा है कि हिंदी से सम्बन्ध रखने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाली सभाएं तथा हिंदी के सामयिक पत्र इस पर पूरा विचार कर उचित मार्ग के अवलम्बन करने में सहायता देंगे।

यद्यपि यह बात सब लोगों पर भली भांति विदित है कि पूर्व की अपेक्षा हिन्दी दिनोदिन उन्नति करती जा रही है तथापि और देशभाषाओं की अवस्था पर ध्यान देकर यह मानना पड़ेगा कि अभी उसकी उन्नति के लिये बहुत कुछ उद्योग करने की आवश्यकता है। जो दो चार सभाएं इस के लिये उद्योग कर रहीं हैं उनका परस्पर वैसा सम्बन्ध नहीं है जैसा कि अत्यन्त आवश्यक है। सब से बड़ी आवश्यकता इस बात की है कि इस के उद्योगियों के दल की दिनोदिन वृद्धि होती जाय। यह प्रायः देखने में आता है कि जो स्थान एक बेर खाली हो जाता है उसकी पूर्त्ति के लिये दूसरा पुरुष नहीं दिखाई देता। पुराने समय के बड़े बड़े ग्रन्थकारों और कवियों को छोड़ दीजिए, आधुनिक काल में ही देखिए भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, राजा शिवप्रसाद, राजा लक्ष्मणसिंह, पं० प्रताप नारायण मिश्र आदि महानुभावों के चल बसने से जो स्थान ख़ाली होगया उसकी पूर्त्ति किसने की। हिन्दी के जीवित रत्नों के भी आज कल दर्शन नहीं होते। पं० श्रीधर पाठक बा० जगन्नाथ दास (रत्नाकर) आदि महानुभाव तो ऐसा मौन साध बैठे हैं कि मानों वे भारतवर्ष छोड़ कर कहीं विदेश यात्रा को चले गए। इसका क्या कारण है? यह अवस्था क्यों हो रही है? यद्यपि अभी इस प्रकृति का कोई फल देखने में नहीं आता है परन्तु काल पाकर हिन्दी की अवस्था अत्यन्त शोचनीय हो जायगी। इस समय हिन्दी के हेतु उद्योग करनेवाली सभाएं तीन स्थानों में हैं अर्थात् काशी, आरा और प्रयाग में। काशी की सभा को जितनी चाहिये उतनी सहायता नहीं मिलती। उसमें धन का अभाव है। उद्योग में किंचित शिथिलता है। आरा की सभा के जीवन प्राण पंडित सकलनारायण पांडे हैं। यह सभा भी वैसी उन्नति नहीं कर रही है जैसी कि होनी चाहिए। प्रयाग की सभा अभी बाल्यावस्था में है। इसके नवयुवक कार्यकर्ताओं में उत्साह है। इससे आशा है कि यह हिन्दी की कुछ सेवा कर सकेगी। पर दुःख की बात तो यह है कि तीनों अलग अलग उद्योग कर रहे हैं। तीनों में कोई सहोद्योग के लक्षण नहीं देख पड़ते। यह दुःख की बात है। तीन पुरुष अलग अलग उद्योग कर के जितनी सफलता प्राप्त कर सकते हैं उससे कहीं बढ़ कर तीनों के मिलकर कार्य करने से हो सकती है। इसके साथही यह भी उचित है कि हिन्दी के प्रेमी मात्र परस्पर सहानुभूति रक्खें और एक दूसरे के उद्योग में सहायता देने पर उद्यत रहैं। जहां इन बातों का होना आवश्यक है वहां साथही यह भी निश्चय होजाना चाहिये कि हिन्दी के लिये किन किन उद्योगों के करने की आवश्यकता है। इन सब बातों के लिये एक "हिन्दी साहित्य सम्मेलन" करने की बड़ी आवश्यकता है। हिन्दी को छोड़ कर अन्य मुख्य मुख्य भाषाओं के प्रेमियों ने ऐसे सम्मेलन किए हैं और इनका फल बड़ा ही सन्तोषदायक हुआ है। क्या हिन्दी के लिये ऐसा नहीं किया जा सकता? मेरे विचार में अब इस के न करने से विशेष हानि होगी। अतएव मैं हिन्दी की सभाओं, हिन्दी के पत्र सम्पादकों, लेखकों, ग्रन्थकारों, कवियों और प्रेमियों से निवेदन पूर्वक प्रस्ताव करता हूं कि वे ऐसे एक सम्मेलन के करने का शीघ्र उद्योग करें। मेरी सम्मति में या तो यह सम्मेलन आगामी आश्विन नवरात्र में काशी में हो या आगामी दिसम्बर में प्रयाग में हो। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष प्रयाग में कांग्रेस, कान्फरेंस, प्रदर्शनी आदि होगी। उसी अवसर पर इस सम्मेलन के करने में बहुत कुछ सुबीता हो सकता है। केवल इसमें आपत्ति है तो यही कि क्या ऐसी भीड़ भाड़ में हिन्दी के प्रेमी हिन्दी की सेवा में आवश्यक समय दे सकेंगे। नवरात्र में काशी में सम्मेलन करने में यह लाभ होगा कि लोग केवल उसी कार्य के लिये आवेंगे और कार्य सुबीते के साथ निश्चिन्तता से होगा। परन्तु इसमें कोई हानि नहीं यदि पहिला सम्मेलन उतना अच्छा न हो। सब बातों पर विचार कर मेरा मन्तव्य यही स्थिर होता है कि प्रयाग में सम्मेलन करना उचित होगा। अतएव मेरी प्रार्थना है कि प्रयाग की सभा इस कार्य को अपने हाथ में लेकर शीघ्र इसके उद्योग में लग जाय। उस सभा को अपनी एक छोटी कमेटी के हाथ में यह काम सौंपना चाहिये। जब इस सम्मेलन का करना निश्चय हो जाय तब मैं इस सम्बन्ध में विशेष रूप से पुनः लिखने का उद्योग करूंगा।

पंचतीर्थी
जम्बू

भवदीय

श्यामसुन्दरदास,

——:o:——

श्री मान् सम्पादक,
नागरी प्रचारिणी पत्रिका,
काशी।

महाशय,

मैं आप की प्रसिद्ध पत्रिका द्वारा हिन्दी रसिकों का ध्यान एक अत्युत्तम पुस्तक की ओर आकर्षित करता हूं।

मिस्टर महेशचरण सिंह ने इलाहाबाद युनिवर्सिटी से बी० ए० पास कर जापान में टेकनो केमिस्ट और अमेरिका में एम० एस० सी० की डिग्री लब्ध कर, इंगलैण्ड में अपनी शिक्षा को पूर्ण कर भारत को प्रत्यागमन किया है। परदेश में जाकर नाना कष्ट सहन कर आपने जो शिक्षा लब्ध की है उस शिक्षा के लाभ से हमें वञ्चित नहीं रखना चाहते। आप की तालीम का पहिला मीठा फल "हिन्दी केमिस्ट्री" है। इस की रचना आप ने अमेरिका में आरम्भ की और भारत में आकर पूर्ण की।

पुस्तक की छपाई, सफाई, रंग ढंग मार्के के हैं। भाषा बड़ी चटकीली है। वैज्ञानिक शब्दों को संस्कृत के ढंग पर लिखने का आप का ढङ्ग बड़ा अनूठा है। साहित्य की शोभा ऐसे ही ग्रन्थरत्नों से होती है। हिन्दी में अनधिकार प्रवेश की बड़ी भरमार है। किसी विषय में आप कोरे क्यों न हों, थोड़ी बहुत अंगरेज़ी में आप का प्रवेश होना चाहिये, फिर आप चाहें पोथे के पोथे लिख डालें। सौभाग्य वश हिन्दी को वैज्ञानिक पण्डित महेशचरण सिंह से लेखक मिले हैं।

आज कल देश में जागृति छा गई है। देशोन्नति की चाह ने सबों के हृदय में घर कर लिया है। ऐसे अवसर में हिन्दी केमिस्ट्री से देशभक्तों का बहुत उपकार होगा।

४१३ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य ३॥) रुपये कुछ भी नहीं है। इस पर भी चित्रों की संख्या कम नहीं है। प्रत्येक हिन्दी रसिक का यह कर्त्तव्य है कि स्वयं एक एक प्रति खरीदें तथा अपने मित्रों से भी खरीदने के लिये अनुरोध करें।

भवदीय

युगलकिशोर अखौरी बी० ए० बी० एल०

डालटन गंज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभासदों के प्रति निवेदन ।

आप लोगों को भली भांति विदित है कि सभा को छ हज़ार का ऋण बाबू गोपाल कृष्ण दास जी का देना है। उसके लिये उक्त महाशय ने इधर बहुत कड़ा तगादा आरम्भ किया है। आप लोग जानते हैं कि सभा के पास ऋण चुकाने के लिये रुपया तो है नहीं परन्तु सभा भवन तथा अन्य वस्तुयें उस ऋण से कहीं अधिक की सम्पति हैं। ऐसी अवस्था में कोई सभा का हितैषी इस समय छ हज़ार रुपया सभा को उधार देकर उक्त बाबू साहब का ऋण चुका दे तो बड़ी कृपा हो। बाबू साहब को आठ आने सैकड़े व्याज प्रति मास दिया जाता है। वही व्याज जो महाशय सहायता करेंगे उनको भी दिया जायगा।

आप का सेवक।

गौरी शंकरप्रसाद।

मंत्री।

साधारण अधिवेशन।

शनिवार तारीख़ २६ फ़रवरी १९१० सन्ध्या के ६ बजे

स्थान-सभाभवन।

(१) पण्डित सुरेन्द्र नारायण शर्म्मा के प्रस्ताव तथा बाबू अमीरसिंह के अनुमोदन पर पण्डित रामनारायण मिश्र सभापति चुने गए।

(२) गत अधिवेशन (ता० १८ जनवरी १९१०) का कार्यविवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ।

निम्नलिखित महाशय नवीन सभासद चुने गए। १ बाबू युगल किशोर-सब डिप्टी इन्सपेक्टर आफ़ स्कूल्स प्रतापगढ़ १॥) २ बा० भैरू प्रसाद श्रीनिवास रायबरेली ३) ३ बा० रामकृष्ण गुप्त-११८ हैरिसन रोड कलकत्ता ५) ४ बा० नारायण दत्त मुख्तार रत्नपुरा छपरा १॥) ५ बा० मुक्तेश्वर प्रसाद मोहर्रिर मुन्सफी छपरा ५) ६ पण्डित मुकुन्द शास्त्री पर्वणीकर-हवामहल के सामने जयपुर ३) ७ पण्डित जयमोहन तिवारी वकील सुलतांपुर ३) ८ बा० मुक्ताप्रसाद-हेडक्लार्क-कलक्टरी सुलतांपुर ३) ९ बाबू अलख मुरारी लाहौस्टल इलाहाबाद १॥) १० कुवर चैन सिंह बी० ए० गोलागंज लखनऊ ३) ११ बा० अनन्तप्रसाद बर्म्मन C/o मिसर्स मथुरादास कृष्णदास काशी ३) १२ बाबू विष्णुदेव नारायण अमीन बेतिया राज ३) १३ बा० बीरप्रसाद अमीन बेतियाराज ३) १४ बा० अवध बिहारी लाल अमीन बेतिया राज ३) १५ बा० मथुराप्रसाद पेश-कार गंज महल्ला बेतिया ३) १६ बा० यदुवंश सहाय मोहर्रिर कलक्टरी चम्पारन मोतिहारी १॥) १७ बा० जूठन सिंह-कलक्टरी कचहरी मोतिहारी १॥) १८ बा० बसुदेवनारायणसिंह-तेलिया पट्टी-मोतिहारी-चम्पारन१॥) १९ बा० रामखेलावन सिंह-बेलदनवां-सन्तोषभवन-मोति-हारी ३) २० बा० रामचरित्र राम गुदरी बाजार मोति हारी चम्पारन १॥) २१ बा० रामाश्रय भट्टाचार्य-कदकुलि विशुनपुर जि० बांकुरा १॥) २२ नागेश्वर प्रसाद अमीन-राज कचहरी बेतिया १॥) २३बा०यदुनन्दन प्रसाद-अध्या-पक-राजस्कूल बेतिया १॥) २४ बा० राम परिछ सिंह-अध्यापक-राजस्कूल-बेतिया १॥) २५ बा० रामअनुग्रह लाल-महल्ला मिर्जापुर-दरभंगा ३) २६ बा० बृज किशोर प्रसाद वकील-लहरिया सराय दरभंगा १॥)२७ बा० ब्रह्मदेव नारायण वकीललहरिया सराय दरभंगा१॥)२८बा० हरिवंश सहाय वकील लहरिया सराय दरभंगा १॥) २९ बा० रघु-नन्दन प्रसादबी०ए०असिस्टन्टइन्सपेक्टर आफ़ स्कूल्स-बेतिया१॥) ३० बा० सूर्य्यमल-बैंकर-बेतिया ३)।

(४) सभासद होने के लिये ३२ महाशयों के नवीन आवेदनपत्र सूचनार्थ उपस्थित किए गये।

(५) निम्नलिखित पुस्तकें धन्यवाद पूर्वक स्वीकृत हुईं पण्डित जगन्नाथ पुस्करत, अमृतसर-शिवरामाष्टकस्तोत्र संकल्प विधि। बाबू कन्हैयालाल मास्टर—खास-बाजार कानपुर—भारतजीवन नाटक ४ प्रति। शुभ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिन्तावलि ३ प्रति (३) स्वदेश हितोपदेश १ प्रति। पण्डित छेत्रपाल शर्म्मा-सुख संचारक कम्पनी-मथुरा (१) हज़ार व्यापार (२) हास्य मंजरी द्वितीय भाग। पण्डित विन्ध्येश्वरी दत्त सुकुल वकील छपरा (१) शिवाशिव नाटक। श्रीयुत मैनेजर-ऋषिकुल विद्यालय-हरिद्वार बृह्मचर्य्योपदेश, हरिद्वार महिमा, प्रेमाभक्ति, प्रतीकोपासना, मातृपितृभक्ति, सनातन धर्म शिक्षा दो भाग और ईश्वरावतार। पंडित सुदर्शनाचार्य्य शास्त्री-बृम्हाघाट काशी (१) अनर्गल चरित्र। बाबू गोविन्द देवनारायण बी० ए०-करीमचक-छपरा (१) श्रीसीताराम शरण भगवानप्रसाद जी की सचित्र जीवनी। पण्डित प्रह्लाद दत्त शर्म्मा ज्योतिषी नं० १ रिवाड़ी (१) ज्योतिष कला। पंडित शिव शंकर भट्ट-हेडमास्टर कौड़िया (१) चन्द्रकान्ता उपन्यास (२) भक्त चरनामृत। काशी योगाश्रम काशी नारदभक्ति सूत्रम् स्मृति। महाराणी विष्णुप्रसाद कुमारी जोधपुर (१) श्याम आनन्दिनी। बाबू महावीर प्रसाद-एण्ट्रेन्स स्कूल-मधुबनी, (१) जन्मभूमि दर्पण। पंजाब प्रिंटिंग वर्क्स-अनारकली लाहौर (१) वर्णशिक्षक अंक १,२ (२) अंक शिक्षक। श्रीज्ञानराज मिश्र जनार्दन पण्डित-नरही जि० लखनऊ, (१) श्रीएडवर्ड विनोद। संयुक्त प्रदेश की गवर्नमेंट:—

[1] Report on the treatment of Sullage in the United Provinces of Agra and Oudh by Gilbert J. Fowler, [2] Sacred Books of the Hindus Vol. I

खड्गविलास प्रेस बांकीपुर, (१) शैवसर्वस्व। बाबू राधारमण मैत्र-कालाकांकर, (१) केशरमंजरी। बंगीय साहित्य परिषद (१) पत्रिका भाग १६ सं० १,२ और (२) तीन साहित्य परिषद पत्रिका रिपोर्ट।

परिवर्त्तन में प्राप्त (१) सनातनधर्म शिक्षा १,२ (२) ईश्वरावतार, (३) प्रेमाभक्ति (४) प्रतीकोपासना (५) मातृ पितृ भक्ति (६) पुराणो की कथा (७) पुनर्विवाह मीमांसा (८) अपत्य विक्रय (९) नारी सुदशा-प्रवर्तक भाग १-४ (१०) इतिहास पंजाब (११) श्यामास्वप्न (१२) इतिहास बुन्देल खण्ड (१३) अलिफ़लैला भाग १ (१४) कालज्ञान (१५) एक रात में बीस खून (१६) स्वर्णमयी (१७) सती बाला वा आदर्श रमणी (१८) Indian Antiquary for February 1910.

(६) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

आय व्यय का हिसाब।

(फरवरी १९१०)

आय	धन की संख्या		
गत मास की बचत	३०४५	१२	१
सभासदों का चन्दा	१३७	८	०
पुस्तकालय का चन्दा	५५	१४	०
पुस्तकों की बिक्री	८४	८	३
हिन्दी कोश	१०६८	१२	०
पृथ्वीराजरासो की बिक्री	२२	१	०
फुटकर	७	०	०
अमानत	५	०	०
जोड़	४४३६	८	४

व्यय	धन की संख्या		
आफ़िस के कार्यकर्ताओं का वेतन	६७	८	०
डांक व्यय	१६	४	३
पुस्तकालय	३८	३	०
हिंदी पुस्तकों की खोज	२५	०	०
फुटकर व्यय	५	१५	८
हिन्दी कोश	२७८	१	३
नागरी प्रचार	१३	४	०
	४४५	४	३
बचत	३९९१	५	१
जोड़	४४३६	८	४

रोकड़ सभा	२२०४≡)।०
बनारस बंक (कोश विभाग)	४४७०॥-)५
	४६८८।)३
बंक का देना	७८६॥≡)२
	३९९१।-)१

देना ६०००)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभा के पारितोषिकों की सूची ।

(१) इस वर्ष के सभा के नियमित दो मेडलों के लिये निम्न लिखित विषय नियत हैं । ये लेख ३१ दिसम्बर १९०९ तक सभा में आजाने चाहिएं ।

वैज्ञानिक विषय ।

प्राकृतिक अवस्था का उत्तर भारत के सामाजिक जीवन पर प्रभाव ।

सधारण (विद्या) विषय ।

अकबर के पूर्व हिन्दी की अवस्था ।

(३) ५००) का पुरस्कार—सभा द्वारा निश्चित अनुक्रमणिका के आधार पर जो हिन्दी का सब से उत्तम व्याकरण लिखेगा उसे यह पुरस्कार दिया जायगा। व्याकरण ३१ मार्च १९१० तक सभा के पास आजाना चाहिए । यदि कई व्याकरणों के भिन्न भिन्न अंश उत्तम समझे जांयगे तो यह पुरस्कार उन सब लोगों में बाँट दिया जायगा और उन ग्रन्थों को घटाने बढ़ाने आदि का इस सभा को पूरा अधिकार होगा । सभा द्वारा निश्चित अनुक्रमणिका दो पैसे का टिकट डाकव्यय के लिये भेजने पर सभा के मंत्री से मिल सकती है ।

निम्न लिखित पुस्तकें "सेक्रेटरी नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस सिटी" को लिखने से मिल सकती हैं ।

मलिक मुहम्मद की अखरावट ।≈) अशोक का जीवन चरित ।) इन्द्रावती १॥) उथेलो ≡) कर्तव्याकर्तव्य शास्त्र॥) कविवर बिहारीलाल ≈) कुमार सम्भव सार ≡) चन्द्रावती अर्थात् नासिकेतोपाख्यान ।–) छत्रप्रकाश (महाराज छत्र साल का इतिहास पद्य में १।) जंगनामा (जहांदारशाह और फर्रुखसियर की लड़ाई ॥।) दादू दयाल की बानी १॥।) धम्मपद (बौद्ध धर्म्मोपदेश रत्नमाला ।–) नेपाल का इतिहास ।–) प्राचीन लेख मणिमाला (भारतवर्ष के शिलालेखों की सूची) १) ध्रुवदास की भक्त नामावली ॥≡) भगवद्गीता (संस्कृत प्रश्न का भाषानुवाद) ।–) मनोविज्ञान ॥) महिला मृदुवाणी (विदुषी स्त्रियों की संक्षिप्त जीवनी उनके काव्य के वर्णन सहित) १) मित्र लाभ ≈)॥ नन्ददास की रासपंचाध्यायी ।≈) पृथ्वीराजरासो महाकवि चंदबर्दाई कृत समय ५-६१ १८।–) समालोचना ≈) समालोचनादर्श ≡) सुजान चरित्र (भरतपुर के राजा सुजान सिंह का इतिहास २) हम्मीर हठ ॥) हम्मीर रासो २) हिन्दी भाषा के सामयिक पत्रों का इतिहास ।) हिन्दी लेक्चर –) सभा के आर्यभाषा पुस्तकालय का सूचीपत्र ≈) नागरी प्रचारिणी पत्रिका भाग १-१३ प्रत्येक भाग का मूल्य १) यूरोपीय दर्शन (यूरप के दर्शन शास्त्र का पूर्ण इतिहास) ॥।) हरिश्चन्द्र (पद्य में) ≈) प्रबोध चन्द्रिका ॥।) विरह लीला (आनन्द घन कृत) ≡) दादू दयाल का सबद १।≈) हिम्मत बहादुर विरदावली (पद्मा कर कृत) ॥।) विसूचिका चिकित्सा ।) महाराणा प्रताप सिंह (बा० राधाकृष्ण दास लिखित ॥।) भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र का जीवन चरित ॥≈) दुःखिनी बाला –)। निस्सहाय हिन्दू ।) हवाई नाव ।) सरल व्यायाम ।≈) परिचर्या प्रणाली ।) मानस कोश (गो० तुलसीदास जी की रामायण का शब्द कोश) १) गोभिलीय गृह्यकर्म प्रकाशिका १) अन्त्येष्टिदीपिका ।≈) हिन्दी की प्रथम पुस्तक)। हिन्दी की दूसरी पुस्तक –)॥

संत बानी पुस्तकमाला

अर्थात
प्राचीन महात्माओं
की दुर्लभ बानी का
जो गुप्त होती जाती है जीर्णोद्धार
मय उनके जीवन-चरित्र के

कबीर सा०, तुलसी सा०, पलटू सा०
जगजीवन सा०, रैदासजी, चरणदास जी
दरिया सा०, दयाबाई, सहजोबाई, इत्यादि ।

बेलवेडियर प्रेस,
इलाहाबाद से
इश्तिहार मँगा
कर देखिये ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक
रामचन्द्र शुक्ल ।

Registered No A 414

नागरीप्रचारिणी पत्रिका ।

[मासिक पत्रिका]

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल । बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ॥
करहु बिलंब न भ्रात अब, उठहु मिटावहु सूल । निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जु सब को मूल ॥
विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार । सब देशन सों लै करहु, भाषा माहिं प्रचार ॥
प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि यत्न । राज काज दर्बार में, फैलावहु यह रत्न ॥ हरिश्चन्द्र

भाग १४ | १५ अप्रैल और मई १९१० । | संख्या ८-९

शोक ! शोक ! महाशोक !

हा ! कैसा दुःख का अवसर है । हमारे सर्व प्रिय महामान्यवर भारतसम्राट् सप्तम एडवर्ड महाराज का ता० ६ मई सन् १९१० ई० को अर्ध-रात्रि के समय स्वर्गवास हो गया । अपनी ऐसी बड़ी राजधानी और प्रजा को रोते हुये छोड़ कर अचानक इस असार संसार से श्रीमान् ने परलोक का मार्ग लिया । यह शोक समाचार शनिवार ता० ७ मई को तृतीय प्रहर के समय सभा में विदित हुआ और उसी समय सभा का कार्यालय तथा पुस्तकालय बन्द कर दिया गया । सभा का एक विशेष अधिवेशन ता० १० मई सोमवार को हुआ जिस का कार्य विवरण अन्यत्र दिया गया है । सभा का शोक सूचक निश्चय तार द्वारा भारत के बड़े लाट तथा संयुक्त प्रान्त के छोटे लाट की सेवा में भेजा गया ।

अश्रु प्रवाह ।

क्यों लखात मलीन भारत को मनुज समुदाय ।
चन्द सूरज मन्द तेज विषाद में लपटाय ॥
मञ्जु शीतल पौन हूं क्यों चलत है नहिं धाय ।
क्यों पताका वृटिश की आधी गगन लहराय ॥१॥
धारि के पाषाण हिय सुनि लीजिये दुख सार ।
लौह लेखनि ते लिखत जो लेख पत्र विचार ॥
कान को नहिँ ढांपिये मुख फेरि लीजे नाहिँ ।
है विषादमयी कथा "विधि को निषेधहु नाहिँ" ॥२॥
राजरानी श्रीमती विक्टोरिया गुन खानि ।
छाड़ि दीन्हेो "धरा है दुख पूर" यह अनुमानि ॥
स्वर्ग मांहि निवास कीन्हो जानि जग जञ्जाल ।
सातवेँ एडवर्ड को सौंप्यो प्रजा को पाल ॥३॥
धर्म्म के रक्षक निकेतन शान्ति के सुख मूल ।
शील के सागर उजागर हरन सब दुख मूल ॥
राजगण को निज सुगुण सो वशी करि जिन लीन्ह ।
शान्ति स्थापक की जगत ने तबहिँ पदवी दीन्ह ॥४॥
सातवेँ एडवर्ड नर पालक महा सम्राट ।
जो सदा निज प्रजाप्रिय अरु सुयश विमल विराट ॥
हाय सोऊ निज प्रजा को शोक दै अरु ताप ।
शान्तियुत ह्वै महा निद्रा लह्यो तजि संताप ॥५॥
रे कराल कठोर काल अनर्थ तुम यह कीन ।
दुःख देवे में तुम्हारी कुमति कुटिल प्रवीन ॥
जाहि लखि भारत प्रजा मन मो मुदित मनमान ।
ताहि हरि तुम कीन्ह नहिं भल लेहु हिय अनुमान ॥६॥
जाहु हे सम्राट तुम विश्वेश के सुखअङ्क ।
त्यागि धरनी को भ्रमन तुम तहँ रहहु निःशंक ॥
नित्य लसत बसन्त जहँ नहिं होत कहुं पतझार ।
वा सुरम्य विनोद बन में करहु नित्य विहार ॥७॥
शान्ति लहि आत्मा तुम्हारी करै केलि स्वछन्द ।
अप्सरा गन सुमन सौं पूजैं तुम्हें सानन्द ॥
ईश! राज्य कुटुम्ब दुःखित प्रजा, को पुनि हेरि ।
शान्ति वितरण करे शान्ति लखाय जिमि बहुफेरि ॥८॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचना और सम्मति ।

"लीडर" का इटावे का सम्बाद दाता लिखता है कि वहां अदालतों में जो समन आदि जारी किए जाते हैं वे केवल उर्दू में भरे जाते हैं हिन्दी की जगह बिलकुल सादी छोड़ दी जाती है। इससे वहां के निवासियों ही को नहीं वरन् समन तामील करनेवाले चपरासियों को भी, जो प्राय: हिन्दी ही जानते हैं, बड़ी कठिनता होती है। इसी प्रकार डिक्री के फ़ार्म छपे तो हिन्दी और उर्दू दोनों में रहते हैं पर मुहर्रिर लोग उर्दू ही में डिक्री तैयार करते हैं। यहां पर यह कह देना आवश्यक है कि यह बात इटावे ही में नहीं वरन् इन प्रान्तों में सर्वत्र है। मुहर्रिर लोग केवल उर्दू ही में फ़ार्म भरा करते हैं जिससे लोगों को बड़ा कष्ट होता है। थोड़ी थोड़ी सी बात के लिये उन्हें इधर उधर भटकना पड़ता है। सरकार से प्रार्थना है कि वह शीघ्र इस ओर ध्यान दे और कड़ाई के साथ आवश्यक प्रबन्ध करे।

पंजाब के लोग गुरुमुखी लिपि और पंजाबी भाषा को स्कूलों और अदालतों में उचित स्थान देने के लिये सरकार से प्रार्थना कर रहे हैं। सारे पंजाब के लोग क्या हिन्दू क्या मुसलमान पंजाबी बोलते हैं। अक्षर भी वहां गुरुमुखी ही अधिकतर चलते हैं। सिखों के समस्त धर्मग्रन्थ पंजाबी भाषा और गुरुमुखी अक्षरों में लिखे हैं पर आश्चर्य है कि सरकारी काम काज वहां उर्दू में होते हैं जो लोगों की स्वाभाविक बोली से बहुत भिन्न है। केवल नगरों के शिक्षित मुसलमान लोग परस्पर उर्दू बोलने का प्रयत्न करते हैं पर अपने बहुत से काम वे भी पंजाबी ही से निकालते हैं। जब एक बार सर प्रतूलचन्द्र चटर्जी महोदय ने पंजाब युनिवर्सिटी के वाइस-चांसलर के रूप में पंजाबी भाषा को उन्नत कर के एक साहित्य की भाषा बनाने का प्रस्ताव किया था तब कुछ मुसलमान मौलवियों ने बड़े कट्टरपन के साथ उनका विरोध किया था। पर वहां के लेफ्टिनेंट गवर्नर सर लूईडेन महोदय ने चटर्जी महाशय के मत का पूरा समर्थन किया था अब इस अवसर पर भी, सुनते हैं कि, मुसलमान लोग विरोध कर रहे हैं। न जाने हमारे मुसलमान भाई किसी देश भाषा की उन्नति से अपनी हानि कैसे समझ लेते हैं। पंजाबवासियों की प्रार्थना बहुत ही न्यायसम्मत है। हम आशा करते हैं कि उन्हें इस उद्योग में पूरी सफलता होगी।

कानपुर में एक रासायनिक शिल्प विद्यालय स्थापित करने का तखमीना आदि संयुक्त प्रदेश की गवर्नमेण्ट ने भारतीय सरकार के पास स्वीकृति के लिये भेज दिया है। आशा की जाती है कि भारत गवर्नमेंट और भारत सेक्रेटरी उचित आज्ञा देकर देश में इस आवश्यक शिक्षा का प्रचार करेंगे।

कहते हैं कि भिन्न भिन्न दिशा की वायु का प्रभाव जीवों पर भिन्न भिन्न पड़ता है। पूर्व की हवा पृथ्वी को स्पर्श करती हुई तथा सीड़ और गर्द लेती हुई चलती है। इसी कारण वह प्राणियों में शिथिलता और क्षीणता फैलाती है। पश्चिम की हवा ऊपर से आती है जहां की वायु स्वच्छ और सूखी होती है तथा जिस में विद्युत और प्राणपोषक गैस का अंश अधिक होता है। शुष्क वायु से प्राणियों में शक्ति का सञ्चार होता है। जिस प्रकार पूर्वीय हवा शारी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रिक स्वास्थ्य को ढीला करती है उसी प्रकार वह मनुष्य की मानसिक वृत्तियों को भी दूषित करती है। इस विषय की खोज करने वालों ने पता लगाया है कि जब पूर्व की हवा चलती है तब बहुत आत्महत्याएं होती हैं तथा मारपीट और उन्मत्तता आदि के लिये धर पकड़ भी बढ़ जाती है। स्त्रियों का मानसिक संगठन बड़ा कोमल होता है इस से उन पर इस हवा का असर कुछ विशेष पड़ता है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन।

बंगीय-साहित्य सम्मेलन की सूचना देने के साथ ही हमने एक हिन्दी साहित्य सम्मेलन की आवश्यकता बतलाई थी। गतांक में बा० श्यामसुन्दर दास बी० ए० ने इस बात को प्रवर्द्धित रूप में सर्वसाधारण के सामने उपस्थित किया था। इधर पंडित केदारनाथ भट्ट ने भी अभ्युदय में इस विषय में अपनी सम्मति प्रगट की जिसका समर्थन बी० शर्म्मा महाशय ने २५ अप्रैल के लीडर में बड़े उत्साह के साथ किया है। लीडर के सम्पादक महाशय ने भी इस प्रस्ताव की उपयोगिता की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित किया है। बात तो यह है कि जिसके हृदय में हिन्दी के लिये कुछ भी प्रेम होगा, जिसे अपनी मातृभाषा और अपने देश के गौरव का कुछ भी ध्यान होगा उसे इस अवसर पर एक हिन्दी साहित्यसम्मेलन का न होना अवश्य खटकेगा। जब कि बंगला मराठी और उर्दू तक के प्रेमियों को एक स्थान में एकत्र होकर अपने अपने साहित्य की उन्नति और वृद्धि के उपायों को बिचारते हुए वह देखेगा तब उसे अवश्य अपनी हिन्दी की भी सुध आवेगी।

जिन जिन प्रदेशों की भाषा हिन्दी कही जाती है, और वास्तव में है, उनमें यदि घूम कर देखा जाय तो जान पड़ेगा कि बहुत से लोगों को यह भी खबर नहीं है कि वर्त्तमान हिन्दी भाषा ने अब कौन सा रंग पकड़ा है, उसके लिये क्या क्या उद्योग हो रहे हैं और होने चाहियें। वे मानों पड़े सो रहे हैं। हम लोगों ने अभी उनके कानों के पास इतना हल्ला नहीं मचाया कि उनकी नींद टूटे। हमारे उद्योगों की उपयोगिता को बिना मन में बैठाए वे हमारा साथ कैसे दे सकते हैं? जब तक हम लोगों को यह न बतलावेंगे कि उनके किस कार्य्य से उनकी भाषा का हित होगा और किससे हानि तब तक हम कैसे आशा कर सकते हैं कि वे जो कुछ करेंगे वह हमारी भाषा की भलाई और हमारे उद्देश्य की पूर्ति ही के लिये होगा। वे अनजान में न जाने क्या कर बैठें? तात्पर्य्य यह कि हमारे हिन्दी भाषा सम्बन्धी उद्योगों की बात को जनसाधारण में पहुंचाने के लिये अभी बहुत थोड़े मार्ग खुले हैं।

यह जानी हुई बात है कि जब किसी स्थान पर कोई असाधारण भीड़ भाड़ या मेला वा तमाशा हो जाता है तब उस की चर्चा वहां के निवासियों के बीच बहुत दिनों तक चलती रहती है। सभा समाजों का भी यह प्रभाव प्रत्यक्ष है। जिस विषय की धूम धाम किसी सभा समाज में एकबार हो जाती है उस की ओर लोगों का ध्यान खिंच जाता है और उनकी दृष्टि में उसमें एक प्रकार का महत्व और मनोरञ्जकता आ जाती है। दूसरे लोगों को भी उस विषय को लेकर अपनी कार्य्य शक्ति दिखलाने की चाह होती है। उस विषय में पहिले से उद्योग करने वालों को अपने सहकारियों के साक्षात्कार से अपनी शक्ति पर भरोसा हो जाता है और उनमें सफलता की आशा दृढ़ हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर उत्साह की मात्रा कई गुनी बढ़ जाती है। अतः यदि हिन्दी साहित्य सेवियों का प्रतिवर्ष एक सम्मेलन भिन्न भिन्न नगरों में हुआ करे तो आज हिन्दी की ओर से जो उदासीनता और अज्ञानता देखने में आती है वह न रहे। जो साहित्य पथिक सन्नाटे में अपने को अकेला पाकर जी छोटा कर बैठ गए हैं वे कमर कस कर आगे बढ़ने को तैयार हों। साथ ही यह भी विदित हो जाय कि जिन शिक्षित लोगों ने अपनी हिन्दी भाषा की सेवा के सामने कभी अपनी शान बढ़ाने का अवसर न ताका और जो गंवारों तथा स्वार्थ को सर्वस्व मानने वाले अपने अधिकार लोलुप मित्रों की दृष्टि में "तुच्छ" बने रहे उनके सिर ऊंचा करने के लिये भी स्थान संसार में है। मुझे पूरा विश्वास है कि वार्षिक साहित्य सम्मेलन करने से बहुत सी शिथिलता दूर हो जायगी और जागृति फैलेगी।

अब विचारना यह है कि यह सम्मेलन कहां और किस अवसर पर हो तथा इसका भार अपने ऊपर कौन ले। पंडित केदार नाथ भट्ट और बी० शर्मा दोनों महाशयों ने नागरी प्रचारिणी सभा को इस कार्य्य के लिये उत्तेजित किया है। ठीक ही है क्योंकि जितने काम सभा आज तक कर चुकी है उनके देखते यह कोई बड़ी बात नहीं है। सभा में इस विषय का एक प्रस्ताव भी किया गया था। यदि यह सभा इस कार्य को अपने हाथ में ले तब तो कोई बात ही नहीं है पर यदि वह ऐसा न कर सके तो मेरी 'स्वतन्त्र सम्मति' में प्रयाग की भाषा-सम्बर्द्धिनी-सभा को अपने नवीन और बढ़ते हुए उत्साह को इस ओर लगाना चाहिए। प्रयाग एक ऐसा स्थान है कि जहां सर्वसाधारण सम्बन्धी कार्य्यों के लिये विशेष तत्परता देखने में आती है।

इसके लिये उपयुक्त अवसर भी चाहिए। मैं लीडर के सम्पादक की सम्मति से पूर्णतया सहमत हूं कि यह सम्मेलन बड़े दिन की छुट्टियों में न करके दशहरे की छुट्टियों में किया जाय। बड़े दिन में कांग्रेस, प्रदर्शनी तथा और और सम्मेलनों की भीड़भाड़ में हम लोगों के चित्त को एकाग्र करके अपने उद्देश्य की ओर पूर्णतया न खींच सकेंगे। हमारा उद्देश्य बातों से कुछ लोगों का कुछ घड़ी के लिये मनोरंजन करना तो है नहीं वरन् कुछ दिनों के लिये लोगों को कार्य्य के लिये उद्यत और प्रवृत्त करना है। अस्तु, इन सब बातों के विचार से सम्मेलन को दशहरे की छुट्टियों में करना ठीक जंचता है।

मेरी समझ में सम्मेलन को इन सब बातों पर विचार करना आवश्यक होगा:—

(१) हिन्दी की उन्नति के लिये जो सभाएं स्थापित हैं उनकी द्रव्य से तथा और प्रकार से सहायता करना।

(२) भिन्न भिन्न सभाओं के हाथ में भिन्न भिन्न कार्य सौंपना और उनके सम्पादन के लिये उन्हें द्रव्य देना।

(३) हिन्दी में उपयुक्त पुस्तकों को बनवाने और प्रकाशित कराने का प्रस्ताव और प्रबंध करने के लिये एक कमेटी नियुक्त करना।

(४) हिन्दी बोलने वाले लोगों में हिन्दी साहित्य का प्रचार।

(५) हिन्दी न बोलने वाले लोगों में हिन्दी साहित्य का प्रचार।

(६) संयुक्त प्रदेश में नागरी अक्षरों का प्रचार

(७) और और प्रान्तों में नागरी अक्षरों का प्रचार।

(८) हिन्दी व्याकरण।

(९) हिन्दी कोश।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१०) जो लोग हिन्दी की सेवा कर रहे हैं उनके उचित सम्मान का प्रबन्ध करने के लिये एक कमेटी नियुक्त करना॥

(११) सम्मेलन का संगठन।

(१२) यूनिवर्सिटी की उच्च शिक्षा में हिन्दी को स्थान।

(१३) इन प्रान्तों के प्रत्येक जिले की कचहरियों के पास हिन्दी पुस्तकों की एक दूकान चलाने का प्रबन्ध करने के लिये एक कमेटी नियुक्त करना।

(१४) भिन्नभिन्न देश भाषाओं के साहित्य के प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन।

(१५) दूसरे वर्ष के लिये सम्मेलन का स्थान

इस सम्मेलन का सभापति हमें किन लोगों में से चुनना चाहिये इस का विचार हो जाना भी परमावश्यक है। हमारी समझ में तो नामावली प्रस्तुत करते तथा सभापति चुनते समय केवल इसी बात का ध्यान रखना चाहिए कि किस महाशय ने हिन्दी की सेवा कितनी और किस प्रकार की की है। हम नीचे कुछ महानुभावों के नाम अक्षर-क्रम से देते हैं जो अपनी साहित्य सेवा के कारण इस आसन के अधिकारी हो सकते हैं:—

(१) परिडत गोविन्द नारायण मिश्र।

(२) परिडत गौरीशङ्कर हीराचन्द ओझा।

(३) परिडत दुर्गाप्रसाद मिश्र।

(४) राय देबी प्रसाद (पूर्ण) बी० ए० बी० यल०।

(५) उपाध्याय परिडत बद्रीनारायण चौधरी

(६) परिडत बाल कृष्ण भट्ट।

(७) परिडत मदनमोहन मालवीय बी० ए० यल० यल० बी०।

(८) परिडत महाबीर प्रशाद द्विवेदी।

(९) परिडत मोहन लाल विष्णुलाल पंड्या

(१०) परिडत राधाचरण गोस्वामी।

(११) बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए०।

(१२) परिडत श्रीधर पाठक।

शोक!

हा! आज इस समाचार को लिखते विशेष दुःख होता है कि ना० प्र० सभा के बोर्ड आफ ट्रस्टीज के उपसभापति श्रीनगर पूर्निया के राजा कमलानन्द सिंह का शरीरान्त हो गया। आप हिन्दी के प्रेमी और शुभचिन्तक थे और इस सभा पर विशेष कृपा रखते थे। साथ ही हिन्दी ने अपने एक दूसरे सहायक पाण्डेय उमापति दत्त शर्मा को भी खो दिया। इन दोनों हिन्दी प्रेमियों की मृत्यु से सभा को बहुत अधिक दुःख हुआ है।

'पैसा अख़बार' का आक्षेप।

लाहौर का 'पैसा अख़बार' पंडित मदन मोहन मालवीय तथा नागरी के और दूसरे हितैषियों पर ताना छोड़ता है कि तुम लोगों ने सर अंटनी मैकडानल पर ज़ोर डाल कर नागरी को उर्दू के साथ अदालत में दाख़िल तो करा दिया लेकिन उसका फ़ायदा क्या हुआ क्योंकि इस समय तक सैकड़ा पीछे अस्सी दरख़ास्तें उर्दू में आती हैं। आगे चल कर वह अपने कथन की पुष्टि में यह प्रमाण उपस्थित करता है कि "लीडर" में जिससे मालवीय जी का भी सबन्ध है जितने अदालती इश्तहार निकलते हैं वे सब उर्दू में।

'पैसा अख़बार' को समझना चाहिए कि मनुष्य समाज छोटे बड़े कई दलों में बंटा रहता है। संयुक्त प्रान्त में कचहरी के अमलों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी एक दल बँधा चला आता है जो जन संख्या से अपने को जिन बातों में भिन्न पाता है उनके द्वारा स्वार्थ साधन करता है और अपना महत्व जताता है । अदालतों की कार्रवाइयां जहां तक जनसाधारण के न समझने योग्य रूपों में हों वहां तक इनलोगों के लिये आनन्द ही आनन्द है । वे सर्वसाधरण के मन में यह बात बैठाते आतेहैं कि जो बोली तुम लोग बोलते हो, जो अक्षर तुम लिखते हो, उनसे अदालत का काम नहीं चलता । वहां के लिये तो एक दूसरी बोली है, दूसरे अक्षर हैं, जिन्हें हम थोड़े से लोग ही जानते हैं । इन भलेमानुसों की चलने पावे तो अदालतों में इशारों से बातचीत हुआ करे और चीनदेश से अक्षर लाकर जारी कर दिए जायं । ये लोग भोली भाली प्रजा पर यह बात प्रगट ही नहीं होने देते कि उनकी दरख़ास्तें उनके जाने हुए नागरी अक्षरों में भी पड़ सकती हैं । यदि कहीं किसी हाकिम ने कोई नागरी की दरख़ास्त लौटा दी तब तो इन लोगों को और भी बहकाने का मौक़ा मिल गया । दूसरी बात विचारने की यह है कि अभी नागरी के प्रवेश की आज्ञा का प्रचार हुए कितने दिन हुए हैं । अभी पुराने ढर्रे के कुशिक्षित अमलों की वह पीढ़ी जिसमें सदाचार लोकहित और कर्त्तव्यपरायणता का भाव विशेष नहीं, जीती जागती है । हमरा आसरा उन पर नहीं बरन् आगे आने वाली नवशिक्षित सन्तति पर है । इस बीच में हमारी हिन्दी भाषा दिन दिन उन्नति करती हुई बंगला, मराठी, गुजराती आदि अपनी सगी बहिनों के साथ मिल कर सारे उत्तरीय भारत वर्ष को एक भाषासूत्र में बांध देगी ।

इसके अतिरिक्त पैसा अखबार ने जो यह लिखा कि लीडर पत्र में जो कि मालवीय जी का आरगन और नागरी अक्षरों का पूर्ण पक्षपाती है अदालती इश्तिहार सदा उर्दू में छपा करते हैं इस के विषय में उसके सम्पादक को स्वयं विचारना चाहिये कि सम्पादकीय मत और विज्ञापन दाताओं की इच्छा भिन्न २ बात है । विज्ञापन में प्रकाशित किसी विषय के लिये सम्पादक उत्तरदाता नहीं हो सकता । इसके अतिरिक्त वह समय भी बहुत शीघ्र आवेगा जब उर्दू के पक्षपाती निर्विवाद हो कर नागरी अक्षरों की उपयोगिता को स्वीकार करलेंगे और प्रायः समस्त अदालती कागज़ात और विज्ञापनादि इन्हीं सर्वगुणालंकृत अक्षरों में प्रकाशित हुआ करेंगे ।

हम हिन्दी हिन्दी क्यों चिल्लाते हैं ?

यह तो सब लोग जानते हैं कि आज दिन जो हिन्दी की अवस्था देखी जाती है वह पूर्व उद्योगों से उपस्थित हुई है न कि समय की स्वच्छन्दगति से । यदि आज से ४० वर्ष पहिले कुछ दूरदर्शी महात्मा समय की बिगड़ी हुई चाल के विरुद्ध खड़े हो कर बल न लगाते तो सर सैय्यद अहमद के कथनानुसार हिन्दी गवांरों ही की बोली हो जाती और फिर उसमें न "सम्पत्ति शास्त्र" "केमिस्ट्री" और "वैज्ञानिक कोश" बनने की नौबत आती, न भारतमित्र हितवार्त्ता और अभ्युदय देखने में आते । इन प्रदेशों के बहुत से आदमियों का गार्हस्थ्य जीवन किरकिरा होता चला जाता; उनके भावों से उनकी माता भगिनी पत्नी आदि के भावों की सहयोगिता बराबर घटती चली जाती और वे लाचार तवायफ़ों की 'अदबी ख़िदमात' से अपना पेट भरते रहते । जिन परम्परागत पवित्र भावों का पोषण भारत रमणियां दृढ़ता से करती आ रही हैं उनसे उन्हें अलग करने की अपेक्षा उन पुरुषों को अपने लिये दूसरे समाज में आनन्द ढूंढ़ना सहज था । हमारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश की स्त्रियां राम लक्ष्मण सीता, सावित्री, नल दमयन्ती, सम्बन्धी रोम रोम में भरे हुए आवेग को निकाल कर शीरीं फ़रहाद और लैला मजनूं के इश्क़ का सबक कहां तक सीखतीं! वे अपनी 'फूलों की सेज', 'पिया परदेश', 'कमल और भौंरा' 'कोयल और पपीहे', 'सावन भादों की अंधेरी रात' वाली प्यारी गीतों को भूल, खंजर और कफन लेकर अपने पतियों को जनाजे में सुला उन्हें सीधा क़ब्र का रास्ता कैसे दिखलातीं? वे सुख, दुख, दया, माया, प्रीति आदि सीधे सादे शब्दों का बोलना छोड़ 'दक्क़ाक़', 'तग़ाफुल', और 'बुग़्ज़' आदि सीखने के लिये अपना गला कहां तक दबातीं? इसीसे पुराने ढर्रे के केवल फ़ारसी उर्दू की तालीम पाए हुए लोगों का गार्हस्थ्य बन्धन बहुत ढीला देखा गया है, धर्म्मानुकूल पवित्र प्रणय का निर्वाह उनमें बहुत कम देखा गया है। इस प्रकृति के प्रभेद का शोचनीय प्रभाव हम बहुतेरे घरानों में अब तक देख रहे हैं। देश के चिर पोषित साहित्य के भावों से सहानुभूति न रखने के कारण न जाने कितने अभागे अपनी अर्द्धाङ्गिनी तक के अन्तःकरण का सृष्टि-सौन्दर्य नहीं देख सकते। अपने परिवार में उन्हें वह सुख और शान्ति नहीं मिल सकती जिनकी छाया में मनुष्य संसार के बड़े बड़े कार्य्य कर सकते हैं। हमारे इन प्रदेशों के बहुतेरे पढ़े लिखे लोगों को गार्हस्थ्य जीवन रोचकतारहित, फीका और शिथिल हो गया है। उसमें सहयोग, उत्साह और प्रेम की वह मात्रा नहीं जो बंग और महाराष्ट्र आदि देशों में देखी जाती है। स्त्री पुरुष किसी एक आख्यायिका पर, किसी एक इतिहास पर, किसी एक कविता पर वाग्विलास करते हुए यहां कम देखे जाते हैं। दोष अपनी हिन्दी भाषा से उदासीन कुछ पुरुषों का है। स्त्रियों से यह आशा करनेकी अपेक्षा कि वे विदेशीय भावों को घोल कर पी जांय इन कर्तव्यविमूढ़ पुरुषों के लिये स्वदेशीय साहित्य की ओर ध्यान देना अधिक उचित है। हे समाज सुधार की पुकार मचाने वालो! तुमने कभी इस दोरंगेपन पर भी ध्यान दिया है? जान रक्खो कि जब तक देशी साहित्य के संचार से परिवार में भावों का सम्मेलन न होगा तब तक ये लोग अपने गार्हस्थ्य जीवन से शक्ति, उत्साह और प्रफुल्लता नहीं प्राप्त कर सकते। अब से तुम हिन्दी भाषा को फैलाना अपना कर्तव्य समझो और समाजका इस विपत्ति से उद्धार करो।

उर्दू के लेखक भी अपने बेढंगेपन को अब देखने लगे हैं। अभी उस दिन उर्दू साहित्य-सम्मेलन के सभापति ने उर्दू शायरी पर देशी रंगत चढ़ाने की तजवीज़ बतलाई थी। पर भाइयो! "कोयल के नग़मों" और "कदम्ब के गुंचों" से तो और भी बचना चाहिए। मेरा अभिप्राय यह कदापि नहीं कि विदेशी साहित्य का अध्ययन न किया जाय। मेरी बिनती इतनी ही है कि अपना भाषा सम्बन्धी अस्तित्व मत खो दो, अपने कई सहस्र वर्षों के संचित भावों को तिलाञ्जलि मत दो।

ऊपर हम अपनी सामाजिक हानि दिखला चुके। कहना न होगा कि जो लोग अपने परिवार के मेल में नहीं वे जन संख्या की सहानुभूति से कितनी दूर जा पड़े होंगे! वे सर्वसाधारण के हृदय को कैसे स्पर्श कर सकते होंगे? उनके अक्षर, उनकी बोली तथा उनकी धारणाओं का सहारा लिये बिना वे उन पर क्या प्रभाव डाल सकते हैं? अपने और प्रान्तों के भाइयों से जो भाषा सम्बन्ध था उसे तोड़ ये उर्दू को सर्वस्व मानने वाले लोग क्या बन गए इसे मैं अपने पिछले लेखों में दिखला चुका हूं। अतः राजनैतिक सम्प्रदाय के लोगों का भी परम धर्म है कि वे इस भाषा सम्बन्धी एकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को नष्ट न होने दें और चट पट हिन्दी के प्रचार में लग जायं ।

धर्म्मसम्बन्धी सभाओं के लिये भी हिन्दी के द्वारा काम करना परम आवश्यक है । इस बात को ईसाई लोगों ने बहुत जल्दी समझा और अपनी पुस्तकें और पैम्फलेट आदि हिन्दी में छपवा कर अपनी शिक्षाओं का प्रचार किया । देखिए, इनके भजन देश के प्रचलित भावों को लिए हुए कैसे देशी ढंग पर बने होते हैं । यदि मुसल्मान लोग भी इसी मार्ग का अनुसरण करें और हिन्दी की ओर ध्यान दें तो उनके बहुत से भाई अपने धर्म की अमूल्य शिक्षाओं से वंचित न रहें । सनातन धर्म्म और आर्य्य समाज के प्रचारकों से भी हमारी इतनी प्रार्थना है कि वे अब हिन्दी की उन्नति के उपायों को भी अपनी कार्यावली में सम्मिलित करें ।

अब हम अन्त में अपने हिन्दी प्रेमी भाइयों की ओर आते हैं जिन्होंने उसकी उन्नति का बीड़ा उठाया है । उनके ध्यान देने की बात यह है कि हिन्दी अभी ऐसे मार्ग पर नहीं आ गई कि आप लोग उसे समय के आधीन छोड़ कर किनारे हो जायं । इस से मेरा यह तात्पर्य नहीं कि हिन्दी में अच्छी पुस्तकें नहीं बन रही हैं, समाचारपत्र नहीं निकल रहे हैं; मैं केवल यह कहना चाहता हूं कि उस के प्रचार के लिये उस ज़ोर शोर के साथ उद्योग नहीं हो रहा है जिस के साथ पहिले हो गया । उस के मार्ग की बाधाओं को हटाने का यत्न यथेष्ट नहीं देखने में आता । यही कारण है कि हिन्दी में अच्छी पुस्तकें भी छपती हैं, समाचारपत्र भी निकलते हैं, पर जितने आदमियों के हाथों में उन्हें जाना चाहिए उतने आदमियों के हाथ में वे नहीं पहुंच पाते । इस प्रकार प्रकाशकों और लेखकों का उत्साह ढीला रहता है । अस्तु, नीचे लिखी बातों का चाहे जिस प्रकार हो प्रबंध करना चाहिए ।

(१) उपयुक्त स्थानों पर हिन्दी पुस्तकों की लाइब्रेरी और दूकान खोलना ।

(२) अंग्रेज़ी स्कूलों में छात्रों को दूसरी भाषा हिन्दी लेने के लिये वृत्ति आदि द्वारा उत्साहित करना ।

(३) घूम घूम कर हिन्दी की उपयोगिता पर व्याख्यान देने वालों का प्रबंध करना ।

(४) प्रजा को चेताना कि अदालत में दरख़ास्तें आदि हिन्दी में भी पड़ सकती हैं तथा हिन्दी में अधिक दरख़ास्तों के पड़ने का प्रबंध ।

(५) सरकार से प्रार्थना करना कि अदालत के मुहर्रिर लोग समन और डिगरी की नक़ल आदि हिन्दी में भी लिखा करें ।

(६) राजा महाराजाओं से अपने दरबार में हिन्दी को आश्रय देने और उसके साहित्य का पोषण करने के लिये अपील करना ।

(७) हिन्दी नाटकों का घूम २ कर अभिनय करने वाली व्यवसायी मंडलियों का स्थापन ।

——:o:——

बंगाल में उर्दू ।

बंगाल के कुछ थोड़े से मुसल्मान लोग स्वजातीय लोगों को बंगला छोड़ कर उर्दू लिखने और बोलने की सलाह दे रहे हैं । इस का वहां के "मुसल्मान" नामक पत्र ने एक बड़ा लेख लिख कर कड़ा विरोध किया है । वह लिखता है "उर्दू हमारी मातृभाषा का स्थान नहीं पा सकती । हम लोग बंगाली मुसल्मान हैं अतः हमें यह कहने में कुछ भी लज्जा नहीं कि हमारी मातृभाषा बंगला है जो कि अब इतनी समृद्ध और चित्ताकर्षक हो गई है । यद्यपि कुछ ऐसे मुसल्मान हैं जो अपनी मातृभाषा का मूल्य नहीं समझते हैं पर बहुत से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसे भी हैं जो उससे पूरा प्रेम रखते हैं । ....
बङ्गाली मुसल्मान भीतर बाहर सर्वत्र बङ्गला ही बोलते हैं । यदि थोड़ी देर के लिये मान भी लें कि उर्दू हमारी मातृभाषा बन सकती है तो भी बड़ी २ कठिनाइयां दिखाई देती हैं । हिन्दू लोग तो बराबर अपनी मातृभाषा बङ्गला ही बोलते जायंगे अतः मुसल्मान लोग अपनी भाषा को भिन्न करके कै घड़ी काम चला सकते हैं? हिन्दू और मुसल्मान एक दूसरे की बोली न समझ सकें यह कितनी बड़ी आफ़त है । अदालत और जमींदारी आदि के कारबार सब बंगला में होते हैं । बंगला का साहित्य उर्दू से कहीं अधिक उन्नत है और उसमें मुसल्मानी धर्म्म की पुस्तकें भी बन गई हैं । प्रारम्भिक शिक्षा के लिये मुसल्मान लेखकों ने भी बंगला की पुस्तकें लिखी हैं जिन में से कुछ टेक्स बुक कमेटी द्वारा स्वीकृत भी हुई हैं । अतः मुसल्मान बालकों को अब आरंभ में केवल राम, श्याम, काली के ही नाम नहीं वरन् मुहम्मद, अली, हसन, हुसैन के नाम भी पढ़ने पड़ेंगे ।" पूर्वीय बंगाल की मोहमडन एजुकेशन कानफ़रेंस के विगत अधिवेशन के सभापति मौलवी तसलीमुद्दीन अहमद बी० यल० ने भी अपनी मातृभाषा बंगला पर बड़ी उत्तेजनापूर्ण भाषा में महत्व प्रगट किया था । .

प्रेरितपत्र ।

गुहिलोतों की उत्पत्ति ।

(१)

श्रीमान् संपादक नागरीप्रचारिणी पत्रिका ।
काशी

महाशय ।

निम्नलिखित नोट को सर्वसाधारण की सूचना के लिये कृपा कर नागरी प्रचारिणी पत्रिका की आगामी संख्या में प्रकट कीजियेगा ।

"नागरी प्रचारिणी पत्रिका" ता० १५ मार्च सन् १९१० के पृ० ३९ में "महाराणा उदयपुर का ब्राह्मणक्षत्रिय होना" इस लेख में एक "इतिहास प्रेमी" ने मेरे विषय में जो कुछ लिखा है वह केवल द्वेषबुद्धि से लिखा गया है और उसमें सत्यता का लेश भी नहीं है क्योंकि मैंने उक्त विषय में किसी पुस्तक वा लेख द्वारा अपनी सम्मति अब तक प्रकट ही नहीं की । मि० भांडारकर एम० ए० महाशय ने मेरे पुस्तकालय से "एकलिंगमाहात्म्य" और "मूंता नेणसी की ख्यात" ये दो प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकें देखने के लिये मंगवाईं जो मैंने उनके पास भेजीं । इससे उन्हों ने केवल सभ्यता के खातिर अपने लेख में मेरे लिये धन्यवाद प्रकट किया है ।

पण्डित मोहनलाल जी विष्णु लाल पंड्या ने अपने पत्र में लिखा कि "पं० गौरीशंकर और मिस्टर भंडारकर का कथन बिलकुल अयुक्त है" मुझे इस बात का आश्चर्य है कि पंड्या जी जैसे विचारवान पुरुष इस विषय में मेरे एक अक्षर भी लिखने के पूर्व मेरे कथन का उल्लेख करने को कैसे उद्यत हुए । अनुमान होता है कि पंड्या जी ने मेरे पुस्तकालय के प्राचीन पुस्तकों में जो कुछ लिखा हो उसे मेरा ही कथन मान लिया हो । मेरी पंड्या जी से यह प्रार्थना है कि वे कृपा कर सर्वसाधारण की जानकारी के लिये यह बात "नागरी प्रचारिणी पत्रिका" द्वारा शीघ्र प्रकट करदें कि उन्हों ने इस विषय का मेरा लेख कहां देखा और यदि देखा हो तो जिस पुस्तक में वह छपा हो उसका नाम और पृष्ट लिख कर सर्वसाधारण का भ्रम दूर करें ।

अजमेर
ता० २९-४-१९१०

भवदीय,
गौरीशंकर हीराचंद ओझा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाशय ।

मेरा ध्यान 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' की ता० १५ मार्च सन् १९१० की संख्या पर आकर्षित हुआ है जिसमें 'एक इतिहास प्रेमी' ने गुहिलोतों के विषय के मेरे लेख पर कुछ लिखा है ।

मुझे आपके पत्र के द्वारा 'इतिहास प्रेमी,' उनके मित्र पण्डित मोहन लाल पंड्या और ऐसे विषयों के अनुरागी सभी विद्वानों से यह प्रार्थना करनी है कि उस लेख में जो त्रुटियां जान पड़ें उनका युक्ति पूर्वक खण्डन करें । जो कोई महाशय मेरा भ्रम हटा सकेंगे वे केवल मेरा ही उपकार न करेंगे परन्तु साहित्य और विज्ञान की बढ़ती और सचाई में सहायक होंगे ।

अब तक जो प्रमाण मिले हैं उनसे यह निर्विवाद सिद्ध है कि गुहिलोत ब्रह्मक्षत्रिय थे, अर्थात् बंश का स्थापक नागर ब्राह्मण था और कर्म से उनका बंश क्षत्रियों में मिल गया । इतिहास विश्वास और हठ को नहीं मानता, सत्य और खोज को मानता है ।

मोहन लाल जी विष्णु लाल पंड्या मेरे लेख को "बिलकुल अयुक्त" बतलाने के साथ साथ उसके प्रमाणों का खण्डन करना स्वीकार करते हैं परन्तु साथ ही मेरे दूसरे लेख की प्रतीक्षा में समय टालना चाहते हैं । इस वास्ते मैं उन्हें यह सूचित करना उचित समझता हूं कि मेरे दूसरे लेख का इस लेख से कोई सम्बन्ध न होगा । उसमें केवल मेवाड़ का मुसलमानों के पूर्व का संक्षिप्त इतिहास लिखा जायगा और वह बहुत समय पीछे तयार होगा । पंड्या जी इसलिये कृपा पूर्वक उसकी प्रतीक्षा न करके इसी का खण्डन शीघ्र लिखें ।

अजमेर
ता० २८ एप्रिल १९१०

भवदीय
देवदत्त रामकृष्ण भांडारकर

प्राचीन हिंदी पुस्तकों की खोज ।

(आवश्यक प्रार्थना)

नागरी प्रचार और हिन्दी उन्नति के विषय में सभा की ओर से जो कार्य्य हुए वा हो रहे हैं उन्हें पाठक महाशय भली भांति जानते हैं ।

उन्हीं कार्यों में से प्राचीन हस्त लिखित पुस्तकों की खोज भी है जिसका पूरा विवरण वार्षिक विवरण में रहता है । इससे पाठकगण अनभिज्ञ न होंगे और वे इस कार्य्य की उपयोगिता और महत्व को भली भांति जानते होंगे । अस्तु इस महान कार्य्य के लिये एक महाशय रक्खे गये हैं जो प्रत्येक नगर में जाकर इस कार्य्य को करते हैं । उसी क्रम से कार्य्य करते हुए आज काल ये काशी में हैं । यहां (काशी में) संस्कृत के तो बहुत से प्राचीन ग्रन्थ हैं ही साथ ही इसके हिन्दी के भी बहुत होने की आशा है । परन्तु अभी तक कुछ अच्छा पता नहीं चला है । इसी से काशी के सभासदों से प्रार्थना है कि यदि उनके यहां अथवा उनकी जान में किसी अन्य महाशय के यहां इस भांति के ग्रन्थ हों तो वे कृपा कर सभा को सूचित करें ।

साथ ही यह भी प्रार्थना है कि यह सूचना ३० जून १९१० तक आजानी चाहिए जिसमें खोजी का अधिक समय व्यय न हो ।

हिन्दी व्याकरण ।

कई वर्ष से इस पुस्तक के बनाने की सूचना सभा की ओर से दी जा रही है परंतु अब तक कोई ग्रंथ संतोष जनक सभा में नहीं आया । इससे दुःख होता है कि ऐसी उपयोगी पुस्तक बनाने की ओर हिन्दी रसिकों की कुछ भी रुचि नहीं है । अब इस पुस्तक के भेजने का समय ता० ३१ दिसम्बर १९१० तक बढ़ा दिया गया है । आशा है कि हिन्दी के प्रेमी उत्साह कर के अवश्य इसके बनाने में उद्योग करेंगे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी शीघ्र लेख परीक्षा।

पत्रिका के गत अंक में प्रकाशित किया गया था कि "रेखाक्षर" (Hindi Short Hand) की पुस्तक छपकर सभा में आ गई है। कई वर्ष के उद्योग के उपरान्त यह पुस्तक अब इस योग्य हुई है कि इस में उत्साही महाशय अभ्यास कर के हिन्दी तथा अन्य देशी, उर्दू, मराठी, गुजराती, बंगला इत्यादि भाषाओं की वक्तृतायें जो हिन्दी वर्णमाला में लिखी जा सकती हैं सफलता के साथ लिख सकें। समयानुसार इस में अभ्यास करने की बड़ी ही आवश्यकता है। अन्यत्र यह भी सूचना दी गई है कि आगामी आश्विन नवरात्र में सभा की ओर से हिन्दीसाहित्यसम्मेलन होने वाला है। इस अवसर पर उक्त सम्मेलन की वक्तृताओं को पूरा पूरा लिखना कैसा आवश्यक है। परन्तु जब तक इस लेख प्रणाली में कोई महाशय अभ्यस्त न हों तब तक इस की कोई भी आशा नहीं की जा सकती। क्याही अच्छा अवसर है। उत्साही सज्जनों से प्रार्थना है कि इस का अभ्यास करें और उक्त सम्मेलन के समय वक्तृताओं को सफलता से लिख कर सहायता करें। जो महाशय सब से अच्छी सफलता प्राप्त करेंगे उनको उत्साहवर्द्धक पारितोषिक भी दिया जायगा—

गौरी शंकर प्रसाद।
मंत्री।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन।

हिन्दी के प्रेमियों, लेखकों और समाचार पत्रों से प्रार्थना।

महाशयो,

इधर कुछ दिनों से इस बात पर बहुत कुछ लिखा पढ़ी हो रही है कि हिन्दी साहित्य सेवियों का एक सम्मेलन होना चाहिए। हिन्दी प्रेमियों की यह इच्छा हुई है कि इस कार्य को यही सभा उठावे। सभा इस सम्मेलन की आवश्यकता और उपयोगिता को स्वीकार करती है और उसने निश्चय किया है कि आगामी आश्विन नवरात्र में यह सम्मेलन काशी में किया जाय। इस सम्बन्ध में मैं आपका ध्यान १ मई की प्रबन्धकारिणी सभा के कार्यविवरण पर, जो अन्यत्र छपा है दिलाता हूं। आप से प्रार्थना है कि कृपाकर निम्नलिखित प्रश्नों पर अपनी सम्मति ३१ मई तक सभा के पास भेजकर अनुगृहीत करें। इस सम्बन्ध में आपका ध्यान इसी संख्या में छपे "हिन्दी साहित्य सम्मेलन" शीर्षक लेख पर दिलाया जाता है।

(१) आश्विन नवरात्र की किस तिथि को इस सम्मेलन का अधिवेशन होना चाहिए?

(२) इस सम्मेलन का सभापति कौन चुना जाय?

(३) इस सम्मेलन में किन किन विषयों पर विचार किया जाय?

जो महाशय इस सम्मेलन में सम्मिलित होने की इच्छा रखते हों वे कृपाकर सभा को सूचना दे दें जिसमें इसके सम्बन्ध की सब आवश्यक सूचनाएं उनके पास बराबर भेजी जाया करें। जो सभाएं अपने प्रतिनिधि भेजा चाहैं वे भी कृपाकर सूचना दें।

इस सम्मेलन के लिये १०००) रु० के व्यय का अनुमान किया गया है। आशा है कि हिन्दी के प्रेमी मात्र आर्थिक सहायता देने की कृपा करेंगे

——:o:——

सभा के नियमानुसार सब सभासदों से प्रार्थना है कि आगामी वर्ष के चुनाव के लिये यदि उन्हें कुछ प्रस्ताव करना हो तो वे कृपा कर उसकी सूचना ३१ मई १९१० तक मेरे पास भेज कर अनुगृहीत करें जिसमें सभा उन प्रस्तावों पर विचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर भिन्न भिन्न पदों के लिये सभासदों को अंकित करे । चुनाव नीचे लिखे पदों के लिए होगा ।

एक सभापति

दो उपसभापति

एक मंत्री-काशीस्थ ।

एक उपमंत्री-काशीस्थ ।

प्रबन्धकारिणी समिति के बारह नगरस्थ सभासद,

,, ,, ,, दो बाहरी संयुक्त प्रांत से ।

,, ,, ,, एक बंगाल से ।

,, ,, ,, एक बिहार से ।

,, ,, ,, एक मध्य प्रदेश और बरार से ।

,, ,, ,, एक मध्य भारत से ।

,, ,, ,, एक राजपुताना से ।

,, ,, ,, एक पंजाब से ।

,, ,, ,, एक बम्बई से ।

डाक्टर छन्नूलाल मेमोरियल मेडल ।

यह सोने का मेडल उस व्यक्ति को दिया जायगा जिसका लेख "शिशुपालन" पर सब से उत्तम होगा । लेख सरल हिन्दी में होना चाहिए और सभा के पास ३१ दिसम्बर १९१० तक आजाना चाहिए ।

गौरीशंकर प्रसाद ।
मंत्री ।

सभा का कार्यविवरण ।

साधारण अधिवेशन ।

शनिवार ता० २ अप्रैल १९१० सन्ध्या के ५½ बजे ।

स्थान-सभाभवन ।

(१) पं० कृष्णाराम मेहता के प्रस्ताव तथा बाबू गौरी शंकर प्रसाद के अनुमोदन पर बाबू जुगल किशोर सभापति चुने गए ।

(२) गत अधिवेशन (ता० २६ फरवरी १९१०) का कार्य्य विवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ ।

(३) निम्न लिखित सज्जन सभासद चुने गए ।

१ बाबू शिवचरन सिंह मुख्तार सीतामढ़ी १॥) २ बाबू अम्बिका प्रसाद कल्यानपुर पो० रुनी सैयदपुर जि० मुज़फ्फरपुर १॥) ३ बाबू परमेश्वर दयाल मुख्तार सीतामढ़ी जि० मुजफ्फरपुर १॥) ४ श्री रामायण शरण ठाकुर दयाल बी० ए० बी० एल० मुंसिफ सीतामढ़ी ३) ५ राज कुमार गिरिजा नन्दन सिंह पो० शिवहर जि० मुजफ्फर पुर ५) ६ बाबू द्वारका प्रसाद पेशकार मुंसफी सीतामढ़ी १॥) ७ बाबू राजनारायण मुंसिफ सीतामढ़ी १॥) ८ बाबू राम बहादुर सिंह मुख्तार सीतामढ़ी मुजफ्फरपुर १॥) ९ कुंवर जोगेन्द्रपाल सिंह बी० ए० डिप्टी कलेक्टर बदायूं ४) १० बाबू अम्बिका प्रसाद सिंह क्लार्क विजयानगरम् स्टेट आफिस बनारस १॥) ११ पं० गंगा प्रसाद पांड़े पो० भदान-जि० मैनपुरी ५) १२ बाबू राजेन्द्र प्रसाद १८ मिरजापुर स्ट्रीट कलकत्ता १॥) १३ बाबू रामदास भगत नलहटी--वीरभूम १॥) १४ बाबू लाहौरीलाल पुरानो गंज-मुंगेर-१॥) १५ बाबू द्वारका प्रसाद मडर सादिपुर, मुंगेर १॥) १६ पं० सुरेन्द्र वंशलाल मिश्र, क्लार्क स्कूल मुंगेर ३) १७ बाबू देवकीनन्दन सिंह मुख्तार मुंगेर ३) १८ बाबू परमेश्वर प्रसाद कर्ण मुख्तार माधोपुर मुंगेर १॥) १९ पण्डित गौरीशङ्कर शर्मा, आर्य-समाज मुंगेर १॥) २० मिस्टर डी० एस० डी० एन वर्म्मा-मिर्जापुर-दर्भंगा १॥) २१ बा० राजेन्द्र नारायण सिंह-सरस्वती दर्भंगा १॥) २२ बा० रामनिहोरा सिंह-वकील लहरिया सराय ३) २३ बा० भगवानदास C/o राधाकृष्ण रामनिरंजनदास दर्भंगा १॥) २४ बा० प्रद्युम्नलाल सेन्ट्रल वाएज एसोसिएशन, कटकी बाजार दर्भंगा ५) २५ बा० बजरंग बिहारी लाल मेनेजर दर्भंगा ट्रेडिंग कम्पनी गुल्लोबाड़ा दर्भंगा १॥) २६ बा० झुन्नालाल साहु बंगलागढ़ दर्भंगा १॥) २७ पं० विष्णुदत्त चौबे-हेड पण्डित सरस्वती एकडमी दर्भंगा १॥) २८ पं० यदुनन्दन मिश्र जुराबनसिंह दर्भंगा १॥) २९ बा० कृष्णावलम्बित सूर्यदेवनारायण वर्मा मुकाम जुराबन सिंह दर्भंगा १॥) ३० बा० हरकृष्ण लाल पानिआं स्थान दर्भंगा १॥) ३१ पं० लाल झा मास्टर वाटसन हाई स्कूल दर्भंगा १॥) ३२ बा० नागेश्वर नाथ-नागेश्वरप्रेस काशी १॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(४) सभासद होने के लिये चार महाशयों के नवीन आवेदन पत्र सूचनार्थ उपस्थित किए गए।

(५) निम्नलिखित पुस्तकें धन्यवाद पूर्वक स्वीकृत हुईं १ संयुक्त प्रदेश की गवर्नमेंट-District Gazetteer of Saharanpore, Educational code of the United Provinces of Agra and Oudh for 1910, Annual Progress Report of the Archaeological Survey for the year ending 31st March 1909 २ बा० जीवन दास चौखंभा काशी-कुसुमकुमारी, कामिनी कुसुम नाटक, ३ पं० छेदी मिश्र पितरकुंडा काशी-A Companion to English Grammar Parts I and II. ४ मुंशी महावीरप्रसाद आनंद द्दरी नई बस्ती काशी-नई जंत्री ५ एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल कलकत्ता-Sea Fishing by Dr. Travis Jenkins, Journal and Proceedings of the Asiatic Society of Bengal Vol. V Nos. 67 for June and July 1909. ६ बा० महानन्द सब डिप्टी इन्स्पेक्टर आफ स्कूल्स इलाहाबाद-महानन्द बालबोधिनी १ प्रति ७ पं० छन्नूलाल पाठक काशी-नयनामृत प्रवाह, ८ श्रीमान् राजा फतह सिंह वर्म्मा-पुवायां-फलित ज्योतिष-सिद्धान्त गुटिका २ प्रति, ९ लाला भगवानदीन काशी-धर्म्म मर्यादा, १० स्वामी सतगुरु प्रसाद शरण, श्री गुरुराम जी पुस्तकालय, गोंडा-श्री हिरण्यनद माहात्म्य, ज्ञान वैराग्य ११ बा० मदन गोपाल एम० ए० मेनेजर चांद, लाहोर-स्फूगरी १२ ठाकुर प्रसिद्धनारायण सिंह बी० ए० काशी-सुनीति गीतावली। परिवर्तन में प्राप्त-तुलसी कृत रामायण अयोध्याकांड, नई राजनीति भाग १ और २, अंकगणित, बीजगणित, कर्मयोग, सीता-वनवास, बजरंगविजय रामायण आरण्य और किष्किन्धा कांड, गुप्त व्यापार शिक्षक, भारत नररत्न चरितावली, विश्वविद्या भंडार, जड़ी बूटी, भावी विचार, इलाज मुफ्ती, पर लोक, चरित्र संग्रह, कानून सार, वृक्षावली, वकील, हर फ़न मौला, सोने की चिड़िया, English teacher, अहिबल चक्रम् Indian Antiquary for March 1910

(६) पं० शालिग्राम शर्मा, जहानाबाद, गया का इस्तीफा उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ।

(७) मंत्री ने मुंशी प्रसादी लाल मुख्तार बुलन्दशहर की मृत्युकी सूचना दी जिस पर सभाने शोक प्रगट किया।

(८) पं० केदारनाथ पाठक ने नियम (४३) १० के अनुसार कह कर सभा के विचारार्थ एक पत्र उपस्थित किया निश्चय हुआ कि यह नियमानुसार मंत्री के द्वारा उनकी सम्मति के सहित आगामी अधिवेशन में उपस्थित किया जाय।

(९) मुंशी भगवान दीन के प्रस्ताव पर निश्चय हुआ कि यदि कोई महाशय सभा के साधारण अधिवेशन में कोई वक्तृता देना चाहें तो सभा के अधिवेशनों में उसके लिये सहर्ष प्रबन्ध हो सकता है।

(१०) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

गौरीशंकर प्रसाद मंत्री।

प्रबन्धकारिणी सभा।

शनिवार ता० २ अप्रैल १९१० सन्ध्या के छ बजे

स्थान-सभाभवन।

उपस्थित।

बाबू जुगलकिशोर सभापति, पण्डित कृष्णाराम मेहता बी० ए० एल० एल० बी०, गोस्वामी रामपुरी, बाबू गौरीशंकर प्रसाद बी० ए०, एल० एल० बी० और बाबू गोपालदास।

(१) पण्डित कृष्णाराम मेहता के प्रस्ताव और बाबू गौरीशंकर प्रसाद के अनुमोदन पर बाबू जुगलकिशोर सभापति चुने गये।

(२) गत अधिवेशन (ता० २४ जनवरी १९१०) का कार्य विवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ।

(३) आज के अधिवेशन के कार्य के सम्बन्ध में बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए०, पण्डित श्यामबिहारी मिश्र एम० ए० और पण्डित माधवप्रसाद पाठक की सम्मतियां उपस्थित की गईं।

(४) बाबू गोपालकृष्णदास का १२ फरवरी का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि सभा उनका ६०००) रु० ब्याज के सहित एक सप्ताह के भीतर चुका दे। साथ ही बा० जुगल किशोर का पत्र उपस्थित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया गया कि ७) रु० सैकड़े वार्षिक ब्याज पर बनारस बंक सभा को रुपया देने के लिये तयार है पर इसके अतिरिक्त वे रुपये का और कोई प्रबन्ध नहीं कर सके ।

निश्चय हुआ कि मंत्री को अधिकार दिया जाय कि वे जहां तक कम सूद में हो सके रुपया लेकर बा०गोपाल कृष्ण दास का रुपया चुका दें ।

(५) डाक्टर महेन्दुलाल गर्ग का पोस्टकार्ड उपस्थित किया गया जिस में उन्होंने पूछा था कि जिस लेख के लिये सभा पारितोषिक वा मेडल देती है उसे वह अपनी सम्पत्ति क्यों मान लेती है। यदि मेडल प्राप्त लेख को लेखक भी स्वयं प्रकाशित करे अथवा उसका कापीराइट बेचे तो क्या सभा उसको दण्डनीय समझेगी ।

निश्चय हुआ कि सभा की सम्मति में ऐसे लेखों को प्रकाशित करने का प्रथम स्वत्व सभा का ही होना चाहिये पर यदि कोई लेखक उसे स्वयं प्रकाशित करना चाहे तो सभा से आज्ञा ले कर वह ऐसा कर सकता है ।

(६) बा० दामोदरसहाय सिंह का १४ मार्च १८१० का कार्ड उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने प्रस्ताव किया था कि लेखमाला के उन लेखकों को जो द्रव्याभाव से उसे न खरीद सकते हों, लेखमाला बिना मूल्य दी जाय ।

निश्चय हुआ कि ऐसे लेखकों को लेखमाला एक वर्ष तक बिना मूल्य दी जाया करे ।

(७) "स्त्रियों के रोग" पर मिस्टर जी० एल० उपाध्याय, पण्डित शारदा प्रसाद मिश्र और पण्डित महादेव प्रसाद मिश्र के लेख उपस्थित किए गए ।

निश्चय हुआ कि इन की परीक्षा के लिये निम्नलिखित सज्जनों से प्रार्थना की जाय अर्थात् डाक्टर अमरनाथ बेनर्जी, पण्डित केशवदेव शास्त्री और डा० ईशानचन्द्र राय ।

(८) सभा द्वारा छपने के लिये निम्नलिखित लेख लेखमाला के सम्पादक की सम्मति के सहित उपस्थित किए गए अर्थात् (१) पण्डित केदारनाथ पाठक लिखित "बोपदेव" शीर्षक लेख और (२) उन्हीं का भेजा हुआ "लेखक और नागरी लेखक" शीर्षक लेख ।

निश्चय हुआ कि ये लेखमाला में प्रकाशित किए जायं ।

(९) बा० माधवप्रसाद का ८ फरवरी का पत्र उपस्थित किया गया जिस में उन्होंने लिखा था कि वे वनिताविनोद के दूसरे संस्करण की प्रतियां अभी से नहीं खरीद सकते पर वनिताविनोद का कापीराइट १००) रु० पर और बङ्गविजेता का ५०) रु० पर खरीद सकते हैं । साथ ही इस सम्बन्ध में बा० श्यामसुन्दर दास जी की सम्मति भी उपस्थित की गई ।

निश्चय हुआ कि सभा की सम्मति में उक्त पुस्तकों के कापीराइट का मूल्य क्रमात् २००) रु० और १००) रुपया होना चाहिए । अत: बा० माधवप्रसाद से पूछा जाय कि क्या वे इतने मूल्य पर इसे ले सकते हैं अथवा इनके नियत मूल्य का चतुर्थांश सभा को देने के नियम पर केवल पांच वर्ष के लिये कापीराइट ले सकते हैं ।

(१०) निश्चय हुआ कि शीघ्र लिपि प्रणाली नामक पुस्तक का मूल्य एक रुपया नियत किया जाय और यह सभासदों को अर्द्धमूल्य पर दी जाय ।

(११) रेवरेण्ड ई० ग्रीव्स का १६ फरवरी का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने इङ्गलैण्ड चले जाने के कारण प्रबन्धकारिणी सभा तथा उपसभापति के पद से इस्तीफा दिया था ।

निश्चय हुआ कि यह साधारण सभा में उपस्थित किया जाय ।

(१२) पण्डित माधव प्रसाद पाठक का २७ फरवरी का कार्ड उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने इलाहाबाद चले जाने के कारण प्रबन्धकारिणी सभा से इस्तीफ़ा दिया था पर लिखा था कि यदि सभा चाहे तो वे वहां रह कर भी ग्रन्थमाला और लेखमाला का सम्पादन कर सकते हैं ।

निश्चय हुआ कि प्रबन्धकारिणी सभा में उनके स्थान पर एक सभासद के चुनाव के लिये यह पत्र साधारण अधिवेशन में उपस्थित किया जाय और ग्रन्थमाला तथा लेखमाला के सम्पादक पण्डित माधव प्रसाद पाठक जी ही रहें ।

(१३) मंत्री ने सूचना दी कि सभा के तारीख १३ दिसम्बर १९०९ के निश्चय नं० ८ के अनुसार जिन सभासदों को सूचना दी गई थी उनमें से निम्नलिखित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभासदों ने अब तक अपना चन्दा नहीं दिया पर आशा है कि इन में से पण्डित प्यारे लाल मिश्र का चन्दा शीघ्र आ जायगा।

(१) पण्डित जीवन राम शर्म्मा काशी ३॥) (२) बाबू लाल चन्द कपूर काशी ४) (३) स्वामी आत्मानन्द सरस्वती करांची ८) रु० (४) मिस्टर आर० बी० दवे काठियावाड़ ८) (५) बाबू गंगा प्रसाद मोहर्रिर माल शाहाबाद जिला हरदोई ४॥) (६) राजकुमार छोटे नारायण सिंह गया ८) (७) लाला नन्दलाल शाह मल्लीताल नैनीताल ४॥) (८) बाबू नारायणी प्रसाद मकरुद्दपुर स्टेट गया ८) (९) बाबू परमहूराम रसड़ा बलिया ८) (१०) पण्डित प्यारे लाल मिश्र लन्दन ८) (११) पण्डित प्रयाग नारायण त्रिवेदी सफदर गंज जिला बाराबंकी ४॥) (१२) पण्डित विश्वनाथ शर्म्मा काला महल के पास मथुरा ४॥) (१३) बाबू भगवती प्रसाद पो० बरहलगंज जिला गोरखपुर ४॥) (१४) पण्डित राधाकृष्ण जोशी गवर्न्मेंट सेक्रेटरियट नैनीताल ४॥) (१५) बाबू लक्ष्मण दास हिन्दू बोर्डिङ्गहाउस इलाहाबाद ८) (१६) पुरोहित लक्ष्मीनारायण शर्म्मा बी० ए० जैपुर सदन आबू ७॥) (१७) बाबू सवाई रामठेकेदार रकाबगंज फैजाबाद ८) (१८) ठाकुर हनुमान सिंह बरहापारा रायपुर ८) (१९) बाबू जितेन्द्र नाथ बसू २ कार्नवालिस स्ट्रीट कलकत्ता १५)

निश्चय हुआ कि पण्डित प्यारे लाल मिश्र को छोड़ कर शेष महाशयों का नाम सूची "ख" में लिखा जाय और यदि पं० प्यारे लाल मिश्र का चन्दा जून १९१० के अन्त तक न आ जाय तो उनका नाम भी उसी सूची में लिखा जाय।

(१४) निश्चय हुआ कि इस वर्ष के लिये डा० छन्नूलाल मेमोरियल मेडल के लिये "शिशुपालन" का विषय नियत किया जाय।

(१५) स्वामी दयाराम का फाल्गुण बदी ५ का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि दादू दयाल की बानी और दादू दयाल के सबद नाम की जो पुस्तकें सभा द्वारा प्रकाशित हुई हैं आदि से अन्त पर्यन्त अशुद्ध हैं और सबद की भूमिका अत्यन्त झूठी है। इनके प्रकाशित करने से सभा ने उन की सम्प्रदाय को व्यर्थ सताया है। अतः सभा इन पुस्तकों की सब प्रतियां नष्ट कर दे और १५ दिन के भीतर उन्हें उत्तर दे।

निश्चय हुआ कि स्वामी दयाराम जी को दादू दयाल की बानी और दादू दयाल के सबद की एक एक प्रति भेजी जाय और उनसे प्रार्थना की जाय कि इन पुस्तकों में जो अशुद्धियां हों उन्हें वे ठीक कर दें तो सभा उन पर विचार करे।

(१६) संयुक्त प्रदेश तथा ग्वालियर की हस्तलिपि परीक्षा के पर्चे उपस्थित किए गए।

निश्चय हुआ कि इनकी परीक्षा के लिये निम्नलिखित महाशयों की सब कमेटी बना दी जाय अर्थात् गोस्वामी रामपुरी, पण्डित कृष्णाराम मेहता और बा० गौरीशंकर प्रसाद।

(१७) पण्डित रामनारायण मिश्र का ५ मार्च का पत्र उपस्थित किया गया जिस में उन्होंने प्रस्ताव किया था कि सभा ने जो यह निश्चय किया है कि पत्रिका के सम्पादक की सम्मति सभा की सम्मति न समझी जाय इस से यह तात्पर्य न समझा जाय कि सम्पादक को सभा के कार्यों और उद्देश्यों के विपरीत कोई लेख लिखने का अधिकार है।

निश्चय हुआ कि इस सम्बन्ध में सभा पण्डित राम नारायण मिश्र के विचारों से सहमत है।

(१८) संयुक्त प्रदेश के शिक्षा विभाग के डाइरेक्टर का ८ मार्च का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने सूचना दी थी कि गवर्न्मेंट ने सन् १९०६—०८ की त्रै-वार्षिक रिपोर्ट के लिये सभा को उतनी छपाई देना स्वीकार किया है जितना कि उसका २०० पृष्ट की रिपोर्ट की १५० प्रतियों के छपवाने में व्यय होता है।

(१९) हिन्दी पुस्तकों के खोज की सन् १९०९ की रिपोर्ट उपस्थित की गई।

निश्चय हुआ कि यह स्वीकार की जाय और गवर्न्मेंट के पास भेज दी जाय।

(२०) मंत्री ने सूचना दी कि व्याकरण भेजनेकी अवधि सभा ने ३१ मार्च १९१० तक नियत की थी पर अब तक केवल बाबू गंगा प्रसाद का एक छोटा सा व्याकरण सभा में आया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निश्चय हुआ कि इसकी अवधि ३१ दिसम्बर १८१० तक बढ़ा दी जाय ।

(२१) पण्डित ब्रजरत्न भट्टाचार्य्य का २४ मार्च का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्हों ने लिखा था कि वे केवल जीवित लेखकों की सूची सभा के लिये तयार किया चाहते हैं । सभा पत्रिका में इस विषय की सूचना देदे कि हिन्दी लेखक इसके लिये आवश्यक सामिग्री उनके पास भेज दें ।

निश्चय हुआ कि इसकी सूचना पत्रिका में छाप दी जाय ।

(२२) लाला भगवान दीन के ५ जनवरी तथा ५ मार्च के पत्र उपस्थित किये गए जिसमें उन्हों ने कुछ प्रश्न किये थे ।

निश्चय हुआ कि ये आगामी अधिवेशन में उपस्थित किये जांय ।

(२३) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई ।

गौरीशंकर प्रसाद मंत्री

प्रबन्धकारिणी सभा ।

मङ्गलवार ता० २६ अप्रैल १९१०—सन्ध्या के ६ बजे ।

स्थान-सभा भवन ।

उपस्थित ।

महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी सभापति, बा० गोविन्द दास, बा० जुगल किशोर, पण्डित केशवदेव शास्त्री, बा० गौरीशंकर प्रसाद, पण्डित सुरेन्द्रनारायण शर्म्मा, पण्डित कृष्णाराम मेहता, गोपाल दास ।

(१) गत अधिवेशन (ता० २ अप्रैल १८१०) का कार्य विवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ ।

(२) संयुक्त प्रदेश की गवर्नमेण्ट का २२ मार्च का पत्र नं० ४८५-१२-१३१ उपस्थित किया गया जिस में उन्होंने ग्रन्थमाला के निमित्त एक वर्ष के लिये सभा को ३००) रुपये की सहायता स्वीकार की थी ।

निश्चय हुआ कि आगामी वर्षों के लिये भी यह सहायता मिलने के लिये गवर्नमेण्ट से प्रार्थना की जाय ।

(३) निश्चय हुआ कि शेष कार्यों के लिये सभा का अधिवेशन ता० २८ अप्रैल १८१० को सन्ध्या के साढ़े पांच बजे किया जाय ।

गौरीशंकर प्रसाद मंत्री

साधारण अधिवेशन ।

शनिवार ता० ३० अप्रैल १९१० सन्ध्या के ७ बजे

स्थान-सभाभवन ।

(१) बाबू गौरीशंकर प्रसाद के प्रस्ताव तथा राय शिवप्रसाद के अनुमोदन पर बाबू श्यामसुन्दर दास जी सभापति चुने गए ।

(२) गत अधिवेशन ता० २ अप्रैल १८१० का कार्यविवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ ।

(३) प्रबन्ध कारिणी सभा के ता० २४ जनवरी १८१० और २ अप्रैल १८१० के कार्यविवरण सूचनार्थ उपस्थित किए गए ।

(४) निम्नलिखित महाशय सभासद चुने गए ।

(१) राय बहादुर ठाकुर लाल बहादुर सिंह ताल्लुकेदार बहरामपुर तहसील कैसर गंज ज़ि० बहराइच ३) (२)-बाबू कन्हैया लाल चौखानी नं० २३ पगिया पट्टी कलकत्ता १॥) (३) पं० बाबू राव पराडकर, ५१।१ सुकिया स्ट्रीट कलकत्ता-५) (४) स्वामी गरीब दास, बदरीश यात्री विश्रामालय, हृषीकेश लक्ष्मण झूला ज़ि० देहरादून १॥)

(५) सभासद होने के लिये ७ महाशयों के नवीन आवेदन पत्र सूचनार्थ उपस्थित किए गए ।

(६) मंत्री ने इस सभा के बोर्ड आफ ट्रस्टीज के उप सभापति श्रीमान् राजा कमलानन्द सिंह की मृत्यु की सूचना दी जिन्होंने इस सभा की कई अवसरों पर विशेष सहायता की थी और जो हिन्दी की उन्नति के लिये सदा उद्योगी रहते थे ।

निश्चय हुआ कि इस सभा को राजा कमलानन्द सिंह की मृत्यु का विशेष दुःख है और वह उनके सम्बन्धियों के साथ इस आपदा में सहानुभूति प्रगट करती है।

(७) मंत्री ने पंडित उमापतिदत्त शर्म्मा की मृत्यु का समाचार दिया ।

निश्चय कि सभा उनकी मृत्यु पर विशेष शोक प्रगट करती है ।

(८) निम्न लिखित पुस्तकें धन्यवादपूर्वक स्वीकृत हुईं

१ श्रीमान् डाइरेक्टर साहब शिक्षा विभाग इलाहाबाद-प्रमाणनयतत्वालोकालंकारस्य परिच्छेद द्वयम्, श्री सिद्धहेमसूत्रपाठस्य अकाराद्यनुक्रमणिका, सिद्धहेमशब्दानुशा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सनं, कवि कल्पद्रुम, श्रीसिद्धहेमसूत्रपाठ, जैन स्तोत्र संग्रह भाग १ और २, गुर्वावली, प्रमाणनयतत्त्वालोकालंकार, हैमलिंगानुशासनं, मुद्रित कुमुदचन्द्रप्रकरणम्, क्रियारत्न समुच्चय-२, पं० ताराचन्द्र शर्म्मा सोलह खंभा अजमेर-स्फुट संग्रह ५ प्रति, ३ बाबू शुकदेव नारायण मधुवनी दर्भंगा-नारद मोह वाटिका, शिवमाला ४ स्वामी सत गुरु प्रसाद शरण श्री गुरु राम जी पुस्तकालय गोंड़ा-दो देवियों का विवाह, आर्या सो सुनाया, अमृत वर्षा, वैश्य धर्म प्रकाश, रामायण भूषण, आरती तथा अष्टक, शिवाष्टक, सनातनधर्म शिक्षा, शिवपराध क्षमापन स्तोत्र, घर का धान्द, ५ आर्य समाज गणेश गंज लखनऊ-२८वीं वार्षिक समाचारावली ६ श्रीयुत अध्यक्ष हितवादी कलकत्ता-देश की बात ७ ठाकुर भैरव सिंह जी० सी० एस० आई० बीकानेर-रसिक विनोद, ८ श्रीमान् आनरेब्ल महाराजा सर प्रभूनारायण सिंह बहादुर जी० सी० आई० ई० काशी-नरेश-हितोक्ति । Indian Antiquary for April 1910

(९) रेवरेण्ड ई० ग्रीव्स का पत्र उपस्थित किया गया जिस में उन्होंने इङ्गलेण्ड चले जाने के कारण उप सभापति के पद तथा प्रबन्धकारिणी सभा से इस्तीफा दिया था ।

निश्चय हुआ कि यह स्वीकार किया जाय और उनके स्थान पर राय शिवप्रसाद उप सभापति चुने जांय ।

(१०) पं० माधवप्रसाद पाठक का पत्र उपस्थित किया गया जिस में उन्होंने सूचना दी थी कि वे अब काशी से बाहर चले गये हैं इस कारण प्रबन्ध कारिणी सभा में उन के स्थान पर कोई दूसरा सभासद चुना जाय

निश्चय हुआ कि प्रबन्धकारिणी सभा में पाठक जी के स्थान के साथ ही साथ बाबू गोविन्द दास और राय शिवप्रसाद के उपसभापति चुने जाने के कारण तथा राजा कमलानन्द सिंह की मृत्यु से जो चार स्थान खाली हुए हैं उन पर निम्नलिखित सज्जन सभासद चुने जांय अर्थात् काशी से बाबू ब्रजचन्द्र, बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा, बाबू रामप्रसाद चौधरी: बंगाल और बिहार से बाबू युगल किशोर अखौरी बी० ए० ।

(११) पं० केदारनाथ पाठक की १ अप्रेल की अपील उपस्थित की गई जिसमें उन्होंने पं० केशवदेव शास्त्री के सम्बन्ध में अपने कुछ प्रश्नों पर मंत्रीको आज्ञा के विरुद्ध अपील की थी ।

सभापति ने एक छोटी सी वक्तृता से इस सम्बन्ध को सब घटनाओं का पूर्ण वर्णन कर के सभासदों का ध्यान सभा के नियमों तथा उसके भविष्य की ओर दिखला कर प्रार्थना की कि सभा के हित की कामना ही कर के सब बातों का निश्चय होना चाहिए ।

बाबू माधव प्रसाद ने प्रस्ताव किया कि यह अपील पहिले प्रबन्धकारिणी सभा में उपस्थित होनी चाहिए । पं० सुरेन्द्र नारायण शर्मा ने इस का अनुमोदन किया । राय शिवप्रसाद ने इसका विरोध किया और अधिक सम्मति से बाबू माधवप्रसाद का प्रस्ताव अस्वीकृत हुआ ।

बाबू माधव प्रसाद ने प्रस्ताव किया कि पं० केदार नाथ पाठक ने पं० केशवदेव शास्त्री के सम्बन्ध में जो प्रश्न पूछे थे उन पर प्रबन्धकारिणी सभा ता० २८ अप्रेल के अधिवेशन में विचार कर अपना निश्चय प्रगट कर चुकी है और आशा है कि पाठक जी उससे सन्तुष्ट होंगे । अतः पण्डित केदार नाथ पाठक को इस सम्बन्ध में प्रबन्धकारिणी सभा के निश्चयों की सूचना देने के उपरान्त यदि पाठक जी आवश्यक समझें तो उनकी अपील साधारण सभा के अगले अधिवेशन में उपस्थित की जाय । पण्डित कृष्णराव पावगी ने इस का अनुमोदन किया । बा० बाल मुकुन्द वर्म्मा और बा० गंगाप्रसाद वर्म्मा ने इस का विरोध किया । अधिक सम्मति से बा० माधवप्रसाद का प्रस्ताव अस्वीकृत हुआ और निश्चय हुआ कि पाठक जी की अपील पर आज ही विचार किया जाय ।

(१२) ता० २८ अप्रेल १९१० की प्रबन्धकारिणी सभा का निम्नलिखित निश्चय नं० ३ उपस्थित किया गया ।

"इस सभा की सम्मति में सभा के वैतनिक कार्यकर्ता प्रबन्धकारिणी सभा अथवा साधारण सभा के निश्चयों पर आक्षेप नहीं कर सकते और इस सभा का कोई सभासद सभा के किसी कार्य वा निश्चय के विरुद्ध सभा के बाहर उस समय तक आन्दोलन नहीं कर सकता जब तक कि वह सभा का सभासद रहे [नियम ४१ (१०) देखो]।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बा० माधव प्रसाद ने प्रस्ताव किया कि प्रबन्धकारिणी सभा का यह निश्चय स्वीकार किया जाय और पं० रामनारायण मिश्र ने इसका अनुमोदन किया ।

बा० गौरीशंकर प्रसाद के प्रस्ताव पर सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि "वैतनिक कार्यकर्ता" के आगे "चाहे वे सभासद हों वा न हों" ये शब्द बढ़ा दिए जांय, "कोई सभासद" के आगे "कार्यकर्ता वा प्रबन्धकर्ता (वैनिक और अवैननिक)" जोड़ दिया जाय और "सभा का सभासद रहे" के स्थान पर "सभा से सम्बन्ध रक्खे" बना दिया जाय।

पं० केशवदेव शास्त्री के प्रस्ताव पर सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि यह नियम आज से ही प्रचलित समझा जाय ।

(१३) पं० केदार नाथ पाठक के अपील के सम्बन्ध में बा० माधव प्रसाद ने प्रस्ताव किया कि जहां तक उन्हें विदित हुआ है मंत्री ने उनके प्रश्नों पर जो आज्ञा लिखी थी उसे किसी प्रकार पाठक जो का जी दुखाने के अभिप्राय से नहीं लिखी थी । इस पर बा० गौरीशंकर प्रसाद जी ने भी यह प्रगट किया कि उन्होंने कदापि इस अभिप्राय से वह आज्ञा नहीं लिखी थी औ कहा कि यदि उस से पाठक जो का जी दुखा हो तो उस के लिये उन्हे शोक है ।

इस पर पं० केदार नाथ पाठक ने अपनी अपील लौटाली और सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि उसपर विचार करना अब आवश्यक नहीं है ।

(१४) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई ।

गौरीशंकर प्रसाद मंत्री ।

——:o:——

प्रबन्धकारिणी सभा ।

शुक्रवार ता०२९ अप्रैल १९१० सन्ध्या के ५॥ बजे ।

स्थान-सभा भवन ।

उपस्थित ।

बाबू श्यामसुन्दर दास सभापति, राय शिवप्रसाद, बा० गौरीशंकर प्रसाद, बा० जुगल किशोर, पण्डित केशवदेव शास्त्री, पण्डित सुरेन्द्र नारायण शर्म्मा, गोपाल दास ।

(१) बा० गौरीशंकर प्रसाद के प्रस्ताव तथा राय शिवप्रसाद के अनुमोदन पर बा० श्यामसुन्दर दास सभापति चुने गए ।

(२) पण्डित केदारनाथ पाठक का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि आज के अधिवेशन में उनकी अपील के सम्बन्ध में विचार होगा अतः सभा में उनका एक प्रतिनिधि लिया जाय ।

निश्चय हुआ कि नियमों में प्रतिनिधि भेजने के विषय में कुछ नहीं लिखा है ।

(३) निश्चय हुआ कि कल की साधारण सभा में यह उपस्थित किया जाय कि इस सभा की सम्मति में सभा के वैतनिक कार्यकर्ता प्रबन्धकारिणी सभा अथवा साधारण सभा के निश्चयों पर आक्षेप नहीं कर सकते और इस सभा का कोई सभासद सभा के किसी कार्य वा निश्चय के विरुद्ध सभा के बाहर उस समय तक आन्दोलन नहीं कर सकता जब तक कि वह सभा का सभासद रहे [नियम ४३ (१०) देखो]

(४) मंत्री ने पण्डित केशव देव शास्त्री के सम्बन्ध में पण्डित केदारनाथ पाठक के प्रश्नों को अपनी इस आज्ञा के सहित उपस्थित किया कि पं० केदारनाथ सभा के वैतनिक कार्य्य कर्ता भी हैं अतः उन्हें सभा के निश्चय तथा कार्य्यों में हस्तक्षेप न करना चाहिए ।

निश्चय हुआ कि मंत्री ने इस सम्बन्ध में जो आज्ञा लिखी है उसको यह सभा अनुचित नहीं समझती ।

(५) पण्डित जगदीश्वर प्रसाद ओझा का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने पण्डित केदार नाथ पाठक के प्रश्नों के सम्बन्ध में सभा के मंत्री की आज्ञाओं का उचित और सन्तोषजनक उत्तर मांगा था ।

निश्चय हुआ कि आज के निश्चय नं० ३ और ४ के अनुसार उन्हें उत्तर दिया जाय ।

(६) प्रयाग के पं० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल, पण्डित जगन्नाथ शर्म्मा और पण्डित द्वारका प्रसाद चतुर्वेदी का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चैत्र सु० २ का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने पण्डित केदारनाथ पाठक के प्रश्नों पर सभा के मन्त्री की आज्ञाओं का विरोध किया था और पूछा था कि (१) क्या पण्डित केशवदेव शास्त्री कुछ फीस दे कर सभा की मेजिक लालटैन ले जाते हैं ? (२) मेजिक लालटैन जब वे बाहर ले जाते हैं तो क्या विद्या सम्बन्धी कार्यों के ही लिये (३) मेजिक लालटैन का विद्या सम्बन्धी कार्यों में न लगाना किस अवस्था में कहा जायगा ।

निश्चय हुआ कि निश्चय नं ३ और ४ के अनुसार उन्हें उत्तर दिया जाय और लिखा जाय कि (१) पण्डित केशवदेव शास्त्री मेजिक लालटैन के लिये कुछ फीस नहीं देते परन्तु उन्होंने बहुत से नए नए स्लाइड बना कर सभा को दिए हैं (२) वे इन्हें विद्या सम्बन्धी कार्यों के लिये ही ले जाते हैं पर काशी से बाहर ले जाने के लिये उन्हें मेजिक लालटेन नहीं दिया जाना चाहिए । इस सम्बन्ध में भविष्यत में नियमों का पालन किया जाय (३) इसका विद्या सम्बन्धी कार्यों में न लगाना उस अवस्था में कहा जायगा जब कि इससे तमाशा दिखला कर धन उपार्जन किया जाय ।

(७) मुंशी भगवान दीन का १२ अप्रैल का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने पं० केदारनाथ पाठक के सम्बन्ध में निम्नलिखित प्रश्न किये थे अर्थात् (१) पाठक जी के प्रश्नों के उत्तर किन कारणों से नहीं दिए गए (२) मंत्री के इस कार्य से एक सभासद का अपमान हुआ वा नहीं (३) यदि अपमान हुआ तो अब इस सम्बन्ध में मंत्री जी ने क्या करना विचारा है (४) मंत्री जी पाठक जी से लेखबद्ध क्षमा मांगने के लिये तयार हैं वा नहीं (५) अब उन प्रश्नों को सभा में पेश कर के उनका उत्तर दिया जायगा अथवा नहीं ।

निश्चय हुआ कि (१) निश्चय नं० ३ और ४ के अनुसार उत्तर दिया जाय (२-३) प्रश्न स्वच्छन्द सभासद का नहीं है वरन् वैतनिक कार्यकर्ता का है (४) यह प्रश्न ही नहीं उठता (५) यदि ये प्रश्न किसी स्वच्छन्द सभासद द्वारा किए जांय तो ऐसा किया जा सकता है और किया गया है ।

(८) पण्डित लक्ष्मीशंकर द्विवेदी का पत्र उपस्थित किया गया जिस में उन्हों ने लिखा था कि (१) उन्हों ने सुना है कि सभा के उद्देश्य के विरुद्ध सभाओं के लिये सभाभवन मंगनी दिया जाता है (२) सभा के कोई कोई कार्यकर्ता सभा की किसी किसी वस्तु को अपने लाभ अथवा कार्य के लिये उठा ले जाते हैं (३) सभा के पुराने सच्चे हितचिन्तकों और सेवकों का अनादर किया जाता है (४) पं० केदारनाथ पाठक के किसी प्रस्ताव का उत्तर उन्हें अपमान सूचक शब्दों में दिया गया है । पाठक जी हिन्दी के बहुत पुराने प्रेमी और सभा के शुभचिन्तक हैं अतः जिन महाशय के द्वारा उनका अपमान हुआ हो उन्हें पाठक जी से क्षमा मांगनी चाहिए ।

निश्चय हुआ कि (१) ऐसा कभी नहीं हुआ । (२) यह भी कभी नहीं हुआ । यदि उनकी जान में किसी कार्यकर्ता ने ऐसा किया हो तो वे सभा को सूचित करें और उस पर उचित विचार किया जायगा । (३) ऐसा नहीं किया गया (४) पाठक जी ने कोई प्रस्ताव सभा में उपस्थित नहीं किया था । सभा को विदित है कि उन्हों ने नागरी की सेवा की है । उनका कोई अनादर नहीं किया गया और न ऐसा करने की किसी की इच्छा है ।

(९) बाबू बालमुकुन्द वर्मा का २२ मार्च का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्हों ने पूछा था कि (१) सभा का मेजिक लालटैन जौनपुर गोरखपुर आदि शहरों में भेजाने के लिये क्यों दिया गया (२) गत सप्ताह में सोशल कान्फरेन्स का अधिवेशन सभाभवन में क्या सभा की अनुमति से हुआ था (३) पं० केदारनाथ पाठक को उनके प्रश्नों का उत्तर क्यों नहीं दिया गया ।

निश्चय हुआ कि (१) निश्चय नं०६ (२) के अनुसार उत्तर दिया जाय (२) सोशल कान्फरेन्स का कोई अधिवेशन सभाभवन में नहीं हुआ (३) निश्चय नं० ३ और ४ के अनुसार उत्तर दिया जाय ।

(१०) समय अधिक हो जाने के कारण निश्चय हुआ कि सभा विसर्जित की जाय और शेष कार्यों के लिये पुनः कल ता० ३० अप्रैल १९१० को ४ बजे सभाभवन में अधिवेशन हो ।

गौरीशंकर प्रसाद मंत्री ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रबन्धकारिणी सभा ।

रविवार ता० १ मई १९१० प्रातःकाल ८ बजे ।

स्थान-सभाभवन ।

उपस्थित ।

बाबू श्यामसुन्दर दास सभापति, बाबू गौरीशंकर प्रसाद बाबू जुगल किशोर, पण्डित सुरेन्द्र नारायण शर्म्मा, गोस्वामी रामपुरी, पण्डित कृष्ण राम मेहता, बाबू व्रजचन्द्र, बाबू बाल मुकुन्द वर्म्मा, रायशिव प्रसाद, गोपाल दास ।

(१) बाबू गौरीशंकर प्रसाद के प्रस्ताव और गोस्वामी रामपुरी के अनुमोदन पर बाबू श्यामसुन्दर दास सभा पति चुने गए ।

(२) बाबू श्यामसुन्दर दास के प्रस्ताव पर अधिक सम्मति से निश्चय हुआ कि इस सभा की सम्मति में कोश प्रबन्धकर्तृ कमेटी की अब कोई आवश्यकता नहीं जान पड़ती अतएव वह कमेटी अब तोड़ दी जाती है । आगे से कोश के प्रबन्ध सम्बन्धी कार्य पर प्रबन्धकारिणी सभा में विचार किया जायगा । यदि कोश कमेटी का कोई कार्य शेष हो तो वह एक अधिवेशन करके उन विषयों पर अपनी सम्मति प्रबन्ध कारिणी सभा में निश्चय के लिये भेज दे ।

(३) निश्चय हुआ कि (१) कोश सम्बन्धी बिलों का रुपया बाबू श्यामसुन्दर दास जी सम्पादक की स्वीकृति तथा हस्ताक्षर पर दिया जाया करे और वे कार्य की मासिक रिपोर्ट सभा की सूचना के लिये भेजा करें । (२) कोश की बड़ी कमेटी के मंत्री का कार्य अब सभा के मंत्री करें ।(३) शब्दों के क्रम ठीक करने का जो कार्य शेष रह गया है उसके लिये २०)रु० मासिक वेतन तक एक मनुष्य एक वर्ष के लिये नियत किया जाय (४) कोश के कार्य कर्त्ताओं को नियत करने अथवा छोड़ाने का अधिकार सम्पादक को प्रबन्ध कारिणी सभा की स्वीकृति से होगा (५) कोश के सम्पादक को कार्य की समाप्ति तक ४००) रु० अमानत की भांति रखने के लिये दिया जाय जिसमें वे समय पर कार्यों का निर्वाह कर सकें ।

(४) निश्चय हुआ कि बाबू अमीर सिंह को जो अपनी पत्नी की मृत्यु के कारण छुट्टी लेकर काशी आना पड़ा है उस छुट्टी का आधा वेतन दिया जाय ।

(५) बाबू श्यामसुन्दर दास के प्रस्ताव पर निश्चय हुआ कि हिन्दी भाषा की उन्नति के लिये हिन्दी प्रेमियों का एक सम्मेलन काशी में आगामी आश्विन नवरात्र में किया जाय । इसमें बाहर से जो सज्जन आवें उनके ठहरने के लिये स्थान ठीक कर दिया जाय और उनकी सुविधा के लिये वहां मोदियों और हलवाइयों की दूकाने करा दी जांय । सम्मेलन में किन विषयों पर विचार हो और कौन सभापति चुना जाय इसके लिये समाचारपत्रों में लेख छपवा कर हिन्दी प्रेमियों से सम्मति लीजाय । इसके लिये एक हजार रुपए का विशेष चन्दा किया जाय और प्रबन्ध के लिये निम्न लिखित महाशयों की एक कमेटी बना दी जाय अर्थात् रायशिव प्रसाद (सभापति) :बाबू गौरीशंकर प्रसाद (मंत्री) बाबू व्रज चन्द्र (उपमंत्री) बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा (उपमंत्री) गोस्वामी रामपुरी, रायकृष्ण दास बाबू जयशंकर प्रसाद, पण्डित कृष्णाराम मेहता, राय गोपाल दास, पण्डित रामनारायण मिश्र, राय कृष्ण चन्द्र । इस कमेटी को अधिकार दिया जाय कि वह अपनी सहायता के लिये और जिन महाशयों को चाहे सम्मि-लित करले पर संख्या सब मिलाकर २१ से अधिक न हो । इस कमेटी का कोरम पांच सभासदों का होगा, वह प्रबन्ध कारिणी सभा के अधीनस्थ काम करेगी और सम्मेलन के सभापति का चुनाव प्रबन्धकारिणी सभा की स्वीकृति से होगा ।

इसके लिये सभा से ५०) रु० देना निश्चित हुआ और उपस्थित सज्जनों में भी इस प्रकार चन्दा हुआ ।

५०) रायशिव प्रसाद, २५) बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए०, २५) बाबू व्रज चन्द्र, २०) गोस्वामी राम पुरी, १५) पण्डित कृष्णाराम मेहता, १०) बाबू गौरीशङ्कर प्रसाद १०) बाबू जुगल किशोर, १०) पण्डित सुरेन्द्र नारायण शर्म्मा १०) बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा, ९) गोपाल दास

(६) सभा पति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई ।

गौरीशंकर प्रसाद । मंत्री ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेष अधिवेशन।

मंगलवार ता० १० मई १९१० सन्ध्या के ५½ बजे

उपस्थित।

बाबू गोविन्द दास-सभापति
,, लक्ष्मीनारायण गुप्त
,, गौरीशङ्कर प्रसाद
,, बालमुकुन्द वर्म्मा
,, जयशङ्कर प्रसाद
रायकृष्णचन्द्र
बाबू बालकृष्णदास
पण्डित सुरेन्द्रनारायण शर्म्मा
,, केदार नाथ पाठक
बाबू गोपालदास

(१) निश्चय हुआ कि यह सभा अपने सर्वप्रिय सम्राट सप्तम एडवर्ड की आकस्मिक तथा हृदय विदारक मृत्यु पर अत्यन्त शोक प्रकट करती है और उनके शोक ग्रस्त राज्य कुटुम्ब के साथ हार्दिक सहानुभूति प्रकाशित करती है।

यह भी निश्चय हुआ कि इस निश्चय की सूचना श्रीमान् वाइसराय तथा संयुक्त प्रदेश के श्रीमान् लेफ्टिनेगट गवर्नर को तार द्वारा और बनारस के कमिश्नर और कलेक्टर को पत्र द्वारा भेजी जाय।

(२) बाबू जयशङ्कर प्रसाद ने इस महा शोक मय घटना पर एक कविता पढ़ी निश्चय हुआ कि यह कविता तथा इस अधिवेशन का कार्यविवरण काले चौकठों में इस मास की पत्रिका में प्रकाशित किया जाय।

गौरीशंकर प्रसाद।

आय व्यय का हिसाब।

मार्च (१९१०)

आय	धन की संख्या		
गत मास की बचत	३८८१	५	१
पुस्तकालय का चन्दा	३६	१२	०
पुस्तकों की बिक्री	८१	५	०
पृथ्वी राजरासो की बिक्री	२०	६	०
फुटकर आय	१२	०	०
सभासदों का चन्दा	१५	०	०
हिन्दी कोष	५०	०	०
जोड़	४२१७	३	१

व्यय	धन की संख्या		
आफ़िस के कार्यकर्त्ताओं का वेतन	६७	५	०
डाक व्यय	४	१४	३
नागरी प्रचार	१३	४	०
पुस्तकालय	३७	१४	६
हिन्दी पुस्तकों की खोज	८०	०	०
फुटकर	७२	१४	४
हिन्दी कोष	८०८	११	७
	१०८५	१५	८
बचत	३१३१	३	५
जोड़	४२१७	३	१

रोकड़ सभा	१५८॥~)२
बनारस बंक (कोष विभाग)	३७७८॥~)५
	३९३८=)७
बंक का देना	८०६॥।≡)२
	३१३१≡)५

देना ६०००)

—o—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आय व्यय का हिसाब ।

(अप्रैल १९१०)

आय	धन की संख्या		
गत मास की बचत	३१३१	३	५
सभासदों का चन्दा	११	४	०
पुस्तकालय का चन्दा	४३	१२	०
पुस्तकों की बिक्री	७१	१४	६
पृथ्वीराजरासो की विक्री	१२	२	०
फुटकर	३०	१२	०
हिन्दी कोष	१८७	५	३
पुस्तकों की खोज के लिये गवर्न्मैण्ट को सहायता	२५०	०	०
जोड़	३७४८	५	२

व्यय	धन की संख्या		
आफ़िस के कार्यकर्ताओं का वेतन	६५	०	६
डांक व्यय	२२	१०	६
पुस्तकालय	२८	३	३
हिन्दी पुस्तकों की खोज	४८	१३	३
फुटकर व्यय	८४	८	४½
हिन्दी कोष	६४	२	०
नागरी प्रचार	८	४	०
छपाई	८५	८	०
स्थायी कोष	८०	०	०
	५०८	२	१०½
बचत	३२३८	२	३½
जोड़	३७४८	५	२

रोकड़ सभा.	३३४⌐﹚½
बनारस बंक (कोष विभाग)	३७७८॥⌐﹚५
	४११२॥≡﹚५½
बंक का देना	८७३॥﹚२
	३२३८≡﹚३½

देना ६०००﹚

सभा के पारितोषिकों की सूची ।

(१) इस वर्ष के सभा के नियमित दो मेडलों के लिये निम्न लिखित विषय नियत हैं । ये लेख ३१ दिसम्बर १९१० तक सभा में आजाने चाहिएं ।

वैज्ञानिक विषय ।

प्राकृतिक अवस्था का उत्तर भारत के सामाजिक जीवन पर प्रभाव ।

साधारण (विद्या) विषय ।

अकबर के पूर्व हिन्दी की अवस्था ।

—०※०—

(३) ५००) का पुरस्कार—सभा द्वारा निश्चित अनुक्रमणिका के आधार पर जो हिन्दी का सब से उत्तम व्याकरण लिखेगा उसे यह पुरस्कार दिया जायगा । व्याकरण ३१ दिसम्बर १९१० तक सभा के पास आजाना चाहिए । यदि कई व्याकरणों के भिन्न भिन्न अंश उत्तम समझे जांयगे तो यह पुरस्कार उन सब लोगों में बाँट दिया जायगा और उन ग्रन्थों को घटाने बढ़ाने आदि का इस सभा को पूरा अधिकार होगा । सभा द्वारा निश्चित अनुक्रमणिका दो पैसे का टिकट डाकव्यय के लिये भेजने पर सभा के मंत्री से मिल सकती है ।

———

हिन्दी शीघ्र लिपि प्रणाली ।

गत मास की पत्रिका में हिन्दी शीघ्र लिपि प्रणाली (Hindi Short Hand) के छप जाने का शुभ समाचार पाठकों की सेवा में निवेदन किया गया था । उक्त पुस्तक सभा में आगई है और सभा ही से एक रुपया पर तथा सभासदों को अर्ध मूल्य पर मिल सकती है ।

भारत प्रेस काशी में बाबू माधो प्रसाद के प्रबन्ध से छप कर नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक
रामचन्द्र शुक्ल ।

Registered No A 414

नागरीप्रचारिणी पत्रिका ।

[मासिक पत्रिका]

गुरुकुल पुस्तकालय कांगड़ी

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल । बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ॥
करहु बिलंब न भ्रात अब, उठहु मिटावहु सूल । निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जु सब को मूल ॥
विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार । सब देशन सों लै करहु, भाषा मांहि प्रचार ॥
प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि यत्न । राज काज दर्बार में, फैलावहु यह रत्न ॥ हरिश्चन्द्र

भाग १४ | १५ जून १९१० । | संख्या १०

सूचना और सम्मति ।

बरमा की सरकार पुरातत्व के अध्ययन के लिये १००) रु० मासिक की एक वृत्ति वर्ष भर के लिये दे रही है। इस वृत्ति का अधिकारी कोई ऐसा व्यक्ति चुना जायगा जो किसी भारतीय विश्व विद्यालय का ग्रेजुएट हो और बरमी और पाली भाषा भी अच्छी तरह जानता हो। और और प्रान्तों में भी इस प्रकार की वृत्ति नियत करके यदि इस विषय की ओर ध्यान आकर्षित किया जाय तो क्या अच्छी बात हो। यहां के बहुतेरे ग्रेजुएट तो यह जानते भी नहीं कि अपने देश के इतिहास की सामिग्री कहां पर और क्या क्या हैं।

पंडित हरप्रसाद शास्त्री तिब्बत में मिले हुए एक बौद्ध संस्कृत ग्रन्थ को एशियाटिक सोसाइटी के लिये प्रकाशित कर रहे हैं। इससे कुछ पुरानी बातों का पता लगना सम्भव है।

बंगाल के आनरेबल मिस्टर एस० पी० सिंह ने पंडित ईश्वर चन्द्र विद्यासागर के प्रसिद्ध बंगला चरितलेखक बा० चंडी चरण बैनरजी को उस पुस्तक का चौथा संस्करण निकालने के लिये रुपया दिया है। हिन्दी ग्रन्थकारों को भी उत्साह देने वाला कहीं कोई है ?

भारतीय शिल्पकला के सम्बन्ध में हम मि० हावेल का उल्लेख किसी गत संख्या में कर चुके हैं। इन्हीं मि० हावेल के उद्योग से विलायत में "इंडिया सोसाइटी" नाम की एक सभा स्थापित हुई है जिसका उद्देश्य भारतीय कला कौशल की ओर रुचि उत्पन्न कराने और उसकी भावुकता को समझाने का है। यह सोसाइटी व्याख्यान दे कर, नमूने दिखला कर, नाटकों का अभिनय कर के तथा और कई प्रकार से भारतीय कला की ओर यूरप के लोगों का ध्यान आकर्षित करेगी। भारतवर्ष की बची खुची कारीगरियों को भी ढूंढ़ ढूंढ़ कर उत्तेजित करेगी। इस सोसाइटी का सिद्धान्त है कि भारतवर्ष में देश के चिरपोषित सिद्धान्तों, आदर्शों और भावों के विरुद्ध जो शिक्षा का क्रम है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह ठीक नहीं है। मि० हावेल और डाकूरकुमार स्वामी के कारण बिलायत में भारतीय कला की चर्चा बहुत फैल गई है। वहां के क्वार्टर्ली रिव्यू (Quarterly Review) नामक पत्र में मि० हावेल के इण्डियन आर्ट एण्डपेण्टिङ्ग (Indian Art and Painting) नामक पुस्तक की आलोचना करते हुए मि० रोजरफ्राई (Roger Fry) लिखते हैं—"जब शिक्षित समाज पूर्वीय कला की उत्कृष्ट रचनाओं के क्रमपालन, उसके साधनों की किफायत और उसके गुणों की परिपूर्णता से अच्छी तरह परिचित हो जायगा तब पश्चिम की अधिकांश चित्रकारियों से उसका मन फिर जायगा। इस प्रकार यूरप के चित्रकारों में एक नई अभिरुचि उत्पन्न होगी।"

भारतवासियों की उदासीनता इस विषय में कैसी है क्या इसके भी बतलाने की जरूरत है? किस प्रकार ये अज्ञानता वश अपनी परम्परागत प्राचीन कलाओं के चिन्ह मिटाने में लगे हैं यह बिचारवान लोग मनमारे देख ही रहे हैं। यहां के चित्रकारों और कारीगरों को उत्साह दिलाना तो दूर रहा अपने नए मकानों में ये कहीं से देश की पुरानी कारीगरी का लेश तक नहीं आने देते। अंग्रेजी इमारतों के गाथिक और रोमन क्रम का अनुकरण करने ही में अपनी सारी बुद्धि का विकास समझते हैं। एलोरा, सांची, भुवनेश्वर आदि अपनी प्राचीन कला के अवशेषों से भी नमूने लेकर यदि हम उनका समयानुकूल व्यवहार करें तो कुछ और ही रंगत दिखाई दे। मिस्टर हावेल लिखते हैं—"मैं जिस बात पर सबसे अधिक जोर दिया चाहता हूं वह यह है कि कला कौशल की अभिरुचि के जातीय ह्रास से न कि केवल जाति की बुद्धि का ह्रास होता है वरन् व्यापारिक बिपत्ति भी आती है।"

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और हिन्दी।

हिन्दी की वर्त्तमान गति का आरम्भ भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र की लेखनी ही से है। इनके पूर्व हिन्दी का प्रवाह किस ओर को था और इन्होंने उसे किस ओर फेरा यही दिखलाने का यत्न इस लेख में किया जायगा। भारतेन्दु ने जिस अवस्था में हिन्दी को पाया वह बिलक्षण थी। पद्य में जायसी, सूर, तुलसी आदि के आख्यान काव्यों का समय एक प्रकार से बीत चुका था। केशव के चलाए हुए नायिका भेद, रस, अलंकार आदि को लक्ष्य करती हुई, स्फुट कबिताओं के छींटे उड़ रहे थे। गद्य प्रेमसागर, सिंहासन बत्तीसी और बैताल पचीसी से संतोष किए बैठा था।

यद्यपि देश में नए नए भावों का सञ्चार हो गया था पर हमारी भाषा उनसे दूर थी। यद्यपि लोगों की अभिरुचि बदल चली थी पर हमारे साहित्य पर उसका आभास नहीं पड़ा था। शिक्षित लोगों के विचारों और व्यापारों ने दूसरा मार्ग तो पकड़ लिया था पर उनका साहित्य उसी पुराने मार्ग ही पर था। ये लोग समय के साथ स्वयं तो कुछ आगे बढ़ आए पर जल्दी में अपने साहित्य को साथ न ले सके। उसका साथ छूट गया और वह उनके कार्य्यक्षेत्र से अलग पड़ गया प्रायः सब सभ्य जातियों का साहित्य बिचारों और व्यापारों से लगा हुआ चलता है। यह नहीं कि उनकी चिन्ताओं और कार्य्यों का प्रवाह तो एक ओर हो और उनके साहित्य का प्रवाह दूसरी ओर। फिर यह बिचित्र घटना यहां कैसे हुई? बात यह है कि जिन लोगों के हृदय में नई शिक्षा के प्रभाव से नए बिचार उत्पन्न हो चले थे, जो अपनी आंखों से देशकाल का परिवर्त्तन देख रहे थे, उनमें अधिकांश तो ऐसे थे जिनका कई कारणों से हिन्दी साहित्य से लगाव टूट सा गया था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और शेष ऐसे थे जिन्हें हिन्दी साहित्य का मंडल बहुत ही बद्ध और परिमित दिखाई देता था, जिन्हें इन नए बिचारों को सन्निवेशित करने के लिए स्थान ही नहीं सूझता था। उस समय एक ऐसे साहसी और प्रतिभासम्पन्न पुरुष की आवश्यकता थी जो कौशल से इन बढ़ते हुए विचारों का मेल देश के परम्परागत साहित्य से करा देता। बाबू हरिश्चन्द्र का प्रादुर्भाव ठीक ऐसे ही समय में हुआ।

इन्होंने कविता पर जो दृष्टि डाली तो देखा कि बहुत से ऐसे शब्द जिन्हें बोलचाल से उठे कई सौ वर्ष हो गए कबित्त और सवैयों में बराबर खपाए जाते हैं जिससे जनसाधारण का ध्यान उनकी ओर से फिरता जाता है। चक्कवै, अमेजे, मजेजे, ठायो, करसायल, ईठ, दीह, ऊनो, लोह, आदि के कारण बहुत से लोग हिन्दी कविता से किनारा खींचने लगे हैं। दूसरा दोष जो बढ़ते २ बहुत बुरी सीमा को पहुंच गया था वह शब्दों का तोड़ मरोड़ और गढ़े हुए मनमाने शब्दों का प्रयोग था। जैसे "कपियों का स्वभाव रूख तोड़ना" गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है वैसे ही इन कवियों का स्वभाव शब्द तोड़ना हो चला था। बाबू हरिश्चन्द्र ने इन बातों का संशोधन करना आरम्भ किया और ब्रजभाषा की फुटकर कविताओं के लिए भी अच्छा मार्ग दिखलाया। उन्हों ने अपने रसीले कवित्तों और सवैयों में ऐसे शब्दों का प्रयोग बहुत कम किया है और उनकी भाषा बोलचाल की भाषा से मिलती हुई रक्खी है। जैसे-

आजु लौं जो न मिले तो कहा, हम तो तुम्हरे सब भांति कहावैं। मेरो उराहनो है कछु नाहिं सबै फल आपने भाग को पावैं। जो हरिचन्द भई सो भई अब प्रान चले चहैं तासों सुनावैं। प्यारे जू है जग की यह रीति बिदा के समय सब कंठ लगावैं।

इसी कारण इनकी कविताओं का प्रचार भी देखते देखते हो गया। लोगों के मुंह से इनके सवैये चारो ओर सुनाई देने लगे; इनकी गीतों को स्त्रियां तक घर घर में गाने लगीं। इनकी कविता बहुत ही जनप्रिय हुई। इनके समय ही में जो जो संग्रह बने उन सब में प्राय; इनकी कविताएं विशेष कर सवैये दिए गए। इन्हों ने मनुष्य के मनोवेगों को बड़ी सीधी सादी पर परिपूर्ण भाषा में निकालने का प्रयत्न किया है। लीक पीटने वालों की उस शब्दावली को जो पुरानी पड़ गई थी इन्हों ने बहुत कुछ छाँटा। ये बड़े भारी साहित्य संशोधक हुए। इनके सीधे सादे शब्दों से भाव टपके पड़ते हैं। जिसे इनकी कविता 'साधारण' जंचे उसे समझना चाहिए कि 'खड्डु बड्डु' वाले कविन्दों ने भावकता का नाश करके उस के हृदय को कुरुचिपूर्ण कर दिया है।

पर सब से बड़ा काम तो इस महात्मा को यह करना था कि वह स्वदेशाभिमान, स्वजाति प्रेम, समाज सुधार आदि के आधुनिक उद्गारों के प्रवाह के लिए हिन्दी को चुने तथा इतिहास विज्ञान पुरावृत्त आदि समस्त समयापेक्षित विषयों की ओर हिन्दी को दौड़ा दे। इन्हों ने अपनी लेखनी को इन नवीन विषयों पर चलाया। स्वदेशाभिमान और स्वदेश प्रेम को ले कर तो मानो यह कवि उतरा ही था। देश के प्राचीन गौरव को स्मरण कराके उसके एक एक यशस्वी महापुरुष का नाम लेकर उसकी वर्त्तमान दुरवस्था पर आँसू बहवाने के लिए तो ये आए ही थे। इनके जीवन में "भारत, भारत" की जो धुन बंधी वह बराबर बंधी रही। विजयिनी विजय वैजयंती लेकर आप मिस्र से लौटी हुई हिन्दुस्तानी सेना की बड़ाई करने और सरकार को बधाई देने चले पर बीच में इस विचार में पड़ गए कि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहसन बरसन सोँ सुन्यो जो सपनेहु नहिं कान ।
सो 'जय भारत' शब्द क्यों पूरयो आजु जहान ॥

फिर क्या था भारत का भूत सिर पर सवार होगया।

हाय वही भारत भुव भारी ।
सबही बिधि सोँ भई दुखारी ॥
भारत भुजबल लहि जग रच्छित ।
भारत विद्या सौँ जग सिच्छित ॥
भारत किरिन जगत उँजियारा ।
भारत जीव जियत संसारा ॥

इन ऐतिहासिक स्थलों और घटनाओं को स्मरण कराने से यह कवि कब चूकता जिन के नाममात्र हिन्दू सन्तान के लिए कविता हैं। कविता वही जिससे चित्त किसी आवेग में लीन हो जाय *। कौन ऐसा इतिहासविज्ञ भारत-सन्तान होगा जिसका रक्त पानीपत, थानेश्वर, चित्तौर, रणथंभौर आदि नाम सुनते ही चंचल न हो उठे। कौन ऐसा स्तब्ध और जड़ हिन्दू होगा जिसके हृदय में इन नामों को सुनते ही अनेक प्रकार के भाव न उठने लगें। यदि कोई कवि इन दो चार नामों को केवल एक साथ लेले तो वह अपना काम कर चुका। इन नामों ही में भाव भरे हैं। वे अकेले ही कल्पना को उभाड़ सकते हैं। मेकाले ने मिल्टन की कविता को इटली के एक कवि की कविता से मिलान करते हुए कहा है कि मिल्टन जब किसी वस्तु का वर्णन होता है तब उसे अपने शब्दों से नापजोख कर बिलकुल परिमित नहीं कर देता बरन् कुछ काम अपने पाठकों की कल्पना के लिए भी छोड़ देता है। अब देखिए इन नामों को भारतेन्दु ने किस प्रकार लिया है।

हाय पंचनद हा पानीपत ।
अजहुँ रहे तुम धरनि विराजत ॥
हाय चितौर निलज तू भारी ।
अजहुँ खरो भारतहि मझारी ॥
जा दिन तव अधिकार नसायो ।
ताही दिन किन धरनि समायो ॥
तुम में जल नहिँ जमुना गंगा ।
बढ़हु बेगि करि प्रबल तरंगा ॥
बोरहु किन झट मथुरा काशी ।
धोवहु यह कलंक की राशी ॥

भारतदुर्दशा में आलस्य आदि को लाकर इस कवि ने देशदशा को इस ढंग से झलकाया है कि नए और पुराने दोनों ढांचे के लोगों का मन उसमें लगे। इस कारीगर में बड़ा भारी गुण यह था कि इसने नए और पुराने विचारों को अपनी रचनाओं में इस तरह मिलाया कि कहीं से जोड़ मालूम न हुआ। पुराने भावों औ आदर्शों को लेकर इसने नए आदर्श खड़े किए। देखिये, नीलदेवी में एक देवता के मुंह से भारतवर्ष का कैसा मर्मभेदी भविष्य कहलाया है—

सब भाँति दैव प्रतिकूल होइ यहि नासा ।
अब तजहु वीरवर भारत की सब आसा ॥
अब सुख सूरज को उदय नहीं इत ह्वैहै ।
मंगलमय भारतभुव मसान ह्वै जैहै ॥

राजा सूर्यदेव के मारे जाने पर रानी नीलदेवी ने जिस रीति से भगवान को पुकारा है वह कोई नई नहीं, यह वही रीति है जिस से द्रौपदी ने कृष्णचन्द्र को पुकारा था; भेद इतना ही है कि द्रौपदी ने अपनी लज्जा रखने के लिये पुकार मचाई थी इसने देश की लज्जा रखने के लिए पुकारा—

कहाँ करुणानिधि केशव सोए ।
जागत नाहिं अनेक जतन करि भारतवासी रोए ॥

इन्हों ने समाज की कुरीतियों को दिखला

* गतवर्ष की सरस्वती में प्रकाशित, मेरा " कविता क्या है ?" शीर्षक प्रबंध देखिए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर बराबर उनके सुधार पर जोर दिया है पर अपने बिचारों को परम्परगत बिचारों को परम्परागत बिचारों से बिलकुल अलग करते हुए नहीं बरन् उनसे लगाव रखते हुए। काश्मीर कुसुम, बादशाह दर्पण, काल चक्र, पुरावृत्त संग्रह आदि लिखकर इन्हों ने इन बिषयों की ओर हिन्दी को लगा दिया। इनके कवि बचन सुधा, मैगजीन की देखा देखी हिन्दी में सामयिक पत्र और पत्रिकाएं निकल पड़ीं। आज जो हम लोग नए नए बिचारों को मँजी हुई भाषा में प्रगट करते हैं वह इन्हीं बाबू हरिश्चन्द्र की बदौलत। न तो लल्लू लाल की बोली से हमारा काम चलता और न वैद्यक आदि के ग्रन्थों की टीकाओं की भाषा से। हिन्दी को उन्नति के आधुनिक मार्ग पर लाकर खड़ा करने वाले और उसे हमारे साथ फिर लगाने वाले बाबू हरिश्चन्द्र ही हुए। अब हमें चाहि[illegible] एव[illegible] हुए कि [illegible] नीति, विज्ञान, दर्शन, कला आदि के [illegible] जो [illegible] हम अपनी संसारयात्रा में प्राप्त करते जांय उन्हें इस अपनी मातृभाषा हिन्दी को बराबर सौंपते जांय क्योंकि यही उन्हें हमारी भावी सन्तति के लिए सञ्चित रक्खेगी।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन ॥

:o:

श्रीयुत सम्पादक, नागरी प्रचारिणी पत्रिका,
काशी।

महाशय,

मार्च की पत्रिका में मैंने एक लेख हिन्दी साहित्य सम्मेलन पर लिखा था और १ मई के प्रबन्ध कारिणी सभा के अधिवेशन में जिसमें उपस्थित होने का मुझे भी सौभाग्य प्राप्त था मैंने इस सम्मेलन के करने का प्रस्ताव किया था। मुझे इस बात का बड़ा आनन्द है कि सभा ने मेरे प्रस्ताव को स्वीकार कर सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन करना निश्चित किया। तब इस विषय पर अनेक समाचार पत्रों ने अपनी अपनी सम्मति प्रगट की। यह विशेष संतोष की बात है कि प्रायः सभी लोग इस सम्मेलन के लिये उत्साहित हैं मुझे विश्वास है कि यह अधिवेशन सफलतापूर्वक होगा और इसमें हिन्दी सम्बन्धी अनेक प्रश्नों पर निश्चय होने के अतिरिक्त हिन्दी प्रेमियों में एक दूसरे से मिलने से विशेष सहानुभूति और प्रेम उत्पन्न होगा। मुझे पूरी आशा है कि हिन्दी के प्रेमीगण इसमें उपस्थित होने की उदारता दिखावेंगे।

अब तीन प्रश्न ऐसे हैं जिनका शीघ्रही निश्चय हो जाना ठीक है क्योंकि बिना इनके निश्चय हुए आगे काम न चल सकेगा।

पहिला प्रश्न तो यह है कि अधिवेशन किन किन तारीखों को हो। इस वर्ष में तो कदाचित् दो दिनों तक कार्य्य होना उचित होगा क्योंकि अभी यह नहीं कहा जा सकता कि किन किन विषयों पर वास्तव में विचार होगा और उसमें कितना समय लग जायगा। अगले वर्षों में सम्भव है कि एक ही दिन में सब कार्य्य हो जाय। इस लिये दिन चुनने में इस बात का ध्यान रखना होगा कि दो दिन का समय मिले और साथही सम्मेलन में सम्मिलित होने वाले महाशय यदि चाहें तो विजयदशमी का उत्सव अपने अपने घर पर कर सकें। इन सब बातों पर बिचार कर मेरा मन यह स्थिर होता है कि १० और ११ अक्टूबर ये दो दिन नियत किए जांय। बिजयदशमी १३ को पड़ेगी अतएव जो लोग चाहेंगे वे उस दिन अपने घर पहुंच सकेंगे। ९ ता० को रबिवार पड़ता है अतएव आने में भी सबको सुबीता होगा। मुझे आशा है कि इन बातों पर बिचार कर सभा इस प्रश्न का निर्णय करेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरा प्रश्न सभापति चुनने के बिषय में है। यह जरा कठिन समस्या है पर साथही अत्यन्त आवश्यक भी है। इसका भी शीघ्रही निश्चय होजाना ठीक होगा क्योंकि जो महाशय सभापति चुने जांय उन्हें अपनी वक्तृता लिख लेने का पूरा समय मिलना चाहिए। जूलाई के पहिले सप्ताह तक उसका निश्चय अवश्य हो जाना चाहिए। नागरी प्रचारिणी पत्रिका के सम्पादक ने अप्रैल मई की संख्या में १२ नाम दिए हैं जिनमें से उनकी सम्मति के अनुसार कोई सभापति चुना जाना चाहिए। निस्संदेह सब नाम ऐसेही महानुभावों के हैं जो हिन्दी में मान्य हैं और जिनका आदर करना सर्वथा उचित है। सम्पादक महाशय ने कृपाकर इस सूची में मेरा नाम भी अंकित किया है। इसके लिये मैं उनका अनुगृहीत अवश्य हूं परंतु मेरा निवेदन इतना ही है कि हिन्दी के धुरंधर बिद्वानों और साहित्य सेवियों के आगे मेरे लिये प्रस्ताव करना वैसाही है जैसे सूर्य के प्रकाश को छोड़ कर दीपक का सहारा ढूंढना। अतएव शेष ११ महाशयों में से चुनाव करना उचित होगा। मेरी सम्मति में यह उचित होगा यदि सम्मेलन कमेटी इनमें से चार नाम चुन कर हिन्दी प्रेमियों से पूछे कि उनमें से कौन व्यक्ति चुना जाय। जिस के लिये सब से अधिक सम्मति आवे उससे पहिले पूछा जाय और यदि वे स्वीकार न करें तो उनसे उतर कर जिसके लिये सम्मति हो उससे पूछा जाय। इस प्रकार उन चारों महाशयों में से एक महाशय के बिषय में शीघ्रही निश्चय होजायगा मेरी सम्मति में ये चार नाम चुनने चाहिये।

पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी।
पं० मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या।
पं० दुर्गा प्रसाद मिश्र।
पं० मदन मोहन मालवीय।

यदि किसी राजा महाराजा को चुनना ठीक जान पड़े तो महाराज रीवां या महाराज ग्वालियर से प्रार्थना करनी चाहिए।

अब तीसरा प्रश्न यह है कि इस अधिवेशन में किन किन विषयों पर विचार किया जाय। मैं समझता हूं कि पत्रिका के सम्पादक ने जो बिषय चुने हैं वे ठीक हैं। यदि उन पर ही उपयुक्त बिचार हो जाय और उनका कुछ फल निकले तो मैं समझूंगा कि आशातीत सफलता प्राप्त हुई।

सम्मेलन के लिये १०००) रु० का खर्च कूता गया है जिसमें से ५००) से ऊपर चंदा हो भी चुका है। मुझे आशा है कि शेष ५००) के और हो जाने में विलंब न लगेगा।

हिन्दी के प्रेमियों से प्रार्थना है कि वे इन बातों पर विचार कर शीघ्रही निश्चय करने की कृपा करेंगे।

सम्पादक महाशयों से भी प्रा[र्थना है क्यों]कि वे अपनी सम्मति देने की कृपा करें।

श्रीनगर } भवदीय
१५-६-१० } श्यामसुन्दर दास

प्राचीन भारतवासियोंकी समुद्रयात्रा

प्राचीन काल में भारतवासी लोग समुद्र के मार्ग से दूर दूर के देशों में जाकर अपनी बिद्या और सभ्यता को फैलाते थे और वहां के निवासियों से लेन देन करते थे। चीन और जापान से लेकर मिश्र और अरब तक इनके धावे लगते थे। पेगू और चीन के यूनन नगर के बीच के समुद्र तटस्थ देशों तथा दक्षिण समुद्र के बहुत से द्वीपों पर इन्होंने अपना प्रभाव जमा रक्खा था। मुसलमानों के आगमन काल तक बंग और कलिंग देश के लोग सिंहलद्वीप, सुमात्रा और जावा आदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी पुरानी बस्तियों में जाया आया करते थे *। इनमें से बहुत से लोग स्याम और बरमा में बस कर वहां के लोगों के साथ सम्बन्ध करके मिल गए †। भारत और 'कथे चिन' ‡ के बीच व्यापार सम्बन्ध अच्छी तरह स्थिर हो गया था। (The Ideals of the East" by Mr. Kakasu OkakuraP.1)

चीन उन देशों में से है जहां भारतवासियों ने जल मार्ग से अत्यंत प्राचीन काल से आना जाना और लेन देन करना आरम्भ किया था। पूर्वीय समुद्र में यूरोपियनों के आने तक इनका व्यापार चीन से बराबर जारी था! इसी से चीन में भारतवर्ष ने अपनी विद्या और सभ्यता का सब से अधिक श्रोत बहाया। समुद्र ही के मार्ग से भारतवर्ष से बौद्ध उपदेशक लोग चीन में गए थे जिन्होंने परोपकार वासना से प्रेरित हो बहुत वर्षों तक अविश्रान्त परिश्रम कर चीन के राजा प्रजा का विरोध सह कर अपने धर्म्मग्रंथों और सिद्धान्तों को करोड़ों मनुष्यों के बीच फैलाया। हिन्दुस्तानी जहाजों ही पर चढ़ कर झुण्ड के झुण्ड चीनी यात्री इस देश में आए * जिन्होंने यहां के विद्यापीठों में अध्ययन किया, यहां के पवित्र स्थानों वा तीर्थों का दर्शन किया और यहां के बड़े २ मठों में बहुत दिनों तक निवास किया। इनमें से कई एक ने यहां के प्रत्येक प्रसिद्ध नगर, मठ वा मंदिर का, ब्राह्मणों और श्रमणों के धर्म्म सम्बन्धी आचार विचार का, लोगों के रहन सहन का बड़ा विस्तृत और सटीक वर्णन किया है। † ये यात्री लोग यहां के आदर्श और विचारों को ग्रहण करके अपने देश में लौट कर भारतीय संस्कार फैलाते थे। इसी से चीनियों के रहन सहन तथा उनके साहित्य और कला कौशल में हिन्दू भावों का आभास पाया जाता है। चीनी भाषा और बौद्ध धर्म्म के ज्ञाता एक प्रसिद्ध जर्मन विद्वान ने कहा है कि चीन के बौद्ध धर्म्मग्रन्थों में से दो तिहाई संस्कृत पुस्तकों के अनुवाद हैं। प्रत्येक प्रचलित बौद्ध ग्रन्थ संस्कृत वाक्यों से भरा है। बहुत से मंत्र जिन्हें पुरोहित लोग पढ़ते हैं चीनी अक्षरों में लिखे हुए संस्कृत वाक्य हैं। यंत्र और कवच आदि पर, जिनका चलन साधारण

एक सूचो प्रार्थना है

* जावा आदि द्वीपों में बहुत से प्राचीन हिन्दू मंदिरों के खँड़हर पड़े हैं जिनमें दुर्गा और ब्रह्मा ('प्रोम') की मूर्त्तियां पाई जाती हैं। जावा से आगे चल कर जो बाली और लंबक द्वीप हैं उनमें अब तक हिन्दू हैं जो चार वर्णों में बिभक्त हैं और अपना पूर्वस्थान कलिंग बतलाते हैं। मलिक मुहम्मद जायसी वा शेरशाह के समय में भी कलिंग देश के पुराने राजाओं का बड़े २ जहाज़ रखना यहां के लोगों में प्रसिद्ध था। पदमावत में चित्तौर का राजा रत्नसेन कलिंगाधिपति से कहता है- "हहै बहुत जौ बोहित पावउँ। तुम्ह तहँ सिंहल दीप सिधावउं।"—रा० शु०

† बरमा के फुंगी लोग अपने को उत्तरीय भारत से आए हुए शाक्य बंगीय क्षत्री कहते हैं। मुझ से बरमा के कई बौद्ध भिक्खुओं से इस विषय में बातचीत हुई है। रा० शु०।

‡ पारसी लोग चीन के उत्तरीय भाग को 'कथा' कहते थे। प्रसिद्ध यात्री मार्को पोलो ने भी इसी नाम का व्यवहार किया है।—रा० शु०

* फाहियान नामक चीनी तीर्थयात्री जो ३९९ ई० में भारतवर्ष में आया था सिंहलद्वीप से हिन्दुओं ही की जहाज़ पर बैठकर चीन लौटा था। उसने यह बात अपनी यात्रा सम्बन्धी पुस्तक में स्पष्ट लिखी है वरन् एक बिलक्षण घटना का भी उल्लेख किया है। तूफ़ान आ जाने पर जब जहाज बहुत हिलने लगी तब कुछ लोग चिल्लाने लगे कि इसमें कोई बिधर्म्मी बैठा है इसी से यह उत्पात हो रहा है-रा० शु०

† देखिए सरस्वती में प्रकाशित मेरा "हुएनसांग" नामक लेख।-रा० शु०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोगों में बहुत है, संस्कृत अक्षर बिलक्षण रीति से लिखे रहते हैं। चीन के मंदिरों में भारत वर्ष से गए हुए उपदेशकों की मूर्त्तियां अब तक स्थापित मिलती हैं।

बौद्धों के पहिले भारत का चीन से सम्बन्ध।

इस दीक्षा सम्बन्ध के पहिले भी बहुत प्राचीन काल से भारतवासी लोग अपने देश की समृद्धि के लिए चीन से व्यापार करते थे। संस्कृत ग्रन्थों तथा चीन के पुराने इतिहासों में भी यह बात पाई जाती है कि दोनों देशों के बीच व्यापार सम्बन्ध बहुत प्राचीन काल में स्थापित हुआ था तथा चीन के एक भाग में भारतवासियों की बस्ती भी हो गई थी। सर हेनरी यूल कहते हैं कि दोनों जातियों के ज्योतिष सम्बन्धी सिद्धान्तों में बहुत सी बातें ऐसी हैं जिनसे उनका अत्यंत प्राचीन सम्बन्ध प्रत्यक्ष प्रगट होता है-इतना प्राचीन कि कई हजार वर्ष की खबर लेने वाले चीनी इतिहास भी वहां तक नहीं पहुंच सकते। संस्कृत ग्रन्थों में चीन, चीन के निवासी तथा चीन के रेशम, कपूर और ईंगुर आदि का जगह जगह उल्लेख मिलता है। मनुस्मृति में तो यहां तक लिखा है कि चीनी लोग भ्रष्ट क्षत्रिय हैं जो यज्ञादिक कर्म छोड़ देने के कारण पतित हो गए हैं। मनुस्मृति के इन वाक्यों के विषय में फरासीसी विद्वान पाथियर निज सम्पादित "मार्को पोलो* की यात्रा" की भूमिका में लिखता है—"मनुस्मृति में जो बात लिखी है वह ठीक है। ईसवी सन् से हज़ार वर्ष पहिले कुछ भारतवासी चीन के "शेंसी" नामक प्रान्त में गए और वहां अपना थीन (वा चीन) नामक राज्य स्थापित किया।" सर हेनरी यूल ने अपने 'कैथे और उधर का मार्ग" नामक ग्रन्थ में उपर्युक्त कथन को उद्धृत किया है। इससे यह बात सिद्ध होती है कि ये प्राचीन क्षत्रिय लोग समुद्र ही से हो कर चीन में गए थे क्योंकि वैदिककाल में हिन्दू लोग अर्णवपोत चलाना अच्छी तरह जानते थे। ऋग्वेद में व्यापारियों का समुद्र में इधर उधर आना जाना साफ़ लिखा है (Indian Paleography by J. G. Buhler P. 16)

* इस प्रसिद्ध यात्री का जन्म इटली के वेनिस नगर में सन् १२५४ ई० में हुआ था। १७ वर्ष की अवस्था में यह अपने बाप और चचा के साथ मूसल, बगदाद, खुरासान काशगर, यारकन्द और खुतन होता हुआ चीन के तातारी बादशाह कुबलई खां के पास गया था। बादशाह ने इसको अपने यहां रख लिया और बहुत चाहने लगा। यह सन् १२८२ ई० में चीन से लौटा और सुमात्रा, भारतवर्ष, और फ़ारस आदि देशों में भटकता हुआ बड़ी बड़ी कठिनाइयों से १२८५ ई० में घर पहुंचा।-रा० गु०

चीन और भारत के बीच सम्बन्ध बढ़ना।

बौद्धकाल और ईसवी सन् के आरम्भ में तो भारतवासियों के झुंड के झुंड [illegible] समुद्र में जाने लगे। इसका प्रमाण चीन के पुराने कागजों, वहां के राजवंश के इतिहासों, चीनी यात्रियोंकी पुस्तकों तथा चीनमें गए हुए भारतीय उपदेशकों के वृत्तान्तों में बराबर मिलता है। यह बात ध्यान देने योग्य है कि तबतक चीनियों का एक जहाज़ भी भारत समुद्र की ओर नहीं आया था। चीनियों ने कई सौ वर्ष पीछे अपने जहाज़ इधर भेजे। एशियाटिक सोसाइटी के जर्नल (सन् १८९५—पृ० ५२५) में लिखा है "जहां तक निश्चय होता है ईसवी सन् के आरम्भ में भारतवासी और पारसी लोग ही समुद्र के मार्ग से चीन में आते जाते रहे। ईसवी ५ वीं शताब्दी के पहिले चीनी लोग सुमात्रा, जावा आदि दक्षिणी द्वीपों में भी नहीं आए थे। ६ वीं शताब्दी से चीनियों के जहाज़ भारतवर्ष फारस और अरब की ओर आने लगे हैं।" इसी समय बौद्ध-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्म्म को चीन में राजाश्रय मिला और उसका विस्तार बहुत बढ़ा। इस धर्मसम्बन्धी एकता और सौहार्द के कारण भारतवर्ष और चीन का सम्बन्ध और भी बढ़ गया। अशोक के समय में वा उसके कुछ पीछे ही बौद्ध धर्म्म भारतवर्ष से चीन में गया है। अशोक के धर्म्मोपदेशक उस काल में संसार के प्रत्येक सभ्यभाग में पहुंचे थे। थे न कि केवल भारत वर्ष और उसके आसपास के देशों ही में बरन् पश्चिमी एशिया, पूर्वीय योरप और उत्तरीय अफ्रिका के देशों में फेरा लगाते थे। फारस, अरब, रूम, यूनान, मिश्र, आदि कोई देश इन से नहीं बचे थे। (क्रमश.)

——:o:——

हिन्दी लेखकों से प्रार्थना।

मुरादाबाद के एजुकेशनेल पण्डित, पं० ब्रजरत्न भट्टाचार्य सभा के लिये आधुनिक हिन्दी लेखकों की [illegible]वना रहे हैं। अत: हिन्दी लेखकों से [illegible] कि वे कृपापूर्वक अपना नाम, पता तथा उपाधि आदि, जन्म स्थान, जन्मतिथि, अपने ग्रन्थों की नामावली, उनके प्रकाशन का समय मूल्य, विषय तथा मिलने का पता आदि उक्त पंडित जी के पास भेज कर इस कार्य में उन की सहायता करें।

गौरीशंकर प्रसाद
मंत्री।

साधारण अधिवेशन।

शनिवार ता० २८ मई १९१० सन्ध्या के ६ बजे
स्थान-सभाभवन।

(१) गत अधिवेशनों (ता० ३० अप्रैल और १४ मई १९१०) के कार्य्य विवरण पढ़े गए और स्वीकृत हुए।

(२) निम्नलिखित महाशय सभासद चुने गये।— १ लेफ्टिनेण्ट अमर सिंह ए० डी० सी० टू कमाण्डिङ्ग आफिसर, मऊ ५) (२) ब्रह्मचारी रामकृष्णजी, शान्ति कुटीर, भीम गोड़ा, हरिद्वार १॥) (३) बाबू धीसूं लाल जी चोरड़िया-म्युनिसिपल कमिश्नर-ब्यावर ३) (४) बाबू राम नरेश सिंह-मारवाड़ी पाठशाला-भागलपुर ५) (५) बाबू प्रद्युम्न सहाय वर्म्मा, १८ मिर्जापुर स्ट्रीट, कलकत्ता १॥) (६) पण्डित सिद्धेश्वर शर्म्मा-नीलकण्ठ काशी ३) (७) पण्डित गिरिजा कान्त ओझा, बांसका फाटक, काशी १॥)

(३) सभासद होने के लिये दस महाशयों के नवीन आवेदनपत्र सूचनार्थ उपस्थित किए गए।

(४) निम्नलिखित पुस्तकें धन्यवादपूर्वक स्वीकृत हुईं:— (१) श्रीमान् डाइरेक्टर साहब, शिक्षाविभाग, प्रयाग-श्री शालिभद्र चरितम्। (२) पण्डित अमर नाथ शर्म्मा, जानसन गंज इलाहाबाद-श्री नरसिंह चम्पू। (३) पण्डित राम नारायण पारिख व्यास, पुरानी बस्ती, जयपुर-गुरुमहिमा २ प्रति। (४) ठाकुर सांवल सिंह, वजीरपुरा, आगरा-ईश्वरोपासनम् (५) स्वामी मङ्गलानन्द पुरी C/o हकीम देवी प्रसाद, अतरसुइया, प्रयाग श्री भगवद्गीता रत्नमाला (६) पण्डित केशव देव शास्त्री, दशाश्वमेध, काशी-ऋतुचर्य्या (७) पण्डित चतुर्भुज मिश्र गणेश मिश्र, नौआगढ़ी, गया-सरोज रामायण (८) लक्ष्मी नारायण प्रेस, मुरादाबाद-वेदस्तुति, (९) पण्डित जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल, दारागंज, इलाहाबाद-नीति सौन्दर्य्य (१०) पण्डित तारा चन्द शर्म्मा, डोलीदड़ा, अजमेर-धर्मसन्ताप (११) डाक्टर जी० ए० ग्रयर्सन पी० एच० डी०, सी० आई० ई० इङ्गलैंड-Gleanings from the Bhaktamala 2 copies, The Narayaniya and the Bhagwats (१२) खरीदी गई तथा परिवर्तन में प्राप्त-श्री मद्भागवत दशम स्कन्ध, पृथ्वीराज चौहान, तांतियाभील, चौदहरत्न, पचास पुस्तकों का सेट, पचीसरत्नी, इण्डियन प्रेस का हिन्दी प्राइमर, लड़कियों की लोअर प्राइमरी रीडर, लड़कियों की लोअर मिडिल रीडर, लड़कियों की अपर प्राइमरी रीडर, रंग में भंग, रूस का इतिहास और शिक्षा, (१३) Indian Antiquary for May 1910

(५) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

गौरीशंकर प्रसाद।
मंत्री।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रबन्ध कारिणी सभा ।

सोमवार ता० ६ जून १९१० सन्ध्या के ६ बजे ।

स्थान-सभाभवन ।

उपस्थित ।

महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी--सभापति बाबू गोबिन्द दास, बाबू जुगलकिशोर, बाबू गौरी शङ्कर प्रसाद, पण्डित कृष्णाराम मेहता, पण्डित केशव देव शास्त्री, पण्डित सुरेन्द्र नारायण शर्म्मा, बाबू बालमुकुन्द बर्म्मा, गोपाल दास ।

(१) गत अधिवेशनों (ता० २६ अप्रैल, २८ अप्रैल, ३० अप्रैल और १ मई १९१०) के कार्य्य विवरण उपस्थित किए गए और स्वीकृत हुए ।

(२) ग्वालियर तथा संयुक्त प्रदेश की हिन्दी हस्त लिपि परीक्षा के सम्बन्ध में सब कमेटी की निम्नलिखित रिपोर्ट उपस्थित की गई और स्वीकृत हुई ।

[१] ग्वालियर ।

मिडिल कक्षा ।

(१) गजेन्द्र सिंह-कक्षा ३-सर्विसस्कूल-लश्कर ५)

(२) हीरासिंह-कक्षा ३-सर्विसस्कूल-लश्कर
(३) रघुराज सिंह-कक्षा ३-सर्विसस्कूल-लश्कर
} प्रशंसापत्र

अपर प्राइमरी बिभाग ।

(१) ज्वाला प्रसाद-कक्षा ४-ए० वी० एम०स्कूल- आगर जि० शाजापुर ३)

(२) हरिशंकर लाल-कक्षा ४-चांचौड़ा स्कूल-जि० ईसागढ़ । (३) प्रेमनारायण-कक्षा ३-हिन्दी वर्नाक्यूलर स्कूल-उज्जैन
} प्रशंसापत्र

लोअर प्राइमरी विभाग ।

(१) मुहम्मद यासीमखां-कक्षा ५-पाठशाला सबलगढ़ जि० तरवर चार २)

(२) शंकर दयाल-कक्षा ५-पाठशाला नूराबाद
(३) मांगी लाल-कक्षा ५-वर्नाक्यूलर स्कूल-उज्जैन
} प्रशंसापत्र

[२] संयुक्त प्रदेश ।

मिडिल विभाग ।

(१) शिवप्रसाद-कक्षा ६-तहसीली स्कूल-कानपुर ५)
(२) लक्ष्मीपति उपाध्याय-कक्षा ६-तहसीली स्कूल बलिया ४)
(३) शिवनारायण-कक्षा ६-तहसीली स्कूल कानपुर ३)

(४) बद्रीशरण सिंह-कक्षा ६-सहतवार स्कूल-जि० बलिया (५) हरनारायण-कक्षा ६-भर्थना स्कूल-जि० इटावा (६) उमाशंकर-कक्षा ६-स्कूल बिधूना-जि० इटावा (७) वजीर मुहम्मद कक्षा ६ तहसीली स्कूल फतहपुर (८) सीताराम कक्षा ६ टाउन स्कूल बस्ती (९) शिवाधार कक्षा ६ तहसीलीस्कूल हथगाम जि० फतहपुर हसवा ।
} प्रशंसा पत्र

अपर प्राइमरी विभाग ।

(१) रघुराज-कक्षा ३ तहसीली स्कूल कमासिन करवी ५) ।
(२) कृष्णसिंह कक्षा ४ शिमायल जि० नैनीताल ३) ।
(३) राम गोपाल कक्षा ४ तहसीलीस्कूल कानपुर २)

(४) रामकृष्ण कक्षा ४ पाठशाला पालीखुर्द-भरथना जि० इटावा । (५) रामाधार कक्षा ३ अपर प्राइमरी स्कूल बकेवर जि०इटावा । (६) अ[illegible]दर्शन सिंह कक्षा ४ मिडिल स्कूल रसड़ा। (७)काली प्रसाद कक्षा ४ पाठशाला ऊरूगंज इटावा । (८) रामचंद्र कक्षा ३ पाठशालाधनौरा तहसील हसनपुर जि० मुरादाबाद ।
} प्रशंसा पत्र

लोअर प्राइमरी विभाग ।

(१) रामदुलारी कक्षा २ पाठशाला निसवां बेला ता० बिधूना जि० इटावा ४) (२) रामेश्वर प्रसाद कक्षा २ पाठशाला झलोखर जि० हमीरपुर २) (३) कुंज बिहारी लाल कक्षा १ ब्रांचस्कूल किशुनपुर जि० फतहपुर २)

(४) रामचरण शर्म्मा कक्षा १ पाठशाला बिसौली जि० बदायूं । (५) नर्मदाप्रसाद कक्षा २ ब्रांचस्कूल कमासिन जि० बांदा । (६) तेजपाल कक्षा १ ब्रांच स्कूल तहसील कोल जि० अलीगढ़ । (७) शंकरदत्त कक्षा २ ढौंड स्कूल ढौंडियल स्यूं गढ़वाल ।
} प्रशंसा पत्र

(३) उमापति पण्डित का जीवन चरित्र लेखमाला के सम्पादक पं० माधवप्रसाद पाठक की सम्मति के सहित उपस्थित किया गया ।

निश्चय हुआ कि इसको हिन्दी ग्रंथ पं०माधवप्रसाद जी के शुद्ध कर देने पर लेखमाला में छापा जाय ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

110770

व्यय का ब्योरा ।

(१) कार्य कर्ताओं का वेतन ।

सहायक मंत्री	३६०)
हेड क्लार्क	१८०)
सहायक क्लार्क	१२०)
चपरासी	७८)
चौकीदार	६०)
मेहतर	१२)
पंखाकुली	१५)
जोड़	८२५)

(२) छपाई

नागरी प्रचारिणी पत्रिका	३२५)
ग्रन्थमाला (५ संख्या)	३७५)
ना० प्र० लेखमाला (५ संख्या)	३७५)
वार्षिक रिपोर्ट	१५०)
शीघ्रलेख प्रणाली	३५०)
मेटाफिसिक्स और लाइट आफ़ एशिया	३५०)
फुटकर	२१०।)॥
पिछला बाकी भारत प्रेस का	९१४॥≡)॥
जोड़	३०५०)

(३) पारितोषिक ।

डाक्टर छन्नू लाल मिमोरियल मेडल २	८०)
युक्त प्रदेश का हस्तलिपि परीक्षा का पारितोषिक	३०)
ग्वालियर हस्तलिपि पारितोषिक	१०)
ललिता पारितोषिक	१०)
सभा के नियमित मेडल	२५)
कालीदास रजत पदक	२०)
राधाकृष्णदास की जीवनी के लिये मेडल	२०)
जोड़	१९५)

(४) पुस्तकालय ।

पुस्तकाध्यक्ष का वेतन	१४४)
दफ्तरी	८४)
पंखाकुली	१८)
पुस्तकों की सूची तयार करने में व्यय	५०)
जिल्द बन्दी	२५)
पुस्तकें	२००)
फुटकर	४)
जोड़	५२५)

(५) पृथ्वीराज रासो ।

पिछला बाकी ताराप्रेस का	२९७।=)
तीन नवीन संख्याओं की छपाई	९०२॥=)
जोड़	१२००)

भारत प्रेस काशी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काशी नागरी प्रचारिणी सभा का सन् १९१०-११ का बजेट

आय का ब्योरा	सन् १९०९-१० का बजेट			सन् १९०९-१० की वास्तविक आय			सन् १९१०-११ के लिये बजेट		
गतवर्ष की बचत	५११९	७	७½	५११९	९	७½	५७८७	१२	१०½
सभासदों का चन्दा	२०००	०	०	१८०८	४	३	२०००	०	०
पुस्तकों की बिक्री	१६००	०	०	१०५३	०	३	१०००	०	०
गवर्नमेण्ट की सहायता	८००	०	०	८००	०	०	८००	०	०
पृथ्वी राज रासो की बिक्री	२०००	०	०	६६४	६	०	१२००	०	०
स्थायी कोश	१५०	०	०	१३	०	०	५०	०	०
नागरी प्रचार	२०	०	०	१६	९	९	२०	०	०
फुटकर	७०	०	०	८१	७	०	५०	०	०
राजा साहव भिनगा की सहायता	७५०	०	०	५०	०	०	७००	०	०
पारितोषिक	४०	०	०	०	०	०	९०	०	०
पुस्तकालय	६००	०	०	५५१	३	९	६००	०	०
राधाकृष्ण दास स्मारक	५०	०	०	०	०	०	५०	०	०
हिन्दी भाषा का कोश	१२०००	०	०	५३६१	१	७	१००००	०	०
राय शिवप्रसाद के द्वारा विशेष चन्दा	१०००	०	०	०	०	०	०	०	०
ब्याज	०	०	०	१	६	०	०	०	०
साहित्य सम्मेलन	०	०	०	३४	९	०	९६५	७	०
	२६११९	७	७½	१५५५४	९	२½	२३३१३	३	१०½

व्यय का ब्योरा	सन् १९०९-१० का बजेट			संशोधित बजेट १९०९-१०			सन् १९०९-१० की वास्तविक व्यय			सन् १९१०-११ के लिये बजेट		
आफ़िस के कार्यकर्ताओं का वेतन	८२५	०	०	८२६	०	०	८२५	५	७½	८२५	०	०
छपाई	२२८०	०	०	२२८०	०	०	९३२	१०	१०	३०५०	०	०
पारितोषिक	२३०	०	०	२३०	०	०	१५६	०	०	१९५	०	०
पुस्तकालय	५१०	०	०	४८८	०	०	४२७	७	०	५२५	०	०
पृथ्वीराजरासो	१८००	०	०	१८००	०	०	६८९	११	३	१२००	०	०
स्थायीकोश	३६०	०	०	३६०	०	०	३३०	०	०	४५०	०	०
हिन्दी पुस्तकों की खोज	५००	०	०	६३८	०	०	६३७	१४	०	५००	०	०
नागरी प्रचार	२५०	०	०	२००	०	०	१९६	११	३	२७२	०	०
डाक व्यय	४००	०	०	३००	०	०	२९५	३	६	३००	०	०
पुस्तकों के लिये पुरस्कार	४५०	०	०	४५०	०	०	०	०	०	३५०	०	०
फुटकर व्यय	३००	०	०	३००	०	०	२९६	१२	४	३००	०	०
मरम्मत	२५	०	०	२५	०	०	३	९	९	२५	०	०
हिन्दी भाषा का कोश	१८०२९	३	११	१८०२९	३	११	४९३१	१२	२½	१६४५८	९	३½
व्याज	०	०	०	३३	०	०	३२	८	४	१००	०	०
साहित्य सम्मेलन	०	०	०	०	०	०	१२	२	३	९८७	१३	९
साहित्य सम्मेलन में सभा की सहायता	०	०	०	०	०	०	०	०	०	५०	०	०
बनारस बंक का चलते खाते में देना	९६९	९	९	९६९	९	९	०	०	०	७८१	१२	½
राधाकृष्णदास स्मारक	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१८२	४	०
बाबू गोपालकृष्णदास का देना	६०००	०	०	६०००	०	०	०	०	०	६०००	०	०
	३२९२८	१३	८	३२९२८	१३	८	९७६६	१२	४	३२५५२	७	१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(४) मंत्री के प्रस्ताव पर सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि गवर्नमेंट से प्रार्थना की जाय कि सब नए सिक्कों में उनके नाम नागरी अक्षरों में भी छपें क्योंकि इन अक्षरों का भारतवर्ष में सब से अधिक प्रचार है। इस सम्बन्ध में निम्नलिखित तार श्रीमान् वाइसराय के प्राइवेट सेक्रेटरी के पास भेजा गया :-

Kashi Nagari Pracharini Sabha, Benares resolved to-day that Government be memorialised to order indication of value on all new coinage in Devanagari Script also, the most widely known in India.

(५) पण्डित ब्रजरत्न भट्टाचार्य्य का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि सभा का आगामी वार्षिक अधिवेशन नियत समय पर न होकर हिन्दी साहित्य सम्मेलन के साथ नवरात्र में किया जाय।

निश्चय हुआ कि सभा की सम्मति में वार्षिक अधिवेशन नियमानुसार नियत समय पर करना ही उचित है।

(६) गणेश विहार पुस्तकालय के मंत्री का पत्र उपस्थित किया गया जिस में उन्हों ने सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तकें अपने पुस्तकालय के लिये अर्द्ध मूल्य पर मांगी थीं।

निश्चय हुआ कि सभा की पुस्तकों को एक एक प्रति उन्हें अर्द्ध मूल्य पर दी जाय।

(७) पण्डित निक्का मिश्र का २ जून का पत्र उपस्थित किया गया जिस में उन्हों ने शीघ्रलिपि प्रणाली की २५ प्रतियां बिनामूल्य मांगी थीं और लिखा था कि इस पुस्तक की रचना के लिये बाबू श्याम सुन्दर दास जी ने उन्हें सभा से कुछ पुरस्कार दिलाने की प्रतिज्ञा की थी।

निश्चय हुआ कि पं० निक्का मिश्र को इस पुस्तक की पचीस प्रतियां दी जांय और पुरस्कार के विषय में बाबू श्याम सुन्दर दास जी से पूछ कर उनकी सम्मति के सहित यह विषय आगामी अधिवेशन में उपस्थित किया जाय।

(८) मुंशी भगवानदीन के नाम बाबू श्याम सुन्दर दास जी के भेजे हुए निम्नलिखित पत्र की नकल उपस्थित की गई :--

SHRINAGAR (KASHMIR)
31st May 1910.

To,
LALA BHAGWAN DIN
ALLAHABAD.

Dear Sir.

I have the honour to inform you that as you have failed twice to join the Dictionary staff at Jammu on dates named by yourself in spite of very definite promises made by you and also in spite of your accepting travelling allowance and 15 days' pay in advance for that purpose, and as by doing so you have in a way upset the arrangements made for the compilation of the Hindi Dictionary, I hereby inform you that your services are no longer required by me and that you are dismissed from the service of the Sabha. You are required to pay back at once the money given to you for travelling allowance and 15 days' pay taken by you in advance. The Sabha of course will consider whether or not a suit for damages may be brought against you.

I am sending copy of this letter to the Sabha for information and necessary action.

Yours faithfully
(*Sd*) SYAM SUNDAR DAS
Editor, HINDI DICTIONARY, N. P. SABHA.

निश्चय हुआ कि बाबू श्यामसुन्दर दास जी की इस कार्य्यवाही से सभा सहमत है। मुंशी भगवान दीन से उनके लिखे अनुसार सभा का रुपया मांगा जाय और इस पत्र की नकल सेंट्रल हिन्दूकालेज को भी सूचनार्थ भेजी जाय।

(९) पण्डित श्याम विहारी मिश्र का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि सभा हिन्दी पुस्तकों की खोज के विषय में प्रति मास की संक्षिप्त रिपोर्ट नागरी प्रचारिणी पत्रिका में छापा करे।

निश्चय हुआ कि पण्डित श्याम विहारी मिश्र से प्रार्थना की जाय कि वे हिन्दी पुस्तकों की खोज के विषय में प्रति मास की संक्षिप्त रिपोर्ट नागरी प्रचारिणी पत्रिका में छपने के लिये भेज दिया करें। और पत्रिका में उसके लिये एक पृष्ठ तक का स्थान दिया जाय।

(१०) पण्डित सुरेन्द्रनारायण शर्म्मा का २ जून का पत्र उपस्थित किया गया जिस में उन्होंने लिखा था कि उस दिन पण्डित केदारनाथ पाठक ने सभा के कार्यालय में आकर सब कार्यकर्ताओं को बड़ी ही असभ्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा में गालियां दीं और उनके साथ बड़ाही असभ्य व्यवहार किया। ऐसी बातों का सहन करना उनके अथवा अन्य किसी सभ्य पुरुष के लिये असम्भव है। अतः प्रबन्धकारिणी सभा तथा उपमन्त्री के पद से उनका इस्तीफा स्वीकार किया जाय।

इस पर पण्डित केदारनाथ का भी उत्तर उपस्थित किया गया—जिसमें उन्होंने लिखा था कि पत्रिका में अपने सम्बन्ध में सभा का कार्य्य विवरण पढ़ने से उन्हें बड़ा क्रोध आया और उसी क्रोध में उन्होंने गालियां दीं, पण्डित सुरेन्द्रनारायण ने अंगरेजी में कुछ लिखना चाहा अतः उन्होंने उसे हिन्दी में लिखे जाने के अनुरोध से उनका हाथ पकड़ लिया तथा उन्हें लिखने से रोका था। साथ ही पं० केदारनाथ पाठक का ता: ६ जून १९१० का इस्तीफ़ा भी पढ़ा गया।

निश्चय हुआ कि पण्डित केदार नाथ पाठक का आचरण बड़ा ही अशिष्ट और अनुचित हुआ है अतः वे पुस्तकाध्यक्ष के पद से च्युत किए जांय।

इस पर पण्डित सुरेन्द्रनारायण शर्म्मा ने अपना इस्तीफा लौटा लिया।

(११) जौनपुर की नागरी रक्षिणी सभा का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने अपने यहां की कलेक्टरी कचहरी में नागरी का एक अर्जीनवीस रखने के लिये सभा से ५) वा ६) रु० की मासिक सहायता मांगी थी।

निश्चय हुआ कि यह पत्र पं० रामनारायण मिश्र की सम्मति के सहित आगामी बजेट के समय उपस्थित किया जाय।

(१२) पण्डित रघुबर दयाल चतुर्वेदी का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि संयुक्त प्रान्त में जो पुस्तकें हिन्दी की सर्कारी पाठशालाओं में पढ़ाई जाती हैं उन की भाषा अच्छी नहीं है अतः उनके स्थान पर उपयुक्त पुस्तकें नियत की जांय।

निश्चय हुआ कि पण्डित रघुबर दयाल को लिखा जाय कि इस सम्बन्ध में वे कृपा पूर्वक प्रान्तीय टेक्स्ट बुक कमेटी से पत्र व्यवहार करें।

(१३) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

गौरीशंकर प्रसाद
मन्त्री

पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी

आय व्यय का हिसाब।

मई (१९१०)

आय	धन की संख्या		
गत मास की बचत	३२३८	२	३½
नागरी प्रचार	५	१०	०
पुस्तकालय	४२	१२	०
पुस्तकों की बिक्री	१०१	१५	३
पृथ्वी राजरासो की बिक्री	८८	०	०
फुटकर	२	०	०
सभासदों का चन्दा	४६	११	०
हिन्दी कोष	१०००	०	०
हिन्दी साहित्य सम्मिलन	१०	०	०
जोड़	४५४७	२	६½

व्यय	धन की संख्या		
आफ़िस के कार्यकर्त्ताओं का वेतन	६५	२	८
बाबू श्यामसुन्दर दास जी को कोष सम्बन्धी कार्यों के लिये अमानत	४००	०	०
छपाई	६४	१५	०
डाक व्यय	१८	१२	६
नागरी प्रचार	३३	८	०
पुस्तकालय	२६	१३	८
हिन्दी पुस्तकों की खोज	२०	०	०
फुटकर	२१	३	८
हिन्दी कोष	४५१	१	११
हिन्दी साहित्यसम्मिलन	५	१०	८
	११०८	४	५
बचत	३४३८	१४	१½
जोड़	४५४७	२	६½

रोकड़ सभा	११२॥=)१०½
बनारस बंक लि० (कोष विभाग)	४२१२॥-)५
	४३२५।-)३½
बंक का देना	८८६।=)२
	३४३८॥।=)१½

देना (०००)

भारत प्रेस काशी में बाबू माधव प्रसादके प्रबन्ध से छप कर नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह पुस्तक वितरित न की जाय
NOT TO BE ISSUED

सन्दर्भ ग्रन्थ
REFRENCE BOOK

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri